स्वाधीनता
विशेषांक

कादम्बिनी

मासिक प्रकाशन
अगस्त ८९

भारतीय भाषाओं की विशिष्ट पत्रिका

षड्यंत्र कथाएं



रुपये

हिन्दुस्तान टाइम्स प्रकाशन

पैनी नजर


हमने समझौता कर लिया है। अब शांति सेना की जरूरत नहीं, अब मैं ही देखूंगा
प्रेम दासा


घबराइए नहीं, सादे कपड़ों में भी अपने ही आदमी हैं


जब से देश की चिन्ता लगी है, पेट बढ़ने लगा है

रौंदने का दुष्चक्र हजारों मील दूर के व्यवसायी मछुआरों ने रचकर प्रत्यक्षतः अपनी प्रभुसत्ता स्थापित तो की किंतु परोक्षतः संपूर्ण संस्कृति का गला दबाकर, अंगरेजी भाषा को ही सभ्य समाज की प्रगति के सोपान के रूप में प्रतिष्ठापित कर, भारतीयों को मानसिक रूप से गुलाम बनाने में कोई कोर-कसर न छोड़ी। भाषा के सवाल पर प्रश्न अत्यंत स्वाभाविक है। स्वाधीनता-प्राप्ति के चार दशक बाद भी हम भारतीय मानसिक दासत्व से मुक्ति क्यों नहीं पा सके ? भारत पर विदेशी प्रभुसत्ता-स्थापना के पूर्व क्या भारत की अपनी कोई समर्थ-समृद्ध भाषा नहीं थी ? या आज कौन-सी वे परिस्थितियां हैं जो हमें भाषायी मामले में आत्मनिर्भर होने देने में व्यवधान पैदा करती हैं ?

इन सांघातिक परिस्थितियों में शोषण का निरंतर जारी रहना अस्वाभाविक नहीं। सुखद समाजवाद का प्रलोभन देनेवाले 'जामुले', नरभक्षी 'बाजों' को झपट्टा मारने का नायाब प्रशिक्षण देकर शिकार की तलाश में हमेशा आकाश में मंडराने के लिए, छोड़ चुके हैं। इसलिए भारतीय संस्कृति के वटवृक्ष की जड़ों में गरम पानी देनेवालों से सतत सावधान रहना आवश्यक है। अपनी भाषा-संस्कृति को संपन्न और सम्मान्य बनाना हमारा गुरुतर दायित्व है क्योंकि 'बिन निज भाषा-ज्ञान के, मिटे न हिय को शूल'।

— कुमार शैलेंद्र
विभागाध्यक्ष अंगरेजी,
गिरीश नारायण मिश्र महाविद्यालय—
परसथुआं, रोहतास (बिहार)

तकनीकी कार्यों में हिंदी

'कादम्बिनी' का जून अंक अपनी विशिष्टता की परंपरा में नया अध्याय जोड़ता हुआ, हर दृष्टि से श्रेयष्कर लगा। 'आखिर ब्लैक बॉक्स क्या है ?' तथा डायनासोर से संबंधित लेख काफी जानकारी पूर्ण रहे। 'तकनीकी कार्यों में हिंदी' शीर्षक से प्रकाशित लेख में उल्लिखित सुझाव सामयिक दृष्टि से काफी उपयुक्त प्रतीत होते हैं। जिस प्रकार प्रशासनिक कार्यों में हिंदी का प्रयोग सुगम बनाया जा सका है, उसी प्रकार थोड़े प्रयास, प्रोत्साहन एवं रुचि के माध्यम से तकनीकी कार्यों में भी हिंदी का प्रयोग सार्थक हो सकता है। लेकिन इसके लिए सबसे पहले हमें, अपनी गुलाम मानसिकता का परित्याग करना होगा। शैक्षणिक ढांचे में भी हिंदी के महत्त्व को प्रतिपादित करने की आवश्यकता है। यहां यह उल्लेखनीय है कि समय-समय पर अभियांत्रिकी महाविद्यालयों के छात्रों ने हिंदी माध्यम से प्रावीण्यता प्राप्त कर, तकनीकी विषयों में हिंदी की अनुपयोगिता संबंधी थोथी दलीलों का खंडन किया है।

अतः अब और बिना किसी प्रतीक्षा के, यदि हम एक संकल्प के साथ इस अभियान में जुट जाएं, तो निश्चय ही निकट भविष्य में हमें सुपरिणाम प्राप्त होंगे।

— महेन्द्रसिंह चौहान
सगुर-भगूर (खरगोन, म. प्र.)

'तकनीकी कार्यों में हिंदी' का 'ज्वलंत प्रश्न' शायद आनेवाले अनेक वर्षों तक ज्वलंत प्रश्न ही बना रहेगा। लेखक पिछले दो वर्षों का अनुभव इस क्षेत्र में रखता है और यही अच्छा

"बच्चों की पढ़ाई या सेहत का मामला हो तो मैं समझौता कभी नहीं करती..."

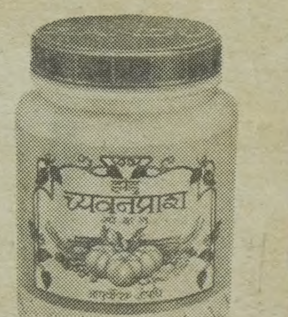
"इसीलिए मैं उन्हें नियमित रूप से झंडु स्पेशल च्यवनप्राश देती हूँ. सचमुच यह स्पेशल है. शुद्ध हरा आँवला, पीपली, वंशसालोचन, कुंडकोल, लौंग, जावंत्री, इलायची और अकलकरा जैसी जड़ी-बूटियाँ. सब को शुद्ध देसी घी में बनाया गया है.
मेरा बाज़ार का आना-जाना तो रोज़ ही लगा रहता है, मैं जानती हूँ कि अच्छी और उम्दा दर्जे की चीज़ें हमेशा कुछ महँगी ही मिलती हैं. फिर, जब क्वालिटी की बात हो तो हर कोई झंडु को जानता है और उस पर भरोसा करता है.

मैं, अपने बच्चों को झंडु स्पेशल च्यवनप्राश बारहों महीने देती हूँ. इसीलिए उनमें छोटी-मोटी बीमारियों का मुक़ाबला करने की शक्ति आ गई है. ख़ास तौर से खाँसी और ज़ुकाम.

हाँ, थोड़ी सी परेशानी मुझे ज़रूर है. इसमें मिले तत्त्व इतने ताज़ा और शुद्ध हैं कि इसका स्वाद भी कमाल है. बच्चों का बस चले तो वे इसे दिनभर खाते रहें. हर दो-चार दिन बाद मुझे बोतल कहीं दूसरी जगह छिपाकर रखनी पड़ती है. क़ीमती है न!"

अब १ किलो के आकर्षक पॉलीजार में भी उपलब्ध.





क़ीमती ही सही **झंडु स्पेशल च्यवनप्राश.**

असली च्यवनप्राश

CLARION/B/ZP/17/183 HIN-R

है कि वह दिल्ली में रहता है । सिर्फ दुःख इस बात का है कि लेखक ने वही अनुवादवाली बात उठायी है चाहे वह भारतीय मानकों के बारे में हो और चाहे अत्याधुनिक तकनीकी के क्षेत्र में । आज स्थिति यह है कि कुछेक को छोड़कर यदि हिंदी में कुछ तकनीकी लिखा भी जाता है तो उसे भाषा में लेखन माना जाता है, उसे शायद तकनीकी माना ही नहीं जाता । संभवतः हिंदी की जगहों के लिए भी साक्षात्कार अंगरेजी में और हिंदी पढ़ाने के लिए भी अंगरेजी की योग्यता आवश्यक होती है । कभी-कभी कोई हिंदी या अन्य भारतीय भाषावाला विद्रोह भी कर देता है तो वह मात्र विद्रोह ही होकर रह जाता है । कानून, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के नियम, आदेशों के सहारे कब तक अंगरेजी से लड़ा जाएगा । जब तक स्वयं हिंदीवाले उठ नहीं खड़े होते और कह देते कि बस बहुत हो चुका, जो बन सकेगा हम अपनी भाषा में ही करेंगे । क्या यह संभव है ? शायद यही कहना होगा, अंगरेजी ही हमारी भाषा है ।'

— **राजकुमार जैन**

बेंगलूर

है अपना हिंदुस्तान कहां ?

'कादम्बिनी' का जून '८९ का अंक रोचक एवं ज्ञानवर्द्धक लगा ।

'है अपना हिंदुस्तान कहां : वह बसा गांवों में' लेख में गांवों का प्रस्तुत वृत्तांत ज्ञानवर्द्धक रहा । परंतु लेखक ने 'उपसंहार के तौर पर... बसा हमारे गांवों में... ।' अंतिम अनुच्छेद में गांवों के संबंध में जो टिप्पणी की, वह वास्तविक नहीं है ।

वास्तविकता तो यह है कि इस समय गांवों की स्थिति दुःखद एवं चिंतनीय है । वहां पार्टीबाजी, गुंडागिरी, ईर्ष्या एवं द्वेष का बोलबाला है । 'नेताओं' के भेष में घूम रहे पुलिस के दलाल एवं सामंती तत्व गरीब जनता को परेशान कर रहे हैं और उनका आर्थिक शोषण कर रहे हैं । बढ़ती हुई जनसंख्या के साथ-साथ बेकारी एवं बेरोजगारी में तेजी से वृद्धि हो रही है, शांति एवं सुरक्षा की स्थिति इतनी दयनीय हो गयी है कि संपन्न परंतु अपनी रक्षा में असमर्थ व्यक्ति गांव छोड़कर शहरों में बस रहे हैं । जातिवाद एवं ऊंच-नीच की भावना अभी भी इतनी तीव्र है कि सम्मान, सुरक्षा, शांति एवं रोजगार की दृष्टि से छोटी जातियां शहरों की ओर तेजी से भाग रही हैं । उपरोक्त स्थिति का ही परिणाम है कि शहरों की आबादी तेजी से बढ़ रही है तथा गांवों की जनसंख्या तेजी से घट रही है और 'गांव भूतों के डेरे' एवं नगर 'देवों के निवास स्थान' की कहावत चरितार्थ हो रही है ।

— **डॉ. शकुनचंद गुप्त**

— **लालगंज, जिला— रायबरेली**

जीवन के प्रेरक अहसासों से युक्त हृदयग्राही स्तंभ 'दस्तक' के अंतर्गत 'धरती का फर्ज' पढ़कर प्रतिभापलायन के बारे में सोचने पर बाध्य हुआ । 'इनसानियत' पढ़कर लगा, हमारे मानवीय मूल्य अभी भी जीवित हैं । इसके साथ 'सहायता का सुपरिणाम' पढ़कर लगा कि जीवन की सफलता हृदय की विशालता, पवित्रता एवं संवेदनशीलता पर निर्भर करती है ।

— **प्रदीप पालीवाल**

— **इटावा**

कादम्बिनी

वर्ष २९, अंक १०
अगस्त, १९८९

आकल्पं कवि नूतनाम्बुदमयी कादम्बिनी वर्षतु

निबंध एवं लेख

स्थायी स्तंभ

आवरण : बंधु खन्ना (युवती)

कादं-1

कार्यकारी अध्यक्ष
नरेश मोहन

संपादक
राजेन्द्र अवस्थी

एक छोटे से पौधे को उखाड़ो तो जमीन का सीना भी फट जाता है।

संपादकीय परिवार

सह संपादक : **दुर्गाप्रसाद शुक्ल**
वरिष्ठ उप-संपादक : **प्रभा भारद्वाज**
उप-संपादक
डॉ. जगदीश चंद्रिकेश, भगवती प्रसाद डोभाल, सुरेश नीरव, धनंजय सिंह

कला विभाग प्रमुख : **सुकुमार चटर्जी**

चित्रकार :**पार्थ सेनगुप्त**

पता : संपादक
**'कादम्बिनी', हिंदुस्तान टाइम्स लि., १८-२०
कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१
वार्षिक मूल्य : ६४ रुपये ।**

काल-चिंतन

एकांत, सूनापन और सांस लेती हवा के स्वर। थका हुआ दिन करवटें बदल रहा है, खुले आकाश में तारे हैं और उन पर रौब जमाता चंद्रमा।

हवा बदल गयी है, उसकी गरमी झीलों में है, वह हलकी-सी कांपती है।

दूर-दूर तक रोशनी फैली थी, अब दीये टिमटिमा रहे हैं।

कोई भटियाली गा रहा है।

कहीं से बांसुरी के सुर उभरकर लहरों-से तैरने लगे हैं।

□

—यह परिवर्तन कैसा ? क्यों होता है ?—सोच में पड़ जाता हूं।

—अभी-अभी खंडहर स्मृतियों का सिलसिला खोज रहे थे। क्या हुआ ? कोई महल बनाने लगा है ! तो क्या सुबह वहां महल खड़े मिलेंगे ?

—आवाजें आ रही हैं। शायद मेहनतकश कारीगरों की हैं जो एक रात में महल खड़ा करने में जुटे हैं।

—क्या हुआ है इन्हें, क्यों टूट पड़े हैं सब; नष्ट कर देंगे संपदा को ?

—तब न एकांत होगा, न भटियाली के गीत, न बांसुरी के स्वर।

—संभव है लेकिन यह क्या ? अचानक घुंघरुओं की आवाजें और सरसराते मद्धम स्वर प्रकट हो रहे हैं। लगता है, कोई प्रेतात्मा है। प्रेतात्मा होगी तो महल नहीं बन सकेगा।

—नहीं बनना चाहिए महलों को।

—ये प्रेतात्माएं बड़े-बड़े शहरों में भी क्यों नहीं चली जातीं। 'बड़ा' होने का एहसास तो टूटेगा।

□

—बड़े होने के एहसास ने ही हमें पराजित किया है।

—जिस दंभ और जयनाद को शक्ति माना जाता है, वह सच पूछिए तो समय

के हथौड़ों की आवाजें हैं,
—टूटने का एक क्रम है ।
—स्वीकारेंगे नहीं, भ्रम में जीने के आदी हैं ।
—प्रेतात्माएं जिस दिन हमला कर देंगी, वही शांति होगी, जो मुझे आवृत्त किये है ।
—सोच-समझ के बीच कहीं शांति की सरस्वती बहेगी ।
—हत्याओं, आत्महत्याओं, हमलों, बलात्कारों और खून के धब्बों से रंगे इन अखबारों से बचा जा सकेगा ।

□

—कभी पलायन भी करना चाहिए; बेजान कहे जाने वाले सबसे शक्तिशाली जानदार फैली चादर के नीचे बैठकर ठहरना—अपनी आयु को जीवनदान देना है ।
—सोच यहां रुकता नहीं, बढ़ता है । सोच के सोये हुए दरवाजे खुल जाते हैं, खिड़कियों की जालियां कटकर गिर जाती हैं ।
—अपनी भीतरी आवाज के साथ कोई आवाज और आकर मिलती है । आत्मीय, एकाकार होकर सिर पर हाथ फेरती है ।
—सिर पर किसी का हाथ हो भयमुक्त । सोचें क्यों पलायन की, चिंताओं को धूप की तरह नहीं सूखी लकड़ियों-सा जला दें । निर्मल आकाश और शीतल चंद्रमा हमारा अभिषेक करेगा ।
—सोचा है आपने कभी इस महत्त्वपूर्ण तथ्य को ? अपने माथे पर तिलक भले लगा लें किसी का हाथ उस पर बिछ जाए तो वही तिलक ज्योतिर्मयी शक्ति का केंद्र बन जाएगा ।
—खोजिए, मिलना सहज नहीं है । कौन रखता है हाथ ऐसे । विश्व सौदागर बन रहा है तो किसी खोखलेपन के भीतर नहीं, इन्हीं हाथों का उसने भी

सहारा लिया है ।
—वही हाथ रखे नहीं जाते पसरने लगे हैं ।
—हाथ पसरेंगे तो मुट्ठी बंधेगी ।
—मुट्ठी बंधेगी तो वह आक्रमक होगी ।
—आक्रमक होगी तो प्रेम और सुरक्षा अपना रास्ता बदल देंगे ।
—नींद सो जाएगी कुंभकरण-सी, फिर पहरुआ कहां होगा ।
—प्रश्नों के घेरे आवृत्त कर लेंगे और सारे उत्तर झूठे मिलेंगे; यानी

□ सागर पार कर लिया तो सागर छोटा नहीं हो गया ।

□ फूल तोड़ लिये तो महकने की सजा से वे मुक्त हो गये, सुगंध हमारे पास से चली गयी ।

□ बांध बना लिये तो आगे सूखा छोड़ दिया जो कभी रेगिस्तान भी बन सकता है ।

□ बंधा हुआ बांध तबाही नहीं कर सकता कैसे सोच लिया ?

□ हर मांग सिंदूर-भरी होगी; होगी तो, सुरक्षा कवच नहीं रहेगी वह !

□

—सोचने के लिये बहुत कुछ है ।
—सोच एक चिंतन है और चिंतन समय को भी पी जाता है ।
—चिंतन महागरल है, नागों की क्या बिसात ।
—इसलिए सोच के द्वार सदा खुले रखना अपने आपको जीवनदान देना है ।
—सोच से अपने विचार ही पुष्ट नहीं होते, विचारों का महाजाल केंद्रीभूत होकर हमारे भीतर समाहित हो जाता है ।
—यहां पहुंचकर मृत्यु भय नहीं है, भय सहपाठी है; चिंता पहरेदार है, दुःख जंगलों का सूखा पत्ता है ।
—तत्ववेत्ताओं ने यहीं सिद्धि पायी है । उन्होंने आश्वस्त कर दिया है कि कृपाण से भी पैनी श्रद्धा है, विश्वास है, भक्ति है, आशा और विश्वास है, विवेक है,

ज्ञान है जो सर्वोपरि सद्‌चेतना का उद्‌घोषक है ।

□

—यह समझ लिया न कि सोच वह परमज्ञान है, जिसे पाकर मनुष्यता को दैवत्व की संज्ञा मिलती है ।

—विश्व मानवता विकास के लिए कृत-संकल्प है । वह विकास के विविध आयाम निरंतर खोजती रहती है । इसी क्रम में आज भूतल यहां तक पहुंचा है ।

—यह एकदम अलग प्रश्न है कि इस यात्रा में विनाश के कितने बीज बोये गये हैं, कितने महास्वर उभरे हैं और उभरते रहते हैं ।

—ऐसे तत्वों की चर्चा आज नहीं । आज शांति है, समादर है, चेतना के साथ भागेदारी है, तब बुद्धि निर्मल होगी ।

—निर्मल बुद्धि विकास के सद्‌ग्रही मार्ग ही खोजेगी ।

—संस्कृतियों के खंडहरों में से गोताखोरों की तरह वह उससे आगे की संस्कृति को प्रस्थापित करेगी ।

—शक्ति पहचान का केंद्र नहीं है, पहचान का केंद्र है संस्कृति । मनुष्य हो या राष्ट्र, दोनों अपनी शालीनता से ही छोटे-बड़े होते हैं ।

—शक्तियों को सूखते हुए देखा है, शक्तियों को धराशाई होते देखा है, शक्तियों को कांपते और थरथराते देखा है ।

—सौंदर्य कहीं है और शाश्वत है; मुसकान कहीं है और शाश्वत है, तो उस हर क्षण संस्कृति को हमने खड़े पाया है ।

□

—इसी प्रसंग में कभी मैं आंसुओं के बारे में सोचता हूं :

□ आंसू कभी झरने-सा झरते क्यों हैं ?

□ आंसू बिखरते हैं और झड़ी लगाते हैं ।

□ गिर गये आंसू तो भरते हों क्यों आंखों को

□ दिल छोड़ दिया फिर वहां पहुंचने की इच्छा क्यों ?

—अपना घर जो छोड़ दे उसकी नियति बनजारा है ।

—ऐ बनजारे ! तुम्हें तड़पाने का अधिकार नहीं है । तुम्हें जमीन मांगने का हक नहीं है ।

—शक्तियां जब टूटती हैं तो आंसू बनती हैं ।

—संस्कृति एक तो टूटती नहीं, दब गयी तो रेत बनती है ।

—रेत सहज-साध्य है ।

—रेत से ही शीशा बनता है, जिसमें सारा सौंदर्य और अ-सौंदर्य आंका जाता है ।

—एक मजबूत दीवार है रेत उसमें आंसू नहीं है ।

□

—कितने प्रसंग उठ खड़े हुए इस एक अकेली रात में ।

—अकेलापन न होता तो कुछ भी न होता, सोच में काई लगी होती ।

—खंडहर खड़े रहेंगे इसीलिए, बनेंगे नहीं महल ।

—खंडहरों से घुंघरूओं की आवाजें आती रहेंगी और रातभर अखंड नृत्य होते रहेंगे ।

—परिवर्तन स्वागतेय हैं ।

—ओ निःशब्द, शांत, शीतल चांद की हथेली पर मौन बिखरा भूतल स्थिर हो जा, 'सोती हुई राजकुमारी' की कथा की तरह, किसी राजकुमार को नहीं आने दिया जाएगा ।

—याद भी नहीं कि आज कौन जयी हुआ था, कौन पराजित, किसने क्या खोया, क्या पाया ?

—ये तो बस भरपूर पाने के क्षण हैं, कैद हैं मेरी मुट्ठी में ।

बैताल सुनो-१४

बजाओ भइया हड़ताली बीन



'अरे ! अचानक हम कहां आन पहुंचें' सुबह धूलभरा सूरज जब निकला तो बैताल को अजीब-सा लगा । कल तक तीतर-बटेर के शहर में थे आज कहां आ गये ।

महाराजा विक्रम तब भी सो रहे थे । रेलगाड़ी में आये थे जो पूरे तेरह घंटे लेट थी । रास्तेभर विक्रम परेशान रहे । कहते रहे— यह भी कोई 'राज' है, १३ घंटे लेट रेलगाड़ियां चलती हैं । न खाने को कुछ और न गरमी का जरा-भी खयाल । इससे तो धारा नगरी ही अच्छी थी । वहां रेलें भले न हों, लेकिन आलीशान बग्घी, तांगे और छकड़े ! तांगे का घोड़ा भी वो खाया-पिया कि जरा-सी लगाम खींचो और हलकी-सी किक लगाओ कि छूमंतर । हवा से बातें करे है । घोड़ा भी मामूली नहीं— ठेठ काबुली । रोज मालिस होती और ढेर चने खाने को मिलते । दिनभर दौड़ता घोड़ा पसीने से भले डूब जाए लेकिन सवारी को ठेठ समय पर पहुंचाता था । धारा नगरी के राजा के पास बग्घी थी । उसमें चार घोड़े जुते होते और चारों मिलकर जब हिनहिनाते तो क्या कहने । राजा बग्घी के पास पहुंचते तो घोड़े गरदन झुकाकर 'प्रणाम' करते थे । जहां जानवर भी इतना शालीन और समझदार हो वहां आदमी के क्या कहने ।

'बैताल सुनो, [illegible]

विक्रम बराबर दांत पीसते रहे । चाणक्य नगरी के राजा के राज्य में कितना अंधेर है— जब चालक चाहे गाड़ी रोक दे । वह भी जंगल में । गरमी ऐसे गिरे है जो कोई आग को छानकर राख की तरह फेकता हो । जरा भी तरस नहीं । भूख, प्यास लगे तो लगे, राजा के ठेंगे से । सुननेवाला कोई नहीं । अदालत जाओ तो जुर्म साबित करो । सिर पीटें अपना जुर्म साबित करने के लिए । कह दिया कि आगे एक रेलगाड़ी के पहिए पटरी से उतर गये हैं । कई मरे, कई घायल ! राहत काम जोरों से जारी है । वह भी कैसी रेल जो पटरी से उतर जाए, लच्छन अच्छे नहीं

हैं । फिर आना सिपरसाहों का और घोषणा करना कि हर मरनेवाला पांच हजार रुपये पाएगा, घायलों को दो हजार मिलेंगे । मरनेवाला क्या पांच हजार रुपये लेने के लिए एक बार सीधे खड़ा हो जाएगा !

बैताल सब समझ रहा था, राजा विक्रम रास्तेभर परेशान रहे ! अरे, जो मर गया सो मर गया, घायलों को तो देखो ! बताया गया देखें कहां से, कौन देखे— डागधरों ने हड़ताल कर रखी है ।

'तो महाराज' बैताल बोला, 'नर्सों के हाथ कितने नरम होते हैं !'

विक्रम चिल्लाये, 'तूने किसी नर्स का हाथ पकड़ा है !'

बैताल लड़खड़ाया, 'नहीं सरकार, मैं कहां से पकड़ता, कैसे पकड़ता, आपके रहते !'

'चुप रह,' विक्रम की जरा-सी डांट काफी है ।

सो मुसीबतभरा रास्ता काटकर लौटे विक्रम अब भी सो रहे थे । बैताल ठहरा सेवक, उसे तो सुबह उठना ही होगा ।

बैताल ने शोर सुना । देखा एक जुलूस निकल रहा है । लोग जोर-जोर से चिल्ला रहे हैं :



'ले के रहेंगे, ले के रहेंगे ।'

'नहीं चलेगा, नहीं चलेगा '।

'एक दो तीन'

'चार पांच छः सात आठ नौ दस'

'ग्यारह बारह तेरा,'

'कितना बड़ा खड़ा है बखेड़ा'

'एक की मिले तेरा में—'

'हों जेब में बस एक दो तीन'

'बजाओ भइया हड़ताली बीन !'

'महाराज, महाराज' बैताल ने खूब शोर किया, इत्ता विक्रम जाग उठे ।

'क्या है ?' विक्रम ने पूछा ।

'सरकार, यहां के लोग तो सड़कों पर कविताएं करते हैं !'

'सड़कों पर कविताएं !' विक्रम उठ बैठे और बरामदे में आ गये ।

'हां, महाराज; अजब नगरी है, यहां का हर आदमी कवि है । धारा नगरी में तो कवियों को ढूंढ़ना पड़ता था । मिल जाते तो महाराज उनका सम्मान करते । यहां तो डगर-डगर कवि कविताएं सुनाते हैं । वह भी

दहाड़ मार-मारकर । उनके आगे, पीछे, तिरछे, अगल, बगल पुलसिया चले है । हाथ में डंडे हैं, बांस की जाली है और कुछ तो बंदूक लिये हैं !

राजा विक्रम जोर से हंसे । हंसे क्या हंसना शुरू किया तो हंसते रहे । बैताल आंखें फाड़े देखता रहा । विक्रम ने समझाया, 'बैताल तू मूर्ख है !'

— 'मैं मूर्ख !'

— 'हां, तू मूर्ख ! समझता भी नहीं, ये सब अपनी मांगों के लिए प्रदर्शन कर रहे हैं !'

— ' महाराजा, धारा नगरी में तो जनता राजा की जय-जयकार करती थी !'

'यह धारा नगरी नहीं है, यह चाणक्य नगरी है, समझे !' विक्रम ने बैताल को ऐसा समझाना शुरू किया जैसे कोई बच्चे को समझाता है ।

विक्रम ने कहना शुरू किया— जमाना बदल गया है । धारा नगरी के राज में प्रजा सुखी थी, घी-दूध की नदियां बहती थीं । सब चीजें आसानी से मिल जाती थीं । तब एक से तेरह तक की गिनती नहीं गिननी पड़ती थी । प्रजा की चाह भी सीमित थी । राजा-प्रजा में एका था । हां, कुछ चोर-उचक्के थे, उन्हें मुंह कालाकर गधे पर बिठा शहर में घुमाया जाता था । थू-थू होती थी उनकी ।

चाणक्य नगरी का माहौल दूसरा है, यहां की जनता मांग करती है, राजा के दरबारी इनकार करते हैं । राजा और प्रजा के बीच दरबारियों की बड़ी-बड़ी दुकानें हैं । दुकानें होंगी तो भाव-तोल तो होगा ही । भाव-तोल पटता नहीं तो क्षुब्ध-जन सड़क पर उतर आते हैं और नारों से शहर को गुंजायमान करते हैं । चाहिए तो यह, बैताल, कि उन्हें बुलाकर उनकी बात सुन ली जाए । पूरी हो सके तो ठीक वरना उन्हें समझा दिया जाए कि भई ये देश जितना हमारा है, उतना तुम्हारा । अभी खजाना खाली है, भर जाने दो उसे, तीन के तेरह हो जाएंगे !

'वाह महाराज, क्या सुझाव दिया है आपने ! चाणक्य नगरी के राजा से मिलना चाहिए आपको । उन्हें समझाना चाहिए और यह गुरु-मंत्र देना चाहिए ।'

'चुप रह, मूर्ख' विक्रम ने डांटा, 'हम वेष बदलकर चाणक्य नगरी में रह रहे हैं । राजा के दूत कई वेषों में यहां घूमते हैं । जरा भी भनक पड़ी

चाणक्य नगरी का माहौल दूसरा है । यहां की जनता मांग करती है । राजा के दरबारी इनकार करते हैं । राजा और प्रजा के बीच दरबारियों की बड़ी-बड़ी दुकानें हैं ।



तो सब रफूचक्कर— पहले तो हम जेल में होंगे, फिर देश-निकाला दे दिया जाएगा ।'

'अपने देश ही तो जाएंगे महाराज !'

बैताल की बात सुनकर विक्रम झल्लाया—'हम चाणक्य नगरी को देखने आये हैं, तू अपने देश वापस जाना चाहता है । देख बैताल, मैंने पिछले जमाने में पाप किया था, कंधे पर शव ढोनेवाली जिंदगी कोई जिंदगी है, तेरी हो या मेरी; बेकार है ! उस पाप का प्रायश्चित यहां करेंगे हम ! तेरी मनमानी ज्यादतियां यहां नहीं चलेंगी ।'

सोच तो भला, उन नारों से क्या डरना । ये नारे लगाते रहेंगे और बहरे कान सुनते रहेंगे । समझा तू, बहरे कान सुनते रहेंगे । जानता है, यह क्या होता है, तू क्या जानेगा; तो सुन ।

एक आदमी परेशान था । उसे अपनी बेटी की शादी करनी थी । वह अपने पहचानवाले के यहां गया । उससे उसने अपनी व्यथा-कथा बतायी । वह आदमी दयालु था और लोगों की मदद करता था । उसने सुझाव दिया कि चाणक्य नगरी में पूसीकेट नाम की एक गली है । उसमें एक सेठ रहता है । सेठ दानी है । जो उसके पास जाता है खाली हाथ नहीं लौटता !

सो वह दूसरे दिन सुबह पूसीकेट रोड पर सेठ के घर पहुंच गया । पहुंचकर पायलागी की । सेठजी की तारीफ की । फिर हाथ जोड़कर कहना शुरू किया । वहां सेठजी का चाकर बैठा था, 'बोला सेठजी को कम सुनायी देता है ।'

सेठजी कानों में एक यंत्र भी लगाये थे । उन्होंने कान के पीछे हाथ रखा और इशारा किया । पास जाकर उसने बताया कि उसे अपनी लड़की की शादी करनी है !



सेठजी ने चाकर से पूछा 'के कह रियो है ?'

चाकर ने बताया, 'शादी करे है... !'

— 'कौण ! ये कर रियो है शादी !'

— 'नयीं सेठजी, छोरी की शादी करेगो ये !'

— 'नेक काम है । बोल !'

उसने कान के पास आकर जोर से कहा, 'हजूर, बीस हजार रुपये मिल जाएं तो सारा बोझ दूर हो जाए ।'

सेठजी ने हाथ हिलाया और कहा, 'कुछ सुण्यो नहीं ।' फिर उन्होंने

दूसरा कान आगे बढ़ा दिया, बोले, 'इस कान में कह !'

उसी तरह तेज आवाज में बोला वह, 'हजूर, आप बड़े दानी हैं ।'

सेठजी ने रोककर कहा, 'कह तो ।' 'बस सरकार पचास हजार रुपये मिल जाएं तो सारा बोझ उतर जाए ।'

सेठजी शांत होकर बैठ गये । बोले, 'पहलो काण ठीक थो, दूसरे में तो कुछ सुण्यो कोणी ।'

उस आदमी ने हंसी रोकी । सेठजी ने एक रुक्का लिखा और चाकर को थमा दिया । चाकर के साथ वह आदमी भीतर चला गया और उसे रुपये मिल गये ।

— 'कितने, महाराज ?'

'देख बैताल, हर चीज नहीं पूछते, कुछ तो मिले ही होंगे । दोनों कान बहरे थे तब भी सेठजी को अंतर का पता था, मिल गये होंगे कोई हजार-पांच सौ !... लेकिन बैताल, सेठ दानवीर तो था ही इसमें संदेह नहीं । खाली हाथ तो कोई गया नहीं । असल बात जहां से चली थी, वहीं तू भी चल । बात जुलूस की कर रहा था, नारों की बातें । लगाते रहो नारे, अरे, एक लगानेवाला हो तो मान भी लो, जहां लोग रोज नारे लगाते हों वहां के राजा और राजा के दरबारियों को पूसीकेट रोड का सेठ तो बनना ही पड़ेगा न !

राजा विक्रम अपने कपड़े ठीक कर सड़क पर आ गये और उस जुलूस को देखने लगे । जुलूस थोड़ा आगे चला था कि पुलसिया ने खड़े होकर बाड़ लगा दी— इसके आगे जाने का हुक्म नहीं है ।

एक चिल्लाया— हम घेरा तोड़कर जाएंगे । हमें राजा से मिलने दो ।

एक बड़ा पुलसिया बोला— राजा काम पर है, मिलने से इनकारी है, नहीं— मिलेंगे वे ।

दूसरा चिल्लाया— देखिए, हमारे पास कोई हथियार नहीं है, लाठी तक नहीं है, बस ये कागज है, मेमोरेंडम हमें उनके हाथ देने दीजिए ।

पुलसिया ने फिर कहा— नहीं ! हमें इजाजत नहीं है ।

एक ने अत्यंत विनम्र भाव से कहा— तो किसी सिपरसाह से मिला दो हमें, यह मेमोरेंडम हम उन्हें ही दे देंगे ।

पुलसिया के एक बड़े अफसर ने जीप पर खड़े होकर भोंपू से

आवाज दी— 'जुलूस निकल गया । अखबार वालों ने फोटुएं ले लीं । बस, आगे कोई नहीं बढ़ेगा । बढ़ने की हिम्मत की तो हमारे पुलसिया लाठियां चला देंगे ।



जुलूसवालों ने जोर से आवाज कसी—

पुलिसराज नहीं चलेगा
नहीं चलेगा
काफिला और बढ़ेगा, और बढ़ेगा !

भोंपू से फिर सावधान किया गया— नारे लगाना बंद करो । राजा का समय हो रहा है, उन्हें दरबार में जाना है, रास्ता साफ करो ।

— 'नहीं करेंगे, नहीं करेंगे !'

इस नारे के साथ ही दूर से भोंपू बजने की आवाज आयी । पुलसिया सतर्क । एक जीप उलटी होकर दौड़ी, वह राजा का रास्ता बदलवाने के लिए गयी थी । यहां पुलसिया की मर्दानगियां तेज, सो आंसू गैस के गोले छोड़े गये ।

विक्रम और बैताल जल्दी-से भागकर अपने कमरे में बंद हो गये । उन्होंने गीले कपड़े की पट्टी अपनी आंखों पर रखी और दरवाजे बंद कर लिये ।

बैताल बोला— महाराजा इससे तो तीतर-बटेर का शहर अच्छा था ।

विक्रम ने कहा— नहीं बैताल, जहां-जहां जुलूस निकाले जाएंगे यही होगा । यह चाणक्य नगरी के राजा का हुक्म है । राजा यहां कोई भी हो, सब एक-से होते हैं । जो चिल्लाकर राजगद्दी पा लेते हैं, उनका रवैया भी ऐसा ही हो जाता है ।

'यह है प्रजातंत्र, राजतंत्र यानी—
राज—
जनता का
जनता के लिए
जनता के द्वारा

धारा नगरी में ऐसा नहीं था, चाणक्य नगरी में ऐसा है सो तूने देख लिया । देखता जा बैताल तूझे अपने बहुत-से पापों का प्रायश्चित करना है ।

राजा विक्रम ने जम्हाई ली और खर्राटे भरने लगे । ●

औरंगजेब के बाइस वर्ष बाद तक

मंदिर टूटते रहे मसजिदें बनती रहीं

● श्रीहरि

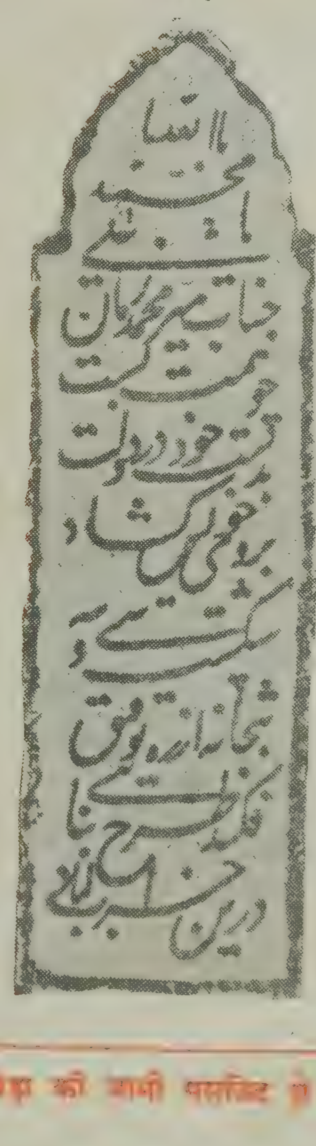
मंदिरों को गिराने और उनके स्थान पर तथा उनके मलबे से मसजिद बनाने का, जो सिलसिला मुइजउद्दीन मुहम्मद गोरी के गुलाम कुतुबुद्दीन ऐबक के राज्यकाल में ११९२ में शुरू हुआ, वह लगभग १७३०-४० तक चलता रहा। मध्य युग में विजय के बाद विपक्षी के पूजा-स्थल को नष्ट करके उस पर अपना पूजा-स्थल बनाने की आम प्रथा थी। इसका अपवाद केवल हिंदू नरेश थे, जिन्होंने कभी भी किसी मसजिद अथवा गिरजाघर को नष्ट करके उसके स्थान पर मंदिर का निर्माण

पवित्र कुरान शरीफ के अनुसार— बलपूर्वक प्राप्त की गयी दूसरे की जमीन पर अथवा अन्य मतावलंबियों के आराधना-स्थल पर मसजिद नहीं बनायी जा सकती।

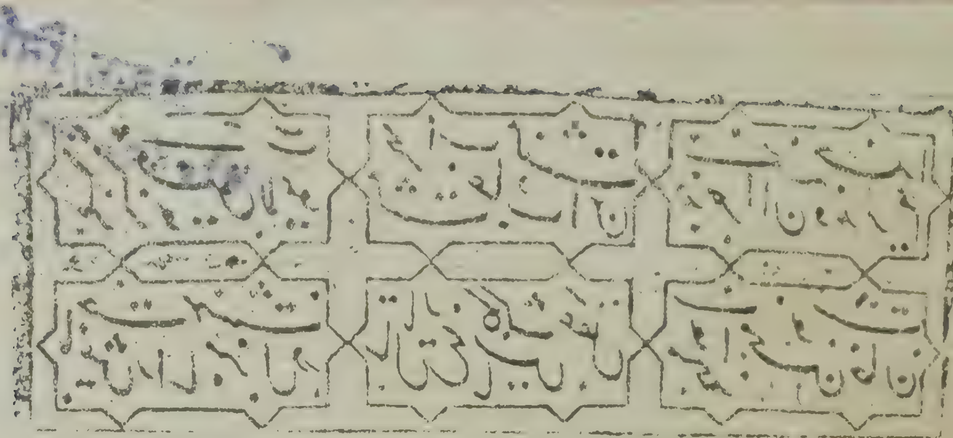
नहीं कराया। संभवतः इसका कारण हिंदू पंडितों के मन में विद्यमान अत्यधिक शुचिता का भाव या सहिष्णुता की भावना रही हो।

इस्लाम के जन्म के बाद अरब के मुसलमान एक विचित्र जोशो-खरोश से भर गये थे। वे अफरीका महाद्वीप को पार करके यूरोप में स्पेन, अलबानिया बलगारिया, यूगोस्लाविया और क्रीमिया तथा एशिया में भारत, बर्मा के अराकान क्षेत्र, मलयेशिया, सिंगापुर और इंडोनेशिया तक पहुंचे।

उनकी सेनाएं, जहां कहीं भी पहुंची, इस्लाम की सेनाओं के रूप में पहुंची। उन्होंने कहीं कम, कहीं ज्यादा, धार्मिक अत्याचार भी किये— गिरजाघरों और मंदिरों को मसजिदों में



गोवा की जामी मसजिद।



परिवर्तित किया, लोगों को इस्लाम कबूल करने पर मजबूर किया और इस्लाम स्वीकार न करनेवाले काफिरों पर अतिरिक्त कर, 'जजिया' लगाया । संभवतः मध्य युग के राजनीतिक सोच में यह स्वाभाविक था ।

राष्ट्रीय एकता के नाम पर

धर्म निरपेक्षता और राष्ट्रीय एकता के नाम पर आज कुछ इतिहासज्ञ मध्य युग की इन घटनाओं को इतिहास की पुस्तकों से हटाने और उन्हें तोड़-मरोड़कर पेश करने का प्रयत्न कर रहे हैं । उनकी मांग है कि इस तरह के उल्लेख सांप्रदायिक तनाव पैदा करते हैं और हिंदू-मुसलमानों के बीच खाई पैदा करते हैं । इसके साथ ही कुछ इतिहासज्ञ अपुष्ट अपरीक्षित और संदिग्ध साक्षी के सहारे यह प्रचारित कर रहे हैं कि औरंगजेब सहित अनेक मुसलमान शासक वास्तव में धर्म निरपेक्ष थे ।

इन विचारकों का यह भी कहना है कि मुसलमान लेखकों, इतिहासकारों और कवियों ने मुसलमान शासकों द्वारा हिंदू-मंदिरों का विध्वंस करने की जिन घटनाओं का वर्णन किया है, वह काल्पनिक और अतिरंजित हैं । अधिकांश मुसलमान लेखकों ने अपने मालिकों को खुश करने के लिए इन घटनाओं को बढ़ा-चढ़ाकर लिखा । संक्षेप में, इन लोगों को मंदिरों के विध्वंस और हिंदुओं पर मुसलमानों के अत्याचार की कहानियों को इतिहास में शामिल किये जाने पर आपत्ति है । उनके इस नजरिये से इतिहास के पुनर्लेखन का काम शुरू हो गया है ।

इतिहास के साथ हस्तक्षेप

इतिहास के साथ इस तरह का हस्तक्षेप बहुत ही चिंता का विषय है । इससे इतिहास और इतिहासज्ञों पर जनता का विश्वास पूरी तौर पर समाप्त हो जाएगा । फिर अगर, इस बारे में सरकारी प्रभाव से मुक्त लेखक, संगठन और संस्थाएं सही तसवीर पेश करने लगीं तो सरकार क्या करेगी ? क्या वह इस तरह के प्रकाशनों को रोकने के लिए 'सेंसर' लगाएगी ?

इतिहास की इस नयी व्याख्या के प्रवर्तकों का मानना है कि अंगरेजों ने भारत के दो बड़े धर्मावलंबियों को आपस में लड़ाने के लिए यह

प्रचार कराया कि मुसलमान नरेशों ने हिंदू मंदिरों को ध्वस्त कराया और उनके मलबे से उसी स्थान पर मसजिद का निर्माण कराया । इस आरोप में कुछ सच्चाई हो सकती है कि भारत में अंगरेजों ने 'फूट डालो और राज करो' की नीति का अनुसरण किया । लेकिन यह आरोप निराधार है कि उन्होंने मंदिरों के स्थान पर मसजिदों के निर्माण की और मुसलमान शासकों द्वारा हिंदुओं पर अत्याचार करने की झूठी कहानियां प्रचलित करायीं और उनको इतिहास में स्थान दिलाया ।

पूजास्थलों के ध्वंस का मूल कारण

महमूद गजनी और मुहम्मद गोरी ने लूटपाट के लिए भारत पर अनेक हमले किये । इन हमलों के दौरान उन्होंने अनेक मंदिरों को लूटा और नष्ट किया । मध्य युग में मंदिर पूजा-पाठ के सामान्य स्थल होने के अलावा सामाजिक, आर्थिक और शैक्षणिक जीवन के केंद्र होते थे । इन मंदिरों के पास विपुल संपत्ति होती थी । वे राज्य के साथ-साथ शक्ति के समानांतर केंद्र होते थे । मंदिरों की भव्य और ऊंची इमारतें विद्रोहियों को शरण दे सकती थीं । विदेशी शासकों के प्रति विरोध प्रकट करने का केंद्र बन सकती थीं । अतः लूट मार करने, स्थानीय जनता को दबाने, आतंकित करने, अपने अधीन करने और विरोध की संभावना को समाप्त करने के लिए मुसलमान शासकों ने निर्दयता और निर्ममतापूर्वक मंदिरों का विध्वंस किया और फिर अपनी इस अनुचित कार्रवाई को उचित ठहराने और धार्मिक आधार प्रदान करने के लिए उनके स्थान पर मसजिदों का निर्माण कराया ।

आज परिस्थितियां सर्वथा भिन्न हैं । आज के मानदंड उस समय की घटनाओं पर लागू नहीं किये जा सकते । लेकिन फिर भी, भारत पर मुसलमानों की विजय, कुछ मुसलमान शासकों द्वारा धार्मिक असहिष्णुता का प्रदर्शन, मंदिरों का विध्वंस और उनके स्थान पर मसजिदों का निर्माण हमारे अविभक्त साझे इतिहास का आवश्यक अंग है । इस इतिहास को बदलने के लिए हमें सत्य की हत्या करनी होगी । अगर सत्य की हत्या हो जाती है तो फिर शेष क्या बचेगा ?

क्या धर्मनिरपेक्षता और राष्ट्रीय एकता के नाम पर मध्य युग की कुछ घटनाओं को हटाने या तोड़-मरोड़कर प्रस्तुत करने से सत्य की हत्या नहीं होगी ?

दिल्ली की पहली मसजिद

मुसलमानों की दिल्ली-विजय के बाद वहां अमीर कुतुबुद्दीन ऐबक द्वारा कुव्वत-अल-इस्लाम मसजिद का निर्माण किया गया । इस मसजिद का निर्माण पृथ्वीराज चौहान और पूर्ववर्ती हिंदू नरेशों द्वारा निर्मित २७ मंदिरों को ध्वस्त करके किया गया । इनमें से प्रत्येक मंदिर के निर्माण पर दो लाख दिल्लीवाल लगे थे । दिल्लीवाल ऊंची कीमत का एक सिक्का होता था ।

कुतुब मीनार के पास निर्मित इस विशाल मसजिद के खंडहर अभी भी मौजूद हैं । लखनऊ स्थित इस्लामी अध्ययन के विश्व प्रसिद्ध केंद्र नदवातुल उलेमा के नाजिम मौलाना

तुर्की में एक प्राचीन गिरजाघर को गिराके कई बार मसजिद और गिरजाघर बनाया गया, अब एक ऐतिहासिक रूप दे दिया गया है।

अब्दुल हई की पुस्तक, 'हिंदुस्तान इस्लामी अहद में' के अनुसार यह दिल्ली में निर्मित पहली मसजिद थी। इसका निर्माण हिजरी ५८७ (सन ११९२) में शहाबुद्दीन गोरी के आदेश पर कुतुबुद्दीन ऐबक ने कराया था। जब प्रारंभ में मसजिद बनायी गयी तो मंदिर को ध्वस्त करके उसके कुछ भाग मसजिद में शामिल कर लिये गये। बाद में शमसुद्दीन आल्तमश के बादशाह बनने के बाद यहां कुतुब मीनार का निर्माण कराया गया।

कुव्वत-अल-इस्लाम के निर्माण के बाद ध्वस्त मंदिरों का जो मलबा शेष था, उसका अधिकांश हिस्सा कुतुब मीनार में लगा दिया गया। शेष का इस्तेमाल अल्लाउद्दीन खिलजी द्वारा अधूरी छोड़ी गयी मीनार के निर्माण में किया गया। कुछ समय पूर्व कुतुब मीनार की मरम्मत के दौरान मीनार में चिनी गयी अनेक देवी-देवताओं की मूर्तियां मिली थीं।

अटाला देवी की मसजिद

मौलाना अब्दुल हई की इसी पुस्तक के अनुसार जौनपुर में सुलतान इब्राहीम शर्की ने अटाला देवी के भव्य मंदिर को तोड़कर मसजिद का निर्माण कराया। सुलतान इस मसजिद में जुमे और ईद की नमाज अदा करता था, काजी शहाबुद्दीन यहां पढ़ाते थे। डॉ. ईश्वरी प्रसाद की इतिहास की पुस्तकों में, जो आज से ४०-४५ वर्ष पूव पढ़ायी जाती थीं, इस मसजिद का चित्र रहता था और उसे 'अटाला देवी की मसजिद' के नाम से दर्शाया जाता था।

जौनपुर में अकबर के राज्य काल में १५६७ में मुगल सम्राटों के एक उच्च अधिकारी, दीवान लछ्मन दास द्वारा निर्मित एक अन्य मंदिर को गिरवाकर मसजिद बनवायी गयी। यह मसजिद हम्माम दरवाजा मसजिद के नाम से जानी जाती है। मसजिद में लगे एक शिलालेख के अनुसार—

"तमाम शुक्रो अहसान उस अल्लाह का जिसकी जात अदली और अबदी (जो अनादि और अनंत है) और जिसके मार्गदर्शन में काफिरों का मंदिर खुदा की दुआ का स्थान बन गया। इसके पुरस्कार स्वरूप खुदा ने मसजिद बनानेवाले के लिए बहिश्त में एक घर बनाया।"

मौलाना अब्दुल हई की पुस्तक में हिंदुस्तान की मसजिदों के बारे में जो अध्याय है, उसमें हिंदू मंदिरों को ते कर बनायीं गयीं सात मसजिदों का वर्णन । उनमें से दो का हम उल्लेख कर चुके हैं। त्तक के अनुसार कन्नौज के किले के भीतर क ऊंचे स्थान पर एक भव्य मसजिद है।

सभी जानते हैं कि इसका निर्माण एक हिंदू मंदिर के स्थान पर किया गया। 'घराबात निगार' के अनुसार, इसका निर्माण इब्राहीम शर्की ने सन १४१४ में कराया था। इटावा में जमना तट पर निर्मित जामी मसजिद भी एक पुराने मंदिर को तोड़कर उसके स्थान पर बनायी गयी। यह मसजिद कन्नौज की शैली में बनी है। इसका निर्माण भी शर्की सुलतानों ने कराया।"

मौलाना अब्दुल हई के अनुसार अयोध्या की बाबरी मसजिद का निर्माण बाबर ने कराया।

''अयोध्या को हिंदू रामचंद्रजी की जन्मभूमि कहते हैं । उनकी पत्नी सीता के बारे में विख्यात है कि वह यहां एक मंदिर में रहती थी और अपने पति के लिए भोजन बनाती थी । इसी स्थान पर बाबर ने मसजिद का निर्माण कराया ।''

मौलाना हई ने अपनी पुस्तक में आलमगीर द्वारा हिंदू मंदिरों को तोड़कर बनारस में बनायी गयी मसजिद का भी उल्लेख किया है । मौलाना हई के शब्दों में :—

''यह कहा जाता है कि बनारस की मसजिद आलमगीर (औरंगजेब) द्वारा बिशेश्वर मंदिर के स्थान पर बनायी गयी । वह मंदिर बहुत ऊंचा था और हिंदुओं द्वारा अति पवित्र माना जाता था । इसी स्थान पर उन्हीं पत्थरों से उसने एक भव्य मसजिद बनवायी । (मंदिर के) प्राचीन पत्थरों को मसजिद की दीवारों में चिन दिया गया । यह हिंदुस्तान की प्रसिद्ध मसजिदों में है । बनारस में आलमगीर ने गंगा तट पर तराशे पत्थरों से एक दूसरी मसजिद भी बनवायी । यह भी हिंदुस्तान की एक प्रसिद्ध मसजिद है । इसमें २८ मीनारें हैं, जिनमें से प्रत्येक २३८ फुट ऊंची है । यह गंगा के तट पर है और उसकी नींव नदी के जल के नीचे है । आलमगीर ने मथुरा में भी एक मसजिद बनायी । कहा जाता है कि यह गोविंद देव मंदिर के स्थान पर बनायी गयी, जो बहुत, मजबूत सुंदर तथा भव्य था ।''

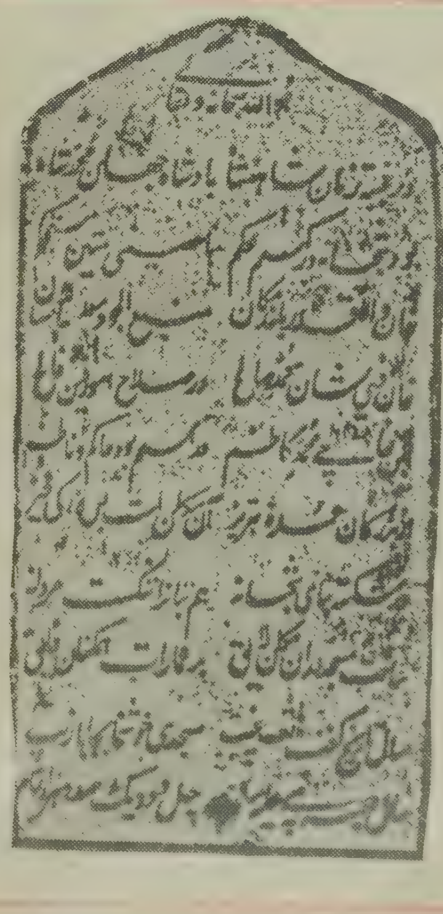
महाराष्ट्र के पूना जिले के घोडा नामक स्थान पर निर्मित मसजिद में लगे एक पत्थर में कहा गया है :

''ओ अल्लाह ! ओ मुहम्मद ! ओ अली ! जब मीर मुहम्मद जमा ने फैसला किया तो उसने अपने हाथ से अपने लिए समृद्धि के द्वार खोल दिये । उसने तैंतीस मंदिरों को नष्ट किया (और) खुदा की मेहरबानी से उसने इस नरक में एक इमारत की आधारशिला रखी ।''

गुजरात के बनासकांठा जिले में मालन की जामा मसजिद भी यही कहानी कहती है ।

''खान-ए-आजम यूलुघ खां ने काफिरों का दमन करने के बाद जामी मसजिद का निर्माण किया । उसने तलवार की धार से मंदिरों, मूर्तिपूजकों और मूर्तियों का विनाश किया... और इस इमारत का निर्माण किया । उसने मूर्तियों से इमारत की दीवारें और दरवाजे बनाये । प्रत्येक पत्थर इस्लाम के मतावलंबियों के सिर झुकाने की जगह बन गया ।''शिलालेख के अनुसार मसजिद का निर्माण १४६२ में महमूदशाह बघर्रा के शासनकाल में किया गया ।

आंध्र प्रदेश के कुरनूल जिले में कुहमत में गाछीनाला मसजिद है । इसका निर्माण परवर्ती मुगल सम्राट मुहम्मदशाह के शासनकाल में कुहमम के प्रसिद्ध मंदिर को ध्वस्त करके किया गया । मसजिद में लगा शिलालेख इन शब्दों में




ताज़गी आई, रौनक़ छाई
हमाम से!
हमाम जादू जगाए पहले से कहीं ज़्यादा
ताज़गी और रौनक़ लाए ताज़गी भरी
खुशबू तन-मन में बस जाए.
भरपूर मुलायम झाग सदाबहार हमाम
ताज़गी और रौनक़ के एहसास के लिए.
हमाम
सारे परिवार का साबुन
Hamam
THE FAMILY SOAP
हमाम
टाटा उत्पादन

सके निर्माण की कहानी कहता है :

वह अल्लाह है । तमाम अजमतें (बड़ाइयां) ल्लाह पाक के लिए हैं... मुहम्मदशाह के महान ासनकाल के दौरान कुहमुम में एक सुस्थापित दिर था... मुहम्मद शाह ने, जो इस्लाम की ानदारी से सेवा करके फलता-फूलता है, मंदिर ी इमारत को जमींदोज कर दिया और पुरुषोचित ीके से मूर्तियों को तोड़ा । उसने मंदिर के स्थान र एक उपयुक्त मसजिद का निर्माण कराया, जो ास-पास की इमारतों से बहुत ऊंची है ।"

मसजिद के निर्माण का वर्ष १७२९-३० या गया है । इसका अर्थ है कि औरंगजेब की ्यु के २२ वर्ष बाद और मुगलिया सल्तनत पतन के दिनों में भी मंदिरों के विनाश की ति नहीं छोड़ी गयी थी ।

इस पृष्ठभूमि में यह कहना कि मुसलमान सकों ने भारत में मंदिरों को नष्ट करके सजिदें नहीं बनायीं, इतिहास और तथ्यों को कारना है । मध्य युग धर्मोन्माद और धार्मिक सहिष्णुता का युग था । उस युग के शासकों से आधुनिक तर्क संगत व्यवहार की अपेक्षा नहीं की जा सकती ।

तथापि इसका अर्थ यह नहीं है कि हम इस सबके लिए वर्तमान मुसलमानों को दोषी ठहराएं या उनसे द्वेष भाव रखें । तुर्की में एक प्राचीन गिरजाघर को जिसे कई बार मसजिद और गिरजाघर बनाया गया, अब एक ऐतिहासिक स्मारक का रूप दे दिया गया है । भारत में भी दोनों पक्षों की सहमति से ऐसा किया जा सकता है । पवित्र कुरान शरीफ के अनुसार बलपूर्वक प्राप्त की गयी दूसरे की जमीन पर अथवा अन्य मतावलंबियों के आराधना स्थल पर मसजिद नहीं बनायी जा सकती । यदि इस भावना के अंतर्गत मुसलिम समाज के नेता हिंदू मंदिरों को तोड़कर बनायी गयी सभी मसजिदें हिंदुओं को लौटाने का प्रस्ताव करें तो सदियों से चला आ रहा हिंदू-मुसलमान का कृत्रिम भेद स्वतः समाप्त हो जाएगा । लेकिन सवाल यह है कि क्या निहित स्वार्थी तत्व ऐसा होने देंगे ? ●



खूबसूरत युवती जिससे भयभीत हैं अपराधी

दुनिया बहुत आगे बढ़ गयी है, बढ़ती जा रही है। इस विकास में स्त्री और पुरुष समान अधिकारों की बात करते हैं। बात तो करते हैं किंतु हर लड़ाई के बाद कोई हारता है तो वह स्त्री है। उसे बलात्कार का शिकार होना पड़ता है। परिणाम यह हुआ है कि औरत के साथ होनेवाले अत्याचार का प्रतिरोध करने लगीं, कर रही हैं आज की औरतें। इसकी जीती-जागती मिसाल है—लीसा—अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विवादास्पद और प्रशंसित संस्था 'गार्जियन एंजिल' की जुझारु नेता लीसा स्लीवा!

संगठन की प्रेरणा

उनत्तीस वर्षीय लीसा लंबी छरहरे बदन की अमरीका की एक बेहद खूबसूरत 'मॉडल' है। वह उस दिन को याद कर आज भी सिहर उठती है, जबकि उसके साथ एक पाशविक कोशिश चार मंजिले मकान में की गयी थी। किस तरह लिफ्ट को खराब कर दिया गया था ताकि नीचे न भागा जा सके और फिर किसी तरह जख्मी हालत में घिसटते हुए वह सीढ़ियों से नीचे आयी थी। शारीरिक और मानसिक रूप से लीसा इतनी टूट चुकी थी कि पूरे एक सप्ताह अस्पताल में भरती रहना पड़ा और चलने-फिरने के लिए 'व्हील चेयर' का इस्तेमाल करना पड़ा। पूरे एक सप्ताह बाद वह मानसिक रूप से इस हादसे से उबर पायी थी। मगर इसी दिन से उसने मन ही मन संकल्प किया कि वह जांबाज औरतों-मरदों का एक ऐसा संगठन

अवश्य बनाएगी, जो उनकी हिफाजत के लिए हर जगह मुस्तैद और मौजूद रहे । वह महिलाओं के मन में एक नया आत्मविश्वास जगाएगी और यहीं से शुरुआत होती है 'गार्जियन एंजिल' संगठन के बनाये जाने के विचार की ।

नये आत्मविश्वास का अध्याय

लीसा ने महिलाओं की सुरक्षा के लिए केवल संगठन बनाना भर ही पर्याप्त नहीं माना बल्कि उसका यह अटूट विश्वास था कि जब तक स्त्री मन के भीतर से असुरक्षा की ग्रंथि अलग नहीं की जाती है, तब तक वह ऐसे हादसों और षड्यंत्रों का शिकार होती रहेगी । लीसा का मानना है कि प्रायः जब किसी महिला पर शीलभंग के लिए हमला किया जाता है, तब वह मानसिक रूप से अपने आप को इतना असुरक्षित महसूस करने लगती है कि हमलावर के खिलाफ वह अपने आपको खड़ा नहीं कर पाती है । और उसकी कुचेष्टाओं का विरोध करने के बजाय समर्पण करने को विवश हो जाती है । लीसा का मानना है कि ऐसे समय में औरत को समर्पण का विचार न लाते हुए हमलावर गुंडे पर हमले करने का ही विचार करते हुए उस पर पूरी ताकत के साथ टूट पड़ना चाहिए और यदि हमलावर के पास चाकू या अन्य कोई घातक अस्त्र या शस्त्र है तो फिर पूरी ताकत के साथ वहां से भाग जाना चाहिए और अपना बचाव करना चाहिए ।

सुरक्षा का प्रशिक्षण

लीसा स्लीवा आज एक खूबसूरत मॉडल के साथ-साथ 'ब्लैक बैल्ट कराटे सुंदरी' भी है । वह अपने संगठन की सभी सदस्यों को जूडो और कराटे का कठिनतम प्रशिक्षण देती है ताकि आतंक्र, भय और दहशत के वातावरण में भी स्त्री अपने आप को सुरक्षित रख सके । लीसा ने एक पुस्तक भी लिखी है— 'एटीट्यूड' (दृष्टिकोण) जिसमें कि उसने बचाव और हमले की अनेक युक्तियां बतायी हैं । मसलन : अपने पर्स में पुलिस सायरन या सीटी का रखना, जिसकी आवाज सुनकर अपराधी को भ्रम हो जाए कि किसी ने पुलिस को खबर कर दी है और अब वह यदि यहां से नहीं भागा तो दबोच ही लिया जाएगा । अगर अपराधी बहुत शातिर और चालाक किस्म का है तथा वह आपकी इस तरकीब को भी यदि भांप लेता है और कुटिल मुसकान बिखेरकर कहता है कि 'सुंदर लड़कियां अपने आपको बहुत चालाक समझती हैं मगर ये क्यों भूल जाती हैं कि बाकी

लीसा स्लीवा : एक खूबसूरत मॉडल । एक दिन वह अपराधियों की कुदृष्टि का शिकार हो गयी । लेकिन यह हादसा लीसा का मनोबल नहीं तोड़ पाया । उसने एक संगठन बनाकर ऐसे अपराधियों को सबक सिखाने का निश्चय किया ।

ज्ञान-गंगा

वाचा दुरुक्तं वीभत्सं न संरोहति वाक्क्षतम् ।

(महाभारत, उद्योगपर्व ३४/७९)

वाणी के दुष्प्रयोग से जो घाव हो जाता है वह बहुत ही भयंकर होता है और भरता नहीं है ।

न तद्दानं प्रशंसन्ति येन वृत्तिर्विपद्यते ।

(भागवत ८/२०/३६)

वह दान प्रशंसनीय नहीं होता जिसके कारण जीवन निर्वाह खतरे में पड़ जाए ।

ईर्ष्यादयो जाग्रन्ति यावदन्तरात्मस्वरूपावगमो न यावत् । यावन्नरो नापि विवेकशाली भेदः क्व मूर्खे विदुषीह तावत् ।

(अमृतमंथन २७/६)

जब तक मनुष्य के अंदर ईर्ष्या, लोभ, मोह आदि का प्राबल्य है, जब तक उसको आत्म-स्वरूप का ज्ञान नहीं है, जब तक मनुष्य विवेक-शाली नहीं है, तब तक विद्वान् कहे जानेवाले व्यक्ति में और मूर्ख में कोई भेद नहीं है ।

शुक्लपक्षसमारम्भः कृष्णपक्षादनन्तरम् । कण्टकाचितवृक्षेभ्यो मनोज्ञकुसुमोद्गमः ॥

(अमृतमंथन २६/२)

शुक्ल पक्ष का आरंभ कृष्ण पक्ष के अनंतर होता है, कांटों से व्याप्त पौधों से सुंदर पुष्पों का उद्गम होता है ।

—प्रस्तुति : महर्षि कुमार पाण्डेय

दुनिया मूर्ख नहीं बल्कि उनसे ज्यादा होशियार होती है' और आपकी ओर बढ़ता है तो लीसा अपने संगठन की सदस्याओं से ही नहीं बल्कि दुनिया की हर नारी से कहती है कि वह 'ड्रेकूला' बनकर हमलावर पर टूट पड़े । अपने पैने दांतों से उसे काटकर जख्मी कर दे, उसके बाल नोच डाले और अपनी हेयर क्लिप या फाउंटेन पेन से उसकी आंख फोड़ डाले ।

इसके साथ ही लीसा का मानना है कि यंत्रणा के इस दौर में, कभी हमलावर के कत्ल का विचार मन में नहीं लाना चाहिए क्योंकि क्रोध में विवेक समाप्त हो जाता है और हत्या की संभावनाएं बढ़ जाती हैं । कानून हाथ में न लेते हुए अपने आपको बचाना, दुश्मन को थकाना, छकाना और सहायता के लिए जोर-जोर से चिल्लाना, इतना ही काफी है, अपनी सुरक्षा के लिए । सफेद टी शर्ट, लाल जर्किन, काला बैल्ट और कमांडो पैंट में सजी 'गार्जियन एंजिल' के जांबाज सदस्य अमरीका के उन अपराध जगत के दादाओं के लिए सिरदर्द बन गए हैं, जिनके लिए हर गैर कानूनी काम एक नियम है और कानून सिर्फ एक चुटकुला ।

अपने इस अच्छे और मानवीय कार्य के लिए लीसा को भी जमाने ने वैसे ही पुरस्कार दिये, जैसा कि उसका चलन है । जी हां, दो बार उस पर प्राणघातक हमले अपराधियों द्वारा किये जा चुके हैं । उसे बुरी तरह मार-पीटकर रेल की पटरियों पर फेंक दिया गया । मगर अब ये सारी बातें बीते कल की हो चुकी हैं ; आज इस संस्था का फैलाव और प्रभाव अमरीका से होता हुआ इंगलैंड तक आ पहुंचा है ।

प्रस्तुति : सुनी

आजादी तो मिल गयी लेकिन...

स्वाधीनता के बाद देश की स्थिति और विभिन्न क्षेत्रों में हुई प्रगति के संबंध में आम लोगों की राय जानने के लिए हमारे विशेष प्रतिनिधि ने कुछ लोगों से भेंट की। प्रस्तुत हैं, उनके विचारों के कुछ अंश।

बहुत कुछ पाया लेकिन

इसमें तो कोई शक नहीं है कि आजादी के चालीस सालों में पाने के नाम पर तो हमने बहुत कुछ पाया है लेकिन इस सब कुछ पाने को भ्रष्टाचार का दानव लील गया है। होने के लिए तो सब कुछ हुआ इस देश में; बड़ी-बड़ी योजनाएं बनी, कल-कारखाने लगे, बांध, पुल, नहरें बनी, हर ओर हरेक दिशा में तरक्की हुई जिन पर अकूत धन खर्च हुआ, दुनियाभर से कर्ज ले लेकर खर्च किया गया, लेकिन जितना खर्च किया गया, उतना खर्च हुआ नहीं, हां, कागजों पर दिखाया जरूर गया, बाकी का अधिकतर धन राजनेताओं, सरकारी अधिकारी और ठेकेदार की जेब में चला गया। नतीजा, इन चालीस सालों में एक नया वर्ग उभर आया— नव-धनाढ्यों का वर्ग। यही वर्ग आज चारों ओर अपने पंजे फैलाये हुए है। गरीब इन चालीस सालों में और ज्यादा गरीब हो गया, धनाढ्य पूंजीपति और मालिक और ज्यादा मजबूत। सबसे बुरी हालत तो मध्यम वर्ग की हुई है, जो दो पाटों के बीच में पिसकर रह गया है। पहले भ्रष्टाचार नीचे की सीढ़ी से शुरू होता था, आज ऊपर की सीढ़ी से। जब ऊपर से भ्रष्टाचार शुरू है तो लाजिमी है कि वह शासन और समाज की रग-रग में फैल चुका है कैंसर की तरह और इसका कोई इलाज नजर नहीं आता इसलिए इन वर्षों में जो कुछ पाया, कमाया है वह सब कुछ नजर है इस 'कैंसर' के।

—**आर्य मित्र** सेवानिवृत्त अधिकारी

भविष्य के प्रति आस्था

स्वाधीनता के बाद देश ने निस्संदेह काफी तरक्की की है। यह बात दूसरी है कि आजादी के भारत का जो सपना हमने देखा था, वह बिलकुल चूर-चूर हो गया है। शायद हम लोगों की अपेक्षाएं अव्यावहारिक थीं। कुछ आदर्श सिद्धांत रूप में बहुत अच्छे होते हैं और युवा पीढ़ी भावुकता में आकर उन्हें जीवन में अपनाना चाहती है। व्यक्तिगत रूप में ऐसे

आदर्शों को शायद अपनाया भी जा सकता है लेकिन जब समाज को उनके अनुसार ढालने का अवसर आता है तो कई दिक्कतें पैदा होती हैं, कारण समाज पर कई तरह के दबाव काम करने लगते हैं। जैसे रामराज्य का आदर्श स्वतंत्रता-पूर्व के दिनों में अतिशय लुभावना और प्रेरक था लेकिन आजादी के बाद जो स्थितियां बनीं, उनमें उस आदर्श को अपनाना काफी कठिन था। द्वितीय विश्वयुद्ध के कारण हमारे समाज में जो रिश्वतखोरी और कालाबाजारी की प्रवृत्ति घुस आयी थी, आजादी के बाद वह खत्म होने की बजाय सुरसा के मुंह की तरह बढ़ती ही गयी। जिन लोगों अर्थात राजनीतिक नेतृत्व पर इस बुराई को खत्म करने का दायित्व था, वह धीरे-धीरे स्वयं उसका शिकार होता चला गया। क्यों ? इसके कई कारण हैं। पर घनघोर निराशा के बावजूद मुझे भारत के भविष्य के प्रति बड़ी आस्था है। गालिब ने कहा भी है—

दर्द का हद से गुजरना है दवा हो जाना !

— एस. नारायण प्राध्यापक

भ्रष्टाचार बहुत बढ़ गया है

अंगरेजों ने हमारा बहुत ज्यादा शोषण किया था। यों तो मुगलों के राज्य में भी शोषण था पर वह अंगरेजों के समय ज्यादा था। आजादी के बाद देश की प्रगति तो हुई लेकिन धीमी। हम अपने प्राकृतिक संसाधनों का भरपूर लाभ नहीं उठा पा रहे हैं। देश में भ्रष्टाचार बहुत बढ़ गया है। लोग बहुत स्वार्थी होते जा रहे हैं। मित्रता-अपनत्व का भाव कम होता जा रहा है। नयी पीढ़ी की होने के नाते मेरी सरकार से अपेक्षा है कि वह भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाये और प्राकृतिक संसाधनों एवं देश की वैज्ञानिक प्रतिभा का लाभ उठाये ताकि देश में गरीबी कम हो। संविधान ने १४ वर्ष की अवस्था तक निशुल्क शिक्षा की गारंटी दी है, पर व्यावहारिक रूप में वह पूरी तरह अमल नहीं हो पा रही है। देश में बाल-मजदूरों की बढ़ती संख्या चिंतित करनेवाली है।

—शिल्पा तिवारी छात्रा

सशक्त विपक्ष का अभाव-खतरनाक

देश की स्वाधीनता की बेला में बहुत छोटा था— लगभग पांच वर्ष का। एक तरह से मेरा लालन-पालन आजाद देश की जलवायु में हुआ। यद्यपि हमारे परिवार को अभाव में जीना पड़ रहा था, पर पिताजी कहते थे, 'अब देश आजाद हो गया है। अपनी सरकार आ गयी है। सब ठीक हो जाएगा।'

पिताजी आज नहीं हैं। शायद होते तो उन्हें निरंतर गिरते जीवन-मूल्यों को देखकर दुःख ही होता। मुझे याद है, जब देश की तत्कालीन परिस्थितियों से निराश होकर प्रसिद्ध समाजवादी विचारक साने गुरुजी ने विष खाकर आत्महत्या कर ली थी तो पिताजी ने कहा था, 'गुरुजी बहुत भावुक थे। उन्हें आत्महत्या नहीं करनी थी।' पर यदि पिताजी जीवित होते तो शायद आज के माहौल से निराश होकर वे भी आत्महत्या कर लेते, कारण वे गांधीजी के कट्टर अनुयायी थे।

जीवनभर उन्होंने अपने हाथ से काते सूत के ही वस्त्र पहने । आज की स्थिति से उन्हें घोर निराशा होती । खैर...

आजादी के बाद मुझे जिस बात का अभाव सबसे अधिक खटकता है, वह है एक सशक्त विपक्ष का । यह देश का दुर्भाग्य ही है कि पिछले चालीस वर्षों में देश में कोई भी दल अखिल भारतीय स्तर पर कांग्रेस को चुनौती देने में सक्षम नहीं हो सका है । कुछ प्रदेशों में जरूर विपक्ष उभरा है पर अखिल भारतीय स्तर पर नहीं । लोकतंत्र के लिए इसे मैं अच्छा नहीं समझता । सबसे दुःख की बात तो यह है कि आनेवाले वर्षों में भी किसी सशक्त विपक्ष की कोई उम्मीद नहीं दिखायी दे रही है ।

सत्ता की लालसा, उसे पाने के लिए हर तरह के समझौते की प्रवृत्ति समूचे देश को एक खतरनाक स्थिति की ओर ले जा रही है ।

—हरिसेवक वर्मा, **सामाजिक कार्यकर्ता**

हम तो जहां के वहां हैं !

मैं तो बचपन से लोगों के घर का कूड़ा-कर्कट ढोती आ रही हूं । अब मेरे साथ मेरी बेटी भी काम कर रही है । गांव से रोजाना चार-पांच मील चलकर आती हूं । मिलता है क्या— पांच रुपया हर घर । बीबीजी लोगों से बोली कि पैसे बढ़ाओ तो वो लोग अपना रोना लेकर बैठ जाती हैं कि दूध के दाम बढ़ गये, अखबार के दाम बढ़ गये, सब्जी के भाव बढ़ गये । मैं उनसे कहती हूं कि बाई, महंगाई हमारे लिए भी तो बढ़ी है तो गोलमोल जवाब मिलता है ! आजादी मिल गयी है, बचपन से सुनती आयी हूं पर बाबूजी, हम तो जहां के वहां हैं । हमारे गांव में भी कोई बदल नहीं हुआ है । हां, घर-घर टी. वी. जरूर लग गया है । ऐसे तो मेरे पास भी एक छोटा-सा टी वी है, किश्तों पर ले लिया था । बस, रात को उसी को देखकर सब परेशानी भूल जाती हूं ।

—चंपा बाई, **सफाई कामगार**

सामाजिक सुधार के आंदोलन नहीं

आजादी के बाद सब कुछ अच्छा ही हुआ, यह कहना तो गलत होगा, पर यह भी आरोप लगाना कि आजादी के बाद कुछ नहीं हुआ, गलत होगा । देश ने हर क्षेत्र में तरक्की की है, चाहे शिक्षा का क्षेत्र हो या विज्ञान का या औद्योगिकी का । हमारे देश में शिक्षा का व्यापक प्रचार-प्रसार हुआ है । शिक्षा का स्तर भी बढ़ा है । आज छोटी कक्षाओं के छात्रों का ज्ञान भी पहले से ज्यादा बढ़ा है । जीवन-स्तर में भी सुधार हुआ है । दरअसल समाज जो भी कठिनाइयां अनुभव कर रहा है, उसके लिए अकेले राजनीतिक नेताओं या सरकार को दोष देना गलत होगा । समाज में व्याप्त बुराइयों के लिए स्वयं समाज भी काफी हद तक जिम्मेदार है । आजादी के बाद इस देश में समाज-सुधार का कोई आंदोलन ही नहीं शुरू हुआ । ऐसा कोई व्यक्तित्व ही नहीं उभरा, जो राजनीति या सरकार से परे रहकर समाज का नेतृत्व करता । आजादी के बाद देश में ऐसे आंदोलनों की कमी ही मुझे अखरती है ।

सुनीति श्रीवास्तव, अध्यापिका

सत्यकथा



सफेदे का पेड़

● मुकुल प्रभात केदार

कहीं-कहीं प्रकृति के करिश्मे आपको मोह पाश में बांध लेते हैं !

"मेरे यहां कोई पेड़ काटने लायक नहीं है" यह सुनते ही अली हसन को बड़ी निराशा हुई और वह चुपचाप चला गया परंतु थोड़ी देर में ही लौट आया । मैं बरामदे में बैठा समाचार-पत्र पढ़ रहा था ।

मेरे निकट पहुंचकर अली हसन ने उल्लासभरे स्वर में कहा, "गेट के पास सफेदे का पेड़ बहुत बड़ा हो गया है, उसे क्यों नहीं कटवा देते ?"

एकाएक मेरी दृष्टि सामने आकाश को छूते सफेदे के पेड़ पर चली गयी । मैं कुछ सोच में पड़ गया । अली हसन ने अनुकूल अवसर देख लोभ का कांटा फेंक दिया । "मैं इस पेड़ का आपको एक हजार दे सकता हूं", अली हसन ने धीरे से कहा । मैं सचमुच माया-जाल में फंस गया । तृष्णा बढ़ी । अली हसन को पास में बैठने के लिए कहा और बोला, "एक हजार बहुत थोड़ा है ।" साथ ही भेदभरी दृष्टि से उसकी तरफ देखने लगा ।

"साहब, बारह सौ ले लीजिए," अली हसन के चेहरे पर आशा की लौ फैली हुई थी ।

बढ़ते-बढ़ते अली हसन ने कहा, "साहब, डेढ़ हजार पर मामला तै ।"

सफेदे के एक पेड़ के लिए डेढ़ हजार रुपयों की बात ने मुझे भ्रमित कर दिया ।

"मैं दो-तीन दिन में रुपया लेकर आऊंगा", कहकर अली हसन सलाम करके चला गया ।

तीस वर्ष पूर्व जब हम वर्तमान कोठी में रहने के लिए आये थे तो चारों तरफ जंगल-सा खड़ा था । बहुत से पुराने सूखे पेड़ खड़े थे । तभी

अली हसन से हमारी जान-पहचान हुई थी। सूखे और बेकार पेड़ हम उसी से कटवाते आ रहे थे।

कोठी में आने के तीन-चार वर्ष बाद मुझे नये पेड़ लगवाने का ध्यान आया। तब न वन-सुरक्षा की चर्चा सुनने में आती थी और न वन-महोत्सवों की गहमागहमी थी। वर्षभर हरियाली बनी रहे और हर ऋतु में कुछ फल उपलब्ध हों, यह सोचकर मैंने सहारनपुर, देहरादून और अन्य स्थानों से अनेक प्रकार के पेड़ मंगवाकर उनका विधिवत आरोपण किया। लखनऊ में मेरी छोटी बेटी विश्वविद्यालय में अपनी शिक्षा समाप्त होने के बाद अपने साथ अशोक और हरसिंगार के पौधे भी ले आयी। कुछ ही वर्षों में पेड़ बड़े हो गये। उनका महत्त्व प्रत्यक्ष रूप में सामने आने लगा। वे कोठी की शोभा बढ़ाने के साथ ही चारों तरफ के वायुमंडल को स्वच्छ और विशुद्ध बनाये रखते। एक प्रकार से वे अब कोठी का अंग ही हो गये। मेरा अधिक समय इन वृक्षों की छाया में अथवा इनके निकट व्यतीत होता है। मैं निःसंकोच कह सकता हूं कि अपनी वर्तमान अस्सी वर्ष की आयु में मेरे स्वस्थ और कार्यशील रहने का श्रेय इन पेड़ों को और स्वच्छ वायु को ही है।

मेरा दिल्ली बहुत आना-जाना रहता है। बच्चे और बहुत से संबंधी वहीं हैं। मिलकर खुशी होती है, सब प्रकार की सुविधाएं भी वहां प्राप्त रहती हैं परंतु यह कड़वी सच्चाई है कि दिल्ली की सीमा में घुसते ही दम घुटने लगता है और लौटने पर वहां की सीमा से बाहर आता हूं तो ऐसा लगता है कि किसी बंद कोठरी से मुक्त होकर पंछी खुली हवा में उड़ा है। चारों तरफ फैलती दिल्ली की जलवायु काफी विषाक्त हो गयी है।

वस्तुतः पर्यावरण का मामला सारे संसार के लिए चिंता की बात हो गयी है। सन १९७७ में स्टाकहोम में राष्ट्रसंघ के तत्वावधान में सौ से ऊपर राष्ट्रों की इस संबंध में विचार-गोष्ठी हुई थी। उसका निष्कर्ष यह था कि मानव इस शताब्दी के अंत तक परमाणु युद्ध से नष्ट होने से बच गया तो निरंतर बढ़ता प्रदूषण उसे नष्ट कर देगा। अनुसंधान द्वारा यह सिद्ध हो गया है कि दूषित वायुमंडल में निरंतर रहने पर मनुष्य के स्वास्थ्य को बहुत हानि पहुंचती है। वनों की लगातार कटाई और वन-भूमि के क्षतिग्रस्त होने का जल-वृष्टि और मौसम पर भी प्रभाव पड़ता है। मैं अकसर इन विचारों में खोया रहता हूं।

डेढ़ हजार रुपयों के लोभ ने उन्हें डिगा दिया और उन्होंने सफेदे के उस धवल पेड़ को काटने पर सहमति दे दी। लेकिन पेड़ नहीं कट पाया। क्यों ? क्या घट गया था अचानक ?

समाचार पत्र लिये मैं बरामदे में आकर बैठा ही था कि 'साहब सलाम' की आवाज सुनायी दी। अली हसन सामने खड़ा था। उसने एक परचा मेरे हाथ में दिया। उस पर लिखा था, 'मैंने अपने यहां आम का एक पेड़ अली हसन को काटने के लिए कहा है। नगर पालिका की

सीमा के भीतर वृक्ष काटने पर कोई पाबंदी नहीं है ।' नीचे एक वकील महोदय के हस्ताक्षर थे, जिन्हें मैं व्यक्तिगत रूप से जानता था ।

मैंने अली हसन से कहा, 'तुमने अच्छा किया लिखवा लाये हो, मैं स्वयं उनसे मिलकर वृक्ष काटने के बारे में जानकारी प्राप्त करूंगा । तुम दो-तीन दिन बाद आना ।'

उसी रात मैं अंधेरे में अचानक गिर पड़ा और मुझे गहरी चोट आयी । सुबह एकदम गला बंद हो गया । दोपहर तक ज्वर ने भी बुरी तरह दबोच लिया । दो दिन तक काफी परेशानी रही । तीसरी रात कुछ नींद आयी । आधी रात का समय होगा, मैं क्या देखता हूं, सफेदे का पेड़ साक्षात मेरे सामने खड़ा है । कुछ बुदबुदाता-सा बोला, 'आपको याद है, बीस वर्ष पूर्व आप सहारनपुर से आठ आने में मुझे लाये थे । चार महीने अपने सामने पानी दिलवाते रहे । फिर पानी देने की जरूरत नहीं रही । एक वर्ष तक मेरी देख-रेख हुई फिर तो जैसे मैं अपने पैरों पर खड़ा हो गया । किसी ने मेरी तरफ ध्यान देने की आवश्यकता नहीं समझी । अब बड़ा होकर आपकी कोठी की शोभा बढ़ाता हूं । हर तरफ से गुजरनेवाले को आपका परिचय देता हूं ।' कुछ रुककर उसने कहा, 'आपके यहां वायुमंडल को विशुद्ध बनाये रखता हूं', कहकर पेड़ चुप हो गया ।

मैं गंभीर दृष्टि से उसे देखता रहा । कुछ क्षणों के बाद स्वर में व्यथा-सी लिये वह बोला, 'आप मुझे डेढ़ हजार रुपयों की खातिर कटवाना चाहते हैं परंतु मैं तो आपकी खुशहाली का प्रतीक हूं । मैं आपके स्वास्थ्य का रखवाला हूं।'

मैं दयार्द्र-सा हो उठा और कहा, 'तुम क्या चाहते हो ?'

'मैं पूरी आयु भोगना चाहता हूं और अभी तो मुझ पर यौवन का निखार आया है ।'

मैंने देखा पेड़ के ऊपर चारों तरफ फैली हुई उसकी टहनियां झूम उठीं जैसे सचमुच उस पर मस्ती छा गयी हो । थोड़ी देर में पेड़ अंतर्ध्यान हो गया ।

मेरी नींद टूट गयी । एकदम मेरे स्मृति-पटल पर देहरादून की 'लव लेन' घूमने लगी । पचास वर्ष पहले मैंने कुछ समय देहरादून में बिताया था । तभी मुझे 'लव लेन' के बारे में पता लगा था । मसूरी जानेवाले मार्ग को छूती हुई एक संकरी-सी सड़क जिसके दोनों तरफ विशालकाय सफेदे के असंख्य पेड़ । ऊपर आकाश में दोनों तरफ से पेड़ों की डालियां आपस में मिल जातीं जैसे प्रेमालिंगन कर रही हों । 'लव लेन' के बारे में प्रसिद्ध था कि हर प्रेमी जोड़ा विवाह से पूर्व सड़क से गुजरना अब सौभाग्य की निशानी समझता है । तभी मुझे पता चला कि उन पेड़ों की आयु सौ वर्ष से ऊपर है और उनके काटने पर रोक लगी है ।

मैं फिर सो नहीं सका । प्रभात का प्रकाश फैलते ही मैं सफेदे के पेड़ के पास गया और बोला, ''तुम्हें कोई नहीं काटेगा ।''

पवन का झोंका आया और सफेदे की पेड़ की डालियां झूमने लगीं । मुझे लगा, वे मेरा अभिवादन कर रही हैं । भीतर-ही-भीतर एक नया एहसास लिये मैं आनंदित हो उठा ।

उसी दिन दोपहर तक मेरी चोट का दर्द बिलकुल गायब था । ज्वर भी उतर गया और मैं अपने को पूर्णतया स्वस्थ अनुभव करने लगा । मैं बार-बार सोचता, 'क्या इस सफेदे के

पेड़ ने ही मुझे रोग मुक्त किया है ।'

कई ग्रंथों में पढ़ा था, पेड़-पौधों में भी आत्मा होती है । जगदीश चंद्र बोस ने अपने प्रयोगों से पेड़-पौधों में सुख-दुःख अनुभव करने की प्रक्रिया सिद्ध कर दी थी । एक प्रदर्शन में एक पौधे की दर्द की आवाज सुनकर एक अंगरेज महिला की चीख निकल गयी थी । भारतीय संस्कृति में वृक्ष-पूजन की प्रथा का आधार भी उनमें चेतना को मानना ही तो है । मनुस्मृति में यह कहा गया है कि वृक्षों में अंतश्चेतना होती है और वे भी सुख-दुःख की भावनाओं से स्पंदित होते रहते हैं— **'अंतःसंज्ञा भवंत्येते सुख-दुःखसमन्विता : ।'**

मैं गहरी सोच में पड़ा था कि अली हसन मेरे सामने आ खड़ा हुआ और अपनी जेब से रुपये निकालने लगा ।

मैं अली हसन को सफेदे के पेड़ के पास ले गया ओर पेड़ पर स्नेह-स्निग्ध, दृष्टि डालते हुए कहा, ''अली हसन ! यह पेड़ नहीं कटेगा ।''

वह मन-ही-मन सोचने लगा, शायद किसी दूसरे व्यक्ति ने अधिक मूल्य देने के लिए कहा होगा । उसकी अंतः भावना का आभास मिलने पर मैंने उसे रात का सारा माजरा सुना दिया और कहा, ''अली हसन, तुमने ही दो दिन पहले मुझे अस्वस्थ पाकर दुआ मांगी थी कि मैं जल्दी अच्छा हो जाऊं । तुम्हारी दुआ इस पेड़ के द्वारा कबूल हुई है । अब यह कैसे कट सकता है ?''

अली हसन के मुख से अनायास निकला, ''या अल्ला ! तेरे करिश्मे न्यारे हैं ।''

अली हसन सफेदे के पेड़ की तरफ इशारा करते हुए बोला, ''सचमुच ही यह पेड़ आपकी कोठी की शान है । धुली चांदी का रंग लिये बिना किसी दाग-धब्बे के मोटे तनेवाला इतना ऊंचा पेड़ मैंने दूसरा नहीं देखा ।''

सफेदे के पेड़ की डालियां एक बार फिर झूम उठीं । इस बार मानो वह अली हसन का अभिनंदन कर रही थीं ।

— नवनीत, ४० सिविल लाइंस, रुड़की

क्षणिकाएं

चीरहरण

प्रशासन;
दुःशासन
और देश/द्रौपदी

चक्रव्यूह

इंटरव्यू;
चक्रव्यूह
और कैंडिडेट/
अभिमन्यु

—मदन मोहन डुकलान

सुख

दुःख के—
अंधेरों में
चमकता—
जुगनू सा

समय

क्षणभंगुर
समय,
बीतता गया,
जीवन की
तलाश में

—रमाशंकर खरे

गोष्ठी

अखिलेश्वर मिश्र, बंबई
प्र. मंत्र शब्द का अर्थ क्या है ?
□ शब्दकोष में मंत्र के अनेक अर्थ हैं, यथा— गुप्तवार्ता, मंत्रणा और वह शब्द या शब्द-समूह जिससे किसी देवता की सिद्धि या अलौकिक शक्ति की प्राप्ति हो । वेद का संहिता भाग भी मंत्र कहलाता है ।

रामाश्रय प्रसाद झा, भागलपुर
प्र. अग्नि की पत्नी का क्या नाम है ?
□ अग्नि की दो पत्नियां थीं : स्वाहा, दायीं ओर विराजमान हैं, और स्वधा बायीं ओर रहती हैं ।

भगवती यादव, गुड़गांव
प्र. कांटैक्ट लैंस आंख में क्या करता है ?
□ कांटैक्ट लैंस आंख की कॉर्निया, अर्थात पुतली के पारदर्शक भाग को ढंकता है, जिससे दृष्टि ठीक हो जाती है ।

रूपल शाह, मंदसौर
प्र. ब्रिटिश शाही परिवार के किन सदस्यों को वोट देने का अधिकार नहीं है ? महारानी हाउस ऑव कॉमन्स में क्यों नहीं जातीं ?
□ महारानी और युवराज सहित समस्त राजकुमारों को मताधिकार प्राप्त नहीं है । प्राचीन इंगलैंड में प्रजा के प्रतिनिधियों और राजा के बीच अधिकारों को लेकर झगड़ा रहता था । राजा कभी-कभी सदन में घुसकर अपने विरोधी सदस्यों को पकड़वा लिया करता था । इसलिए सदन के द्वार हमेशा बंद रहते थे । रूढ़िवादी अंगरेज अब भी उसी परंपरा का पालन करते हैं ।

जहीर कुरैशी, धुलिया
प्र. केलों को पेड़ पर ही क्यों नहीं पकने दिया जाता ?
□ पेड़ पर पकने से उनका छिलका फट जाता है और उनमें कीड़े पड़ जाते हैं ।

आलोक कुमार झा, भागलपुर
प्र. पहली हड़ताल का प्रमाण कब से उपलब्ध है ? अब तक की हड़तालों में सबसे लंबी कौन थी ?
□ पहली हड़ताल का प्रमाण ईसा पूर्व ३०९ का मिला है जब यूनान के एक आर्केस्ट्रा नेता, अरिस्तास, ने रोम में भोजनावकाश के प्रश्न पर हड़ताल की थी । अब तक की सबसे लंबी हड़ताल तैंतीस वर्ष बाद समाप्त हुई थी । इसका संबंध कोपेनहैगेन (डेनमार्क) में नाइयों के सहायकों के रोजगार से था ।

चिरंजी लाल अग्रवाल, नीम का थाना; गोविंद मांगरोले, खंडवा
प्र. वारसा संधि क्या है ? इसके सदस्य देश कौन हैं ?
□ सोवियत संघ, अल्बानिया, बलोरिया, चेकोस्लोवाकिया, जर्मन जनवादी गणतंत्र, हंगरी, पोलैंड और रोमानिया ने १४ मई १९५५ को वारसा में एक २० वर्षीय मैत्री संधि पर हस्ताक्षर किये थे और बाद में इसकी अवधि इतने ही समय के लिए बढ़ा दी गयी थी । यद्यपि अल्बानिया को औपचारिक रूप से निष्कासित तो नहीं किया गया, किंतु १९६२ से इसे वारसा संधि की बैठकों में निमंत्रित नहीं किया गया । एक अनुमान के अनुसार (१९८१) वारसा संधि की सैन्य शक्ति ४८,२०,००० है जब कि नैटो (१३ यूरोपीय

देशों, २ अमरीकी राज्यों तथा एक एशियाई देश का संघ) की सैन्य शक्ति ४९,९०,००० है।

अरुण किरण तथा प्रशांत मिश्र, दरभंगा

प्र. वाटरलू कहां है ? इस युद्ध में नेपोलियन कब परास्त हुआ तथा उसके बाद उसका क्या हुआ ?

☐ वाटरलू केंद्रीय बेल्जियम में स्थित एक गांव है। यहां ब्रिटिश, डच, बेल्जेन और जर्मन सेनाओं ने १८ जून, १८१५ को अंगरेज सेनापति विलिंग्टन के नेतृत्व में नेपोलियन बोनापार्ट को पराजित किया था। इसके बाद उसे निष्कासित करके दक्षिण अटलांटिक सागर स्थित ब्रिटेन आश्रित सेंट हेलेना नामक एक पर्वतीय द्वीप में भेज दिया गया था, जहां सन १८२१ में उसकी मृत्यु हो गयी।

प्रभावती सक्सेना, इलाहाबाद

प्र. चिलचिलाती धूप में भी तालाब का पानी ठंडा क्यों रहता है जबकि आस-पास की जमीन गरम ?

☐ वस्तुतः ठंडक वाष्पीकरण, यानी भाप बनकर पानी के उड़ने की क्रिया, से होती है। चूंकि तालाब की सतह से गरमी के कारण पानी भाप बनकर उड़ता रहता है इसलिए बहुत कुछ गरमी निकल जाती है जिसके फलस्वरूप शेष पानी का तापमान गिर जाता है।

वीना दुबे, विदिशा

प्र. स्वामी विवेकानंद की मृत्यु कब, कहां, कितनी उम्र में किन कारणों से हुई थी ?

☐ मधुमेह ने जलोदर का रूप ले लिया था। कलकत्ता में शुक्रवार ४ जुलाई, १९०२ को केवल ३९ वर्ष की अवस्था में (जन्म १२ जनवरी, १८६३) उनका देहावसान हो गया।

पुष्पलता सिंहल, सोनीपत

प्र. हंस कहां पाये जाते हैं और वे कितने रंगों के होते हैं ? एक बार में मादा कितने अंडे देती है और क्या नर भी अंडे सेता है ?



☐ संसार के लगभग प्रत्येक देश में हंस पाये जाते हैं और वे झीलों तथा नदियों के किनारे एकांत में रहते हैं। हंस सफेद होते हैं, लेकिन आस्ट्रेलिया में काले हंस भी मिलते हैं ये तुरही की तरह आवाज करते हैं। मादा एक बार में पांच से आठ तक अंडे देती है जिन्हें छह सप्ताहों तक नर और मादा दोनों बारी-बारी से सेते हैं।

अंजना अनुश्री, सीतामढ़ी

प्र. एलर्जी किसे कहते हैं ?

☐ यह वह दशा है जिसमें कोई व्यक्ति किसी औषधि या वस्तु के प्रभाव के प्रति संवेदनशील या भावप्रवण होता है जबकि सामान्य व्यक्ति उसी औषधि या वस्तु से अप्रभावित रहता है। परागज ज्वर (हे फ़ीवर), दमा, अकौता आदि रोग एलर्जी से ही होते हैं। सच कहा जाए तो

एलर्जी की पहचान आज तक नहीं हो पायी। केवल औषधि से एलर्जी हो जरूरी नहीं है। धूल, पानी, हवा और कई बार आपकी प्रकृति के विपरीत कुछ भी होने से जो होता है उसे एलर्जी कहते हैं।

सुनील कुमार यादव, आजमगढ़

प्र. विश्व के कितने देश एड्स से प्रभावित हैं ? क्या यह छूत का रोग है ?

☐ अमरीका और यूरोप तो इस रोग से प्रभावित हैं हीं, लेकिन सर्वाधिक रोगी अफरीका में हैं। यह छूत का रोग नहीं है। एड्स के रोगी से हाथ मिलाने मात्र से यह रोग नहीं होता जब तक कि रक्त प्रभावित न हो जाए या रोगी से यौन संबंध न स्थापित हो। एड्स के और भी कई कारण हैं।

माधुरी धवन, काशीपुर (नैनीताल)

प्र. कैंसर क्या पुश्तैनी रोग है ?

☐ कुछ प्रकार के कैंसरों में पुश्तैनी होने की प्रवृत्ति पायी जाती है। बच्चों की आंखों में होनेवाला कैंसर— रेटिनोब्लास्टोमा— इनमें से एक है। कुछ अन्य कैंसर, जैसे कि बच्चों के गुरदे का कैंसर जन्मजात हो सकते हैं। कहते हैं पुश्तैनी कैंसरों में महिलाओं के स्तन कैंसर, गैस्ट्रिक तथा कोलन (गुदनलिका संबंधी) कैंसर शामिल हैं, लेकिन यह शत प्रतिशत प्रमाणित नहीं हो सका है। वैसे महिलाओं को अपने स्तनों की जांच स्वयं ही करते रहना चाहिए। अधिकांश डॉक्टर कैंसर को पुश्तैनी रोग नहीं मानते।



मनोज कुमार मिश्र, बिजयीपुर (गोपालगंज) बिहार

प्र. ब्रिटेन के प्रथम तथा अंतिम राजा और प्रथम महारानी कौन थीं।

☐ सैक्शन वंश के एजबर्ट ने ८२८ से ८३९ तक इंगलैंड पर राज किया था यह रेकॉर्ड इतिहास में मिलता है। इसको ही इंगलैंड का प्रथम राजा माना जाता है। मेरी प्रथम, या 'ब्लडी मेरी', इंगलैंड की पहली महारानी थी। इसका शासनकाल १५५३ से १५५८ तक था। ब्रिटेन के पिछले राजा (अर्थात अब तक के अंतिम) जॉर्ज षष्ठ (जन्म १८९५) थे जो १९३६ से १९५२ तक सिंहासनारूढ़ रहे।

कन्हाई बोस, दरभंगा

प्र. अष्ट सिद्धि और नव निधि क्या हैं ?

☐ अष्ट सिद्धियां इस प्रकार हैं : अणिमा (इससे योगी अणुवत सूक्ष्म रूप धारणा कर सकते हैं), महिमा (विशाल रूप धारण कर सकते हैं) गरिमा (अपने को इच्छानुसार भारी बना सकते हैं), लघिमा (इच्छानुसार हलका बना सकते हैं), प्राप्ति (यह सिद्धि इच्छित पदार्थ की प्रापक है), प्राकाम्य (इच्छानुसार पृथ्वी में समा सकते हैं और आकाश में उड़ सकते हैं), ईशित्व (इससे सब पर शासन करने की सामर्थ्य प्राप्त हो जाती है), और वशित्व

(दूसरों को वश में करने की शक्ति प्राप्त होती है)।

निधियां हैं :

महापद्मश्च पद्मश्च शंगेना मकरच्छपौ ।
मुकुन्द कुन्दनीलश्च खर्बश्च निधियो नव ।।

पद्म (सत्व गुण का आधार है), महापद्म (सात्वि है), मकर (तमोगुणी है), कच्छप (इस निधि की दृष्टि से मनुष्य में तमोगुण की प्रधानता होती है । यह भी तामसी है), मुकुन्द निधि (रजोगुणी है), नन्द निधि (रजोगुण और तमोगुण दोनों से संयुक्त है), नीलनिधि (सत्वगुण और रजोगुण दोनों को धारण करती है), शंखनिधि (रजोगुण और तमोगुण युक्त है) । मार्कण्डेय पुराण में आठ ही निधियों का उल्लेख मिलता है ।

यत्र पद्ममहापद्मौ तथा मकर कच्छपौ ।
मुकुन्दो नन्दकश्चैव नीलः शंखऽष्टमो निधिः (६५/५)।।

रसिक बिहारी मित्तल, नारनौल

प्र. मानव शरीर का वह कौन तंत्र या ग्रंथि है जो प्यास लगने का आभास कराती है ?

□ मनुष्य के शरीर में गले के पास पिट्युटरी ग्लैंड (पीयूस ग्रंथि) होती है । इसी के निकट हाईपाथिलैमस ग्रंथि है, जो शरीर में जल और क्षार का परिमाण बनाये रखने का काम करती है । वह किसी भी कमी की सूचना गले को देती है तथा गला सूखने लगता है, जिससे गले के ज्ञान-तंतुओं द्वारा मस्तिस्क को सूचना मिलती है, जो हमें प्यास लगने का आभास कराता है ।

सुमित्रा मेहरा, कानपुर

प्र. मस्तिष्क ज्वर किसे कहते हैं ? इसके लक्षण क्या हैं ?

□ चिकित्सा विज्ञान में मस्तिष्क-ज्वर नाम का कोई रोग नहीं माना जाता । यह जनसाधारण द्वारा इस नाम से जाना जाता है जिसमें दो लक्षण दिखायी देते हैं : एक तो ज्वर से ग्रस्त होना और दूसरे मस्तिष्क का विक्षिप्त हो जाना । मस्तिष्क ज्वर में तीन प्रकार के रोग शामिल किये गये हैं—

(१) एनसिफलाइटिस, जिसका कारण विभिन्न प्रकार के विषाणु है (२) मेनिजाइटिस, इसमें मस्तिष्क की ऊपरी परत पर सूजन आती है तथा यह विषाणुओं और कीटाणुओं दोनों से उत्पन्न होती है, और (३) सेरिब्रल मलेरिया, जिसमें मलेरिया के कीटाणु मस्तिष्क को प्रभावित करते हैं ।

हरिश्चंद्र गैरोला, गोपेश्वर (चमोली, उ. प्र.)

प्र. भगवान शंकर के पुत्र स्वामी कार्तिकेय के मंदिर कहां-कहां हैं ?

□ दक्षिण भारत में इनके अनेक मंदिर हैं, जिनमें तिरुचंडूर, पलनी और सवरमलाई के मंदिरों की विशेष मान्यता है ।



चलते-चलते

"एक ने पूछा किसी समझदार लड़के से विवाह करना खतरनाक तो नहीं होगा ?"

उत्तर मिला "लड़का यदि समझदार होगा तो विवाह करेगा ही क्यों !"

—सूत्रधार

सन १८५७ की क्रांति का एक विस्मृत पृष्ठ

सन १८५७ के प्रथम भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम में इलाहाबाद की विशेष भूमिका रही है। वहां के स्वतंत्रता-सेनानियों ने पूरे जिले और नगर पर अपना अधिकार कर लिया था। इस समय अंगरेजों तथा उनके कुछ समर्थक सिपाहियों का एकमात्र आश्रय-स्थल इलाहाबाद किला था, जिसके भीतर वे लगभग एक सप्ताह तक जीवन-मृत्यु से संघर्ष करते रहे। कुछ इतिहासकारों ने इलाहाबाद के क्रांतिकारी नेताओं की इस बात के लिए आलोचना की है कि पूरे नगर पर अधिकार कर वे संतुष्ट हो गये और उन्होंने इलाहाबाद के किले पर अधिकार करने की कोशिश नहीं की। और यदि उस समय इलाहाबाद का किला क्रांतिकारियों के अधिकार में आ गया होता तो इस जंगे-आजादी का नक्शा ही बदल गया होता।

इन इतिहासकारों के आरोप वस्तुतः सत्यता से कोसों दूर हैं। राष्ट्रीय अभिलेखागार, नयी दिल्ली में सन १८५७ से संबंधित पुराने दस्तावेजों को पलटते समय इस बात के नये विश्वस्त तथ्य मिले हैं, जिनसे पता चला है कि भारतीय क्रांतिकारियों ने सन १८५७ की क्रांति के समय इलाहाबाद किले पर अधिकार करने का भरपूर प्रयास किया था और उसके लिए उन्होंने गंगा और यमुना पट्टी से किले की ऊंची दीवार को लांघकर रात में किले में अचानक प्रवेश कर उसे अंगरेजों से मुक्त करने की कोशिश भी की थी।

उन्होंने इसके लिए बांस की लंबी सीढ़ियां तैयार कीं, रात के सन्नाटे में उस पर चढ़ने का कई दिनों तक अभ्यास किया और एक निश्चित तिथि भी तय की जबकि क्रांतिकारी किले के अंदर दाखिल हो जाएं। लेकिन इसका भेद निश्चित अवधि से पूर्व ही खुल गया, जिसका परिणाम यह निकला कि इस योजना को तैयार करनेवाले कई क्रांतिकारियों को अंगरेजों ने पकड़ा और उन्हें तत्काल फांसी पर लटका दिया। इस तरह किले पर अधिकार करने की क्रांतिकारियों की योजना विफल हो गयी।

जब क्रांतिकारियों ने इलाहाबाद किले पर कब्जा करने का प्रयत्न किया

• उदयनारायण सिंह



किले के बाहर युद्ध का एक काल्पनिक चित्र

क्रांतिकारियों की योजना

जून १८५७ का महीना था, जबकि इलाहाबाद में भी गरमी और लू चल रही थी। इसी असामान्य मौसम में इलाहाबाद के किले में गुलाम खान और दीवान अली जेल की सजा भुगत रहे थे। इन दोनों ही कैदियों को जेल से छुड़ाने और स्वतः किले पर कब्जा करने की क्रांतिकारियों ने योजना तैयार की। क्रांतिकारी दल के नेता महबूब उल्ला तथा सफीउल्ला थे, जिन्होंने किले में रुकी भारतीय सेना के सिपाहियों से गुप्त रूप से संपर्क कायम करने, उनके सहयोग से किले पर अधिकार करने का प्रयत्न किया। इस काम में कैदी दीवान अली के भाई हातिम अली ने, जो उस समय इलाहाबाद में थे, प्रमुख भूमिका अदा की। हातिम अली मौलवी महबूब उल्ला से इस मामले में सलाह-मशविरा लिया करते थे। इन लोगों ने इलाहाबाद किले में तैनात सिख रेजीमेंट के जमादार और अन्य मुसलमानों का भी सहयोग प्राप्त किया।

किले पर अधिकार करने की योजना के मुताबिक किले के निकट बड़ा महल की दीवार का चुनाव किया गया, जहां से क्रांतिकारी दस्ते का किले में प्रवेश करने का कार्यक्रम था। इस दीवार की ऊंचाई की नाप की गयी और इसी के मुताबिक बांस की लंबी सीढ़ियां तैयार की गयीं। किले के पास ही संगम पर हमेशा रहनेवाले नाविकों को, जो अत्यंत साहसी थे और अधिक खतरनाक काम करने के अभ्यस्त भी थे, चुना गया और इन्हें दीवार पर चढ़ने का प्रशिक्षण दिया जाने लगा। ये लोग देर शाम को किले की दीवार पर सीढ़ियों के सहारे शीघ्रता के साथ चढ़ने का अभ्यास किया करते थे और दूसरे दिन सुबह होने से पूर्व ही बांस की लंबी सीढ़ियों को गंगा-यमुना के दूसरे किनारे स्थित झूसी-अरैल में ले जाकर छिपा दिया करते

थे, ताकि इसका भेद अधिक गोपनीय रखा जा सके । इस तरह का अभ्यास इन क्रांतिकारियों ने एक सप्ताह तक किया ।

इसके अलावा एक यह भी योजना तैयार की गयी— नगर के क्रीड़गंज के मुहल्ले की ओर से भी मुसलमानों का एक हरावल दल किले पर आक्रमण करे । इसके लिए नदी में कुछ नावें भी तैनात की गयी थीं ।

इस संबंध में इलाहाबाद डिवीजन के तत्कालीन कमिश्नर सी. चेस्टर को इलाहाबाद से मजिस्ट्रेट एम. एच. कोर्ट द्वारा ६ अगस्त, १८५७ को प्रेषित पत्र का विशेष रूप से उल्लेख किया जा सकता है, जिसमें उन्होंने लिखा था, "२८ जुलाई, मंगलवार के दिन मुझे डॉक्टर इरविन ने बताया कि किले के एक कैदी हयात खान ने विद्रोह कर दिया है और विद्रोह करने के लिए मौलवी (लियाकत अली) नगर में आ गये हैं । यह मुझे रात्रि-भोज के समय ज्ञात हुआ । दूसरे दिन प्रातः मैंने किले में जाकर इस कैदी से बातचीत की, जिसने बताया कि उसे यह पता चला है कि उसके दो दोस्त कैदी गुलाम खान और दीवान अली, जो मुझे सोये हुए प्रतीत हुए, यह गुफ़्तगू कर रहे थे कि दोनों के दोस्त बाहर हैं, जिनके साथ उनका पत्र-व्यवहार है लेकिन मौलवी महबूब उल्ला का विशेष रूप से उल्लेख किया जा सकता है । बताया जाता है कि उन्होंने अपने आदमियों को दानापुर और अन्यत्र भेजा था और बड़ा महल की दीवार को नापकर बांस की सीढ़ियां तैयार की जानेवाली हैं, जिसकी सहायता से दीवार को पार किया जा सके । यह पत्र-व्यवहार एक नौकर लाल मोहम्मद के माध्यम से किया जाता था, जिसने एक रंगीन चादर और पगड़ी मौलवी को भेंट की थी । इस षड्यंत्र में एक सिख जमादार भी था, जिसका परिवार बहादुर गंज के दारा इज्जत शाह में रहता था ।. . . शुक्रवार (३१ जुलाई) को प्रातः मुझे हयात खान कैदी से पता चला कि मौलवी उसी शाम को खादी अथवा उसके भाई रमजान के यहां, जो कीड़गंज का बंगाली मुसलमान था, आनेवाला है और अंदर के कैदी और बाहर के लोग किले पर बड़ा महल के निकट की दीवार को फांदकर अधिकार करना चाहते हैं और जमीन से शाम को आक्रमण किया जाएगा ।"

इस तरह अंगरेज अफसर को इस योजना का पूर्व पता चल गया और उच्च अंगरेज

सन १८५७

स्वतंत्रता-सेनानियों ने इलाहाबाद के साथ-साथ पूरे जिले पर अधिकार कर लिया था । अब उनकी योजना इलाहाबाद किले पर अधिकार करने की थी । कुछ इतिहासकारों का मत है कि स्वतंत्रता-सेनानियों ने इलाहाबाद के किले पर अधिकार करने की कोई कोशिश नहीं की । प्राप्त दस्तावेजों से पता चलता है कि यह धारणा गलत है ।

स्वतंत्रता-सेनानियों ने इस किले पर अधिकार की योजना ही नहीं बनायी थी । वे उस पर अमल भी करने जा रहे थे लेकिन . . .

अधिकारी ने कीड़गंज की जामा मस्जिद से बंगाली मुसलमान रमजान, महबूब उल्ला तथा चार अन्य लोगों को पकड़ लिया, जिसमें मौलवी सफीउल्ला भी थे।

इन सभी लोगों पर अदालत में राज्य के विरुद्ध षड्यंत्र करने का मुकदमा चलाया गया, जिसमें महबूब उल्ला ने कहा कि मैं नौकरी की तलाश में दो वर्ष पूर्व इलाहाबाद आया था लेकिन बाद में अन्य गवाहों ने बताया कि महबूब उल्ला ५-६ दिन पूर्व ही एक शिक्षक के रूप में रखे गये थे लेकिन गदर प्रारंभ होने के तीन-चार दिन पश्चात वे अचानक चले गये क्योंकि मौलवी (लियाकत अली) ने उन्हें इलाहाबाद का तहसीलदार नियुक्त कर दिया था। सफी उल्ला ने नगर पर आक्रमण के समय अंगरेजों के विरुद्ध युद्ध का नेतृत्व किया। सफी उल्ला लियाकत अली खान के साथ चले गये।

अंत में अदालत ने अपना यह फैसला दिया, "अतः यह आवश्यक प्रतीत होता है कि जहां तक संभव हो किसी भी षड्यंत्र को कुचल दिया जाए। मेरे पास यह सिद्ध करने के पर्याप्त प्रमाण हैं कि महबूब उल्ला तथा सफी उल्ला ने कुछ समय पूर्व के विद्रोह में और हमारी फौजों के संदर्भ में प्रमुख भूमिका अदा की और मैंने उन्हें मौत की सजा दी। गुलाम खान और दीवान अली कैदी को भी कठोर सजा दी गयी है, जिसके वे हकदार हैं। (हस्ता.) एच. एम. कोर्ट, मजिस्ट्रेट।" **(राष्ट्रीय अभिलेखागार, मिलिट्री संख्या ३७६, ४ सितंबर, १८५७)**

इस फैसले के अनुसार, महबूब उल्ला, सफी उल्ला तथा लाल मोहम्मद को विशेष कमिश्नर के आदेश से इलाहाबाद किले पर अधिकार करने और वहां कैद सिख बंदियों को रिहा कराने के षड्यंत्र में फांसी पर लटका दिया। कैदी गुलाम खान और दीवान अली को भी सेनाधिकारियों के आदेश से फांसी दे दी गयी। इसमें चार अन्य राजकीय बंदियों— हयात खान, मान सिंह, लाल सिंह तथा प्रेमा को बंदीगृह से हटा देने का आदेश दिया गया, जिन्होंने पहले तो षड्यंत्र शुरू किया लेकिन बाद में ऐसा करना ठीक नहीं समझा **(अभि. मिलिट्री, ३७६, संख्या ४ सितंबर, १८५७)।**

इस तरह इलाहाबाद के किले पर अधिकार करने की योजना कुछ भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम के सेनानियों ने तैयार की थी लेकिन इस योजना का पता हो जाने पर उसके पांच प्रमुख नेताओं को मौत के घाट उतार दिया गया और इस तरह उन क्रांतिकारियों का एक साहसिक संकल्प सफल न हो सका। इसके जो भी परिणाम सामने आये, लेकिन इतनी बात निश्चित है कि इलाहाबाद के इन क्रांतिकारी नेताओं ने निस्संदेह एक अत्यंत समझदारी की दूरगामी योजना तैयार की और यदि यह सफल हो गयी होती तो अंगरेजों को सन १८५७ की क्रांति के समय उत्तर भारत में अपनी सत्ता को कायम रखने में और भी अधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा होता।

— ए-५/१४६ए, जनता फ्लैट्स, पश्चिम विहार, नयी दिल्ली-६३

वह कौन-सा कठिन कार्य है, जिसे धैर्यवान मनुष्य संपन्न नहीं कर सकता। —वृहत्कल्प भाष्य

अद्भुत करिश्मे : अपना इलाज स्वयं कीजिए

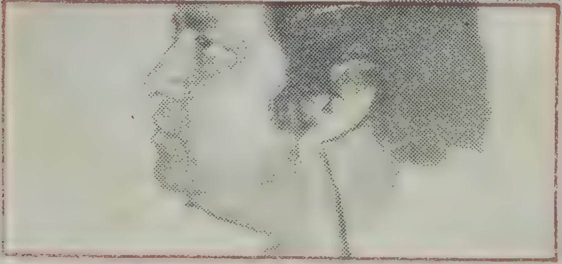
एक्यूप्रेशर चिकित्सा की एक प्राचीन विधि है । पिछले कुछ अंकों से हम एक्यूप्रेशर-उपचार की आसान विधियां प्रकाशित कर रहे हैं । इन्हें प्रस्तुत कर रहे हैं एक्यूप्रेशर चिकित्सा के विशेषज्ञ—डॉ. सुधीर खेतावत ।

अनिद्रा का उपचार

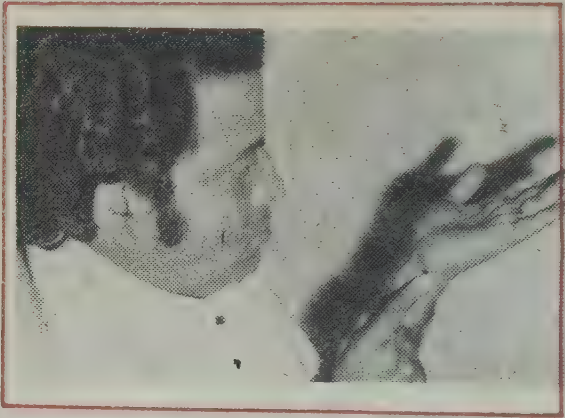
कई कारणों से कुछ लोग अनिद्रा के शिकार हो जाते हैं । अनिद्रा रोग के उपचार के लिए एक्यूप्रेशर चिकित्सा की ये विधियां अपनाइए :



१. ललाट पर दोनों भौहों के मध्य स्थित बिंदु पर एक मिनट तक दबाव दीजिए ।



२. कान के ठीक पीछे एक अंगुल की दूरी पर स्थित बिंदु पर एक मिनट तक हलका-हलका दबाव दीजिए ।



३. कनिष्ठा अंगुली की सीध में हथेली के मूल की सिलावट के ठीक ऊपर स्थित बिंदु पर एक मिनट तक हलका-हलका दबाव दीजिए ।



४. अंगूठे और तर्जनी के बीचवाले भाग को एक मिनट तक दबाइए ।

ऐंठनदार नसों के लिए

आमतौर पर जो व्यक्ति अधिक समय तक खड़े होकर कार्य करते हैं, वे ऐंठनदार नसों के रोग के शिकार हो जाते हैं। रक्त का मंद होना, इसका प्रमुख लक्षण है। इस रोग के उपचार के लिए निम्नलिखित विधियां अपनाइए :



१. पैर के टखने की भीतरी हड्डी से अंगूठे की तरफ दो अंगुल आगे की ओर एक मिनट तक हलका-हलका दबाव दीजिए।



२. पैर के टखने की बाहरी हड्डी की तरफ टखने के ठीक पीछे स्थित बिंदु पर एक मिनट तक हलका-हलका दबाव दीजिए।



३. पैर के अंगूठे और प्रथम अंगुली के बीचवाले मांसल भाग पर एक मिनट तक हलका-हलका दबाव दीजिए।



४. हाथ की मध्यमा अंगुली के नख के बाहरी कोने पर स्थित बिंदु पर एक मिनट तक हलका दबाव दीजिए।

—एक्यूप्रेशर प्रशिक्षण एवं रोग उपचार केंद्र
नीलकमल टाकीज परिसर, इंदौर

'जो विश्वासपात्र नहीं है, उसका तो विश्वास करे ही नहीं, किंतु जो विश्वासपात्र है उस पर भी अधिक विश्वास न करे । विश्वास से जो अभय उत्पन्न होता है वह मूल का भी उच्छेद कर डालता है ।'

सेनापति की पत्नी दरबार का षड्यंत्र

● बाला दुबे

सफल राजनीति की सुदृढ़ बैसाखी—षड्यंत्र ।

औरंगजेब ने दोबारा अपने विश्वसनीय मोहरे मीर बाबा से पूछा था, 'उस काफिर ने संसकिरत का कौन-सा शिलोक पढ़ा था, मीर बाबा ?' मीर बाबा ने पास खड़े सखानंद को इशारा किया ।

कोरनिश करके सखानंद ने एक पर्चा खोला और पढ़ने लगा, ''जहांपनाह, यह श्लोक 'विदुर नीति' का है ।'' अर्ज किया है—

'न विश्वसेदविश्वते, विश्वस्ते नातिविश्वसेत
विश्वासादभयमुत्पन्नं मूलान्यपि निकृन्तति'

यानी कि 'जो विश्वास का पात्र नहीं है, उसका तो विश्वास करे ही नहीं, किंतु जो विश्वासपात्र है उस पर भी अधिक विश्वास न करे । विश्वास से जो अभय उत्पन्न होता है वह मूल का भी उच्छेद कर डालता है ।'

'मरहवा, कितना सच कहा है' औरंगजेब सर हिलाकर बोला । वह राजनीति की शतरंज का सफल खिलाड़ी था । आंखें और कान खुले रखता था और मुंह बंद ।

कानों से ही उसने सुना था कि उसका पिता बादशाह शाहजहां पैनी छुरी से खेलने का शौकीन था । पर-नारी को पैनी छुरी ही तो कहा है हमारे बुजुर्गों ने । और शाहजहां एक-से-एक पैनी छुरी की तेज धार को परखता रहा । सबसे पहले रिश्ते में लगती भतीजी हमीदा बानो पर वह रीझा । मीर मीरान यज्दी के छोटे बेटे खलीलुल्लाह खां की बीवी थी हमीदा, जो शाहजहां के ससुर आसफ खां की पोती लगती थी । उसकी और शाहजहां की बात इतनी फैल चुकी थी कि जब वह पालकी से चांदनी चौक

से गुजरती थी तो फकीर-फुकरे आवाज फेंकते 'ऐ लुक्मा-ए-शाहजहां, कुछ इधर भी ।' इसे सुनकर हमीदा खुश होती और उन्हें जी खोलकर बख्शीश देती जाती । और जब दरबार में अन्य उमराव दबी जुबान से खलीलुल्लाह खां पर फब्ती कसते तो खलीलुल्लाह के दिल पर काले सांप रेंगने लगते ।

फिर औरंगजेब ने अपनी षड्यंत्र की बिसात पर खलीलुल्लाह खां को एक अहम मोहरा बनाया था ।

और फिर दूसरा मोहरा बनाया जाफर खां को जिसकी बीवी फर्जाना बेगम पर भी शाहजहां लट्टू था । तीसरा मोहरा बना मीर मुस्तफा खां और चौथा जबरदस्त मोहरा था शाइस्ता खां— मुमताज महल का सगा भाई और औरंगजेब का मामू । शाइस्ता खां की पत्नी ने तो शाहजहां द्वारा बलात्कार के पश्चात अनशन किया था और लाख समझाने-बुझाने पर भी वह भूख और प्यास से सात दिन बाद मर गयी थी । तब शाहजहां कांप गया था । उसके कारनामे की बदबू पूरी दिल्ली में फैली थी ना ।

और फिर औरंगजेब ने अपने बाकी के मोहरे भी संभाले— मीर जुमला, मुहम्मद अमीन खां, चम्पत राय, राजा जय सिंह । इन सभी को दारा ने अपनी कड़वी जुबान से घायल कर रखा था । यहां तक कि उस मुंहफट दारा शिकोह ने दरबार में जयपुर के राजा जयसिंह को 'मीरासी' कहा था । शाहजहां और उसके चहेते बेटे युवराज दारा शिकोह के छिपे दुश्मनों को ही औरंगजेब धीरे-धीरे फोड़ रहा था । गाहे-ब-गाहे उनके पास औरंगजेब के पैगाम जाते और उसकी हमदर्दी दोनों तरह के मोहरों पर मरहम का-सा असर करती जाती ।

और फिर वह दिन आ ही गया ।

शाहजहां इतना बीमार पड़ा कि यह अफवाह फैल गयी कि वह मर गया है । कोई कहता दारा ने जहर देकर मार डाला है तो कोई कहता कि बादशाह मरा नहीं है पर दारा ने उसे कैद कर रखा है । और जब शाहजहां ने यह सब सुना तो वह कराहता हुआ झरोखे पर भी आधा घंटा बैठता । पर रिआया ने यह उड़ा दी कि झरोखे पर बादशाह का लिबास पहनाकर किसी बहरूपिये को बैठा दिया जाता है । स्थिति गंभीर हो चली थी । अफवाहों के बादल दक्षिण और पूर्व दोनों ही तरफ उड़ने लगे ।

तभी औरंगजेब ने अपनी सधी हुई चाल चली थी । वह एक विशाल सेना लेकर बढ़ने लगा था । यही नहीं उसने शहजादा मुराद को भी भड़का दिया था, जो अपनी सेना लेकर चल पड़ा था ।

शाहजहां चौंका । उसने फौरन हरकारे को भेजा— शहजादा सुलेमान शिकोह के पास जो बंगाल में था, कि फौरन कूच कर दो । और इस खबर को उसके ही दरबार में डटे विभीषणों ने औरंगजेब के पास भिजवा दिया, जिसका



नतीजा यह हुआ कि दारा ने शाइस्ता खां और मीर जुमला के बेटे मुहम्मद अमीन खां को पकड़कर महल में नजरबंद कर दिया। बड़ी मुश्किल से शहजादी रौशन आरा ने मिन्नत-आरजू करके उन्हें रात तक छुड़वाया था।

शाहजहां अपना सर पीटने लगा था कि लाख उसके लिखने पर उसके बेटे यह मानने को राजी नहीं थे कि वह जिंदा है।

वह समझ गया था कि मैदानेजंग में दो-दो हाथ किये बगैर बात बनेगी नहीं। और तभी फैसला भी हो गया कि आगरे से चौदह मील दूर चंबल क्षेत्र में लोहा बजके रहेगा। उसके लाख समझाने पर भी उसका चहेता बेटा दारा शिकोह इस बात पर तैयार नहीं हो रहा था कि सेना का संचालन स्वयं शाहजहां करेगा। और जब शाहजहां अपनी जिद पर अड़ने लगा तब दारा ने भी अपनी तुरप का इक्का फेंक डाला— 'अगर आप जंग के मैदान में गये तो मैं अपना गला काटकर मर जाऊंगा।' तब शाहजहां लाजवाब हो गया और ठंडी सांसें भरकर ऊपर देखता हुआ बोला, 'या खुदा, तेरी जैसी रजा।' वैसे खलीलुल्लाह खां ने भी बार-बार दारा को यही भरा 'हुजूर, बादशाह सलामत को जाने की क्या जरूरत है, इससे आपका रुतबा घटेगा। और फिर इंशाअल्लाह आपकी फतह कोई भी नहीं टाल सकता। मैं आपको यकीन दिलाता हूं कि फतह आपकी ही होगी और इसका असर बादशाह सलामत और आपके भाइयों पर कितना पड़ेगा, जरा ये भी तो सोचिये हुजूर।'

दारा की भी मति मारी गयी थी शायद। वह चाल में आ गया और अपनी सेना लेकर चंबल की ओर चल पड़ा। कूच करते वक्त खलीलुल्लाह खां की बीवी हमीदा बानो ने शाहजहां को चेतावनी भी दी थी, 'आलमपनाह, आप मेरे शौहर को दस हजार घोड़ों का रिसाला देकर ठीक नहीं कर रहे हैं।'

पर ना ही शाहजहां ने और ना ही दारा शिकोह ने इस बात पर कोई ध्यान दिया। दारा शिकोह की फौज में इधर-उधर की भीड़ ज्यादा इकट्ठा थी जिसमें कसाई, नाई, लुहार, बढ़ई, दर्जी वगैरह काफी थे जिन्हें लड़ाई का कोई भी तजुर्बा नहीं था। उधर औरंगजेब की सेना तपी हुई सेना थी जिसने अरसे से सुख-चैन नहीं देखा था।

दारा की सेना में एक लाख घुड़सवार और बीस हजार पैदल थे। इसके अतिरिक्त उसके पास करीब सौ बड़ी-छोटी तोपें थीं जिनका संचालन करने को दो सौ फिरंगी भरती कर रखे थे। सेना के साथ लश्कर और पूरा बाजार था जो जंगल में मंगल कर देने की क्षमता रखता था।

दारा की सरकस-नुमा सेना को देखकर बार-बार शाहजहां तिलमिला जाता और बस यही रट लगाता रहता, 'बेटे, जब तक सुलेमान शिकोह अपनी फौज लेकर बंगाल से नहीं आ जाए, तब तक जंग शुरू मत करना।' पर खलीलुल्लाह और अन्य विभीषणों ने तो दारा को नीम पर चढ़ा रखा था। तभी तो दारा बड़े गर्व से बादशाह से कहता, 'आप मुतमईन रहें, मैं दुश्मनों को बांधकर आपके रूबरू पेश करूंगा।'

× × ×

३० मई, १६५८।

औरंगजेब की सेना चंबल के उस पार पसरी पड़ी थी । उसकी एक ही समस्या थी— चंबल को पार कैसे किया जाए । और तभी दतिया का राजा शुभकरनसिंह बुंदेला अपने साथ चम्पत राय को लेकर आ पहुंचा । चम्पत राय को फौरन ही तोहफों से लाद दिया गया और 'पंच हजारी' बना दिया गया । सिवाय चम्पत राय के कोई भी चंबल को गोरखताह से पार करने के बारे में नहीं जानता था । औरंगजेब ने फिर चम्पत राय की मदद से रातों-रात चंबल पार कर डाली ।

जब दारा ने यह सुना तो वह सर धुनने लगा । पर उसके वफादर सरदार अली मरदान ने तभी सलाह दी 'हुजूर, औरंगजेब की फौज थकी हुई है । फौरन हमला कर दिया जाए तो फतह हमारी है ।' पर तभी खलीलुल्लाह खां ने अपनी टांग अड़ा दी । और दारा फिर झांसे में आ गया । सामूगढ़ पर पड़ी थकी-मांदी औरंगजेब की सेना आराम से पड़ी रही ।

३ जून, १६५८ ।

सामूगढ़ के मैदान में दरबार में पनपा षड्यंत्र रंग लाने लगा था । धौंसे बजने लगे और दारा ने आक्रमण शुरू कर दिया । जून की भीषण गरमी में युद्ध और भी भयंकर हो उठा था । न जाने दारा में कौन-सा छिपा हुआ साहस उभरा जो वह अपना हाथी आगे बढ़ाकर चिल्लाने लगा 'बा कुश, बा कुश ।' उसकी दिलेरी देखकर औरंगजेब भी एक बार तो कांप गया । और तभी उसने अपने परम विश्वसनीय मीर बाबा को खलीलुल्लाह के पास भेजा था, अपने खास पैगाम के साथ— 'आप शायद भूले नहीं होंगे कि बादशाह शाहजहां की हरकत की वजह से आपने कितनी शरमिंदगी उठायी है । दारा की फतह, शाहजहां की फतह होगी । मैं आपको यकीन दिलाता हूं कि अगर किसी काबिल बना तो आपकी खिदमत और रहमत कभी नहीं भूलूंगा ।'

यह सुनते ही खलीलुल्लाह की आंखें लाल हो गयीं । उसने दांत पीसते हुए फिर मीर बाबा से कहा, 'औरंगजेब से कहियेगा कि इंशा अल्लाह फतह उन्हीं की होगी ।'

और फिर खलीलुल्लाह खां हाथी पर सवार दारा के पास जा पहुंचा और बोला, 'हुजूर, वह सामने खड़ा है औरंगजेब, पस्त और टूटा हुआ । यही तो मौका है हजूर । हाथी से उतरिये और घोड़े पर सवार होकर रिसाले की पहल कीजिये और कैदी को जंजीरों से बांध लीजिये ।'

एक बार फिर दारा चूक गया । हाथी से उतरते ही खलीलुल्लाह खां के पढ़े-लिखे गुर्गों ने शोर मचा दिया, 'दारा मारा गया, दारा मारा गया ।'

यह देखकर दारा चकित रह गया । भगदड़ देखकर ही उसने फिर खलीलुल्लाह खां को हुक्म दिया था, 'अपने रिसाले को लेकर औरंगजेब की बायीं तरफ हमला करो ।'

और दस हजार घोड़ों की आंधी लेकर खलीलुल्लाह खां औरंगजेब की ओर टूट पड़ा— उस पर हमला करने नहीं, बल्कि उसे फतह की दाद देने ।

खलीलुल्लाह खां के मिलते ही पांसे पलट गये । दारा की सेना उखड़ गयी । स्वयं दारा अपने घोड़े पर बैठकर आगरे की ओर भाग खड़ा हुआ । दरबार का षड्यंत्र रंग लाया ही ।

— एफ-४८, ग्रीन पार्क नयी दिल्ली-११००१६

लोकतंत्र के नाम पर षड्यंत्र

● अशोक आंद्रे

'इस परिस्थिति में जबकि प्रजातंत्र भयानक खतरों से घिरा हुआ है और एक भीषण षड्यंत्र का पता चला है, मैं समता, स्वतंत्रता और जन-प्रतिनिधित्व के पवित्र सिद्धांतों पर आधारित इस प्रजातंत्र की रक्षा करूंगा ।'

ये शब्द थे उस शपथ के, जो नेपोलियन ने सेनापति का पद ग्रहण करते हुए बड़े ही नाटकीय अंदाज में गद्‌गद्‌ कंठ से कहे थे ।

नेपोलियन ने जिसे भीषण षड्यंत्र कहा था, वह क्या था ? वह था फ्रांस की सफल क्रांति के बाद क्रांतिकारियों में मतभेद, क्रांतिकारियों और प्रतिक्रांतिकारियों के खूनी संघर्ष से पैदा हुई परिस्थितियां । आम जनता विशेषकर गरीब वर्ग अधिक परेशान था । वह विरोध में उठ खड़ा हुआ था । उनका नेता था बाबिउफ । उसने अल्पसंख्यकों के अधिनायकवाद द्वारा व्यक्तिगत संपत्ति को खत्म करने की योजना जनता के सामने रखी । उसके इन विचारों के लिए उस पर पहला कम्युनिस्ट प्रचारक होने का ठप्पा लगाकर उसे फांसी पर चढ़ा दिया गया । उस पर अभियोग यह लगाया गया कि वह प्रजातांत्रिक सत्ता को उलटने का षड्यंत्र रच रहा था ।

प्रजातंत्र के नाम पर सत्ता-षड्यंत्र

अगर सही ढंग से देखा जाए, तो इस षड्यंत्र की आड़ में असली षड्यंत्र तो नेपोलियन ने रचा । नेपोलियन ने अपनी शपथ और प्रजातंत्र की कैसी रक्षा की, इतिहास इसका गवाह है । नेपोलियन ने शपथ लेने के चौबीस घंटे के अंदर ही शपथ को तोड़ दिया । उसने शपथ लेते ही जन-प्रतिनिधित्व के आधार पर चुने गये उस शासक मंडल को तोड़ दिया, जो प्रजातंत्र का बाना पहने देश पर शासन कर रहा था और अकुशलता के कारण जनता में बुरी तरह बदनाम था । शासक मंडल को भंग कर उसने एक नया पद बनाया— 'कांसलेट' का और इस पद पर स्वयं ही बैठकर उसने शासन

जनता ने उसे मुक्तिदाता मानकर उसका हार्दिक अभिनंदन किया, लेकिन शीघ्र ही वह एक तानाशाह शासक बन बैठा

के सारे अधिकार अपने हाथ में ले लिये। जन-प्रतिनिधित्व के पवित्र सिद्धांत, जिसकी रक्षा करने की उसने शपथ ली थी, उसी की उसने गला घोंटकर हत्या कर दी।

नेपोलियन के आदेश पर देश के लिए एक नया संविधान बनाया गया। इस नये संविधान के अनुसार फ्रांस को प्रजातांत्रिक राज्य घोषित किया गया, लेकिन वह कितना प्रजातांत्रिक था, यह कहने की आवश्यकता नहीं। हालांकि, संविधान में स्वतंत्रता, समता और भाईचारे के नारे भी यथावत रहे, स्वतंत्रता और प्रजातंत्र के प्रतीक राज-चिह्न भी ज्यों-के-त्यों रहे। शासन-सत्ता तीन कौंसलों के शासक मंडल के हाथ में दे दी गयी। दो विधान सभाओं की जगह चार विधान सभाएं बना दी गयीं, लेकिन इनके लिए प्रतिनिधियों के चुनाव की प्रणाली ही खत्म कर दी गयी और उसकी जगह मनोनयन किये जाने की व्यवस्था लागू की गयी। मजेदार बात यह कि मनोनयन का अधिकार रखा नेपोलियन ने अपने हाथों में। इस तरह वास्तविक शासन-सत्ता नेपोलियन की मुट्ठी में आ गयी।

ऐसा नहीं था कि फ्रांस की जनता नेपोलियन की चालों को नहीं समझ रही थी। वह समझ रही थी, इसीलिए उसके विरोध में जहां एक ओर उग्रवादी उठ खड़े हुए थे, वहीं दूसरी ओर राजतंत्रवादी भी षड्यंत्र रचने में लगे हुए थे।

राजतंत्रवादियों ने जब सन १८०० में नेपोलियन के खिलाफ षड्यंत्र रचा, तो नेपोलियन के इशारे पर पुलिस ने सारा दोष उग्रवादियों के मत्थे मढ़कर दमनात्मक कार्रवाई शुरू कर दी। फलतः उसने एक तीर से राजतंत्रवादियों और उग्रवादियों— इन दोनों को मार गिराया। उसने प्रेस की स्वाधीनता खत्म कर दी। कई दर्जन अखबार मार दिये गये और जो तेरह अखबार बचे, वे नेपोलियन के पिल्ले बनकर जिंदा रहे।

नया षड्यंत्र अंधराष्ट्रवाद का

नेपोलियन ने अपने विरोधियों पर तो काबू पा लिया लेकिन आर्थिक स्थिति इतनी खराब हो चुकी थी कि उस पर काबू पाना मुश्किल हो रहा था। नेपोलियन ने इसे बखूबी समझा और फिर एक नया षड्यंत्र रचा सारी जनता को बेवकूफ बनाने का। उसने फ्रांस की जनता को अंध राष्ट्रवाद का पाठ पढ़ाया। उसने अपनी फौजों को लेकर आस्ट्रिया पर हमला बोल दिया। हमला आस्ट्रिया की फौज पर पीछे से किया गया, फलतः उसे अप्रत्याशित जीत हासिल हुई। पराजित आस्ट्रिया को संधि करनी पड़ी और संधि के अनुसार बेल्जियम व राइन नदी के पश्चिम का सारा जरमन क्षेत्र फ्रांस के कब्जे में आ गया। अब तो नेपोलियन के साथ फ्रांस की जनता के हौसले बुलंद हो गये और फिर फ्रांस की क्रांति से प्रभावित होकर स्वीट्जरलैंड, हालैंड, उत्तरी और मध्य इटली में राजतंत्र को उखाड़ फेककर जो प्रजातंत्र गठित हुए थे, वे भी नेपोलियन के नियंत्रण में आ गये। प्रशिया भी उसके कब्जे में आ गया। इस तरह फ्रांस यूरोप का सबसे शक्तिशाली राष्ट्र बन गया। नेपोलियन का डंका तो बज ही रहा था, उसने उसका पूरा-पूरा लाभ अपनी व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षा को पूरा करने के लिए उठाया। उसने अपने आपको आजीवन कौंसिल घोषित कर लिया, फिर दो साल बाद स्वयं को राजा

घोषित कर दिया । इस तरह फ्रांस की क्रांति से जन्मे प्रजातंत्र को नेपोलियन ने फिर से राजतंत्र में बदल दिया । स्वतंत्रता तथा प्रजातंत्र को उसने जड़ से ही खत्म कर दिया ।

शासन एक परिवार का

राजा बनने के बाद भी नेपोलियन की महत्त्वाकांक्षा ने विश्राम नहीं लिया । उसने अपने दरबार को यूरोप का सबसे वैभवशाली राज-दरबार बना डाला । उसने नये सामंत बनाये । कारकुनों, छोटे-छोटे व्यापारियों और यहां तक कि अस्तबल के लड़कों को रातों-रात ऊंचे-ऊंचे ओहदों पर बैठा दिया । जिसने भी यह दिखाया कि वह नेपोलियन के लिए अपने प्राण भी न्यौछावर करने को तैयार है, वही उसके दरबार में उच्च पद पा गया ।

इन युद्धों से फ्रांस की आर्थिक स्थिति में कोई सुधार आया हो, ऐसा नहीं हुआ, बल्कि स्थिति और बिगड़ गयी । फ्रांस की जनता विजय के गर्व में अकड़ तो गयी थी, लेकिन उसका भूख का मारा पेट इससे भी ज्यादा अकड़ रहा था । जनता के असंतोष को दबाने का नेपोलियन के पास एक ही तरीका था कि वह देश को फिर युद्ध की आग में झोंक दे और उसने वही किया । नेपोलियन की एक और महत्त्वाकांक्षा थी कि यूरोप के राजा उसे अपनी बिरादरी में शामिल कर लें । नेपोलियन फ्रांस का एक साधारण परिवार का युवक था । किसी साधारण परिवार के व्यक्ति को यूरोप के खानदानी राजा अपनी ऊंची बिरादरी में शामिल कर उसे सम्राट कैसे मान लेते ? नेपोलियन ने इनसे बदले की भावना के वशीभूत हो, उनसे घुटने टिकवाने के लिए युद्ध जारी रखे । फ्रांस की जनता समझ रही थी कि युद्ध फ्रांस के अधिपत्य के लिए हो रहा है, जबकि सचाई यह थी कि युद्ध नेपोलियन की प्रतिष्ठा के वर्चस्व के लिए हो रहे थे ।

नेपोलियन ने सारे यूरोप को रौंदकर अपना साम्राज्य कायम कर लिया । उसकी कुनबा-परबरी का उदाहरण देखिए कि उसने स्पेन के सिंहासन पर अपने भाई जोजफ को, प्रशिया के सिंहासन पर अपने एक अन्य भाई को, नेपल्स के सिंहासन पर अपने साले को और इटली में अपने सौतेले बेटे को बैठा दिया ।

नेपोलियन की विजय का रहस्य भी उसके द्वारा रचा गया एक बहुत बड़ा षड्यंत्र था । नेपोलियन के जीवन की शुरूआत फ्रांस की क्रांति से जन्मे प्रजातंत्र के रक्षक सेनापति के रूप में हुई थी, इसलिए उसे पोप-विरोधी धर्म-विरोधी और राजतंत्र-विरोधी के रूप में देखकर सारे यूरोप की जनता ने उसे अपना मुक्तिदाता समझा । उसने उसे इसलिए अपना समर्थन दिया कि वह उन्हें राजशाही और सामंतवाद के अत्याचार और शोषण से मुक्ति दिलायेगा । इसलिए जिन-जिन देशों को उसने जीता, वहां की जनता ने अपने अत्याचारी, निरंकुश राजाओं की हार पर खुशी मनाते हुए उसका अभिनंदन किया । लेकिन जनता को जैसे ही यह पता चला कि वह मुक्तिदाता नहीं, बल्कि वह भी अन्य राजाओं की तरह दूसरा राजा बन बैठा है और वह भी एक विदेशी आक्रमणकारी शासक, तो जनता उसके खिलाफ उठ खड़ी हुई । नतीजा वही हुआ जो होना था ।

— सी-१, आराम बाग, नयी दिल्ली-११०००५



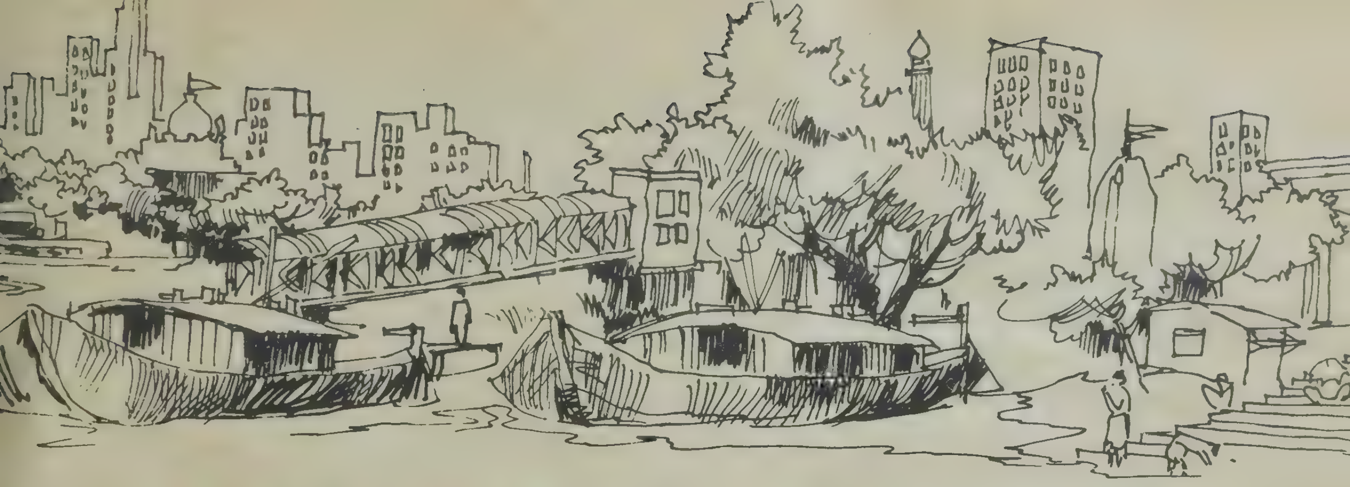
हावड़ा पुल को उड़ाने की कोशिश

● धर्मेन्द्र गौड़

कभी-कभी ऐसा भी देखा गया है कि एक छोटे से छोटा आदमी भी बड़े से बड़ा महत्त्वपूर्ण कार्य कर गुजरता है । आवश्यकता है तो बस, सूझबूझ की । ऐसी ही एक घटना हुई थी सन १९४२ के मध्य में, जब एक मामूली से धोबी की अनोखी सूझबूझ के कारण सात जापानी जासूस पकड़े जा सके, जिनमें उनका मुखिया भी था । उन्हें कलकत्ता-हाबड़ा के बीच हुगली नदी पर बने नये हाबड़ा-ब्रिज को उड़ाने का काम सौंपा गया था । जापानियों की योजना बंगाल को शेष भारत से काटकर, आवागमन को ही ठप कर देना था । और, यह कठिन कार्य इस पुल को उड़ाकर ही संभव था ।

७ दिसम्बर, १९४१ को पर्ल हार्बर पर अचानक आक्रमण करके जापान मित्र-राष्ट्रों के खिलाफ युद्ध में कूद ही चुका था । फिर तो उसकी फौजें अमरीकनों, फ्रांसीसियों, डचों, अंगरेजों का सफाया करती हुई तूफान की तरह आगे बढ़ती ही गयीं और तीन महीने के अंदर-अंदर जापानी झंडे ग्वाम, मिडवे, वेकद्वीप, फिलिपींस, हांगकांग, थाइलैंड, जावा, सुमात्रा, बोर्नियो, मलाया, सिंगापुर में लहराने लगे । और अब बारी थी बर्मा पर आक्रमण करके भारत पर कब्जा करने की । अंगरेजों के लिए यह बड़ी विकट घड़ी थी । बढ़ते हुए बवंडर की तरह जापानी सैनिकों को रोकने में वे असफल रहे और ७ मार्च, १९४२ को जापानियों ने ब्रिटिश फील्ड मार्शल वाइकाउंट आर्चिबाल्ड वेवल को बर्मा से खदेड़कर ही दम लिया ।

बर्मा में अंगरेजों के प्रबल शत्रु थे कुछ बौद्ध भिक्षु और जन-जातियों के अनेक नेता । जापानियों को इनका पूरा-पूरा सहयोग मिला । इन्हीं की कृपा से तोकाक्का नामक जापानी गुप्तचर संस्था में कुछ खास आदमियों को भरती करके उन्हें तोड़-फोड़ के कार्यों में भली-भांति प्रशिक्षित किया गया । ये प्रशिक्षण केंद्र विभिन्न गुप्त स्थानों में थे । अतः एक केंद्र का गुप्तचर अपने दूसरे केंद्र के साथी को पहचानता न था । यह व्यवस्था



द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जापानियों ने हुगली नदी पर बने हावड़ा पुल को ध्वस्त करने के लिए कुछ गुप्तचर भेजे थे। लेकिन ऐन मौके पर ये गुप्तचर पकड़े गए। कैसे ?

सुरक्षा को ध्यान रखते हुए ही की गयी थी।

बर्मा खाली करते समय शरणार्थियों की पहली खेप में सात जापानी जासूसों ने भी पैदल ही ऊंचे-ऊंचे दुर्गम पहाड़, घने जंगल, उत्तर से दक्षिण की ओर तेजी से बहती नदियां-नाले पार करके भारत की भूमि में प्रवेश किया। बौद्ध भिक्षुओं के वेश में कॉक्स बाजार, दोहजारी, चटगांव, कलेवा, तामू, थौबल, एजल से, सबने अलग-अलग सीमा पार की थीं। वे एक-दूसरे को पहचानते न थे। गेरुए वस्त्र तो धारण किये ही हुए थे बस, अंतर केवल इतना था कि उनकी 'सारम' (लुंगियों) की किनारी लाल रंग की थीं। एकमात्र इसी संकेत से उन्हें भारत में अपने साथियों को पूर्व-निर्धारित स्थान पर पहचानना था।

शरणार्थियों के वेश में कहीं दुश्मन के भेदिए भी भारत में घुसपैठ न कर बैठें, इसलिए भारत-बर्मा सीमा पर ही ब्रिटिश गुप्तचरों द्वारा उनकी जांच-पड़ताल कर ली जाती थी। यदि किसी पर तनिक भी संदेह होता, तो इंटरोगेशन (पूछताछ) के लिए उसे शिलांग, अगरतल्ला, सिलचर, रांची, दीमापुर आदि केंद्रों में भेज दिया जाता था, जहां फोर्स वन-थ्री-सिक्स के अंगरेज अफसर उनकी कसकर खिंचाई करते थे। कई हजार शरणार्थी थे इस पहली खेप में। जिन लोगों के पास परिचय-पत्र और अंगरेज अफसरों की सिफारिशी चिट्ठियां थीं, उन्हें बे-रोकटोक भारत में दाखिल होने दिया जाता था। कुछ को अनुमति मिलती थी पूछताछ के बाद। शेष को गहरी छानबीन के लिए अन्य पूछताछ-केंद्रों में भेज दिया जाता। संयोग तो देखिए, लाल किनारेवाली लुंगियां लपेटे सातों जापानी जासूसों को भी विशेष पूछताछ के लिए इन्हीं केंद्रों में भेजा गया, लेकिन वे सभी साफ बच कर निकल आये।

एक दिन की बात है। दीमापुर कैंप का धोबी अपने अंगरेज अफसरों के कपड़े

मैदान में सुखा रहा था । निकट ही कुछ शरणार्थियों के कपड़े भी सूख रहे थे, जो उन्होंने स्वयं धोये थे । उसकी नजर पड़ी गेरुआ रंग की एक लुंगी पर, जिसका किनारा लाल था । उसे कुछ अजीब-सा लगा । बौद्ध भिक्षु तो रेशमी वस्त्र धारण करते हैं गेरुआ रंग के, फिर यह लाल किनारी कैसी ? उससे रहा न गया और यह बात उसने अपने साहब के कान में डाल दी ।

पूरी छानबीन के बाद पता चला कि दीमापुर शिविर में केवल दो ही बौद्ध भिक्षु ऐसे थे, जिनकी लुंगियों के किनारे लाल थे । फिर शुरू हुई दोनों की तगड़ी पूछताछ । हीला-हवाला तो बहुत किया दोनों ने । अधिकारियों को गुमराह करने की कोशिश भी की । लेकिन पूछताछ करने में माहिर अफसरों के आगे उनकी दाल न गली । अंत में दोनों ने उगल ही दिया कि हाबड़ा-पुल उड़ाने के लिए ही उन्हें भारत भेजा गया था । किंतु वे अपने अन्य साथियों के बारे में कुछ भी न बता सके । उन्हें पता ही न था कि उनके अलावा यह काम किसी और को भी सौंपा गया है ।

उसी समय सभी पूछताछ-केंद्रों को वायरलेस खटखटाया गया कि लाल किनारे की लुंगी पहने सभी बौद्ध भिक्षुओं को कड़ी निगरानी में तुरंत दीमापुर रवाना किया जाए । ऐसे लोगों की संख्या पांच निकली । दीमापुर पहुंचने पर जब उनके साथ भी सख्ती से पेश आया गया, तब तो सभी को अपने जापानी जासूस होने की बात स्वीकार करनी पड़ी । उन्होंने कलकत्ता-स्थित अपने मास्टर स्पाई (प्रमुख जासूस) के बारे में भी बता दिया, जो उन्हें किसी भी मंगलवार की शाम कालीघाट में काली-मंदिर के प्रांगण में मिलनेवाला था । हाबड़ा-पुल उड़ाने की समस्त विस्फोटक सामग्री उसी के पास थी । ये सातों तो खाली हाथ थे ।

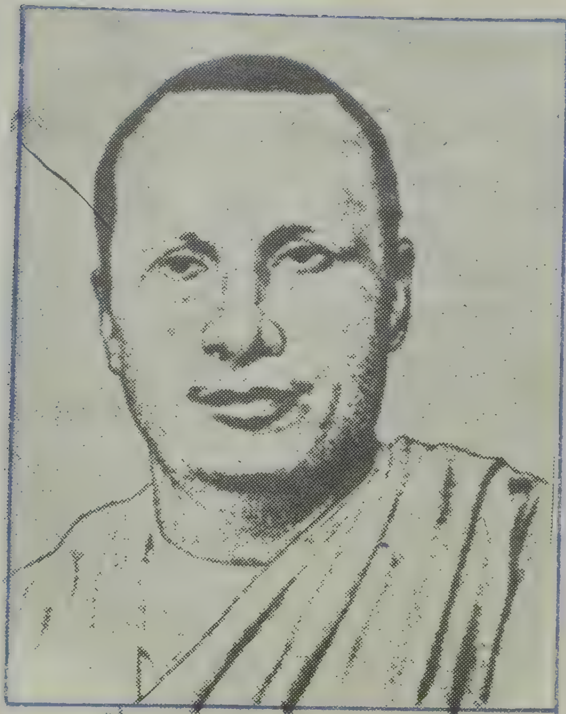
उस मास्टर स्पाई की गिरफ़्तारी के बाद सबको वही सजा दी गयी, जो युद्ध के दिनों में दुश्मन के जासूसों को दी जाती है और उस गरीब धोबी को मिले बहुत से इनाम

धर्मेन्द्र गौड़ कृत 'फोर्स वन थ्री सिक्स' से

विश्वासघात

शाहजहां का बड़ा बेटा और राज्य का उत्तराधिकारी दारा शिकोह जब अपने छोटे भाई औरंगजेब से गद्दी की लड़ाई हार गया, तो वह जान बचाता हुआ सिंध के सीमावर्ती इलाके अजोधन के हाकिम मलिक जीवन के पास पहुंचा । मलिक जीवन को एक बार शाहजहां ने किसी अपराध पर मृत्युदंड सुना दिया था, लेकिन दारा शिकोह ने सिफारिश कर उसे छुड़वा दिया था । दारा शिकोह को इस भलाई का नतीजा यह मिला कि जीवन मलिक ने उसे अपने यहां शरण तो दी, लेकिन जबरदस्त विश्वासघात भी किया । उसे धोखे से गिरफ़्तार कर औरंगजेब के सामने ले गया, जहां औरंगजेब ने उसे भरे बाजार बेइज्जत कर कत्ल करा दिया ।

जन्मशती पर विशेष



नारी-आत्मा के कवि जयशंकर प्रसाद

● रतनलाल जोशी

प्रसादजी मूलतः नारी-आत्मा के कवि हैं। नारी के अंतर-प्रदेश का जितना सजीव और संश्लिष्ट चित्रण उन्होंने किया है, वैसा इन पिछले साठ-सत्तर वर्षों में तो शायद ही कहीं हुआ होगा। नारी को अपने निरपेक्ष महत्त्व में व्यक्त करना उनकी समस्त साहित्य-साधना का मूलभूत मंतव्य प्रतीत होता है। उनके काव्य, उपन्यास, कहानी और नाटकों के विन्यास का प्राणसूत्र नारी ही है, पुरुष का महत्त्व तो केवल अपेक्षाकृत अथवा अवलंबमूलक ही है। नारी के नैसर्गिक महत्त्व को उजागर करने के लिए ही उसकी सार्थकता प्रतीत होती है। प्रसादजी की सृष्टि का पुरुष जड़ है और नारी चेतन। पुरुष में स्फूर्ति का आवेग नहीं। वह अवसाद-ग्रस्त या आत्मभ्रांत है। नारी संसृति की संचालिका शक्ति है। पुरुष को वह प्रेरणा देती है, कर्म-संघर्ष में जूझने के लिए उसे बाहर धकेलती है। उसके भीतर जीवन के गौरव की अनुभूति जगाती है और उसे श्रेय-पथ पर आगे बढ़ने के लिए साहचर्य भी देती है। संक्षेप में, प्रसादजी के नारी-चित्रण की रंग-योजना का मुख्य उद्देश्य यही है। उनके पुरुष पात्रों की व्यक्त रेखाओं को जोड़कर जो व्यक्तित्व हम बनाते हैं, वह अपने अंतिम रूप में ओजहीन एवं अधूरा ही है। नारी के संबल के अभाव में उसका व्यक्तित्व अत्यंत दुर्बल और अस्थिर है, किंतु नारी का व्यक्तित्व पुरुष से अधिक तेजस्वी एवं जागृत है। उसमें जितनी व्यापकता है, उतनी ही विविधता भी।

प्रसादजी की नारी भीरु, संकीर्ण-हृदया एवं आत्मनिष्ठ नहीं है । वह अपने व्यक्तित्व की मोहक एवं ममत्त्वमयी परिधि में पुरुष को लक्ष्यभ्रांत, आत्मस्खलित अथवा पतित होने से बचाने की चेष्टा करती है । सहिष्णुता के साथ उसमें स्वाभिमान भी कम नहीं है । उपन्यासों की अपेक्षा नाटकों में प्रसादजी का नारी-चित्रण अपेक्षाकृत अधिक निखरा हुआ है ।

प्रसाद की नारी : अनुरक्ति की प्रतिमूर्ति

प्रणय और निराशा का संघर्ष प्रसादजी का मूल विषय है । उनके पुरुष पात्र उदासीन, अस्पष्ट दार्शनिक ही प्रतीत होते हैं । नारी-पात्रों की स्थिति इसके बिलकुल विपरीत है । वे अनुरक्ति की प्रतिमूर्तियां हैं । प्रेम और निराशा का जितना व्यापक द्वंद्व उनके चित्रण में व्यक्त होता है, उसका शतांश भी पुरुष-चरित्र में नहीं मिलता । प्रसादजी की नारी में जहां समर्पण का दैन्य नहीं है, वहां उसमें आत्मघात का मर्मस्फोट भी नहीं है । प्रेम का नैराश्य अंततः विषाद में रूपांतरित नहीं होता है । प्रसादजी विषाद के चित्रकार नहीं हैं । विषाद उनकी मनोवृत्ति के अनुकूल नहीं पड़ता है । अतः उन्होंने इस अंतर्द्वंद्व के आवेग को एक सर्वथा नवीन दिशा में प्रवृत्त कर दिया है, यह गंतव्य करुणा का है । प्रणय के नैराश्य में डूबी प्रसादजी की नारी अपने समस्त आवेगों का पर्यवसान करुणा में कर देती है । यही उसकी अंतिम गति है ।

नारी-आत्मा के चित्रण की दृष्टि से हिंदी-साहित्य संस्कृत-साहित्य की अपेक्षा अभी तक भी अपूर्ण ही है । वाल्मीकि, कालिदास और भवभूति ने नारी के व्यक्तित्व का जो अनुपम उद्‌घाटन अपने ग्रंथों में किया है, उसकी परंपरा उनके बाद अकस्मात् अवरुद्ध हो गयी है । अशांत और निरंतर संघर्षमय वातावरण से उत्पन्न अतल सामाजिक अवसाद में पली हिंदी को तो सदियों तक यह अवकाश ही नहीं मिला कि वह क्षणभर रुककर मानव-हृदय की सूक्ष्म ग्रंथियों का अवलोकन करे । हिंदी की इस इतिहास-परंपरा में जब हम प्रसादजी की चरित्र-प्रधान कृतियों का तुलनात्मक अध्ययन करते हैं तो उनका महत्त्व सहज ही स्पष्ट हो जाता है । प्राचीन संस्कृत साहित्य और आधुनिक हिंदी साहित्य के बीच वे सेतु बांधने का दायित्व अनायास ही अपने ऊपर ओढ़ लेते हैं । अपने समय की उथली भावुकता और शुष्क इतिवृत्त से ऊपर उठकर उन्होंने मानव-हृदय के व्यापक तत्वों की मार्मिक झलक देखी थी और जहां नारी-चरित्र-सृष्टि का प्रश्न है, वहां तो वे युग-निर्माता ही हैं । साहित्य के धरातल पर जो सांस्कृतिक धारा अभी तक सूखी पड़ी थी, प्रसादजी ने अपनी तपस्या से उसे फिर अक्षय-सलिला बना दिया । उनकी नारी जहां शील, सहिष्णुता और करुणा की अजस्र स्रोत है, वहां वह विद्रोह की ज्वालामुखी भी है । नारी के लौकिक एवं अलौकिक दोनों रूपों के संघर्ष का पर्यवसान त्याग एवं करुणा में होता है, जहां वह समस्त सीमाओं से ऊपर उठकर एकदम वंदनीय बन जाती है । प्रेम का मांगलीकरण करके तो वह और भी तेजस्वी हो उठती है ।

प्रखरता एवं मृदुलता का समन्वय

भारतीय संस्कृति में नारी चिन्मयी आद्याशक्ति है । उसके अलौकिक रूप की सर्वत्र पूजा होती है । साहित्य भी इसका

अपवाद नहीं रहा । आदिकवि वाल्मीकि की रामकथा तत्वतः सीता के ही चारित्रिक चैतन्य की मुखर रस-स्फूर्ति है । अनीति-अन्याय के प्रति विद्रोह, आत्म-गौरव एवं प्रेम-प्रीति के निर्वाह को जहां भी ठेस पहुंचती है, वाल्मीकि की सीता वहां कोई समझौता नहीं करती । पराकाष्ठा की सहिष्णुता के साथ पराकाष्ठा का विद्रोह भी उसके मन-मस्तिष्क में है । प्रखरता एवं मृदुलता के इस मर्मस्पर्शी संयोग ने वाल्मीकि की सीता को भारतीय साहित्य, कला एवं शिल्प की अजस्र प्रेरणा-शक्ति बना दिया है । अवनींद्रनाथ ठाकुर एवं नंदलाल बोस द्वारा निर्मित सीता के चित्र किसके हृदय को मोह नहीं लेते !

वाल्मीकि के बाद भवभूति तो सर्वांशतः नारी-आत्मा के ही कलाकार थे । नारी-अंतःकरण का परिपूर्ण चित्र देने के लिए ही उन्होंने 'उत्तररामचरित' नाटक की रचना की थी । वासंती एवं सीता के रूप में भवभूति ने नारी-हृदय के दोनों पक्षों को बड़ी कुशलता से मूर्तिमान किया है । यहां भवभूति और प्रसाद की पथ-रेखाएं बिलकुल समानांतर प्रतीत होती हैं । भवभूति की सीता के साथ प्रसाद के 'स्कंदगुप्त' नाटक की नायिका देवसेना और 'कामायनी' महाकाव्य की नायिका कामायनी का बड़ा सादृश्य है । यही कारण है कि प्रसाद की कृतियां पढ़ते समय सहसा भवभूति का स्मरण हो आता है । भवभूति की सीता की भांति प्रसादजी की देवसेना भी मान, सहिष्णुता और आत्मत्याग की तपोपुंज प्रतिमा है । उसके अधरों पर क्रोध और विषाद नहीं । जहां उसमें आत्मा का मूक क्रंदन है, वहां पग-पग पर उसकी आंतरिक संकल्प एवं विश्वास की शक्ति भी उत्तरोत्तर निखरती जाती है । भवभूति की सीता का जब हम चरम विकसित रूप देखते हैं तो हमारे अंतर्चक्षु उसके अगाध औदार्य और त्याग की झांकियों से चकित रह जाते हैं । प्रसाद की देवसेना और मल्लिका ('स्कंदगुप्त' की एक और नायिका) के चरित्रों में भी हमें विश्वव्यापी करुणा और अन्य उदात्त भावनाओं का ऐसा ही प्रखर प्रकाश मिलता है । अपने सर्वोच्च मूल्यों में नारी यहां 'सर्वमंगल-मांगल्ये' श्रद्धा के रूप में मूर्तिमान हो गयी है ।

प्रसादजी की नारी भीरु, संकीर्ण-हृदया एवं आत्मनिष्ठ नहीं है । वह अपने व्यक्तित्व की मोहक एवं ममत्त्वमयी परिधि में पुरुष को लक्ष्यभ्रांत, आत्मस्खलित अथवा पतित होने से बचाने की चेष्टा करती है । सहिष्णुता के साथ उसमें स्वाभिमान भी कम नहीं है । उपन्यासों की अपेक्षा नाटकों में प्रसादजी का नारी-चित्रण अपेक्षाकृत अधिक निखरा हुआ है ।

प्रसादजी के पुरुष पात्र कर्तव्य-प्रेरणा और दायित्व-निर्वाह की दृष्टि से जितने क्षीण-प्राण हैं, उनके नारी-पात्र अपने स्वतंत्र चिंतन और

संकल्प में उतने ही प्रखर और प्राणवान हैं। उनके पुरुष पात्रों के सम्मुख जीवन की अनिवार्य जटिलताएं जब आती हैं तो वे थोथी दार्शनिकता का आवरण ओढ़कर पलायन का मार्ग ग्रहण कर लेते हैं। उनका आंतरिक पौरुष बाह्य विश्व में अपनी स्वाभाविक अभिव्यक्ति के लिए कोई आग्रह नहीं दिखलाता। 'चंद्रगुप्त' नाटक के नायक चंद्रगुप्त में भी कुछ आत्मविश्वास की चिनगारियां दृष्टिगत नहीं होती हैं। सामने के प्रश्नों के समुचित उत्तर देने की क्षमता और तत्परता का पुरुषों के भीतर जो अक्षम्य अभाव प्रसादजी के चरित्र-चित्रण में है, उससे अनेक नयी द्वंद्वात्मक समस्याएं उत्पन्न हो गयी हैं। फलतः उनकी कृतियों में मानवीय संबंधों का वातावरण असाधारण रूप से ग्रंथि-ग्रस्त हो गया है और इसीलिए प्रत्यक्षतः कोई समस्या न होते हुए भी सारी कृति अत्यंत गहरी समस्या में उलझी हुई लगती है। वस्तुतः यह वस्तुस्थिति नारी-चरित्र-विकास के अधिक अनुकूल है और प्रसादजी की स्वाभाविक प्रवृत्ति भी इसी ओर रहती है। इसी से उनकी कृतियां नायक-प्रधान न होकर नायिका-प्रधान हैं, क्योंकि पुरुष पात्रों के संतुलन में उनके नारी-पात्र ही अपेक्षाकृत अधिक दृढ़, आत्मप्रेरित और स्थिर निश्चयवाले हैं। 'प्रसाद'- साहित्य में, प्रायः पुरुष के हृदय-दौर्बल्य से उत्पन्न जटिल समस्याओं से नारी ही जूझती है और पुरुष को उनके समाधान की प्रेरणा देती है ।

संसार के अधिकांश प्रसिद्ध कवियों ने नारी-आत्मा का ऐसा ही चरित्र-विधान किया है। इटली के महाकवि दांते ने अपने महाकाव्य 'डिवाइना कामेडिना' की निदेशिका शक्ति अपनी प्रेयसी बीट्रिस को ही माना है। जैसे, दांते के काव्य की ही नहीं, जीवन की भी मूल प्रेरक शक्ति बीट्रिस के रूप में नारी ही है। विश्व-विश्रुत महाकवि गेटे के 'फोस्त' में नारी की आत्मा के दर्शन बड़े रसात्मक वृत्तांतों एवं छंदों में मिलते हैं। 'फोस्त' महाकाव्य की नायिका मारग्रेट की आंतरिक प्रेरणाएं ही नायक फोस्त का जीवन की पतनोन्मुख परिस्थितियों में परित्राण करती हैं। ब्राउनिंग के काव्य की नायिका पम्पिलिया भी एक ऐसा ही उदाहरण है। जार्ज इलियट के उपन्यासों में भी हमें नारी-हृदय की अत्यंत उदार अनुभूतियों के दर्शन होते हैं।

रवींद्रनाथ ठाकुर के उपन्यासों ('दो बहिनें' और 'आंख की किरकिरी') और काव्यों ('चित्रांगदा' और 'उर्वशी') में भी नारी का प्रेम-प्रतीतिमूलक आलंबन ही जीवन के आनंदात्मक एवं निर्माणात्मक मूल्यों का अजस्र स्रोत है।

प्रसादजी के महाकाव्य 'कामायनी' की नायिका श्रद्धा भी विश्व-साहित्य के इन्हीं अमर नारी-चरित्रों की समता का चरित्त है। जीवन के विराट् सत्य से भयभीत मनु का परित्राण अंततः श्रद्धा ही करती है। समरस, अखंड आनंद के प्रतीक शिव तक पहुंचने के लिए मनु नारी का ही सहारा मांगते हैं :

यह क्या हमको बस तू ले चल
उन चरणों तक दे निज संबल
सब पाप पुण्य जिसमें जल-जल
पावन बन जाते हैं निर्मल

१२, फिरोज गांधी मार्ग, लाजपत नगर-३,
नयी दिल्ली-११००२४

गलियों की गोद में बसा हुआ है । पहले का बनारस इन्हीं गलियों का शहर था, पर अब धीरे-धीरे गलियों से अलग दूर-दूर तक फैलती जा रही है आबादी । फिर भी गलियों की संस्कृति की छाप पूरे नये और पुराने बनारस पर आज भी दिखायी देती है । ये गलियां आज भी प्राचीन काशी की आध्यात्मिक, सांस्कृतिक गरिमा की जीवंत साक्षी हैं । काशी के रईस, काशी का संगीत, संस्कृत, संस्कृति और काशी के साथ जुड़ी तमाम विशेषताएं इन्हीं गलियों की ही तो देन रही हैं । इन्हीं गलियों में कहीं संगीत का स्वर गूंजता रहा है तो कहीं वेद-पुराणों के मंत्रों की ध्वनि । इन्हीं गलियों में भारतेन्दु, तुलसी, कबीर, जयशंकर प्रसाद और रुद्रजी-जैसे तेजस्वी साहित्यकार पले बढ़े और उनकी मेधा-तेजस्विता पुष्पित पल्लवित हुई । इन गलियों के जीवन की अपनी अलग विशिष्टता है, जिसे वही जान समझ सकता है, जो इन गलियों की भूल-भुलैया में भटक चुका हो ।

काशी में गंगा नदी उत्तर वाहिनी है । प्रारंभ में गंगा के तटवर्ती क्षेत्रों में केवल घाट और मंदिर थे । बाद में घाटों के ऊपर गंगा की धारा के समानांतर गलियां बनती और आबाद होती चली गयीं । इन गलियों के सीधे, टेढ़े-मेढ़े स्वरूप को देखते हुए कहा जा सकता है कि गलियां बनने या बनाने के पीछे प्रारंभ में कोई वैज्ञानिक दृष्टि नहीं रही होगी । ऐसा सिर्फ गलियों की स्थिति को देखते हुए कहा जा सकता है । वैसे गलियों की वैज्ञानिकता में कहीं कोई कमी नहीं दिखायी देती । गर्मियों में इन गलियों में धूप-लू की चपेट से बचाव रहता है तो वर्षा में वर्षा के जल और सामान्य दिनों में घरों के सीवर की निकासी की बड़ी ही वैज्ञानिक व्यवस्था है । आज भी इन्हीं गलियों से जुड़े शाही नालें की वैज्ञानिकता विश्वभर के वैज्ञानिकों और वास्तुविदों के लिए चुनौती बनी हुई है । बताते हैं कि बनारस शहर और घाटों की सुरक्षा की दृष्टि से सन १८२५ में जेम्स प्रिंसेप के सुझाव पर एक बड़े बांध का निर्माण कराया

काशी की गलियां

● राम मोहन पाठक

पहले हर गली-मुहल्ले में जो एकता दिखायी पड़ती थी, वह अब धीरे-धीरे गये दिन की बात होती जा रही है । आधुनिक जीवन की व्यक्तिवाद-जैसी विडंबनाओं ने यहां की मौज-मस्ती पर ही नहीं प्रहार किया है, बल्कि घर-घर, व्यक्ति-व्यक्ति को इकाइयों में बांट दिया है । फिर भी बनारस की गलियों की विशिष्टता अनेक अर्थों में सुरक्षित है ।

गया । बस इसी बांध के निर्माण के साथ ही गलियां बनीं और गलियों में जीवन गतिशील होता चला गया । कालांतर में ये गलियां ही बनारस के जीवन की धमनियां बन गयीं । इससे कोई ५०-६० साल पहले वारेन हेस्टिंग्ज के समय में ही काशी के कुछ पुराने मुहल्ले और गलियां— जैसे ठठेरी गली और चौखंभा गली का निर्माण हो चुका था । सन १७८५ में अहिल्याबाई द्वारा काशी विश्वनाथ मंदिर के निर्माण के बाद यानी लगभग २०० वर्ष पूर्व विश्वनाथ गली अस्तित्व में आयी । घाटों के निर्माण के बाद ही गलियों का अस्तित्व सामने आया और सन १८३२ में घाटों का निर्माण हो जाने के बाद ही गलियां बनीं और उन्हें अलग-अलग नाम दिये गये । वस्तुतः इन गलियों में हम बनारस के इतिहास की एक पूरी तस्वीर पा सकते हैं ।

गलियों की निराली छटा

काशी की प्रसिद्ध गलियों में सर्वाधिक प्रमुख और चर्चित है विश्वनाथ गली, जहां दुनियाभर के लोग आते-जाते रहते हैं । इस गली की छटा ही कुछ निराली है । कोई दो सौ साल पुरानी इस गली में हर समय चहल-पहल रहती है । हर दिन इसका नया रूप देखने को मिलेगा । साड़ियां, पूजन-सामग्री, बर्तन, श्रृंगार-प्रसाधन, काशी के प्रसिद्ध खिलौने, बनारसी पान सुपारी और न जाने कितनी ही चीजों की सजी-सजायी दुकानें पग-पग पर दिखायी पड़ेंगी । इस गली में अनेक मंदिर हैं । चूंकि विश्वनाथ मंदिर सर्वप्रमुख है । अतः इसका नाम विश्वनाथजी के ही नाम पर पड़ा है । इस गली की अपनी अलग निराली छटा है और मुग्धकारी सौंदर्य है ।

इसी प्रकार कई सौ गलियोंवाले इस शहर की अन्य अनेक प्रमुख गलियों में पंचगंगा गली, पंचगंगा घाट को शहर से जोड़नेवाली गली है । इस गली में पत्थरों से बने अनेक भवन और बाजार गली के जीवन को गुलजार बनाये रखते हैं । नेपाली गली में प्रख्यात नेपाली मंदिर, भैरवनाथ की गली में भैरवनाथ मंदिर, पथर गलिया के अनेक बड़े मंदिर और संकठा गली में संकठाजी का मंदिर है । पशुपतेश्वर गली, हनुमान गली, शिवाला गली, गुदड़ी गली, दिगंबरी गली, दादू अखाड़ा गली, खिड़की गली आदि कुछ इसकी प्रसिद्ध गलियां हैं । लेकिन इनके अलावा प्रसिद्ध है कचौड़ी गली भी, जहां बनारसी मिठाई की अनेक दुकानें हैं । इन दुकानों पर आगे, सामने रखी कचौड़ियां देखते ही आप इस गली के नाम की सार्थकता का अनुभव कर सकते हैं । इसी प्रकार है— 'जुआड़ी गली' जिसका नाम ही चौंकानेवाला है । बनारस के इतिहास के प्रमुख अध्येता स्वर्गीय मोतीचंदजी ने लिखा है कि इस गली का निर्माण काशी के एक जुआड़ी नंददास ने अपनी एक दिन की कमाई से कराया था । इस गली का नाम तो शेष है और चर्चित भी, किंतु आज आप यदि इस गली को खोजने चलें तो शायद ही यह आपको मिल सके । पुराने लोगों का कहना है कि पहले इस गली का नाम जुआड़ी गली या जुआड़ी नंदू गली था किंतु अब यह नाम लेने में लोग संकोच करते हैं और कालांतर में इसका दूसरा नाम प्रचलित हो गया । इसी प्रकार चोर गली भी है, शायद किसी चोर के कारण यह विख्यात रही हो । इसी प्रकार सुगा

गली, नंदन साहु की गली, रानी भवानी गली आदि अनेक गलियां उनके नाम से भी जानी जाती हैं, जिन्होंने उन्हें बनाया-बसाया है ।

राष्ट्रीय एकता की प्रतीक : गलियां

मैं गलियों में पला-बढ़ा हूं । काशी में कई दशक गुजरे हैं । फिर भी मैं दावे के साथ नहीं कह सकता कि मैं सारी गलियां जानता हूं । मैं ही नहीं शायद ही कोई ऐसा हो जिसने सारी गलियां देखी हों उन्हें भली-भांति जानता हो । 'हरिकथा अनंता' की तरह ही ये गलियां भी अनंत हैं । एक से जुड़ी दूसरी, तीसरी अनेक— गलियां ही गलियां शहर के एक छोर से दूसरे छोर तक पहुंच सकते हैं— इन गलियों से होकर आप । गर्मियों में कुछ शीतताप नियंत्रित-जैसा वातावरण रहता है इन गलियों में । लू की चपेट और शीत की तीखी लहर भी इन गलियों में आकर अपनी तेजी खो देती है । गलियों का वातावरण आज भी प्रायः शांत, धीमी गति और धार्मिकता तथा विविध भावों से परिपूर्ण है । यहां हर गली में आपको अनेक मंदिर मिलेंगे । इतना ही नहीं कई गलियों में तो राष्ट्रीय एकता का अनूठा समागम दिखायी पड़ेगा । मंदिर और मस्जिद दोनों ही । शायद इसे देखकर ही किसी कवि ने लिखा है—

यहां मंदिर में मस्जिद है कि
मस्जिद में मंदिर है
यह बनारस है कि फारस है
बनारस बस बनारस है ।

गलियों का जीवन गंगा तट और मंदिरों से जुड़कर और भी धार्मिकता से परिपूर्ण हो जाता है । इन गलियों में जीवन का स्पंदन भोर में तीन बजे से शुरू होकर देर आधी रात तक चलता रहता है । महानगरों में रहनेवाले जिन लोगों ने ये गलियां न देखी हों, वे इन गलियों में जीवन का समूचा-स्वतंत्र उपक्रम देखकर अचंभित हो जाते हैं । सड़कों को जोड़नेवाली गलियों के रूप-आकार आदि का आकलन बाहर से नहीं किया जा सकता । इन गलियों को देखना, समझना और महसूस करना आपाधापी का काम नहीं है । जल्दबाजी में शायद ही इनके स्वरूप और महत्त्व को समझा जा सके ।

इन गलियों के गर्भ में बहुत से मंदिर ही नहीं अनेक छोटे-बड़े ऐतिहासिक स्थल और भव्य भवन भी हैं । काठ की हवेली, माधवराव का धरहरा, चैतसिंह पैलेस, मीरघाट के भव्य भवन, दरभंगा पैलेस आदि अनेक भवन हैं, जो ऐतिहासिक महत्त्व के तो हैं ही, स्थापत्य कला की दृष्टि से भी उनका बड़ा ही महत्त्व है । गलियों के बीच भव्य बाजार, दुकानें, साड़ियों के कारखाने, बड़े-बड़े अखाड़े, ठंडाई की दुकानें, गौशालाएं और न जाने कितनी ही विशिष्ट चीजें हैं । गलियों की यात्रा कीजिए तो अब भी शायद आपको बनारसी मौज-मस्ती की कुछ झलकी मिल सके ।

गलियां : शहर का स्नायुतंत्र

किसी ने कहा है— मन भावै हमें काशी की गली । हां, अवश्य ही कितनों को भा गयी हैं ये गलियां । कभी भारतेंदु, प्रसाद-जैसे साहित्यकारों को भा गयी थीं ये गलियां और बिस्मिल्ला खां, किशन महाराज, गिरिजा देवी, पंडित रविशंकर, गुदई महाराज, सितारा देवी को भी इन गलियों का आकर्षण बरबस खींचता रहा है । अब अनेक ऐसे विदेशी स्त्री-पुरुष आपको इन गलियों के मकानों में रहते मिलेंगे

जो शांति की खोज में भारत और बनारस खिंचे चले आये हैं । गलियों का यह आकर्षण ही है कि इन गलियों में बने बहुमंजिले प्राचीन और नये भवनों में आज भी बनारस की सर्वाधिक आबादी रहती है । असली बनारस तो इन्हीं गलियों में रचा-बसा मिलेगा । ये गलियां सिर्फ मेरे लिए ही नहीं, लाखों लोगों के जीवन के लिए स्नायुतंत्र की तरह हैं । इनका बनारस के जीवन में अपना महत्त्व है ।

बदलना नियम है । बनारस में बहुत कुछ बदलकर भी बहुत कुछ नहीं बदला है । यही इस प्राचीन सांस्कृतिक शहर की असली विरासत है, यही इसकी अपनी विशिष्टता है । गलियों ने बनारस की इस विशिष्टता की रक्षा में सर्वाधिक योगदान किया है । पुराना बनारस इन्हीं गलियों में बसता है । इसका प्राचीन रूप यहीं दिखायी पड़ेगा । अनेक गलियों के नाम बदल गये हैं या लुप्त हो गये हैं । लेकिन इन गलियों की आत्मा मरी नहीं है । विश्वनाथ गली, कुंज गली, ठठेरी गली और अस्सी-नगवा से लेकर राजघाट तक गंगा के घाटों के ऊपर फैली इन गलियों में बनारस का असली रूप साकार हो उठता है । मैं विख्यात यात्री एल्डूअस हक्सले और पीटर जान जैसे खास लोगों के अनुभव की बात करूं तो इन गलियों का महत्त्व विदेशियों ने-जैसा समझा है, वह स्पष्ट हो जाएगा । इन लोगों ने ही नहीं, बनारस घूमने के लिए आनेवाला जो देशी-विदेशी पर्यटक इन गलियों में गया, इन्हीं गलियों का होकर रह गया ।

वैसे यह बात दीगर है कि अब गलियों पर आबादी का घनत्त्व और दबाव तेजी से बढ़ता जा रहा है, जिससे समस्याएं भी बढ़ी हैं । गलियों में थोड़ी-बहुत गंदगी और भीड़-भाड़ की समस्या दिन पर दिन गंभीर होती जा रही है गलियों का सौंदर्य समझी जानेवाली अनेक इमारतें धीरे-धीरे ढहती जा रही हैं । टूटी-फूटी गलियां भी दिखायी पड़ेंगी । गलियों में रहनेवालों की मानसिकता बदलना भी स्वाभाविक है । पहले हर गली-मुहल्ले में जो एकता दिखायी पड़ती थी, वह अब धीरे-धीरे गये दिन की बात होती जा रही है । आधुनिक जीवन की व्यक्तिवाद-जैसी विडंबनाओं ने यहां की मौज-मस्ती पर ही नहीं प्रहार किया है, बल्कि घर-घर, व्यक्ति-व्यक्ति को इकाइयों में बांट दिया है । फिर भी बनारस की गलियों की विशिष्टता अनेक अर्थों में सुरक्षित है ।

मैं नहीं जानता कि भविष्य में गलियां किस रूप में बदलेंगी और इन गलियों के अस्तित्व का क्या होगा ? फिर भी सैकड़ों वर्ष पुरानी ये गलियां काशी ही नहीं पूरे देश की सांस्कृतिक धरोहर हैं । उनके अस्तित्व की रक्षा और उनका सुंदरीकरण इसी भावना के साथ किया जाना चाहिए । ऐसा तभी हो सकता है जब हम इन गलियों और यहां की संस्कृति का महत्त्व समझें ।

डी. ६/१३ रानी भवानी गली, वाराणसी-२२१००१

चेरापंजी जो एक जमाने में घने उप-ऊष्णकटिबंधीय वनों से घिरा था, जहां दुनिया में सब से ज्यादा पानी बरसता था, आज बिलकुल बंजर हो गया है।

रानी का सिर जल्लाद के हाथ !

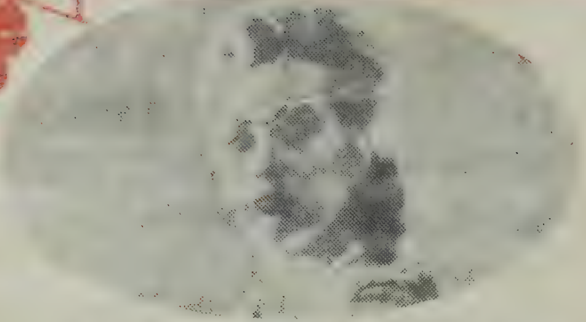
(स्टीफन ज्वइ द्वारा लिखित मारी आंत्वानेत की जीवनी पर आधारित)



इतिहास के पृष्ठ कई रंगों में लिखे जाते हैं—सुनहरे, लाल या काले । विश्व इतिहास का एक बहुत महत्त्वपूर्ण अध्याय है फ्रांस की क्रांति जो सन १७८९ में आरंभ हुई और जिसका चरमोत्कर्ष था वहां की रानी मारी आंत्वानेत को प्राणदंड । क्रांति किसी भी प्रकार की हो, परिणाम होता है रक्तपात । यहां भी यही हुआ । लाखों लोगों का रक्त आनेवाले इतिहास के पृष्ठों को अपने लाल रंग से रंगता चला गया, जिसमें मिला था फ्रांस के राजा लुई सोलहवें तथा उसकी पत्नी मारी का रक्त भी ।

क्रांति का एक और पहलू भी होता है—षड्यंत्र । फ्रांस को हिला देनेवाली क्रांति में जहां एक ओर रक्त की लाली थी, वहीं दूसरी ओर षड्यंत्र की स्याही भी थी । कई प्रकार के षड्यंत्र रचे गये दोनों ओर से, इतने कि सीमित शब्दों में उनका वर्णन नहीं किया जा सकता ।

जब मारी आंत्वानेत का विवाह हुआ, उसकी आयु केवल चौदह वर्ष की थी और उसका पति फ्रांस का राजकुमार था बाद में वह लुई सोलहवें के नाम से सिंहासन पर बैठा । मारी इकहरे शरीर की सुंदर, कोमल लड़की थी जिसे व्यावहारिक बातों का कोई ज्ञान नहीं था । लाड़-प्यार में पली मारी एक ऐसे व्यक्ति के घर आ गयी जो नपुंसक था और विवाह के सात वर्ष बाद तक ऐसा ही रहा । परिणाम—पत्नी के प्रति उसकी गहरी उदासीनता । गंभीर प्रकृति की न होने के कारण मारी की चपलता, चंचलता बढ़ने लगी और वह केवल सतही छिछली चीजों में उलझकर रह गयी । पति के रूप में अपनी असमर्थता के कारण लुई उस पर कोई रोक नहीं लगा पाया । कितने ही अनमोल वर्ष



उसने कपड़ों, आभूषणों, सौंदर्य-प्रसाधनों तथा जुए में स्वयं को भुलाकर काट दिये । फिर भी दिन-रात कटते नहीं थे मारी के लिए । शेष समय वह क्या करे ? घुड़सवारी, शिकार पर किसके साथ ? राजवंश के ही अन्य पुरुषों तथा दरबार के सदस्यों के साथ । केवल एक ही बात से वह बचती थी—कोई शाम अकेले न व्यतीत करनी पड़े । रानी की इन गतिविधियों की सर्वत्र दबे स्वरों में चर्चा थी परंतु रानी इस सब से अनजान थी । एक और दोष था उसमें—फिजूलखर्ची । अपने मन-बहलाव के लिए धन उड़ाते समय वह कभी रुककर सोचती नहीं थी । राजवंश के कुछ लोग आरंभ से ही मारी के विरुद्ध थे—लुई से ईर्ष्या और विद्वेष के कारण । उन्होंने अपने राजनीतिक उद्देश्य के लिए मारी के चरित्र के इन दोषों का भरपूर लाभ उठाया और अंततः अपने प्रयासों में सफल भी हुए । इन लोगों में प्रमुख थे ड्यूक ऑव ऑरीलयंस और लुई का अपना भाई काउंट ऑव प्रोवांस । काउंट ऑव प्रोवांस ही लुई के वध के तीस वर्ष पश्चात फ्रांस का राजा हुआ वर्षों तक लुई के निस्संतान रहने पर वह सबसे अधिक प्रसन्न था । जब मारी ने अपने दूसरे बच्चे, एक पुत्र को जन्म दिया तो मारी के व्यभिचार की झूठी कथाएं फैलाकर वह यह यत्न करता रहा कि उसकी संतान किसी प्रकार अवैध सिद्ध हो सके । उन दिनों मारी के विषय में उसके चरित्र को उछालते हुए कई इश्तहार छपते थे । इन सबके पीछे राजा के भाई काउंट ऑव प्रोवांस का हाथ था । मारी आंत्वानेत का सबसे खतरनाक शत्रु यही था ।

इन्हीं दिनों फ्रांस में एक सजग, सचेत मध्यवर्ग उभर रहा था । उनके सामने अमरीका, इंगलैंड-जैसे देशों का उदाहरण था, जहां लोकतंत्र था । वाल्तेयर तथा रूसो-जैसे विचारकों का समय था यह, जो अपने देश की जनता में एक नयी चेतना जागृत कर रहे थे । इसी वातावरण का षड्यंत्रकारियों ने लाभ उठाया और मारी के विषय में कई प्रकार की झूठी अफवाएं फैला दीं । परिणामस्वरूप मारी तथा राजमहल जनता के ध्यान का केंद्र बन गये । फ्रांस की जनता सदियों से अपने ऊपर हो रहे अत्याचार को अनुभव तो कर रही थी परंतु उसे कोई रूप, कोई आकार नहीं दे पा रही थी । प्रत्येक नये राजा के आने पर लोग समझते अब अन्याय और शोषण का अंत हो जाएगा । हर बार नये कर लगते और लोग पहले से भी निर्धन हो जाते । इतनी उपजाऊ धरती के वासियों को खाने के लिए अनाज तक उपलब्ध नहीं था । देश की आर्थिक स्थिति बहुत कमजोर थी । राजकोष रिक्त होता लगता था । कोई तो उत्तरदायी होगा ? हर बात के लिए मारी को दोषी ठहराया गया । यह क्रांति तथा राजपरिवार के विरूद्ध षड्यंत्र का पहला चरण था । सन १७८९ में नेशनल असेंबली, (जिसमें जनता के प्रतिनिधि भी थे) ने देश के लिए एक संविधान की मांग की । ड्यूक ऑव ऑरीलयंस राजा के प्रति अपने वैमनस्य के

कारण जनता के प्रतिनिधियों से जा मिला । क्रांतिकारी सबसे पहले उसी के नेतृत्व में जमा होने लगे ।

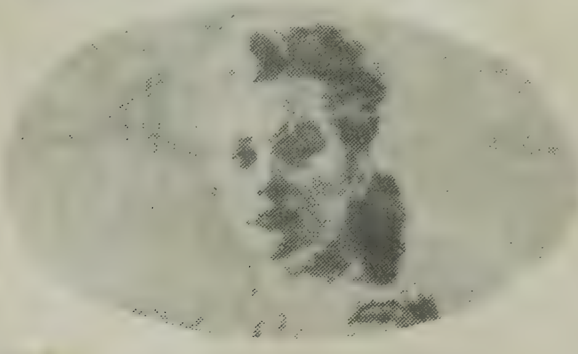
उस समय के एक प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक के परामर्श पर ड्यूक ५ अक्तूबर १७८९ को पेरिस में एक हलचल उत्पन्न करने में सफल हो गया । जनता राजा को पेरिस से कुछ दूर एकांत में स्थित राजमहल से पेरिस बुलाने के लिए शोर कर रही थी । ड्यूक के नेतृत्व में यह निर्णय हुआ कि राजा को बलपूर्वक पेरिस लाया जाए और यह काम पुरुषों के स्थान पर महिलाएं करें— ''ब्रेड'' मांगने के बहाने । ड्यूक तथा उसके सहयोगियों ने इस बात का विशेष ध्यान रखा कि पेरिस में दो दिन किसी प्रकार की ''ब्रेड'' बिल्कुल उपलब्ध न हो ताकि लोगों का पूरा रोष उमड़ आये । योजना के अनुसार अपनी बात मनवाने के लिए औरतों की यह निहत्थी फौज राजमहल में घुस गयी और सीधे रानी के निजी कक्ष की ओर बढ़ने लगी । रानी को कुछ क्षण पहले ही खतरे का आभास हो गया और वह अपने पति के कक्ष में चली गयी । परिवार एक साथ और सुरक्षित था । परंतु उसी शाम राजा और रानी दोनों को अपना बंदी बनाकर, छह घोड़ोंवाली गाड़ी में, यह भीड़ पेरिस की ओर वापस चल पड़ी । वहां वर्षों से बेकार पड़े पुराने महल में दोनों को ठहराया गया । रानी इस अपमान को कभी नहीं भूली । लुई किसी भी बात को देर तक मन में नहीं रखता था । उसका रवैया देखकर मारी समझ गयी कि इस स्थिति से यदि कभी उबरना है तो उसे अब सब कुछ अपने हाथ में लेना होगा । यह वही समय था जब मारी आंत्वानेत के भीतर कई परिवर्तन हुए । वह जो कभी धैर्य से एक छोटा-सा पत्र भी नहीं पढ़ सकती थी, किसी गंभीर विषय पर न सोच सकती थी, न बात कर सकती थी, अब हर प्रकार के दस्तावेज पढ़ने लगी, मंत्रियों से परामर्श करने लगी । चौंतीस वर्षीय रानी मन के किसी कोने में इतना तो समझ चुकी थी कि नियति ने उसे एक विशेष प्रकार की भूमिका के लिए चुना है और उसे एक दिन इतिहास के पत्रों पर उतरना होगा । उसका जीवन एक साधारण औरत या एक साधारण रानी का जीवन भी नहीं हो सकता था । परंतु बाहर से उसने सदैव अपना संतुलन बनाये रखा । आत्म-सम्मान से भरी यह औरत जो भीतर से बेहद कोमल थी, अपने अहंकार के लिए जग-प्रसिद्ध हो गयी

ग्यारह बजे रानी ने अपने कक्ष की बत्तियां बुझाने का आदेश दिया । यह संकेत था कि वह सोने जा रही थी और उसे अकेले छोड़ दिया जाए । दासियों के कमरे से जाते ही रानी ने शीघ्रता से रेशम का एक सादा-सा गाउन पहना और सबकी नजर बचाकर स्वयं भी चोर दरवाजे से बाहर चली गयी । अभी तक सब कुछ योजना के अनुरूप चल रहा था ।

क्योंकि वह कभी भी दूसरों के सामने अपना कष्ट प्रकट नहीं करती थी । अंदर से एकदम थक चुकी मारी के लिए एक ही सहारा था, एक ही व्यक्ति जिसके सामने वह मारी आंत्वानेत और केवल मारी आंत्वांनेत बनकर सांस ले सकती थी । वह व्यक्ति था ''फर्सन''— एकमात्र पुरुष जिससे वह प्रेम करती थी और जिसने अंत तक भरसक उसका साथ निभाया । जैसे-जैसे मारी का दुर्भाग्य बढ़ता गया, वैसे-वैसे फर्सन का उसके लिए प्रेम भी ।

पेरिस से पलायन के लिए रानी 'फर्सन' के अतिरिक्त और किस पर विश्वास कर सकती थी ? फर्सन का प्रेम इतना गहरा और स्वार्थरहित था कि वह जी-जान से इस काम में जुट गया । दिन, सप्ताह, महीने बीत गये । वह पेरिस से राज-परिवार को निकाल ले जाने की योजना को सफल रूप देने के लिए अथक परिश्रम करता रहा ।

भागने का अवसर और समय तो आया परंतु फर्सन के अत्यधिक प्रेम ने अंत में आकर उसकी सोचने की शक्ति क्षीण कर दी । जो यात्रा गोपनीय रहनी चाहिए थी, वह एक राजसी यात्रा का रूप लेने लगी । मारी को मार्ग में कोई असुविधा न हो, इसके लिए उसकी दो सेविकाएं भी साथ ली गयीं । नयी बड़ी-सी घोड़ा गाड़ी खरीदी गयी जो अपने आप में किसी का भी



ध्यान आकर्षित कर सकती थी । रानी के कपड़ों का एक संदूक भी साथ था ताकि पेरिस से दूर निकलते ही, वह एक बार फिर रानी के रूप में ही लोगों से मिले । इतने ताम-झाम की ओर लोगों का ध्यान अवश्य आकृष्ट होगा, यह शायद फर्सन ने सोचा ही नहीं ।

२० जून १७८९ की रात को पेरिस स्थित राजमहल की ओर यदि कोई देखता, तो उसे वहां कुछ भी असाधारण नहीं लगता । मारी पहले अपने दोनों बच्चों को लेकर चोर दरवाजे से बाहर निकली । अंधेरे में कोचवान के कपड़े पहने एक आदमी आगे बढ़ा और उसने चुपचाप राजकुमार का हाथ अपने हाथ में ले लिया । यह व्यक्ति और कोई नहीं फर्सन था जो अपनी प्रेमिका और उसके बच्चों के लिए अपना जीवन संकट में डाल रहा था । रानी स्वयं महल में लौट गयी ।

ग्यारह बजे रानी ने अपने कक्ष की बत्तियां बुझाने का आदेश दिया । यह संकेत था कि वह सोने जा रही थी और उसे अकेले छोड़ दिया जाए । दासियों के कमरे से जाते ही रानी ने शीघ्रता से रेशम का एक सादा-सा गाउन पहना और सबकी नजर बचाकर स्वयं भी चोर दरवाजे से बाहर चली गयी । अभी तक सब कुछ योजना के अनुरूप चल रहा था ।

अब प्रतीक्षा थी केवल राजा की । परंपरा के कैदी राजा के लिए चुपचाप निकल भागना इतना सहज नहीं था । सबसे पहले उसे रात के संतरियों के मुखिया से मिलना था । यह नित्यचर्या थी जो शंका से बचने के लिए निभानी ही थी । अगली कठिनाई थी अपने ही निजी सेवक से छुटकारा पाना । यह सेवक राजा के

शयन-कक्ष में ही सोता था— कलाई पर रस्सी बांध ताकि जब भी राजा को कोई आवश्यकता हो, रस्सी खींचकर सेवक को जगा सके। अपने ही इस सेवक से बचना एक बहुत बड़ी समस्या थी। राजा अपने पलंग के चारों ओर परदे खींचकर सोने का बहाना करने लगा। सेवक जैसे ही कपड़े बदलने के लिए कुछ पल के लिए कमरे से बाहर गया, राजा उठकर नंगे पांव ही अपने बेटे के कमरे में भागा जहां उसके लिए साधारण नागरिक के योग्य कपड़े तथा बालों की एक विग रखी थी। कपड़े बदलने का समय नहीं था। उसी प्रकार कपड़ों और विग को हाथ में पकड़े, नंगे पांव ही राजा महल से बाहर निकला। किसी संतरी ने देखा भी हो इस हाल में तो अपने राजा को पहचाना नहीं। आधी रात की रहस्यमयी कालिमा और अपने सम्मान की रक्षा के लिए भागता एक पूरा राज-परिवार। फर्सन घोड़ा गाड़ी चलाने लगा। यात्रा आरंभ हुई। पेरिस (जो क्रांति का केंद्र था) की सीमाओं से परे राजा को अपनी सेनाओं से मिलना था और फिर अपनी सत्ता स्थापित करने के लिए सेना के साथ पुनः पेरिस में प्रवेश करना था। पेरिस से बाहर होते ही राजा ने फर्सन को चले जाने का आदेश दिया चूंकि राजा के अनुसार अब उसकी आवश्यकता नहीं थी। वास्तव में वह शायद अपनी पत्नी के इस प्रेमी के साथ अपनी सेना के सामने नहीं जाना चाहता था। यह सबसे कठिन और दुःखदायी घड़ी थी फर्सन और मारी के लिए!

अगले नगर में प्रवेश करते ही घोड़े बदलने की आवश्यकता हुई। उन्हें रुकना पड़ा परंतु आसपास का वातावरण उत्सुकता से भर उठा।



इतनी बड़ी और सुंदर गाड़ी। अवश्य कोई बहुत संपन्न लोग थे। परंतु भयंकर गरमी होने पर भी वे खुली हवा में सांस लेने गाड़ी से बाहर नहीं निकले। कौन लोग थे? गाड़ियां तो घोड़े बदले जाने पर आगे बढ़ गयीं परंतु एक हलकी सी आवाज हवा में गूंजने लगी कि गाड़ी में राजा लुई और उसका परिवार था। गाड़ी में बैठे यात्रियों को इस बात का आभास भी नहीं हुआ कि लोग उनके विषय में क्या-क्या अनुमान लगा रहे थे। कुछ ही दूरी पर उन्हें अपनी सेना की एक टुकड़ी मिलनेवाली थी। परंतु कहीं कुछ भी नजर नहीं आया। यह पहली अप्रत्याशित घटना थी।

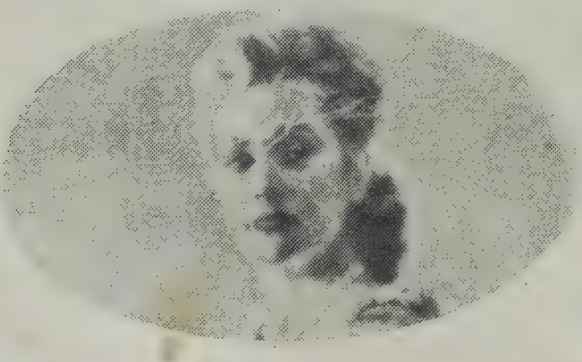
वानें तक पहुंचते-पहुंचते बात हवा में फैल चुकी थी। एक व्यक्ति घोड़ा दौड़ाता हुआ पहले ही वहां के महापौर को सूचित कर चुका था कि आनेवाली घोड़ागाड़ी में कौन यात्री थे। केवल एक व्यक्ति की सतर्कता ने इतिहास को एक नया मोड़ दे दिया। षड्यंत्रकारियों को राजा-रानी के भागने के षड्यंत्र की सूचना मिल गयी और उन लोगों की यात्रा वहीं रोक दी गयी।

२० घंटे के बाद राजा लुई सोलहवां और उसकी रानी मारी आंत्वानेत को एक बार फिर बंदी बनाकर पेरिस वापस लाया गया। इस षड्यंत्र का दोषारोपण राजा पर कम, रानी पर अधिक किया गया। दुर्भाग्य का एक और

आघात । उसी रात काउंट ऑव प्रोवांस पेरिस से निकल भागने में सफल हो गया । पेरिस से दूर होते ही काउंट ऑव प्रोवांस और काउंट ऑव आतोंय ने अपने आप को राजा का प्रतिनिधि घोषित कर दिया । दोनों ऊपर से तो राजा के प्रतिनिधि और शुभ चिंतक बने रहे परंतु गुप्त रूप से षड्यंत्रकारियों को सहयोग देकर पूरा प्रयास करते रहे कि राजा-रानी अब कभी भी घुटने न पाएं ।

मारी आंत्वानेत अब भी अपने स्तर पर चेष्टा करती रही कि किसी प्रकार वे लोग इस कैद से मुक्त हो सकें । यहां वह देशद्रोह-जैसे अपराध में भी फंस गयी । उसने चोरी छिपे यूरोप के अन्य राजवंशों को पत्र लिखे कि वे फ्रांस पर आक्रमण करके क्रांति का दमन करें और वहां के राजा और उसके परिवार की रक्षा करें । मारी की बदनामी इतनी फैल चुकी थी कि कोई भी देश इस समय उसका साथ देने आगे नहीं बढ़ा ।

इस बार राजा-रानी को वास्तव में कारावास में ही रखा गया । जनता अब तक हिंसा पर उतारू हो चुकी थी और उसे छोटे-मोटे सैनिकों की नहीं बल्कि एक बड़ी बलि चाहिए थी अपने आंदोलन के लिए । पति-पत्नी को बंदीगृह की अलग-अलग मंजिलों पर रखा गया । २० जून १७९३ को मारी आंत्वानेत से कहा गया कि उसे



उस शाम कुछ देर के लिए अपने पति से मिलने की अनुमति दी जाती है । मारी चौंकी । आशय समझते उसे देर नहीं लगी । राजा को अवश्य ही सुबह होते मौत के घाट उतार दिया जाएगा । जब वह राजा से मिलने गयी तो उसने राजा को एकदम शांत पाया । यह शायद पहला अवसर था जब लुई सोलहवें ने ऐसा असाधारण धैर्य और साहस दिखाया था । उसी रात राजा का सिर धड़ से अलग कर दिया गया । इस बार हवा में कोई आवाज नहीं गूंजी ।

अब रानी बिल्कुल अकेली रह गयी । शत्रुओं और षड्यंत्रकारियों से घिरी हुई । उसके मुट्ठीभर शुभ चिंतकों ने एकाध बार और प्रयत्न किया उसे मुक्ति दिलवाने का परंतु उनकी कोई भी योजना सफल नहीं हुई । मानसिक रूप से पूरी तरह तैयार मारी अब केवल उस क्षण की प्रतीक्षा कर रही थी जब उसे भी अपने पति की भांति मौत की राह पर चलना होगा ।

और अंत में मारी आंत्वांनेत का ऐतिहासिक मुकदमा आरंभ हुआ । परंतु रानी का कोई भी अपराध, षड्यंत्र या देशद्रोह प्रमाणित नहीं हो सकता था क्योंकि कारावास में वह प्रत्येक महत्त्वपूर्ण पत्र या कागज को पढ़ने के तुरंत बाद ही जलाकर नष्ट कर देती थी । हारकर विरोधियों और षड्यंत्रकारियों ने आठ वर्षीय राजकुमार को अदालत में उसी की मां के विरुद्ध ला खड़ा किया । रानी पर यह घिनौना आरोप लगाया गया कि सदा से दुश्चरित्र रानी बंदीगृह में भी अपनी इच्छाओं का दमन नहीं कर पायी और अपने शारीरिक सुख के लिए अपने ही पुत्र को अनैतिक मार्ग पर चलाने लगी । राजकुमार से इस आशय की गवाही भी दिलवा दी गयी ।

आठ वर्ष का अनजान लड़का यह नहीं जानता था कि वह अपनी ही मां के विरुद्ध क्या कह रहा था और इसका परिणाम क्या होगा । यह मारी आंत्वानेत के विरूद्ध वर्षों से चले आ रहे षड्यंत्र का अंतिम तथा सब से दुःखदायी और घृणित चरण था । इसके पीछे भी काउंट ऑव प्रोवांस का हाथ था । इस अंतिम आघात से रानी इतनी आहत हुई कि केवल एक प्रतिमा बन गयी । मृत्यु से पहले ही-जैसे उसने इस संसार में जीना छोड़ दिया ।

कोई नहीं जानता रानी के उपरांत राजकुमार का क्या हुआ । यह जानना ही पर्याप्त है कि क्रांति के तीस वर्ष बाद जब एक बार फिर फ्रांस के सिंहासन पर राजा विराजमान हुआ तो वह राजा काउंट ऑव प्रोवांस ही था जो लुई अठारहवें के नाम से जाना गया ।

१६ अक्तूबर १७९३ को मारी आंत्वानेत बंदीगृह से बाहर लायी गयी । उसके हाथ पीठ पीछे बंधे थे । अकेली, जीवन से निराश परंतु शांत मारी इस प्रकार गिलोटिन की सीढ़ियां चढ़ने लगी— जैसे वह हलके, पंख लगे पांवों से अपने महल की सीढ़ियां चढ़ा करती थी गरदन उस सुंदर, सुडौल गरदन को झटके से काटकर शरीर से अलग करने में क्षणभर लगा । एकत्रित जनसमूह को दिखाने के लिए जल्लाद ने उसका सिर हाथ में लेकर ऊपर उठाया । भीड़ ने देश और गणतंत्र के नाम एक नारा लगाया और रानी का सिर पास ही खड़े एक छकड़े में फेंक दिया गया । वह सिर जो कभी एक सुंदर, प्रसन्नचित्त औरत और एक देश की रानी की पहचान था ।

—प्रस्तुति : पैमिला मानसी

इनके भी बयां जुदा-जुदा

अब इरादा है कि पत्थर के सनम पूजूंगा
ताकि घबराऊं तो टकरा भी सकूं मर भी सकूं

—अख्तर उलईमान

बड़े अजीब हैं ये दर्दों गम के रिश्ते भी
जिसे भी देखिए अपना दिखायी देता है

—बानी

रिश्वत की हसीना के कदम जिसमें न पहुंचे
शायद यहां ऐसा कोई दफ़्तर नहीं होगा

—नजूम उस्मान

बेवफा मुझको सोचकर कहना
मुंह से निकली तो फिर परायी है

—कुंवर महिन्दर सिंह बेदी 'सहर'

मिलकर तपाक से न हमें कीजिए उदास
खातिर न कीजिए कभी हम भी यहां के थे

—जोन इलिया

तेरी जुबान है झूठी जम्हूरियत की तरह
तू एक जलील-सी गाली से बेहतरीन नहीं

—दुष्यंत कुमार

जो एक भीड़ सदा अपने साथ रखता था
वो शख्स आज अकेला दिखायी देता है

—ज़की तारिक

वह जिसको पढ़ता नहीं कोई बोलते सब हैं
जनाब-ए-मीर भी कैसी जुबान छोड़ गये

—अनवर जलालपुरी

प्रस्तुतकर्ता : कुलदीप तलवार

खलनायक की पत्नी

● ओसामु दाजाई

गेट खुलने की आवाज से मेरी नींद खुल गयी थी, पर बिस्तर से बाहर नहीं निकल सकी। जानती थी कि आधी रात को नशे में धुत्त् मेरा पति लौटा होगा।

उसने साथवाले कमरे का स्विच ऑन किया, बुक-शेल्फ की दराज खोल कुछ ढूंढ़ा और कुछ मिनट बाद फर्श पर ही ढेर हो गया।

''क्या तुमने खाना खा लिया है ? बिस्तर में पड़े-पड़े ही मैंने पूछा। कप बोर्ड में चावल रखा है।''

''धन्यवाद !'' जबर्दस्ती मुलायमिअत में उसने जवाब दिया।

''अब बच्चा कैसा है ? क्या उसे अब भी बुखार है ?'' यह भी मेरे लिए एक असाधारण बात थी। बच्चा चार वर्ष का हो चुका है। बाप के नशे या अपनी बीमारी की वजह से दो वर्ष से भी छोटा लगता है। वह तो अपने पैरों पर खड़ा भी नहीं हो सकता। बोलने के नाम पर वह ''भुभ-भुभ'' ही करता है। मुझे डर है कि कहीं वह अर्धविकसित ही न रह जाए। एक बार जब मैं उसे पब्लिक-बाथ के लिए ले गयी तो कपड़े उतारने पर मेरा दिल डूबने लगा। उसके दुर्बल और बीमार शरीर को देखकर सबके सामने मेरी आंखें डबडबा आयीं। उसका या तो पेट खराब रहता था या बुखार रहता था। लेकिन मेरे पति ने कभी भी उसकी परवाह नहीं की। यदि कभी बीमारी की बात करूं भी तो नसीहत के चंद टुकड़े मेरे सामने उछाल देता है।

''तुम्हें उसे डॉक्टर के पास ले जाना चाहिए।''

और फिर कोट पटकता हुआ न जाने कहां निकल जाता है। वास्तव में, मैं उसे डॉक्टर के



पास ले जाना चाहती हूं, पर पैसा नहीं है । उसे बाहों में भरने और थपथपाने के सिवा उसके लिए कुछ कर भी तो नहीं सकती ।

कारण चाहे जो भी रहा हो उस रात मेरा पति आश्चर्यजनक रूप से उदार दिख रहा था । फिर भी स्वास्थ्य के बारे में उसकी पूछताछ ने मुझे जरा भी राहत नहीं दी । शायद यह किसी दुर्भाग्य की सूचना थी । ठंडी हवा मुझे सिर से पैर तक लील गयी थी और मैं चुपचाप सोने का बहाना करती रही थी । बची-खुची रह गयी थीं उसके खर्राटे की आवाजें ।

तब अचानक ही भीतर आनेवाले दरवाजे से, ''क्या कोई घर पर है ?'' किसी महिला की धीमी आवाज सुनायी पड़ी । जैसे बर्फ का ठंडा पानी उडेल दिया गया ।

''क्या तुम घर पर हो, मिस्टर ओतानि ?'' यह किसी पुरुष की आवाज थी ।

''मिस्टर ओतानि, तुम जवाब क्यों नहीं देते ?'' स्लाइडिंग दरवाजा खोलकर उसने निश्चय ही गुस्से में कहा । अंततः दरवाजे तक जाकर मेरे पति ने डरी-सहमी आवाज में कहा, 'हां, क्या बात है ?''

''तुम अच्छी तरह जानते हो कि क्या बात है । तुम्हें लोगों के पैसे चुराने की क्या जरूरत पड़ गयी जब कि तुम्हारे पास इतना बड़ा घर है । इस तरह के मजाक छोड़ो और सब कुछ वापस कर दो, नहीं तो मैं सीधे पुलिस-स्टेशन जा रहा हूं ।''

''मैं नहीं जानता कि तुम किस बारे में बात कर रहे हो । अब मैं और इनसल्ट बर्दाश्त नहीं कर सकता । तुम्हारी हिम्मत कैसे पड़ी यहां तक आने की ? निकल जाओ वरना मैं पुलिस को बुलाता हूं ।''

''अब बहुत हो चुका । दूसरों का पैसा चुराना मजाक से कुछ ज्यादा ही है ओतानि । ऊपरवाला ही जानता है कि तुम्हारी वजह से मेरी पत्नी और मुझे कितना नुकसान हुआ है । तुम्हें पहचानने में हमने भारी गलती की ।''

''क्या यह ब्लेकमेल नहीं है ?'' मेरे पति ने गुस्से से कांपती आवाज में कहा ।

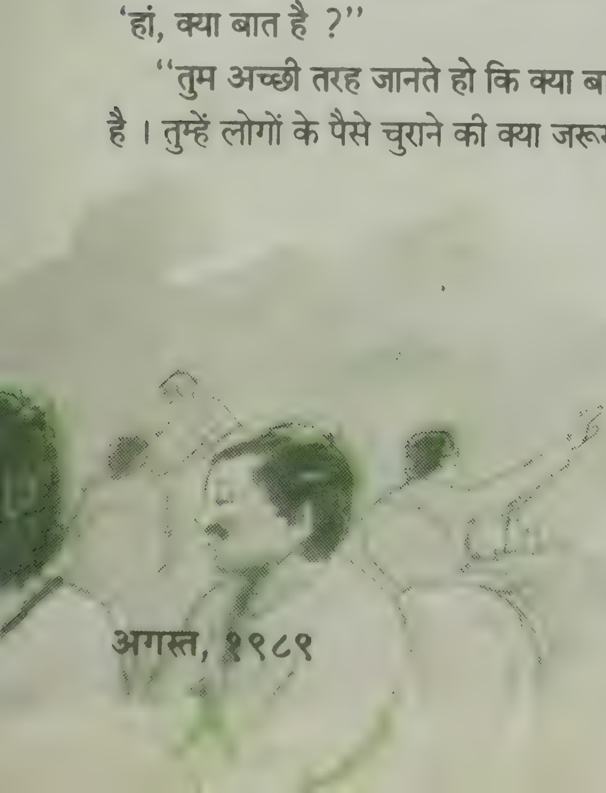
''तुम वास्तव में ही बदमाश हो । पुलिस बुलाने के सिवा अब और कोई चारा ही नहीं है ।''

''जहन्नुम में जाओ ।'' मेरा पति चिल्लाया ।

स्थिति की नाजुकता को समझ, मैंने नाइट-गाउन पर कुछ ओढ़ा और हॉल के पास जाकर आगंतुकों को झुककर अभिवादन किया ।

''क्या ये तुम्हारी पत्नी है ?'' साफ-सुथरे कपड़ों पर घुटनों तक ओवरकोट पहने गोलाकार चेहरेवाला पचास के आसपास का आदमी बोला ।

''माफ कीजिएगा, इस आधी-रात को आपको परेशान किया ।'' चालीस के करीब दुबली-पतली औरत ने शिष्टतावश कहा । मेरे पति ने अचानक स्लीपर उतारा और आदमी ने



उसकी बांह खींची । पलभर में गुत्थम-गुत्था ।

"चले जाओ...नहीं तो..." मेरा पति चिल्लाया और एक चाकू उसके हाथ में चमक उठा ।

मुझे याद आया कि इसे तो वह हमेशा दराज में रखता है । शायद कुछ देर पहले वह अंधेरे में इसी को खोज रहा होगा ।

"चोर कहीं का ।" वह दरवाजे की ओर जाते-जाते चिल्लाया । नंगे-पैर गिरते-पड़ते उसे पकड़ने की मैंने कामयाब कोशिश की । "कृपा कीजिए, इस तरह से तो किसी को भी फायदा नहीं होनेवाला है । मैं हर बात की जिम्मेदारी लेती हूं ।"

"हां, ये ठीक कहती है", औरत ने कहा ।

"अब सिर्फ पुलिस ही कुछ कर सकती है ।" वह आदमी बुदबुदाया ।

"कृपया अंदर आइए और जो कुछ भी हुआ है, साफ-साफ बताइए । शायद मैं कुछ रास्ता निकाल सकूं ।"

दोनों ने एक-दूसरे की आंखों में कुछ झांका ।

"श्रीमती ओतानि । आपको साफ-साफ बता देना ही ठीक रहेगा ।"

"कृपया... ।

"हम ज्यादा नहीं रूकेंगे", आदमी ने ओवरकोट उतारते हुए कहा ।

"सरदी ज्यादा है । इसे पहने रहिए क्योंकि इस घर में हीटिंग-सिस्टम नहीं है ।'
फटी-पुरानी गद्दियां बिछाकर उसने उन्हें बैठने के लिए कहा ।

"माफ कीजिएगा । मेरे पति की वजह से आपको इतना कष्ट हुआ कि इस आधी-रात को... ।" मेरी बात बीच में ही रह गयी । अपराध, शर्मिंदगी और पश्चाताप से मेरी आंखें डबडबा आयीं ।

"माफ कीजिएगा श्रीमती ओतानि, आप कितने वर्ष की हैं ?"

"छब्बीस ।"

"सचमुच ! जब मैं अंदर आयी तो आपको देखकर दंग रह गयी कि इतनी सुंदर पत्नी के होते हुए ओतानि इस प्रकार की हरकत कर सकता है ।"

"शायद वह बीमार है ।"

"वैसे तो हम लोग गांव के रहनेवाले हैं, लेकिन पैसा कमाने के लिए तोक्यो आ बसे । अपनी जमा-पूंजी लगा, हम दोनों ने नकानो स्टेशन के पास एक छोटा-सा रेस्तरां खोल लिया । शायद कुछ लोग एक-दो येन खर्च करके अपना मनोरंजन कर सकें और हम लोग भी रोटी-पानी का इंतजाम कर सकें । चोरी-छिपे हमने जिन व्हिस्की भी रख ली थी । जब दूसरे रेस्तरांओं में इनकी कमी पड़ जाती है, तब हमारे यहां बनी ही रहती है । युद्ध के दिनों में भीषण बम-बारी के दौरान भी हमने यह निर्णय लिया कि हम तब तक यहीं बने रहेंगे जब तक कि यह जगह जलकर राख नहीं हो जाती । न हमारा कोई बाल-बच्चा और न बंधु-बांधव । खैर ।"

"तुम्हारा पति हमारे यहां सबसे पहले सन १९४४ के वसंत को आया था । तब वह अकेला नहीं था । यह सब कहते हुए हमें अजीब लग रहा है, पर जब हम तुमसे कुछ छिपा नहीं रहे तो बेहतर है कि साफ-साफ पूरी कहानी बता दी जाए । एक वृद्ध महिला के साथ वह रसोई से सटे पीछे के दरवाजे से अंदर

काट - 1

क्रिसमिस की पूर्व-संध्या । उस दुकान में कुछ ज्यादा ही चहल-पहल थी । कुछ ग्राहक मेरा नाम जानना और कुछ हाथ मिलाना चाहते थे । और मैं मुसकरा-मुसकरा कर सबका स्वागत कर रही थी । एक से दूसरे तक फिसलते हुए बेहूदगी भरे हंसी-मजाक झेलते उनके प्यालों में शराब डालती रही थी ।

घुसा था । उन दिनों सामने का दरवाजा बंद रखा जाता था और कुछेक नियमित ग्राहक पीछे के दरवाजे से ही आया-जाया करते थे ।''

''वह वृद्धा यहां के आसपास के किसी शराबखाने में काम किया करती थी । जब उसकी नौकरी जाती रही तब कुछ पुरुष मित्रों के साथ वह हमारे यहां आने लगी । उसका नाम अकियान था । तुम्हारे पति को उसके साथ देखकर हमें हैरानी नहीं हुई । दोनों ने जमकर शराब पी । बिल उसी महिला ने अदा किया, दोनों साथ-साथ लौट गये । उस दिन वह जरूरत से ज्यादा शरीफ लग रहा था ।''

''दस दिन के बाद वह अकेला आया था । दस ग्लास जिन पीने के बाद, बेशरमी से मुसकरा मेरी मुट्ठी में सौ येन का नोट थमा दिया । ''अगली बार के लिए बचाये रखना । मैं जल्दी वापस आऊंगा ।'' सिर्फ उसी दिन ही हम उससे पैसा पा सके । तब से लेकर अब तक बिना कोई रकम दिये बहाने-पर-बहाना बनाते, तीन बरसों तक शराब की बोतलें खाली करता रहा ।''

इससे पहले कि मैं समझ पाती कि माजरा क्या है, मेरी हंसी छूट पड़ी । यह सब इतना बेहूदा लगा कि हंसने के सिवा कोई चारा नहीं था । उस औरत को भी हंसते देखकर उसका आदमी भी हंसे बिना नहीं रह सका ।

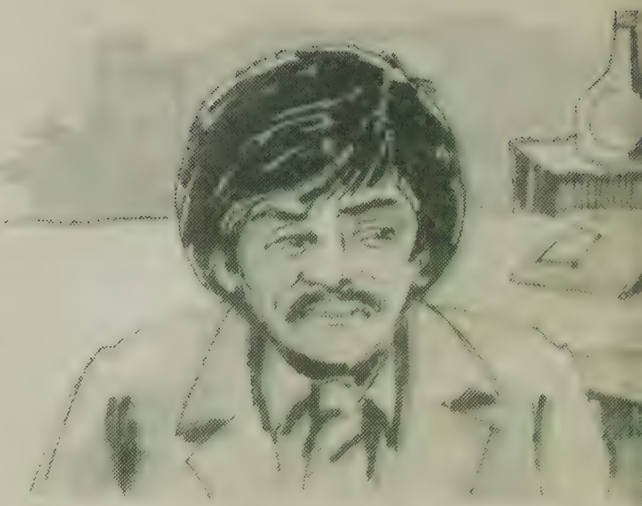
''जाहिर है कि इसमें हंसने की कोई बात नहीं है । उसकी बेहूदगियों पर सिर्फ रोया ही जा सकता है । इस तरह की लियाकत और मेहनत यदि दूसरी ओर दिखायी गयी होती तो या तो वह कैबिनेट मिनिस्टर बन गया होता या पी. एच. डी.— जैसा कुछ और जिसकी उसे ख्वाहिश थी । जब तक उसकी दोस्ती उस महिला से रही तब तक वह यही कहता रहा कि वह बॉरन ओतानि का छोटा बेटा है । पिता के दिवंगत हो जाने पर बड़े भाई ने अपार संपत्ति स्टेट में बांट दी । उस-जैसे जर्मन और फ्रेंच के योग्य विद्वान और जापान के सुप्रसिद्ध कवि को धन की लालसा ही क्या ? सभी की दृष्टि में तुम्हारा पति एक बड़े बाप का बेटा था ।''

''जहां तक मेरा सवाल है मैंने यह तय कर लिया था कि इस बार उसे मुफ़्त में शराब नहीं

पिलाऊंगा । और जब वह थका-मांदा आकर खुद को जाम में डुबोकर शांति हासिल करता तो मैं कभी भुगतान की बात नहीं करता । पैसा चुकाकर शायद वह भला ग्राहक बन सकता था । अकियान और उस-जैसे कई लोगों से घिरे रहने पर जब मैं उसकी "महानता" की याद दिला पैसे की बात करता तो वह या तो विषय बदल देता या "मुझे कुछ समय चाहिए" कहकर पूर्णविराम लगा देता ।"

"अंततः युद्ध बंद हो गया और हम लोग अपनी दुकान में नये पर्दे लगाकर खुल्लमखुल्ला शराब बेचने लगे । हमने एक सुंदर युवती भी रख ली थी जिससे दुकान की चहल-पहल दुगुनी हो गयी । उसके बाद वह किसी भी औरत को साथ लेकर नहीं आया । संगी-साथियों के नाम पर उसके इर्द-गिर्द दो-चार पत्रकार जमा रहते थे । अब वह पहले से भी ज्यादा पीने लगा था । खुंख्वार आंखों से इधर-उधर देखता, बेहूदे लतीफे सुनाता या साथ आये पत्रकारों की टांगें खींचता । इस तरह की हरकतें उसने पहले कभी नहीं की थीं । अब क्या कहा जाए । हमारे यहां काम करनेवाली लड़की पर भी डोरे डालने लगा । हमने उस लड़की को चुपचाप उसकी मां के घर भेजकर ओतानि से अपने यहां कभी न आने के लिए कह दिया ।"

"जो लोग ब्लैक मार्किटिंग करते हैं उन्हें दूसरों की आलोचना करने का कोई अधिकार नहीं है ।" "मैं तुम्हारी सभी पोलें खोल दूंगा ।" आदि-इत्यादि कहकर वह दुकान से बाहर हो गया । उसके बाद उसके हाव-भाव से कुछ भी जाहिर नहीं हुआ कि कहीं कोई बात हुई



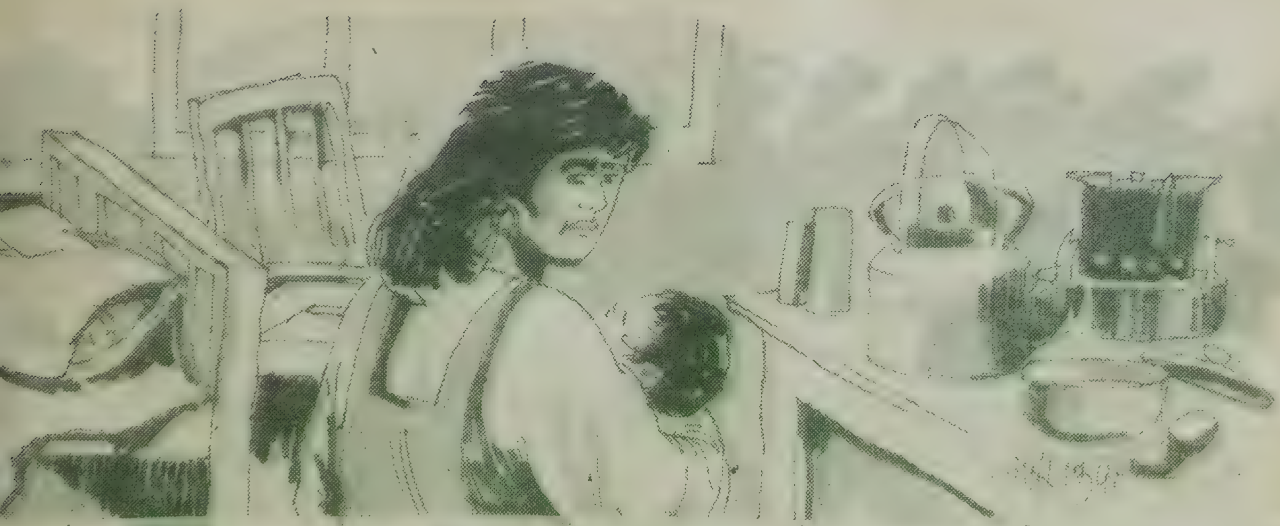
है । पर आज रात जो कुछ भी हुआ वह यह कहकर टाला नहीं जा सकता कि वह महान पिता का महान कवि-पुत्र है । यह तो खुल्लमखुल्ला डकैती हुई । मेरी पत्नी अंदर के कमरे में रकम गिन रही थी । पीते-पीते उठकर उससे पांच हजार येन छीनकर बिल चिंदी-चिंदी कर डाला । यदि हमने दुकानदारों को रकम अदा नहीं की तो हम बरबाद हो जाएंगे ।"

"हम दुकान बंद कर उसके पीछे-पीछे भागे मगर यह नहीं रुका । एक बार मन हुआ कि "चोर-चोर" चिल्लाकर आसपास को इकट्ठा कर लें । पर पुरानी पहचान के कारण ऐसा नहीं कर सके । हम सिर्फ इसका पीछा करते-करते यहां तक आ पहुंचे । इसके बाद का हाल तो तुम जानती ही हो ।"

दुबारा यह सब मुझे इतना बेहूदा लगा कि मैं हंसते-हंसते लोट-पोट हो गयी । तब तक हंसती रही जब तक कि मेरी आंखों में आंसू न आ गये । पर यह समस्या ऐसी तो नहीं थी कि जिसे सिर्फ हंसने से सुलझाया जा सके ।

"जैसे-तैसे मैं कुछ करूंगी मैं निश्चित ही आपसे मिलूंगी । क्या आप मुझे कल तक का समय दे सकते हैं ?"

वे किसी तरह सहमत ...ग्ये । उनके जाने



के बाद मैं फिर से ठंडे कमरे में वापिस लौट आयी । पर कुछ भी तो समझ नहीं पा रही थी कि क्या किया जाए । बेटे की ओर देखती और सोचती कि क्या ही अच्छा होता कि यह रात कभी....और....कभी भी खत्म न होती ।

किसी जमाने में असाकुसा पार्क में, मेरे पिता छोटा-सा स्टॉल चलाया करते थे । बचपन में ही मां मर गयी थी । हम दोनों बाप-बेटी मिलकर काम करते रहे और रोजी-रोटी कमाते रहे । पति कहलाया जानेवाला आदमी उन दिनों यदा कदा वहां आता और मैं अपने पिता से छिप-छिपकर उससे मिला करती । जब मैं गर्भवती हो गयी तो उसे शादी के लिए मजबूर करने लगी । हम दोनों एक ही मकान में रहने लगे थे लेकिन हमारे विवाह को न्यायालय से स्वीकृति नहीं मिल सकी थी । अब वही बच्चा बिना बाप के नाम के बड़ा हो रहा है । अब, वह दिनों, हफ्तों और महीनों तक घर से बाहर रहता है । जब भी वह लौटता है नशे में धुत् लौटता है । पीली मुरझायी आंखों से मुझे घूरता, कभी चिल्लाता और कभी आंसू बहाता है । कभी देर गये कांपता और कभी बिस्तर को भींचकर "बचाओ बचाओ" कहता है । अगली सुबह लगता है— जैसे उसके जिस्म में से रूह निकाल ली गयी हो । और वह फिर हफ्तों गायब हो जाता है । मेरे पति के कुछ मित्र कभी-कभार कुछ पैसा दे जाते हैं । जिससे हम मां-बेटा किसी तरह भुखमरी से बच जाते हैं ।

न जाने कब झपकी लग गयी । आंख खुली तो सूरज की किरणें दरवाजों की दरारों में से झांक रही थीं । मैं तैयार हुई, बच्चे को पीठ पर बांधा और बाहर निकल गयी । एक मिनट के लिए भी उस सूने भयावह घर में ठहर नहीं सकती थी । यूं ही चलती चली गयी । कुछ देर बाद पाया कि मैं स्टेशन की तरफ जा रही हूं । एक "बन" बच्चे के लिए खरीदा, उसे खिलाया, पिलाया, टिकट खरीदा और किच्जियोजि की तरफ जानेवाली ट्रेन में सवार हो गयी । मैं जल्दी इनोकाशिरा कोएन की तरफ मुड़ गयी । तालाब के किनारे के पेड़ काटे जा चुके थे, चारों तरफ नंगी और ठंडी जमीन थी । बच्चे को पीठ से उतारा और हम दोनों टूटी-फूटी बेंच पर बैठ गये । किसी जमाने में जब इस तालाब में सुनहरी मछलियां हुआ करती थीं तब यह बहुत सुंदर उद्यान हुआ करता था । अब तो सिर्फ ठंडे नंगेपन के सिवा यहां कुछ है ही नहीं । है ना ? न जाने बच्चे पर क्या प्रतिक्रिया हुई । वह सिर्फ भुभ्-भुभ् करने लगा । यूं तो

वह मेरा ही बच्चा था पर वह किसी ईडियट से कम नहीं लग रहा था।

सिर्फ बेंच पर बैठे रहने से ही कोई काम होनेवाला नहीं था। फिर से बच्चे को पीठ पर लादा, टिकट खरीदा और नकानो की ओर जानेवाली रेलगाड़ी में सवार हो गयी।

रेस्तरां के पिछले दरवाजे से अंदर जाकर देखा कि मालिक कहीं गया हुआ है और उसकी पत्नी दुकान की सफाई कर रही है। मेरे दिमाग में फौरन एक योजना कौंध गयी।

''लगता है कि कल तक मैं तुम्हारा पैसा जरूर चुकता कर दूंगी। चिंता की कोई बात नहीं।''

''बहुत धन्यवाद।''

वह खुशी से नाच उठी।

''यह तय है कि किसी ग्राहक के आने से पैसा मिल जाएगा और जब तक कोई आए मैं तुम्हारे काम में हाथ बटाती हूं।''मैंने बच्चे को नीचे उतारकर उसे खुद-ब-खुद खेलने के लिए छोड़ दिया।

शायद कोई ग्राहक आया है।

''स्वागत है।'' मैंने मुसकराते हुए कहा।

''अपूर्व सुंदरी है। है न ?''

''बहुत पैसा लगा होगा।''

''सुना है कि आजकल औरतें आधी कीमत पर मिल जाती हैं।''

''आजकल तो कुत्तों-घोड़ों तक को बराबरी का दर्जा मिल जाता है। ओ प्रिये ! मुझे तुमसे प्यार हो गया है, पहली ही नजर में।'' सबसे कम आयु के युवक ने कहा।

''क्या वह तुम्हारा बच्चा है ?''

''नहीं !'' मैडम ने उसे बाहों में झुलाते हुए कहा। ''किसी रिश्तेदार ने हमें दिया है। आखिरकार हमें अपना उत्तराधिकारी मिल ही गया है।''

क्रिसमिस की पूर्व-संध्या। उस दुकान में कुछ ज्यादा ही चहल-पहल थी। कुछ ग्राहक मेरा नाम जानना और कुछ हाथ मिलाना चाहते थे। और मैं मुसकरा-मुसकरा कर सबका स्वागत कर रही थी। एक से दूसरे तक फिसलते हुए बेहूदगी भरे हंसी-मजाक़ झेलते उनके प्यालों में शराब डालती रही थी।

दुनिया में कभी-कभी आश्चर्य-जैसा हो जाता है। नौ के तुरंत बाद मुखौटे से ढका चेहरा लिए एक आदमी अंदर आया, उसके साथ एक पच्चीस वर्षीया छरहरी सुंदरी थी। मैं पहचान गयी कि वह मेरा चोर पति था। मेरी ओर देखे बगैर वह सामनेवाली मेज पर बैठ गया।

''क्या तुम हमें मैरी क्रिसमिस भी नहीं कह सकती ?'' उस औरत ने कहा। ''हम यहां के मालिक से कुछ बातचीत करना चाहते हैं, क्या तुम उसे बुला सकती हो ?''

रसोई में बॉस मछली तल रहा था। ''ओतानि आ चुका है, लेकिन उस औरत से मेरा जिक्र मत करना। मैं नहीं चाहती कि...''

बॉस ने ओतानि को घूरा। उस खूबसूरत औरत ने दो-तीन बातें की और तीनों दुकान से बाहर निकल गये।

''पियो, और पियो। आज क्रिसमिस है।'' नीले सूटवाले बीस वर्षीय युवक के पास जाकर खुशी से झूम उठी थी।

तीस मिनट भी न गुजरे होंगे कि बॉस अकेला लौट आया।

''धन्यवाद, श्रीमती ओतानि, मेरी रकम मुझे

मिल गयी ।"

"मैं बहुत खुश हूं । पूरी रकम !"

"हां । जितना उसने कल लिया था ।"

"उसका कर्ज कितना है ?"

"बीस हजार येन ।"

"एक-एक येन चुका दूंगी । क्या तुम कल से मुझे यहां नौकरी दे सकोगे ?"

"क्या ? यह क्या मजाक है ?" और हम सब हंस पड़े ।

रात दस बजे के बाद रेस्तरां छोड़ा और बच्चे के साथ घर लौट आयी । जैसा कि मैं जानती थी मेरा पति घर पर नहीं था । खैर ! कल जब मैं उस दुकान पर जाऊंगी तब उससे मुलाकात हो जाएगी और वह किसी खूबसूरत औरत के साथ होगा । अपनी बेवकूफी पर मुझे बेहद गुस्सा आ रहा था । काम के बारे में इससे पहले क्यों नहीं सोचा ? फिलहाल आज की टिप में मुझे पांच सौ येन मिल गये थे ।

अगले दिन से ही मेरी दिनचर्या बदल गयी । खुशनुमा हलकेपन का एहसास लिए मैं ब्यूटी सैलून गयी, बाल सैट कराये, कास्मैटिक्स ख़रीदे और अपनी ड्रेस भी सुधार ली । लगा कि मुसीबतों का पहाड़ कुछ जल्दी ही ढह गया है । नाश्ता करना और काम पर जाना, यही सब जरूरी था ।

नव-वर्ष का पहला सप्ताह रेस्तरां के लिए अजीब-सी खुशी लेकर आता है । सब कहीं खचाखच । उसी में मेरा पति आता, शराब पीता, बिल चुकाने देता और कभी-कभी रात गये मुझसे पूछता कि मैं घर कब जाऊंगी । और कभी-कभी हम दोनों खुशी-खुशी एक साथ घर लौट जाते ।

"काम करने में कितनी खुशी मिलती है ?"

"औरतें खुशी और गम के बारे में कुछ भी नहीं जानतीं ।"

"शायद तुम ठीक कहते हो । और मर्द ?"

"मर्द के हिस्से में गम ही आते हैं । वे हमेशा लड़ते-झगड़ते रहते हैं ।"

"मैं तो सिर्फ इतना चाहती हूं कि मेरी यह जिंदगी हमेशा-हमेशा के लिए ऐसी ही चलती रहे । बॉस-मैडम कितने सदाशय हैं ।"

"बेवकूफी की बात मत करो । पिला-पिलाकर मदहोश इसलिए कर देते हैं कि मुझसे पैसा ऐंठ सकें ।"

"यह तो इनका धंधा है ।"

"मैं तुम्हारे लिए भयावह चरित्र भले ही हो सकता हूं लेकिन सच तो यह है कि मैं मर जाना चाहता हूं । जिंदगी को इससे ज्यादा बर्दाश्त नहीं कर सकता । जब से पैदा हुआ मर जाने के सिवा और कुछ सोचा ही नहीं । लेकिन मैं मरता दिखायी भी तो नहीं देता । शायद जो भगवान है वही मुझे मरने देना ही नहीं चाहता ।"

"तुम्हारे पास करने को कुछ काम भी तो नहीं है ।"

"हां ! मेरे काम का कोई ख़ास मकसद भी तो नहीं है । लोग कहते हैं कि मैं बढ़िया लिखता हूं तो वह बढ़िया हो जाता है, यदि वे कहते हैं कि मैं घटिया लिखता हूं तो वह घटिया हो जाता है । इन सब बातों से मुझे डर लगता है । .... दुनिया में कहीं-न-कहीं भगवान है । है न ?"

"मालूम नहीं ।"

रेस्तरां में काम करते हुए, दस दिन बीत चुके थे । मुझे लगा कि वहां आनेवाला हर

व्यक्ति अपराधी है । गलियों, पटरियों पर धीरे या तेज चलनेवाला हर आदमी अपने भीतर छल-कपट छिपाये हुए है । सजी-संवरी युवती जब तीन सौ येन में "साके" बेचने आयी तो मैडम ने सस्ता समझकर ख़रीद लिया । बाद में पता चला कि उसमें पानी मिला हुआ है । आम आदमी के लिए साफ़-सुथरी जिंदगी गुज़ारना कितना मुश्किल है । हे ईश्वर ! यदि तुम कहीं हो तो मुझे अपना रूप दिखाओ । नव-वर्ष के अंतिम दिन किसी ग्राहक ने मुझसे बलात्कार किया । उस मुसलाधार रात में, सोते बच्चे को पीठ पर बांध घर जाने को तैयार थी तो दुबला-पतला युवक आकर बोला, "मेरे पास छतरी है, मैं आपको घर छोड़ दूंगा ।"

"बहुत धन्यवाद ।"

"मैं आपके पड़ौस में ही रहता हूं ।" नकारात्मक जवाब में उसने कहा । उसने केवल पांच ग्लास पिये थे और वह अभी भी होश में था । स्टेशन, रेलगाड़ी और गहरी अंधेरी गलियों में उस न थमनेवाली बरसात में हम दोनों सटकर एक ही छाते के नीचे चलते रहे ।

"असल में मैं तुम्हारे बारे में सब कुछ जानता हूं । ओतानि का प्रशंसक हूं और खुद भी कविता लिखता हूं ।"

"बहुत धन्यवाद ! बाई-बाई ।" मेरा घर आ चुका था ।

आधी रात को बड़े गेट के पीटे जाने से मेरी नींद खुल गयी । सोचा हमेशा की तरह नशे में धुत्त मेरा पति होगा ।

"श्रीमती ओतानि, कष्ट के लिए क्षमा ।" उस युवक की आवाज थी । "सच तो यह है कि यहां की दूसरी दिशा में रहता हूं । स्टेशन पहुंचा तो आख़िरी गाड़ी छूट चुकी थी । क्या मुझे रात गुजारने की इजाजत दोगी ! सवेरे पहली गाड़ी से ही चला जाऊंगा ।"

"मेरा पति घर पर नहीं है । चाहो तो सामने के हॉल में सो सकते हो ।" फटी-पुरानी गद्दियां बढ़ाते हुए कहा । थोड़ी ही देर में खर्राटे की आवाजें सुनायी पड़ने लगीं ।

अगली भोर में उसने मुझे... ।

दूसरे दिन मैं रेस्तरां गयी, जैसे कुछ हुआ ही नहीं ।

मेरा पति शराब पी रहा था ।

"पिछली रात तुम घर नहीं आये न ?"

"दस के बाद । पता चला कि तुम अभी-अभी निकली हो ।"

"तब ।"

"मैंने रात यहीं गुजार ली ।"

"तब मैं भी आज से यहीं सोना शुरू कर दूंगी ।"

बिना कुछ कहे वह अखबार के पन्ने पलटता रहा ।

"तो तुम जानती हो कि अखबारवाले मेरे बारे में गलत क्यों लिख रहे हैं ? वे मुझे अभिजात्य वर्ग का जालसाज लोलुप कहते हैं । पांच हजार येन चुराकर तुम्हारे लिए नये साल का तोहफा खरीदना चाहता था । इससे सिद्ध हो जाता है कि मैं लोलुप नहीं हूं ।"

"जब तक हम जिंदा रह सकते हैं, लोलुप होने में गुनाह नहीं है ।"

मैंने सिर्फ इतना ही कहा ।

अनुवाद : राज बुद्धिराजा



हिटलर ने जनरल रोमेल के सामने दो प्रस्ताव रखे थे— या तो वह विष पीकर आत्महत्या कर ले या स्वयं पर मुकदमा चलाये जाने की मांग करे । लेकिन मुकदमे के बाद भी उसे मृत्यु का वरण करना पड़ेगा । इस शर्त के साथ हिटलर ने जनरल रोमेल को कुछ प्रलोभन दिये थे । जनरल रोमेल ने कौन-सा मार्ग चुना ?

रोमेल : कतिपय विश्वविख्यात सेनापतियों में से एक । जिसके 'अफ्रीका कोर्प्स' ने अरब के मरुस्थल में भूख-प्यास से बेखबर होकर लड़ते हुए मित्र राष्ट्रों और विशेषतः अंगरेजों के छक्के छुड़ा दिये । और आश्चर्य इस बात का कि पराजित सैनिकों में रोमेल के प्रति घृणा-क्रोध आदि स्वाभाविक भाव नहीं, विस्मय और आश्चर्य से युक्त सम्मान के भाव थे ।

बात दूसरे महायुद्ध-काल की है । मित्र राष्ट्रों की सेनाओं ने आइजनहावर तथा मांटगुमरी की अगुआई में नारमंडी पर हमला कर जरमन प्रतिरक्षा-व्यवस्था को शिथिल कर दिया था । इसी के साथ जरमन सेना के लिए पराजय की घोर अंधेरी रात भी आरंभ हो चुकी थी । ऐसी स्थिति में हिटलर ने अपनी सेनाओं को मनोबल प्रदान करने के लिए, रोमेल को सेनापति बनाया ।

मोरचे की कमान हाथ में लेते ही रोमेल ने मित्र राष्ट्रों की सबल स्थिति को समझ लिया और अपने अल्प प्रतिरोधी साधनों की न्यूनता को देखते हुए निष्कर्ष निकाला कि जरमनी को युद्ध की विभीषिका से बचाने हेतु अकेले कुछ

उसने अपने विश्वविख्यात सेनापति की 'हत्या' की

• कृष्ण कुमार



विवश होकर विष पीना पड़ा ! जनरल रोमेल

कर पाना असंभव है । अतः उसने फ्रांस के जरमन फौजी गवर्नर कॉर्ल हेनरिक वॉन स्तूल से परामर्श किया । जरमन सेनापति हिटलर द्वारा यहूदियों पर किये जा रहे रोमांचकारी अत्याचारों से परिचित हो चुके थे । उनके हृदयों में पश्चाताप, ग्लानि के भाव थे । ऐसे ही किसी क्षण में रोमेल ने अपनी वेदना इन शब्दों में व्यक्त की थी— "मैंने एक साफ-साफ लड़ाई लड़ी, किंतु उन्होंने (नाजियों ने) मेरी सैनिक वेशभूषा पर कीचड़ उछाल दिया ।"

युद्ध समाप्त करने की कोशिश

रोमेल ने गवर्नर कॉर्ल हेनरिक के साथ मिलकर तय किया कि पश्चिमी यूरोप में चल रही लड़ाई किसी तरह समाप्त की जाए तथा साथ ही जरमनी में नाजी पार्टी का शासन भी उखाड़ फेंका जाए । रोमेल की इच्छा थी कि मित्र राष्ट्रों के सामने 'शर्तहीन आत्म-समर्पण' न किया जाए । इसके स्थान पर वह सप्रतिष्ठा लड़ाई समाप्त करने के पक्ष में था । अपनी इसी विचार-श्रृंखला की कड़ी के रूप में उसने जरमन सेनाओं को पश्चिमी दीवार के पीछे हटाने का प्रस्ताव जनरल आइजनहावर और मांटगुमरी के पास भेजा ! इसके बदले में उसने चाहा कि जरमन नगरों पर बमबारी बंद हो । पर, पूर्वी मोरचे के बारे में कोई बात नहीं की, मतलब वहां लड़ाई जारी रहनी थी ।

हिटलर को गिरफ़्तार करने की योजना

रोमेल की योजना की अगली विशेष बात थी स्वदेश में अत्याचारों से मुक्ति । इसके लिए उसे विश्वस्त पैंजर्स डिकीजनों की सहायता से नाजी शासन का अंत करके हिटलर को गिरफ़्तार करना तथा उस पर मुकदमा चलाना था । योजना थी कि उसके काले कारनामों का भंडाफोड़ हो तथा वह एक 'शहीद' का सम्मान न पा सके ।

नारमंडी के तट पर जब मित्र राष्ट्रों की सेनाएं आ धमकीं तो सेनापति रोमेल ने हिटलर को अल्टीमेटम देते हुए उसे चार दिनों के भीतर मित्र राष्ट्रों के साथ संधि चर्चाएं करने को कहा ।

हिटलर का षड्यंत्र

हिटलर बौखला गया । सत्रह जुलाई की शाम जब रोमेल जीप में सवार होकर मोरचे से लौट रहा था तो दो विमानों द्वारा उसकी जीप पर हमला किया गया । इन विमानों पर ब्रिटिश वायुसेना का चिह्न था । इस हमले से उसकी जीप का संतुलन गड़बड़ा गया । रोमेल जीप से बाहर आ गिरा और बेहोश हो गया । ऐसी हालत में भी उन विमानों ने रोमेल पर गोलियों की बौछार की । रोमेल गंभीर रूप से घायल हो

गया । हिटलर की संभावित बौखलाहट को देखते हुए इस बात का विश्वास किया जाता है कि ये विमान ब्रिटिश वायुसेना के नहीं थे, जरमन सेना के ही थे और उन पर ब्रिटिश सेना का जाली चिह्न था । रोमेल के अल्टीमेटम का उत्तर इस तरह दिया था हिटलर ने, आक्रमण करवा के !

१४ अक्तूबर की सुबह । रोमेल का पुत्र उससे मिलने पहुंचा । बातें अभी शुरू ही हुईं थी कि टेलीफोन की घंटी बजी । इस घंटी ने उसे स्मरण दिलाया पिछली रात आये एक अन्य टेलीफोन-संदेश का । उसने मेनफेंड को सूचित किया कि कल रात जनरल बर्गडार्फ ने मुझे टेलीफोन कर बताया था कि वह फ्यूहरर के पक्ष से परामर्श हेतु आ रहे हैं । हालांकि उन्होंने बातचीत का विषय एक नये मोरचे की कमान सौंपना बताया है, पर मुझे बर्गडार्फ की यात्रा में षड्यंत्र की गंध आती है ।

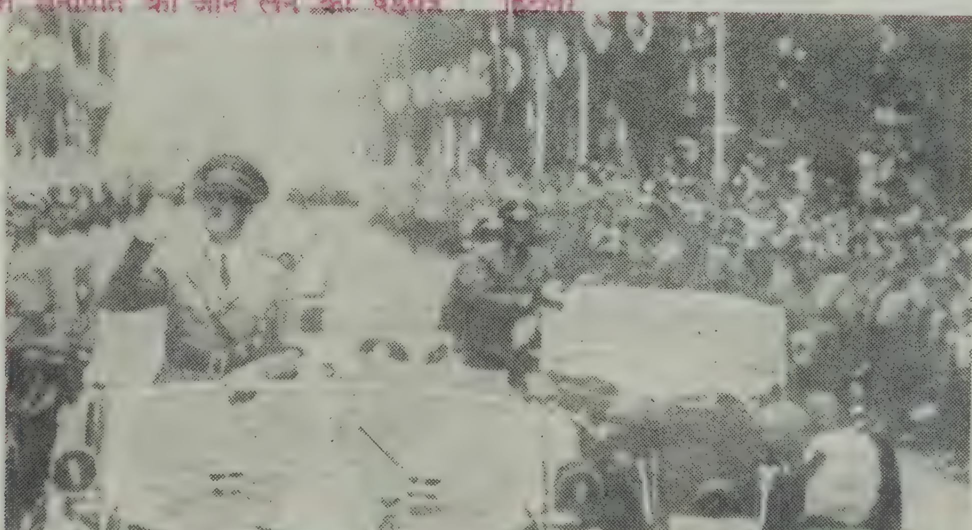
उसी १४ अक्तूबर की दोपहर । जनरल बर्गडार्फ एक अन्य जनरल मेजर के साथ



आया । पत्नी, पुत्र और स्वयं रोमेल ने अतिथियों का स्वागत-सत्कार किया । पर औपचारिकता-निर्वाह के बाद रोमेल की पत्नी फ्राऊ रोमेल और पुत्र मेनफेड अन्यत्र चले गये ।

करीब एक बजे रोमेल अपने मकान की पहली मंजिल पर स्थित परिवार के पास चिंतातुर अवस्था में पहुंचा । फ्राऊ रोमेल ने घबराकर पूछा, "क्यों, क्या बात है ?" रोमेल निर्विकार रहते हुए बोला, "लगभग पंद्रह मिनट बाद मैं इस संसार में नहीं रहूंगा ।" तत्पश्चात् उसने पत्नी को बताया, "हिटलर को विश्वास हो गया है कि उसकी हत्या के प्रयास में मेरा भी हाथ था । हिटलर ने अब मेरे सामने दो विकल्प रखे हैं । इनमें से एक स्वयं जहर खाकर आत्महत्या करने का है और दूसरा जनता की अदालत में अपराध

विश्वस्त सेनापति की जान लेने का षड्यंत्र : हिटलर



स्वीकार करने का है ।"

इन विकल्पों का विश्लेषण करते हुए रोमेल ने पत्नी को बताया कि यदि वह आत्महत्या नहीं करता है और स्वयं पर मुकदमा चलाने की मांग रखता है तो हिटलर उसे तथा पुत्र मेनफेड दोनों को दंडित करेगा । और आत्महत्या कर लेने पर न केवल परिवार को सुरक्षित छोड़ दिया जाएगा, वरन् उसकी (रोमेल की) अंत्येष्टि भी पूर्ण सैनिक सम्मान के साथ की जाएगी । फ्यूहरर (हिटलर) यह नहीं चाहता कि जरमन जनता इस तथ्य को जान पाये कि उसका एक अत्यंत प्रिय सेनापति भी हत्या-जैसे जघन्य और घिनौने कार्य के षड्यंत्र में शामिल था !

हिटलर द्वारा रोमेल की हत्या की यह योजना किसी नाजुक आपरेशन के दौरान बरती जानेवाली सतर्कता से युक्त थी ।

योजना थी कि डल्थ की ओर जाते समय राह में किसी स्थान पर रोमेल विष खाकर स्वयं मृत्यु को निमंत्रित करेगा । विष खाने के अगले तीन सेकेंड बाद उसका इस दुनियाँ से संबंध टूट चुकेगा । पश्चात् उसका शव एक अस्पताल को सौंप दिया जाएगा और वहां से यह खबर फैला दी जाएगी कि १७ जुलाई को रोमेल को चोटें आयीं थीं, जिनके कारण उसकी मृत्यु हो गयी ।

रोमेल ने इस षड्यंत्र के बारे में अपने पुत्र मेनफेड तथा एक सहायक कैप्टन एस्डिंगर को भी बताया । उसने अपना ग्रेटकोट पहना और दोनों के साथ नीचे आ गया । मेनफेड और एस्डिंगर ने उसे बेटन और दस्ताने दिये । और तब वे बाहर आये जहां कार में बैठे दो 'हत्यारे जनरलों' के रूप में मृत्यु उसके आलिंगन की प्रतीक्षा में थी !

एक बजकर पच्चीस मिनट ! उल्म के एक अस्पताल को रोमेल का शव सौंपा गया । शव-परीक्षा के लिये आये डॉक्टर को जनरल बर्गडार्फ ने यह कहते हुए रोक दिया— "शरीर को हाथ मत लगाओ । बर्लिन में सारा इंतजाम किया है ।"

करुणा से भरा अठारह अक्तूबर ! रोमेल की अंत्येष्टि पूर्ण सैनिक सम्मान के साथ कर दी गयी । हिटलर की ओर से एक विशाल पुष्पचक्र रोमेल के शव पर चढ़ाया गया; दिवंगत सेनापति की प्रशस्तिस्वरूप एक विरुदावलि पढ़ी गयी । रोमेल की मौत पर, अपने प्रिय सेनापति के विछोह पर, जरमन जनता फूट-फूट कर रोयी ।

रोमेल की इस रहस्यमयी मौत के बारे में अनेक प्रकार की चर्चाएं हैं । कुछ लोगों का कहना है कि रोमेल को विषैला गैस मास्क पहनने को कहा गया था । अन्य के अनुसार उसे विष दिया गया ।

ग्राम- दरकौली, पोस्ट-लुटसान, अलीगढ़, २०२१३९

गोलकुंडा के बादशाह अब्दुल्लाह कुतुबशाह ने एक लड़ाई में हार कर अपने वजीर मीर जुमला द्वारा शाहजहां को कोहनूर हीरा भेंट में भेजा था । इस हीरे का वजन ३१९ रत्ती था । यह हीरा गोदावरी नदी के किनारे कोलार हीरे की खान क्षेत्र में खेत को जोतते समय एक किसान को मिला था ।

बुद्धि विलास

[illegible] अपने सामान्य ज्ञान को श्रेष्ठ समझिए, आधे से अधिक में साधारण और आधे से कम में अल्प ।

— संपादक

१. एक व्यक्ति ३६०० रु. में एक टी. वी. बेचता है तो उसे १० प्रतिशत घाटा होता है । बताइए, उसका क्रय-मूल्य क्या है ?

२. पृथ्वी से भेजा गया वह कौन-सा अंतरिक्ष-यान है जो लगभग एक वर्ष बाद शुक्र ग्रह की कक्षा में प्रवेश कर उसकी परिक्रमा करते हुए उसके धरातल के अधिक स्पष्ट चित्र भेजेगा ?

३. किस ब्रिटिश विद्वान एवं महान भाषाविद ने लगभग दो सौ वर्ष पूर्व 'अभिज्ञान शाकुन्तल' का अंगरेजी में अनुवाद किया था और जिसने सबसे पहले यह कहा था कि ग्रीक तथा लैटिन भाषाएं संस्कृत से जुड़ी हैं ?

४. भारत का वह कौन महान क्रांतिकारी था जिसने 'गदर पार्टी' की स्थापना तथा विदेशों में भारतीय स्वतंत्रता-आंदोलन के लिए भारी योगदान किया, जिसने वृद्धों की अंतर राष्ट्रीय खेलकूद प्रतियोगिता में स्वर्ण-पदक जीता और जिसका विगत मार्च में ९७ वर्ष की आयु में निधन हुआ ?

५. महान चित्रकार पिकासो का कौन-सा चित्र अब तक सबसे अधिक मूल्य में बिका है ?

६. क. अतिशय बलशाली 'सुपरमैन' सबसे पहले कहां प्रकट हुआ था ? ख. उसकी कल्पना किसने की थी ?

७. क. विटामिन 'सी' की खोज किसने और कब की थी ? ख. यह किन बीमारियों से रक्षा करता है ?

८. विश्व न्यायालय में भारत का कौन न्यायाधीश चुना गया है ?

९. भारत के किस प्रक्षेपास्त्र के सफल प्रयोग से हमारे देश की गिनती इस दिशा में दुनिया के गिने-चुने देशों में होने लगी है ?

१०. देश में किस नये तथा महत्त्वपूर्ण बंदरगाह का विगत मई में प्रधानमंत्री द्वारा उद्घाटन हुआ ?

११. नीचे दिये गये चित्र को ध्यान से देखिए और बताइए यह क्या है—





पूर्वाभास मृत्यु का

किसी स्वप्न की ऐसी साकार एवं दुखद परिणति मैंने अपने छोटे-से ही जीवनकाल में देखी, तब मैं बी. ए. प्रारंभिक वर्ष में थी और कॉलेज काफी दूर होने एवं अन्य कोई सुविधा ना होने के कारण सायकिल से आया-जाया करती थी। एक बार मेरी सबसे प्रिय सहेली नीलू शुक्ला ने कहा आज मैंने एक स्वप्न देखा है जिसमें मैं एक दुर्घटना का शिकार हो क्षत-विक्षत सड़क पर पड़ी हूं। उसका स्वप्न काफी भयानक था और उसके सायकिल चलाने का बेफिक्र ढंग एवं ट्रैफिक की अधिकता के कारण स्वप्न ज्यादा असंभव भी नहीं था लेकिन उस समय बात को हंसी में टालते हुए मैंने इतना ही कहा, ''और किसी के समझाने से तुम समझती नहीं कम से कम स्वप्न से ही कुछ सबक लो।'' बात आयी गयी हो गयी होती लेकिन एक बार अचानक ही उसने फोटो खिंचाने की जिद ठान ली और फोटो की एक कॉपी मुझे देते हुए कहने लगी यदि कभी मैं मर गयी तो इस फोटो के सहारे मुझे याद करना एवं सदैव मुझे अपने पास रखना, एक बार मैं फिर स्तब्ध हो उठी। आज सोचने पर यह लगता है ऐसी कौन-सी शक्ति थी जो उसे आगत मृत्यु की पूर्व सूचना दे रही थी और सबसे अधिक आश्चर्य तब हुआ जब अपने मृत्यु से मात्र एक घंटा पूर्व उसने दो नयी धोती खरीदीं और कालेज से घर लौटते हुए एक टैंपो एक्सीडेंट में क्षत-विक्षत मृत शरीर लिए सड़क पर पड़ी थी। ऐसा लगा मानो स्वयं यमराज ने उसे अपने कफन का प्रबंध कर लेने को कहा हो। और शायद उसने मौत की दस्तक सुन ली थी।

—सुधा तिवारी

म. प्र. वि. मं. कॉलोनी (कोरवा)

जीवन की पूंजी : श्रम

एक दिन की बात है। मैं कॉलेज के बाहर घर आने के लिए अपनी सहेली के साथ रिक्शे का इंतजार कर रही थी। तभी एक रिक्शेवाला आया और हम उसमें सवार हो गये! अभी हम कुछ ही दूर चले थे कि मेरा ध्यान रिक्शेवाले के हाथ पर गया। उसका एक हाथ गायब था। मैंने अपनी सहेली से कहा कि, ''इसका एक हाथ नहीं अतः हम इसको एक रुपया ज्यादा दे देंगे!'' हालांकि मैंने यह बात धीरे ही कही थी लेकिन शायद रिक्शेवाले ने सुन ली थी।

जब हम घर के सामने उतरे और मैं रिक्शेवाले को पैसे देने लगी तो रिक्शेवाला मेरे सिर पर हाथ रखता हुआ बोला, ''बेटी, परिश्रम

ही ज़िंदगी की सबसे बड़ी पूंजी है ! यदि व्यक्ति में काम को करने की लगन है तो वह कुछ भी कर सकता है ! फिर तुम तो हमें हिम्मत देनेवाली हो अगर तुम ही हमें अपाहिज कहकर हमारा अपमान करोगी तो जिंदगी की मुसीबतों का सामना हम कैसे कर पाएंगे ।"

उस समय वह रिक्शेवाला मुझे देवदूत-सा जान पड़ा, जो मेरे दिल के दरवाजे पर दया और सहानुभूति की दस्तक देकर चला गया ! अब मुझे अपने आप से घृणा होने लगी थी लेकिन ना जाने कब वह रिक्शेवाला जिंदगी की मुश्किलों का सामना करने के लिए चल पड़ा था । अब मेरे मन में उसके प्रति दया नहीं थी । वरन् मैं उसकी सफलता की कामना कर रही थी । निराशा के क्षणों में उसका स्वाभिमान आज भी आत्म विश्वास की दस्तक दे जाता है ।

—वनीता नंदवाना

१८ ज १७ विज्ञान नगर, कोटा (राज.)

संकल्प

तब मेरी अवस्था दस वर्ष की थी और मैं जलपाईगुड़ी के एक बंगाली स्कूल में चौथी कक्षा का छात्र था । उन दिनों मैं बहुत बिगड़ गया था । घर से स्कूल के लिए निकलता और रेलवे स्टेशन के पास बसी भिखारियों की बस्ती में उनके बच्चों के साथ कंचे खेलता । घर लौटता तो मेरी जेबों में कंचे भरे होते ।

मेरे पिता चौकीदार थे । वे चाहते थे कि मैं पढ़-लिखकर योग्य बनूं, लेकिन मैं तो दूसरी ही राह पर चल रहा था । मैं जब भी घर लौटता तो पिता के कोप का शिकार बनता । वे मुझे पीट-पीटकर अधमरा कर देते । मुझे उन पर बेहद गुस्सा आता ।

इसी कारण एक दिन जब वे बागान से साइकिल पर लौट रहे थे, तो मैंने झाड़ियों में छिपकर उनके सिर पर ईंट दे मारी । वे चीखकर साइकिल से नीचे गिर पड़े । बागान में चोरी-छिपे घास काटनेवाले कुछ स्त्री-पुरुष दौड़कर उनके पास पहुंचे । कुछ देर में और लोग भी एकत्र हो गये । वे सब पिताजी को अस्पताल ले गये । मैं भय के कारण रातभर वहीं छिपा रहा । सुबह होते ही मैं वहां से निकला । पगडंडी पर पहुंचा तो देखा कि कुछ पुलिसवाले एक कुत्ते के साथ पिताजी पर हमला करनेवालों को ढूंढ़ रहे हैं । भय के कारण मैं फिर से एक झाड़ी में छिप गया ।

लेकिन मेरा दुर्भाग्य ! वह कुत्ता मेरे पास आ पहुंचा और बार-बार भौंकने लगा । अब तो पुलिसवाले भी आ गये । मैं पकड़ा गया । उन्होंने बिना कुछ पूछे मुझे बंद कर दिया । पांच दिनों बाद मेरे माता-पिता मुझे लेने आये । पिताजी मुझे देखते ही रोने लगे । मैं भी रोने लगा ।

पुलिस से मुक्ति पाते ही मैंने संकल्प किया कि मैं अब कभी रेलवे स्टेशन की ओर नहीं जाऊंगा और मन लगाकर पढ़ूंगा । आज मैं बारहवीं कक्षा में हूं । पर अब भी जब कभी पिताजी के माथे पर चोट का निशान देखता हूं तो ग्लानि से भर जाता हूं ।

—श्रीकृष्ण सुवेदी 'विश्व'

ज-२-१२७, सामाखुशी, काठमांडू (नेपाल)



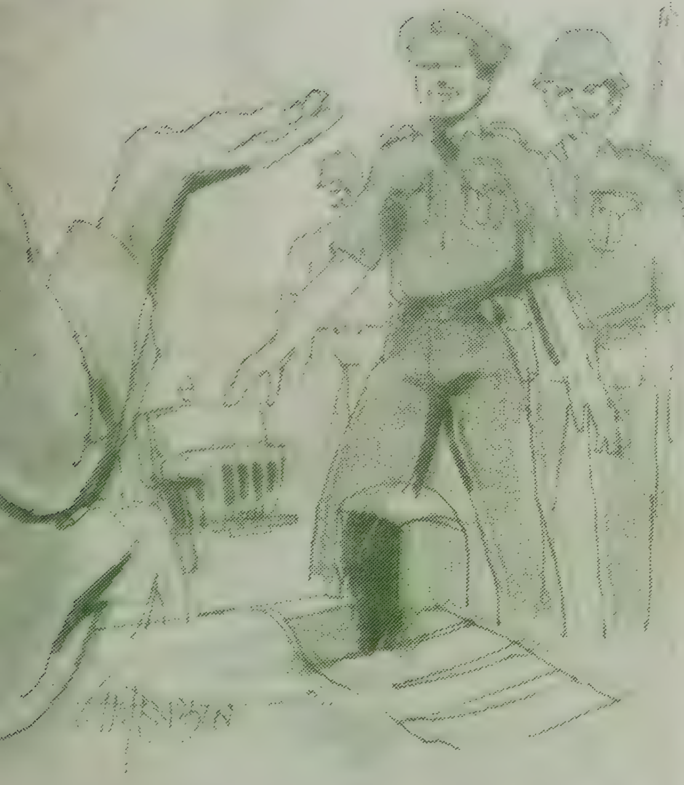
पंजाबी कहानी

पंजाब सिंह

● कर्तार सिंह दुग्गल

चंदो एक अजीब कशमकश की लपेट में थी। अड़ोस-पड़ोसवाले आठों पहर खुसर-फुसर करते रहते। बेहूदा लोग। जितने मुंह उतनी बातें। पंजू, उसका घरवाला सच्चा मोती था। कैसे सलीके से सुबह उठकर नियम से जप करता। शाम को "रह रास" का पाठ करता था। क्या मजाल जो "कीर्तन सोहिला" पढ़े बिना, उसकी आंख लग जाए। कई बार यूं ही होता...

और चंदो के होंठों पर मुसकान खेलने लगी। कोई आधी रात को भी "कीर्तन सोहिला" पढ़ा करता है ? एक मजे-मजे में, एक नशे-नशे में, तारों की छांह में, सपनों में डूबी हुई पड़ी होती कि उसका घरवाला अचानक अभी-अभी अपने पलंग पर लौटा, शहद-जैसे मीठे स्वर में, "रवि चंद दीपक बने, तारिका मंडल जनक मोती..." कीर्तन सोहिला का पाठ कर रहा सुनायी देता। और फिर मुश्किल से वह "जिसे जगाये, पियावे, इह रस, अकथ कथा तिन जानी", तक पहुंचता कि दुलहन की आंख लग जाती। अल्हड़ जवानी की नींद, उन्हें ब्याहे अभी दिन ही कितने हुए थे। साल भी तो नहीं हुआ था।



गली-गली मातम । घर-घर विलाप ।

अकेली अपने आंगन में बैठी चंदो का दिल कभी-कभी डूबने लगता । किस्मतवाली होती हैं, जिनके सास-श्वसुर, देवर -जेठ साथ रहते हों । पंजू, उसका घरवाला तो एक-अकेला था । मां-बाप की इकलौती निशानी । खुद वे ईश्वर को प्यारे हो चुके थे । बहन-भाई कोई था नहीं । बस अड़ोस-पड़ोसवाले थे । उन्होंने भी आजकल कैसे नजरें बदल ली थीं । "बुरी संगति में पड़ गया है पंजू !" जो कोई भी मुंह खोलता, यही उसकी जबान से निकलता ।

"कैसी बुरी संगति ?"

चंदो को तो अपने मर्द में कोई बुराई नजर नहीं आती थी । इधर उसने अपनी पढ़ाई पूरी की, उधर घरवालों ने उसे शादी में बांध दिया । पूरी बारह क्लास पास था । कैसे गिट-गिट अंगरेजी बोलता था । अखबार भी अंगरेजी का ही पढ़ता था । बस आजकल एक खेतीबाड़ी में उसका मन नहीं लगता था । एक तो ये पूरबवाले खेत-मजदूर सांस नहीं लेने देते थे । उनसे भरी गाड़ियां की गाड़ियां आतीं और तूफान की तरह सारा काम समेट लेते । घरवालों को बेकार बनाकर, अलग कर देते । बस "दारू पियो और भांगड़ा नाचो ।"

लेकिन उसके मर्द ने तो यह सब कुछ कभी नहीं किया था । उसका अपना ट्रेक्टर था । कैसे ढंग से, चलाकर, खेतों की ओर निकल जाता था । बुवाई-बिजाई के दिनों में उसे होश नहीं रहता था । नहर का पानी खुला था । खेतिहर मजदूर उसकी मदद कर देते थे । फसल तैयार होती तो कटाई में हाथ बंटाते । पंजू ने कभी किसी का हक़ नहीं मारा था । अपने पिता की

फिर चंदो सोचती आखिर वह जाता कहां था ? पिछले कई दिनों से, मुंह अंधेरे कहीं निकल जाता था, फिर कहीं देर सांझ ढले लौटता था । कई बार, यूं भी होता कि रात-रातभर वह उसकी बाट देखती रहती । कभी जवान-जहान दुलहन को भी कोई यूं अकेला छोड़ा करता है । और फिर आजकल की बिगड़ी हुई हवा । चारों ओर से बुरी-बुरी बातें ही सुनायी देती थीं । मक्खी-मच्छरों की तरह लोगों की हत्या कर दी जाती थी । गोली चाहे किसी दहशत पसंद की बंदूक से निकली हो या फिर सिपाही की, मरते तो आम लोग ही थे । किसी का सुहाग, किसी का बेटा, किसी का भाई । कोई बच्चा यतीम होता था । किसी की चूड़ियां फोड़ी जाती थीं । कोई आंगन सूना हो जाता था । गांव-गांव लहू के छींटे ।

मर्यादा वह बनाये हुए था। उसका बाप गांव का मुखिया था। सारे इलाके में, लोग उसका आदर सत्कार करते थे।

यूं सोचते हुए उस दिन चंदो, अपना आंगन, और दालान बुहारकर, कोठरी में जा घुसी। कोठरी में रखे बक्से-संदूकों को झाड़-पोंछ किए हुए उसे कितने दिन हो गये थे। खूंटियों पर टंगे कपड़े-लत्तों को उसने झाड़ा-संवारा नहीं था। उसका काफी दहेज इसी कोठरी में रखा था— ट्रंक, सिलाई की मशीन, रंगीली पीढ़ी, मोर-पंखी, कैसे सुंदर ढंग से उसकी मां रानी ने, मोतियों से पिरोयी थी, तिल्ले से जड़ी थी। चंदो सोचती, यह रंगीली पीढ़ी, यह मोर-पंखी, मैं तब बाहर निकालूंगी, जब मेरे आंगन में एक लाल खेलेगा। रंगीली पीढ़ी पर बैठकर वह पालने में सोये हुए बच्चे को मोर-पंखी से हवा करेगी। और साथ में लोरियां गाएगी।

लोर मलोरी
दूध कटोरी

दूध का ध्यान आते ही, चंदो को याद आया कि उनकी "भूरी" लात मार गयी थी। कल सारी रात रंभाती रही थी। जैसे कोई किसी को पुकार रहा हो। भूरी को नया करवाना होगा। अब अगर उसका मर्द घर में होता तो सुबह-सवेरे ही उसे भूरी की जंजीर थमा देती। साथ के गांव में उसे जाना होगा। और फिर चंदो को— जैसे गुदगुदी होने लगी। इधर भूरी नयी होगी, उधर उसे खुद आस लग जाएगी। उनकी शादी को एक साल हो गया था। भगवान और कितनी प्रतीक्षा करवाएगा ? उसकी पड़ोसिन चिंतो की तो गोद भी हरी हो गयी थी। चंदो के साथ ही तो उसके हाथ पीले हुए थे।

यूं सोच रही चंदो, कोठरी में जरा आगे बढ़ी, और उसकी ऊपर की सांस ऊपर, और नीचे की सांस नीचे रह गयी। सामने कोने में, संदूकों के पीछे ये तमाम सारे हथियार कैसे पड़े थे ? ढेर सारा गोला-बारूद, हथगोले, पिस्तौल, राइफलें !

चंदो के पसीने छूटने लगे। कौन कमबख्त यह सब कुछ उसके घर में लाकर डालता रहा था ? उससे किसी ने क्यों नहीं पूछा था ? और चंदो की छाती में-जैसे एक बम फटा हो— अड़ोस-पड़ोसवाले शायद सच्चे थे। यह तो उसका वर था। उसी की करतूत थी। सचमुच वह बुरी संगति में जा मिला था। तभी तो, कितने दिनों से गुम-सुम रहता था। अकेला होता तो आप-से-आप कुछ बोलने लगता। न मालूम कौन-सी बेहूदा किताबें पढ़ता रहता था। चंदो सोचती, यह तो बेड़ा ही डूब गया था।

और फिर-जैसे उसे कोठरी के हलके-हलके अंधेरे से डर लगने लगा। उसकी सांस फूल गयी। वह बाहर निकल आयी। बाहर दालान में वह धड़ाम से पलंग पर जा गिरी। पलंग पर पड़ी, उसकी आंखों से आंसुओं की बौछार होने लगी।

चंदो सोचती वे लोग जो बस में से बाहर निकालकर मारे गये थे, शायद उसके घरवाले की यह करतूत हो ! उनके गांव के बाहर ही तो यह अनर्थ हुआ था। चंदो को अच्छी तरह याद था, उस दिन पंजू घर में नहीं था। अगले दिन, जब वह लौटा, चंदो ने हाथ मलते हुए उस दुर्घटना का जिक्र किया। लेकिन वह हैरान रह गयी। उसके मर्द के कानों पर जैसे जूं तक न

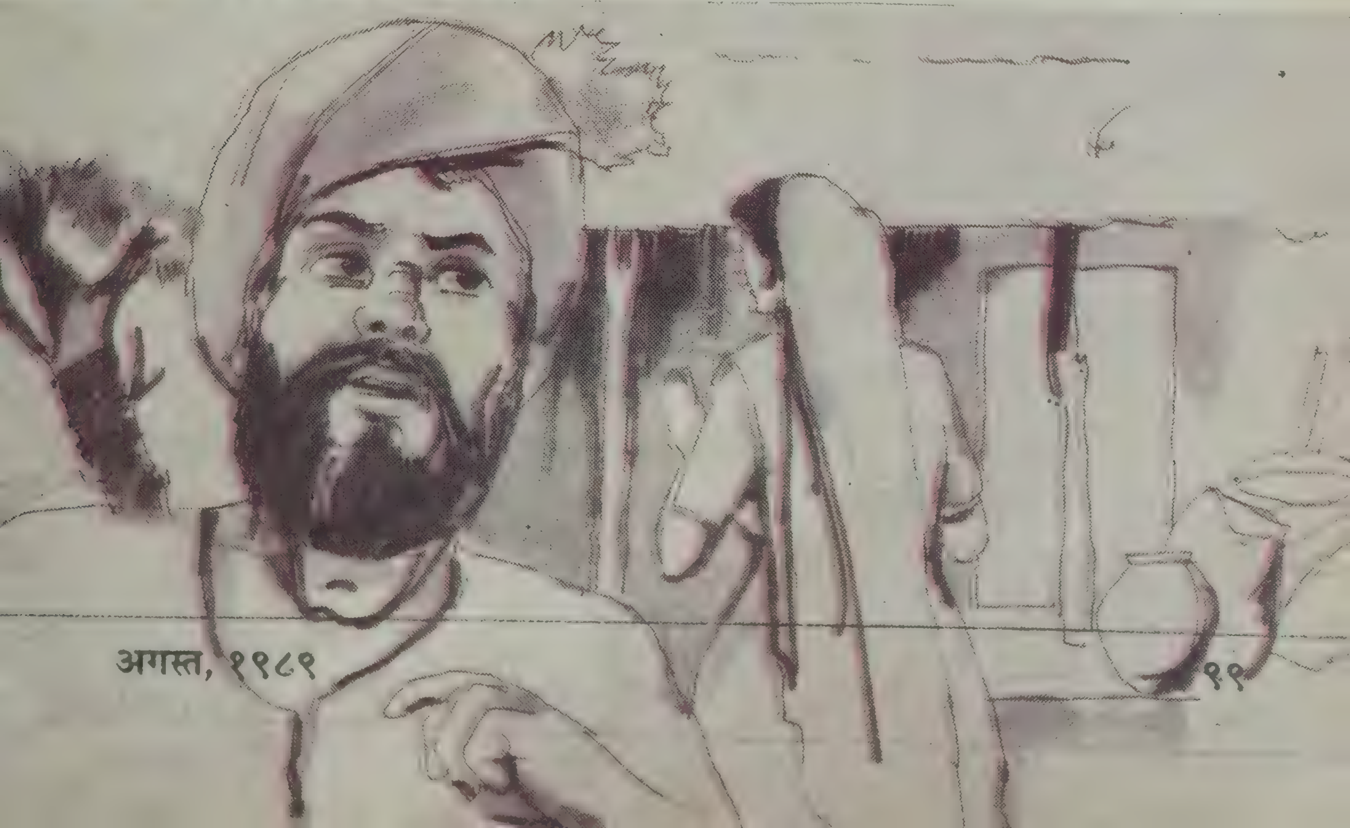
रेंगी हो। जैसे उसे कुछ सुनायी ही नहीं दिया था। अफसोस का एक बोल भी तो उसकी जबान से नहीं निकला था। साथ के गांव में उसकी सहेली देवकी के घरवाले संतराम की किसी ने हत्या कर दी। वह भी शायद पंजू के किसी साथी की हरकत होगी। और फिर भागो, तापो, बंती, गुड्डी, राधा, रुक्मिणी— ढेर-सारी उसकी जान-पहचानवाली जवान-जहान लड़कियां थीं, जो एक-एक करके विधवा हो गयी थीं। उनके चित्र एक-एक करके उसकी आंखों के सामने घूमने लगे। उजड़े हुए गांव, वीरान गलियां, झुलसे हुए आंगन। यूं, चिंताओं में डूबे हुए, पता नहीं कब, चंदो की आंख लग गयी।

न मालूम कितनी देर वह यूं सोयी पड़ी रही। जब चंदो की आंख खुली, उसका मर्द घर लौट, नहा-धोकर सामने बरामदे में चौकी पर आलती-पालती मारे बैठा पाठ कर रहा था। कितनी देर वह पाठ करता रहा। चंदो ने इतनी देर में उसके लिए चार पराठे सेंक लिए। दाल-सब्जी रात की बची रखी थी। लस्सी उसने सुबह बिलो ली थी। मक्खन से कटोरा भरा था।

चंदो ने सोचा, खाना खा चुकेगा, तो वह उससे कोठरी में रखे हथियारों के बारे में पूछेगी। और फिर आजकल वह इतना बाहर क्यों रहने लगा था। लोग खुसर-फुसर करते रहते थे। उसे अपने पिता का तो कुछ लिहाज होना चाहिए था! अभी तो उन्होंने गृहस्थी की दहलीज पर पांव ही रखा था। ढेर-सारे चंदो के सपने थे।

चंदो अभी चूल्हे-चौके से नहीं निबटी थी कि पंजू का पाठ खत्म हो गया। कितनी देर वह हाथ जोड़े, आंखें मूंदे, खड़ा-खड़ा अरदास करता रहा। फिर सामने आंगन के बीच में अटपटे रखे ट्रेक्टर पर जा बैठा। कहने लगा, कल जल्दी में इसे यूं ही बीच आंगन में छोड़ गया था। एक ओर कर दूं।

ट्रेक्टर चलाकर, उसने मोड़ा ही था कि उनकी मुरगी का एक चूजा नीचे आकर दब गया। मुरगी बाकी चूजों के साथ, आगे-पीछे वाबेला मचा रही थी।



पंजू ने देखा, और ट्रेक्टर वहीं का वहीं रोक लिया। फूली हुई सांस, वह ट्रेक्टर से कूदकर नीचे उतर आया। सचमुच उनकी मुरगी का एक चूजा ट्रेक्टर की लपेट में आकर कुचला गया था। एकाएक आगे बढ़कर पंजू ने चूजे को उठा लिया। चूजे को अपने दोनों हाथों में लिए वह छल-छल आंसू रो रहा था। मुरगी बाकी चूजों के साथ चूं- चूं करती उसके आगे-पीछे घूम रही थी।

पंजू कितनी देर, पत्थर-का-पत्थर, वैसे का वैसा आंगन में खड़ा रहा। चूंजा अभी भी उसके हाथों में था। लहू से लथ-पथ। पंजू बिट-बिट उसकी ओर देख रहा था। उसके चेहरे पर हवाइयां उड़ रही थीं। जैसे किसी से कोई घोर अपराध हो गया हो।

कितनी देर, इंतजार के बाद, चंदो उसे बांह से पकड़कर बरामदे में ले आयी। उसके हाथ से चूज़ा लेकर उसने उसे एक ओर रख दिया। साबुन से उसके हाथ धुलाये। फिर थाली परोसकर उसके सामने ला रखी। सुबह से वह भूखा-प्यासा था। खाना देखकर पंजू के फिर आंसू बहने लगे। छम-छम। उसने थाली को एक तरफ कर दिया। उससे आज कुछ नहीं खाया जाएगा। चंदो लाख उसे समझाती, आखिर तो चूज़ा ही था। हफ़्ता-दस दिन बाद उन्हें उसे झटकाना ही तो था। लेकिन पंजू की समझ में कुछ नहीं आ रहा था। सारे घर में-जैसे शोक छा गया हो। घर के मर्द ने जब खाना न खाया हो तो पत्नी कैसे कुछ मुंह लगा सकती है ?

सामने ट्रेक्टर के पहिये के नीचे कुचला चूज़ा पड़ा था। पंजू उसे देखता और उसकी आंखें भर आतीं। चंदो इसी उलझन में थी कि अपने मर्द को कैसे सांत्वना दे कि बाहर गली में एक जीप आ रुकी। जीप से उतरे पुलिसवाले बंदूकें थामें, तेज-तेज कदम उनके आंगन में आ धुसे। उनके साथ उनका अफसर था। "यही है पंजू, पंजाब सिंह।" अफसर के साथ उतरे मुखबिर ने पंजू की ओर इशारा करके कहा। और पुलिसवालों ने आगे बढ़कर दुर्दांत आतंकवादी को हथकड़ी लगा दी।

पी. ७, हौज खास
नयी दिल्ली-११००१६

जब भी राजशाही व सामंतशाही के अत्याचार व अन्याय से पीड़ित, शोषित दीन-हीन जनता को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करने की कोशिश की गयी तो उसे हमेशा राज्य के विरुद्ध षड्यंत्र समझा गया और इस षड्यंत्र की कीमत भी जनता को ही चुकानी पड़ी। लेकिन चीन में एक बार इसकी कीमत चुकानी पड़ी बुद्धिजीवियों को। चीन के छीन वंशीय शासक व्हांग शजती ने अपने शासनकाल (ईसापूर्व २४६-२९०) में महान दार्शनिक कन्फूशियस के स्वतंत्र विचारों के समर्थक ४६० विद्वानों को जिंदा दफन करा दिया और उनका सारा साहित्य जलवा दिया।

कब्र में कैद प्रेम की दास्तान

● एम.एस. बतरा

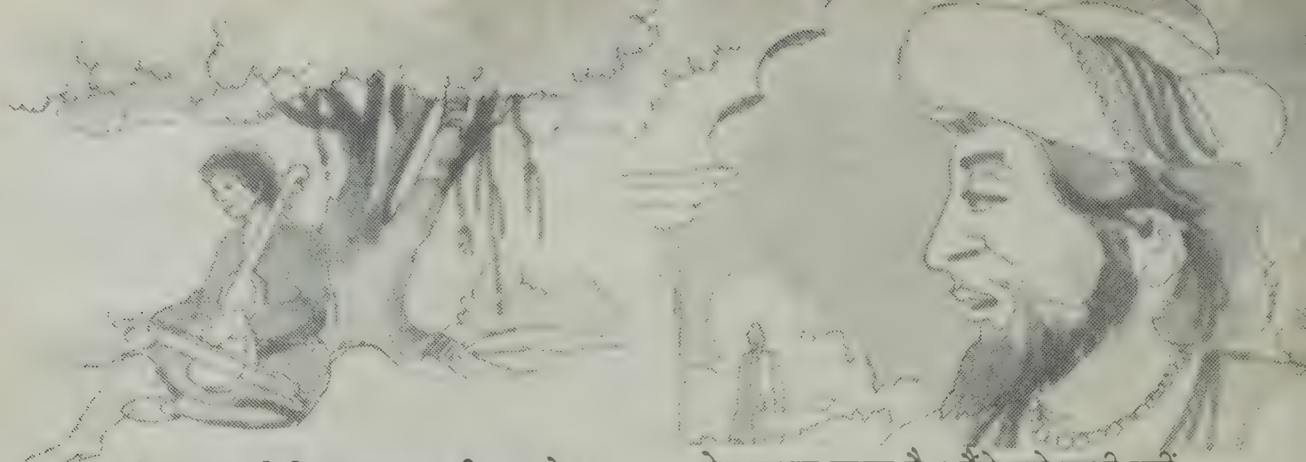
स्वात इलाके की जवान और रंगीन वादी आदम खां के रबाब के मीठे सुरों से भरपूर थी। उसके रबाब की तारों से निकले नगमे कोयलों के हिजर को और अधिक हृदय-विदारक बना देते थे।

आदम खां के रस भीगे इन नगमों के अलावा उसकी भरपूर जवानी, चमकीली आंखें, खिला हुआ गेंहुआ रंग, तीखे नाक-नक्श और लंबे कद के चर्चे बाज़ दर्रा बाला की हदों से गुजरकर सारे स्वात इलाके में फैल चुके थे।

आदम खां गांव की हर नौजवान लड़की का महबूब था। अनगिनत लड़कियां उसके रबाब की तारों से उलझ चुकी थीं, लेकिन आदम को किसी से भी प्यार नहीं था। वह उनकी ओर आंख उठाकर भी नहीं देखता था। यदि उसको प्रेम था, तो केवल अपने रबाब से।

उसकी आवाज हर समय किसी आकाशी नगमे की तलाश में थिरकती रहती। वह अपनी आंखें मूंदकर हर समय संगीत के ठाठें मारते समुद्र में बहता रहता। उसकी जीवन-नौका बगैर किनारे और पतवार का ख्याल किये एक ऐसी जल-परी की खोज में रहती, जो मीठे सुर से भी अधिक दिलकश हो और किसी आसमानी हूर से भी अधिक सुंदर। उसके दिल और दिमाग पर एक ऐसी सुंदरी का चित्र अंकित हो चुका था, जिसे वह अपने सपनों की रानी बनाना चाहता था।

माता-पिता अपने इकलौते पुत्र को देखकर जी रहे थे। वे उसकी प्रसिद्धि और प्रशंसा सुनकर खुदा का धन्यवाद करते। उनके दिल में



एक ही आरजू थी कि आदम शादी कर ले । लेकिन आदम के लिए उसकी काल्पनिक महबूबा के बिना किसी ओर से विवाह करना असंभव था । उसने साफ इनकार कर दिया । माता-पिता को बहुत सदमा पहुंचा । वे आदम के इनकार से बिलकुल अनजान थे । उनको अपने पुत्र के ख्याली प्रेम का कुछ ज्ञान नहीं था ।

जन्म-जन्म का प्रेम

एक दिन जब आदम रबाब के मधुर संगीत में खोया हुआ था कि तभी उसके कानों में कुछ ऐसी आवाजें पड़ीं, जिससे उसके शरीर में कंपकंपी छिड़ गयी । उसने मुड़कर देखा तो साथ के गांव बाज दररा पायां से आयी एक बुढ़िया अपने गांव की एक नौजवान लड़की के रूप का जिक्र कर रही थीं । वह ताऊस खां की शहजादी दुरखानई थी । आदम को लगा जैसे वह उसके सपनों की महबूबा का जिक्र सुन रहा है । उसने बुढ़िया के सम्मुख अपने सपनों में देखी महबूबा के भिन्न-भिन्न अंगों की सुंदरता का जिक्र करना शुरू किया । जब उसने अपनी सपनों की महबूबा की बांये गाल पर तिल और माथे पर एक जख्म के मनमोहक निशान की बात की, तो बुढ़िया ने कसम खाते हुए कहा, 'आदम बेटे, तूने दुरखानई को अवश्य कहीं देखा होगा ।' पर आदम ने कहा, 'नहीं मौसी, मेरा सपना सच्चा है । मैंने उसे कभी नहीं देखा । मेरा प्रेम जन्म-जन्म से दृढ़ और पवित्र है ।'

बुढ़िया ने ठंडी सांस भरते हुए कहा, 'बेटा, यह सब व्यर्थ है, क्योंकि दुरखानई की सगाई तो एक खान के साथ हो चुकी है ।' बुढ़िया के यह शब्द सुनकर आदम की आंखों के सामने अंधकार छा गया ।

बुढ़िया ने अपने गांव लौटकर दुरखानई से आदम के सपनों का जिक्र किया तो उसके आश्चर्य की सीमा नहीं रही । जवाब में दुरखानई ने बुढ़िया को बताया कि उसे भी सपनों में एक युवक दिखायी देता है । उसने उस युवक की जो तसवीर बयान की, आश्चर्य कि वह आदम का ही थी । हर रात अपने सपनों में आदम को किसी हरी-भरी वादी में नदी के किनारे हाथ में रबाब लिये हुए देखती । जब रबाब के सुर शिखर पर होते तो दुरखानई स्वयं एक अप्सरा की भांति अरशी नाच नाचने लगती और रबाब के जादू भरे नगमों में घुल-मिल जाती ।

आदम को उस बुढ़िया ने दुरखानई का प्रेम-संदेश और उपहार में फूलों का गुच्छा लाकर दिया और एक खुशखबरी भी सुनायी कि दुरखानई शीघ्र ही एक शादी में शामिल होने के लिए उसके गांव में आनेवाली है ।

दुरखानई आयी । शादी के जलसे में आदम



ने अपना रबाब बजाकर अपनी कला का नहीं, बल्कि अपनी बेपनाह मुहब्बत के सोज और पीड़ा का प्रदर्शन किया । जब आदम की नजर दुरखानई पर पड़ी, तो उसने अपने सपनों की राजकुमारी को साकार रूप में अपने सामने पाया ।

प्रेम-रोग में गिरफ्त आदम की जो हालत हुई, वह अजीब थी । उसके रोग का इलाज केवल दुरखानई के ही पास था । उसके दो मित्रों मेहरू और बालू से जब उसकी हालत देखी नहीं गयी तो उन्होंने किसी न किसी तरह आदम को उसकी महबूबा के पास पहुंचा दिया । एक तारों-भरी रात में मुहब्बत के मारे प्रेमी-प्रेमिका मिले और उन्होंने इस मुलाकात में एक-दूसरे का आहों के गीतों से ही अभिनंदन किया ।

जब ठंडी आहों के बादल साफ हुए और आंसुओं की वर्षा थमी, तो दोनों के चेहरों पर एक हलकी-सी मुसकराहट उभरी । ऐसा लगा कि आदम कह रहा हो, 'ऐ मेरे सपनों की रानी, तू कब तक मेरे सपनों में आवारा घूमती रहेगी ? आ, मेरे नगमों की तरह मेरे रबाब के तारों में ढल जा । मिजराब की तरह मेरी अंगुलियों के साथ एक हो जा । अब जुदाई सही जाती नहीं ।' और इसके उत्तर में दुरखानई कह रही हो, 'मेरे महबूब, मैं तो तेरे नगमों में समा जाने को बेताब हूं । हम दोनों एक-दूसरे के बिना अधूरे हैं, रबाब और नगमे की तरह, मिजराब और तारों की तरह । ऐ मेरे चांद, मैं चकोर की भांति हर तरफ तुझे ढूंढ़ती रहती हूं, लेकिन हर कदम पर जाल बिछे हुए हैं ।'

'लेकिन, प्यारी दरखो, तेरी सगाई ? तेरा विवाह ?

'मेरे महबूब, बेसुरे नगमे गाने बंद कर । क्या तुझे अपने रबाब पर विश्वास नहीं रहा ? रबाब के साथ-साथ तेरे पास बंदूक भी तो है । जब मिजराब से काम न चले, तो गोली को काम में ला । यही यूसफजई पठान की वीरता और साहस का चिह्न है । हम एक-दूसरे के हैं ।'

ज्वाला और भड़क उठी

अभी इन दो प्रेमियों के दिलों की बातें खत्म नहीं हुई थीं कि मुर्गे ने सुबह की बांग दे दी । दुरखानई के आंगन में बंधी हुई भेड़ों ने मैं-मैं करनी शुरू कर दी । दोनों प्रेमी जैसे गहरी तंद्रा से जाग उठे हों ।

दोनों ने एक-दूसरे को अपनी अंगूठियां दीं और चकवे-चकवी की भांति एक-दूसरे से बिछुड़ गये ।

प्यार की ज्वाला दोनों ओर ही भड़की हुई थी । प्रेम-पीड़ित हो दुरखानई ने खाट पकड़ ली । उसने सोचा कि शायद बीमारी की वजह से विवाह की बला टल जाएगी, पर नहीं ।

बीमारी की हालत में ही विवाह कर उसे डोली में बैठा दिया गया ।

ससुराल के नये पिंजरे में पहुंचकर वह और अधिक बीमार हो गयी । तबीबों को बुलाया गया । लेकिन उसके रोग की दवा उनके पास कहां थी ? जब दवा-दारु और झाड़-फूंक से भी कोई लाभ नहीं हुआ, तो उसे उसके मायके भेज दिया गया ।

जब उधर से आदम को दुरखानई के ससुराल चले जाने की सूचना मिली, वह अपने होश-हवाश खो बैठा । और फिर जब यह सूचना मिली कि दुरखानई बहुत बीमार हो मायके लौट आयी है और अब वह कुछ दिनों की ही मेहमान है, तब तो उसकी हालत का कहना ही क्या ?

आदम की यह हालत देख उसका पिता दिन-रात दुखी रहता । आखिर, उसने अपने एक मित्र मीरमाई से परामर्श करके यह फैसला किया कि दरखानई को बंदूक के जोर से प्राप्त किया जाए । मीरमाई और हसन खां ने एक सशस्त्र टुकड़ी तैयार की और दुरखानई के बाप ताऊस खां की हवेली पर हमला कर दिया । बहुत रक्त बहा, बहुत लाशें बिछीं पर आदम अपनी महबूबा को हासिल करने में सफल हो गया । लेकिन भाग्य को तो कुछ और ही मंजूर था । दुरखानई के पति और ससुर ने बंदूक के बल से नहीं, बल्कि छल से काम लिया और उन्होंने मीरमाई को तोड़ लिया । दुरखानई फिर आदम के हाथों से छिन गयी ।

आदम के मित्रों मीरु एवं बालू ने खोई हुई दुरखानई को फिर ढूंढ़ने का निश्चय किया । दूसरे दिन मीरु, बालू और आदम —तीनों मलंगों का रूप धर कर दुरखानई के गांव में जा पहुंचे और गांव के बाहर पीर के मजार पर धूनी रमाकर बैठ गये । दुआएं मांगने गांव के ढेरों लोग आये, लेकिन वह नहीं आयी, जिसकी उन्हें तलाश थी ।

बुढ़िया ने जाकर ताऊस खां से कहा, 'खान, गांव में आये हुए दरवेश बहुत पहुंचे हुए हैं । शायद, इनकी दुआ से अल्लाह हमारी फूल-जैसी बच्ची पर दया कर दे । उन्हें बुला ले ।'

जब ताऊस खां राजी हो गया, तो बुढ़िया ने दुरखानई को जा बताया कि 'बेटी, तेरे माथे से गिरा गुलाब का फूल फिर तेरे हाथ लगने वाला है । उसको चतुराई से अपने बालों में सजा लेना । बड़े जोर की आंधी चल रही है । यदि यह फूल गिर पड़ा, तो उसकी एक पत्ती भी तेरे हाथ नहीं आएगी ।'

फूल फिर गिर पड़ा

धड़कते दिल और लड़खड़ाते कदमों से भीतर ही भीतर दुआ मांगता आदम अपनी महबूबा के सामने जा पहुंचा । दुरखानई तो मुरझाई हुई कली, पतझड़ के सूखे पत्ते की तरह बिस्तर पर पड़ी हुई थी । जब दोनों के नैन मिले तो उन्होंने एक-दूसरे को आंसुओं की सौगात भेंट की । दुरखानई को इतनी दुर्बल, इतनी बेबस देखकर आदम के दिल में एक नश्तर-सा चुभ गया । जब उसने जबान खोलनी चाही, तो वह एक चीख का रूप धारण कर गयी और वह बेहोश होकर गिर पड़ा । ताऊस खां की तीखी नजर एकदम मामले को भांप गयी । क्रोध में आकर उसने तलवार खींच ली, लेकिन बुढ़िया ने उसे रोक दिया ।

जब आदम को होश आया, तो उसने अपने आप को एक अंधेरी कोठरी में पाया। ताऊस खां हाथ में नंगी तलवार लिए गरज उठा, 'लड़के, तू अपनी खैर चाहता है तो इसी समय मेरे गांव से निकल जा।' मजबूर हो आदम अपने गांव वापस लौटा।

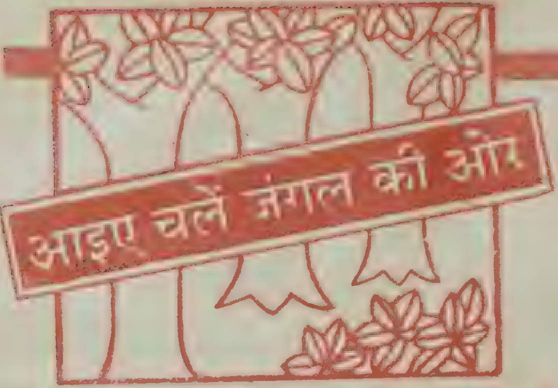
आदम को अब संसार की हर वस्तु से नफरत हो गयी। उसे कुछ भी अच्छा नहीं लगता। यहां तक कि उसे रबाब से भी चिढ़ हो गयी और उसने रबाब के टुकड़े-टुकड़े कर दिये। उसकी हालत दिन-प्रतिदिन बिगड़ती गयी तो किसी ने सुझाव दिया कि गांव की सबसे सुंदर नवयुवती गुलनार से आदम की शादी कर दी जाए। संभव है आदम के इश्क का भड़कता लावा ठंडा पड़ जाए और वह दुरखानई को भूल जाए। लेकिन आदम राजी न हुआ। आदम के प्रेम का स्तर फरिश्तों की पवित्रता और अप्सराओं की पाकीजगी से भी ऊंचा था।

हिजर और जुदाई की लंबी घड़ियां और अधिक लंबी होने लगीं। आदम की दीवानगी का रंग और पक्का होता गया। आखिर, एक दिन वह इस बेरहम दुनिया से कूच कर गया।

उधर बीमार दुरखानई पलंग पर लेटी रोम-रोम से आदम के नाम की माला जपती रहती। वह बुढ़िया ही उसके सिरहाने बैठी रहती। दुरखानई के मां-बाप की ममता तो खानदान की इज्जत और कबीले के पारंपरिक गौरव पर हावी हो चुकी थी। अकेली असहाय और बीमार दुरखानई का अंतिम सहारा उसके प्यार और प्यारे के सपने ही थे। उसने सपने में देखा कि एक बेहद सुंदर बाग है, जिसमें वह सखियों के साथ भ्रमण कर रही है। अचानक ही बाग के एक कोने में रबाब के सुरीले नगमे उभरने लगे। जब वह उस ओर बढ़ी, तो संगीत के सरोवर में चांदी की एक नाव में आदम बैठा रबाब पर उसे गीत सुनाता दिखायी दिया। उसने दरखो को देखते ही अपनी बांहें फैला दीं और दरखो जल-परी की तरह पानी की लहरों पर चलती आदम की बांहों में समा गयी। आदम ने कहा, 'दरखो, अब मैं तुझसे बिछड़ूंगा नहीं। अब हम इस नाव में ही रहेंगे।' लेकिन आंख झपकते ही उस सरोवर ने समुंदर का विकराल रूप धारण कर लिया। एक खौफनाक तूफान उठा और नाव उलटने लगी। दुरखानई चीख मारकर उठ बैठी। उसने देखा बुढ़िया उसके सिरहाने खड़ी उसको पलोस रही थी। वह बुढ़िया से गले लगकर रोने लगी, 'मेरा आदम कहां है? उसकी नाव डूबी तो नहीं?'

'बेटी, आदम तो आज ही तेरे मां-बाप के हठ पर कुर्बान हो गया है। अब वह इस दुनिया में नहीं रहा। उसने तेरी जुदाई में तड़प-तड़प कर, जान दे दीं।

यह सुनकर दुरखानई की जैसे सांस ही बंद हो गयी। उसके मुंह से केवल आदम का नाम ही निकला। उसने अपना सिर तकिये में छुपा लिया और जब कई पल बीत जाने पर भी सिर न उठाया तो बुढ़िया ने उसको हिलाया, झंझोड़ा, पर वह तो कभी की आदम के पास जा चुकी थी। आदम खा और दुरखानई की मजार पर आज भी अनगिनत लोग जाते हैं। कहते हैं, आदम की मजार के वृक्ष की लकड़ी का बना मिजराब रबाब बजानेवालों की उंगलियों में जादू भर देता है। **—एम-२११, ग्रेटर कैलाश भाग-२, नयी दिल्ली-११००४८**



सारस-सा नहीं प्रेमी कोई

अपने जीवन-साथी के बगैर सारस को जीना गवारा नहीं । यदि दोनों में से एक भी कोई किसी कारण मर जाता है तो दूसरे के लिए जीवन नीरस हो जाता है ।

भारत में पाये जानेवाले पक्षियों में सारस सबसे बड़ा है । सारस खड़ा होता है तो आदमी के कंधे तक की ऊंचाई को आसानी से प्राप्त कर लेता है । इसके चलने का ढंग भी निराला है । चाल धीमी और शानदार है । इसके उड़ने



का तरीका भी दिलकश है । उड़ते वक्त दोनों पंख बराबर होते हैं और गरदन आगे की ओर सीधी व पैर पीछे की ओर होते हैं । सारस वैसे कम दूरी व कम ऊंचाई की उड़ान ही अधिक पसंद करते हैं । इन्हें चलना अधिक पसंद है ।

जन-मान्यताओं के अनुसार कुछ पक्षियों के वध को निषेध माना गया है । उनमें सारस भी एक है । इसका कारण संभवतः यह रहा होगा कि नर-मादा में से किसी एक की हत्या कर दिये जाने पर दूसरे के द्वारा भी स्वतः अपनी जान दे देना है । आमतौर पर सारस जोड़ों में घूमते हैं । ये चरते भी साथ-साथ हैं और उड़ते वक्त भी इनका साथ नहीं छूटता है । ये हमेशा एक-दूसरे के आगे-पीछे रहते हैं । एक बार इनकी जोड़ी बन जाती है, तो ये आजीवन बनी रहती है । ये अपने बच्चों को साथ में रखते हैं ।

वर्षा ऋतु इनके प्रजनन हेतु श्रेष्ठ समय होती है । गरमी के मौसम के अंतिम चरण से ही ये प्रणय की तैयारी शुरू कर देते हैं । इनका प्रणय-नृत्य अत्यधिक आकर्षक होता है । इसके लिए ये एक अनुकूल स्थान का चयन कर लेते हैं, जहां अनेक सारस जोड़े एकत्रित होते हैं । फिर नर-मादा एक-दूसरे के सामने छलांगें मारते हुए आते हैं । इस समय ये एक-दूसरे के प्रति पूर्ण समर्पित आदर-भाव से गरदन झुकाकर उछलते हैं और एक-दूसरे के पीछे दौड़ते हैं ।

सारस अपना घोंसला घास-फूस झाड़ियों आदि से बनाते हैं । नर-मादा दोनों घोंसले की रक्षा मुस्तैदी से करते हैं । मादा एक समय में सामान्यतः दो अंडे देती है, जिनका रंग पीला, हरा, गुलाबी-सफेद और कभी-कभी भूरा या

किरमिजी रंग पर भूरे धब्बे लिये होता है।

सारस का मुख्य भोजन अनाज, कीट और छोटे सरीसृप हैं। सारस का रंग राखोड़िया होता है। पैरों का रंग हलका गुलाबी और गरदन पर लाल रंग पाया जाता है। नर में मादा की अपेक्षा लाल रंग अधिक होता है। चोंच कुछ लंबाई लिये होती है, सिर पर पिच्छ लगभग नहीं पाये जाते हैं। आंख लालिमा लिये होती है।

सारस सामान्यतः उत्तरी और मध्य भारत में पाये जाते हैं। इसके अलावा पाकिस्तान, बंगलादेश और बर्मा भी इनके निवास स्थान हैं।

—लालसिंह राओल (सी.ई.ई.एन.एफ.एस)



ईर्ष्या से उत्पन्न न्याज्बो

पद्म पुराण के अंतर्गत कार्तिक माहात्म्य की एक कथा के अनुसार वृंदा के भस्म हो जाने पर विष्णु ने जगत का संहार करना शुरू कर दिया था। तब उन्हें प्रसन्न करने के लिए लक्ष्मी, सरस्वती और पार्वती के दिये हुए तीन बीजों को देवों ने विष्णु के पास बो दिया। पार्वती के बीज से तुलसी पैदा हुई। लक्ष्मी ने चूंकि ईर्ष्या से बीज दिया था, इसलिए उससे पैदा हुआ पौधा निंदनीय समझा जाने लगा और इसी से उसे 'बर्बरी' कहने लगे। लौकिक व्यवहार में भी हम देखते हैं कि तुलसी की अपेक्षा न्याज्बो (बर्बरी) हीन समझा जाता है। संस्कृत के प्राचीन लेखकों तथा आधुनिक औद्भिदविदों के श्रेणीकरण में ये दोनों एक ही गण— तुलसी (ओसिमुम) के पौधे हैं।

भारतीय मुसलमान और बनि इसराइल न्याज्बो को सांस्कृतिक महत्त्व का पौधा मानते हैं, और इसे वे उसी आदर और श्रद्धा से देखते हैं, जैसे हिंदू तुलसी को। बनि इसराइल के बहुत-से धार्मिक कृत्यों में, जैसे विवाहोत्सव में और दुःख के अवसरों में सब्जा का प्रयोग होता है। भारतीय मुसलमान भी इसे धर्म-कर्मों में बहुत प्रयोग करते हैं। बनि इसराइल और भारतीय मुसलमान भी अपने घरों में और मजारों में इस पौधे को रोपते हैं। उनके सामाजिक कार्यों में सब्जा की शाखाएं जरूर रखी जाती हैं।

पौधे में मसाले की-सी तीव्र गंध होती है। उत्तर प्रदेश में इसके पत्तों की चटनी बनाते हैं। पत्तों और छोटे-छोटे कोमल शाखा-शिखरों का स्वाद चटपटा मसाले का-सा, ठंडा, लुआबदार और जरा-सा नमकीन होता है। इसकी गंध कुछ लौंग-जैसी होती है। सूखे पत्ते लौंग के प्रतिनिधि के रूप में बरते जाते हैं। भारत में कई स्थानों पर ये सुखाये जाकर मसाले के रूप में इस्तेमाल किये जाते हैं।

— रामेश बेदी कृत 'पूजा के पेड़-पौधे' से

रिश्ते-नाते

● डॉ. गौरीशंकर राजहंस

वह पसीने से लथपथ मगध एक्सप्रेस के दूसरे डब्बे में आकर धस्स से इस तरह बैठ गया मानो कुली ने डब्बे में कोई सामान फेका हो । साथ में आये हुए एक चौबीस-पचीस वर्ष के युवक ने उससे जाने की विदा मांगी । वह अवाक्-सा रह गया । उसे उम्मीद थी कि साधारण लोकाचार का निर्वाह करके कम से कम गाड़ी के खुलने तक वह युवक प्लेटफार्म पर खड़ा रहेगा ।

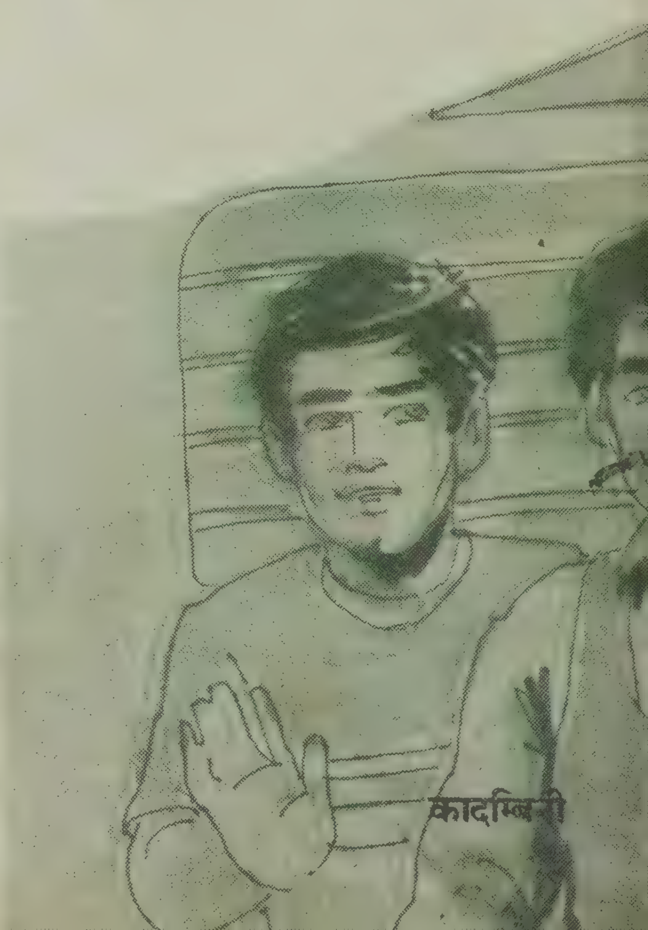
"अपना खयाल रखिएगा और जाते ही पत्र मेरे 'बास' को भेज दीजिएगा ।" युवक ने अत्यंत ही रूखे भाव से कहा ।

"हां, हां, जरूर । कुमार साहब से हमारा नमस्कार कहना ।" पसीने से लथपथ अपने कुरते को खोलते हुए उस व्यक्ति ने, जिसकी उम्र कोई पैंसठ-छैंसठ वर्ष की होगी, कहा ।

कुरते को खोलते ही उस कंपार्टमेंट में एक बदबू-सी आने लगी । इसी बीच तीन-चार लोगों का एक जत्था आ धमका । एक लड़की थी और तीन-चार शायद कालेज में पढ़नेवाले लड़के । लड़कों ने आते ही उस वृद्ध व्यक्ति से दूसरे कंपार्टमेंट में चले जाने के लिए कहा । "दूसरे डब्बे में जाते हो या गाड़ी खुलते ही खिड़की से बाहर उठाकर फेक दूं ।" इन युवकों में से एक भारी डील-डौलवाले युवक ने कहा ।

बूढ़ा हैरान-सा रह गया । ऐसी अभद्रता उसने पहली बार देखी थी । उसे लगा कि वह शरारती लोगों के बीच घिर गया है और चुप रहना ही बेहतर है । लेकिन उसने मन ही मन प्रतिज्ञा कर ली कि चाहे जो हो,वह दूसरे डब्बे में नहीं जाएगा ।

इन शरारती युवकों में से एक ने बीच-बचाव करने का नाटक किया और कहा, "बूढ़े बाबा, आप एक तरफ कोने में हो जाएं ।



हम सब यहां बैठ जाएंगे । सफर अच्छी तरह कट जाएगा ।''

बूढ़े ने, जिसका नाम रमेश था, समझाते हुए कहा, ''क्या तुम्हारे घर में कोई मां-बाप, चाचा, ताऊ नहीं हैं ? क्या तुम्हें यही सिखाया गया है कि अपने से बड़े-बूढ़ों का अपमान करो.... ?''

बूढ़े की यह नसीहत सुनकर युवक जोरों से खिलखिलाकर हंस पड़े । उनमें से एक ने लगभग डांटते हुए कहा, ''तुम्हारे सामने यह लड़की खड़ी सफर करे और तुम्हें इतनी तमीज नहीं है कि इसे बैठने की जगह दो ।''

रमेश को लगा कि सचमुच उससे गलती हो गयी । उसने थोड़ी-सी जगह लड़की को बैठने के लिए दे दी । उसका सरकना ही था कि बाकी तीनों युवकों ने उसे बेंच के एक कोने की ओर सरका दिया और सब उसी बेंच पर बैठ गये । रमेश को यह बहुत नागवार लगा । लेकिन गम पी जाने के सिवा और कोई उपाय नहीं था ।

इस बीच एक युवक ने सिगरेट जलाया, दो-चार कश खींचे और सिगरेट उस लड़की के हाथ में थमा दिया । बेझिझक वह भी सिगरेट के कश खींचने लगी । बूढ़े से रहा नहीं गया । उसने झिझकते हुए कहा, ''तुम्हारे मां-बाप हैं या नहीं ?''

''हां हैं, तुम्हें क्या मतलब ?'' उस लड़की ने कुछ गुस्से से पूछा । उधर सारे लड़के भी उठ खड़े हुए । एक ने कहा, ''बूढ़े, तुम्हें अब यहां से जाना ही होगा । नहीं तो हम तुम्हारी टांगें तोड़ देंगे...''

रमेश को लगा कि अनायास ही उसके मुंह से कड़वी बातें निकल गयीं । उसने लगभग क्षमा-याचना करते हुए कहा, ''बेटे, यदि मुझसे गलती हो गयी हो तो माफ करना । सिगरेट का धुआं मेरी नाक में लग रहा था । इसलिए मैंने ऐसा कह दिया । वैसे तुम लोग कहां के



रहनेवाले हो । कहां जाना है तुम्हें.... ?''

''हम बिहार के रहनेवाले हैं और पटना जाना है.... ।'' एक लड़के ने उत्तर दिया ।

''बिहार'' ! बूढ़े ने आश्चर्य से कहा ।

''हां, बिहार, क्यों ? बिहार का नाम सुनकर तुम चौक क्यों गये.... ?'' उसी युवक ने दुबारा कहा ।

''बात यह है बेटे कि मैं भी बिहार का ही रहनेवाला हूं और वहां इस तरह अपने से बड़ों का कोई अपमान नहीं करता । अपने से बड़ों को लोग 'तुम' नहीं कहते । दिल्ली की तरफ के लोग 'तुम' कहते हैं और कोई बुरा नहीं मानता । बिहार में तो लोग बहुत बुरा मानते हैं । इसलिए मैंने सोचा कि शायद तुम दिल्ली के आसपास के रहनेवाले हो ।''

बूढ़ा अपनी बातें समाप्त भी नहीं कर पाया था कि लड़की ने बीच में टोकते हुए कहा, ''यह बूढ़ा बड़ा ही बेकार किस्म का आदमी है । इसे एक कोने में रहने दो और आओ,हम अपनी मौज-मस्ती की बातें करें.... ।''

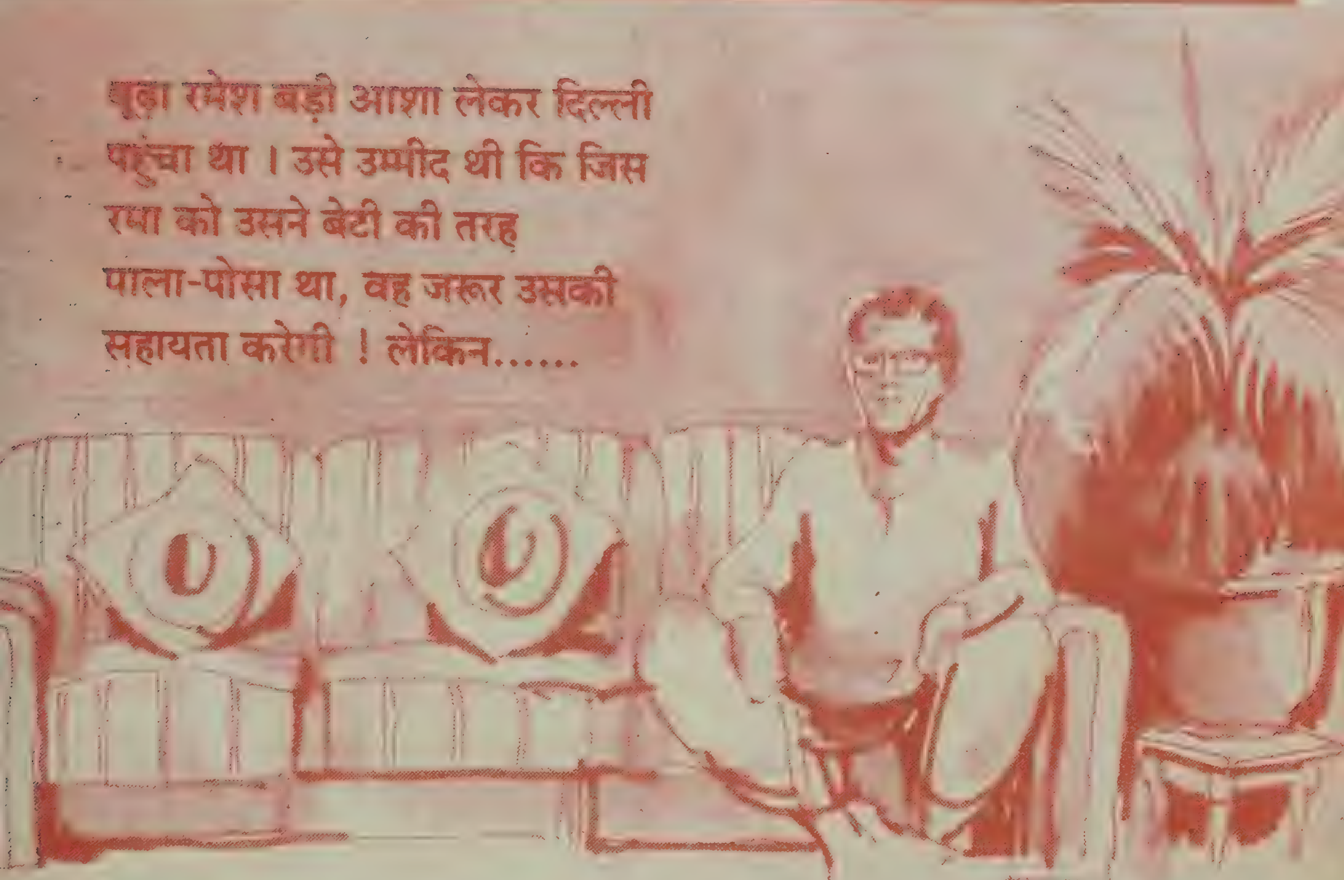
बूढ़े को लगा कि एक बार फिर उसे पंद्रह-सोलह घंटों के लिए कैद मिल गयी हो और अब तो शायद सारे रास्ते उसे जागते हुए ही जाना होगा ।

कुछ मिनटों के पश्चात गाड़ी चल दी । उसने अनायास ही हाथ उठाया— जैसे किसी अदृश्य शक्ति को प्रणाम किया हो । उसे लगा, जैसे उसे प्लेटफार्म पर कोई विदा करने आया हो और वह उसे नमस्कार कर रहा हो । उसने मन ही मन सोचा कि शायद अब जिंदगी में दुबारा कभी दिल्ली आना न हो । वैसे भी उसे क्या सूझी थी दिल्ली आने की । उसकी पत्नी उमा की छोटी बहन रमा बार-बार दिल्ली से पत्र लिखती थी कि जीजाजी को कुछ दिनों के लिए दिल्ली आने को कहो और तुम भी आओ । जीजाजी को किसी अच्छे डॉक्टर से दिखा देंगे और तुम दोनों को आसपास की जगहें जैसे मथुरा, वृंदावन, आगरा, हरिद्वार घुमा देंगे । उमा ने कहा था कि जब रमा इतनी जिद करती है तो एक बार दिल्ली हो ही आओ । इलाज भी हो जाएगा और साढ़ू-साली से भी मिल लोगे ।

न इच्छा होने पर भी रमेश ने दिल्ली आने का फैसला किया । कारण कई थे । इकलौता लड़का सुभाष काबू से बाहर हो गया था । एक बार गांव के जमींदार ने बिना कारण उसे किसी केस में फंसा दिया था, जिसके कारण उसे छह महीने की सजा हो गयी थी । जेल में उसकी मुलाकात चोर-उचक्कों से हो गयी । तब से वह घर से प्रायः बाहर ही रहता था । धीरे-धीरे यह अफवाह फैलती गयी कि सुभाष उस इलाके का सबसे बड़ा डकैत हो गया है और लोग उससे थरति हैं ।

सुभाष का नाम सुनते ही रमेश का सिर शर्म से झुक जाता था । गांववालों के तानों से रमेश परेशान हो गया था । उसने सोचा कि यदि दिल्ली जाकर साढ़ू व साली से यह निवेदन करे कि गुजर-बसर करने के लिए उसे छोटी-मोटी नौकरी कहीं मिल जाए तो वह उस गांव से ही चला जाएगा ।

दिल्ली आने पर रमेश का भ्रम टूट-सा गया । उसे पता था कि उसके साढ़ू बड़े धनी और समृद्धिशाली हैं । फिर भी उसने अपनी साली की शादी खुद ही करायी थी । कहने के लिए वह रिश्ते में उसकी साली थी । परंतु बेटी



के समान थी । उसी ने उसका पालन-पोषण किया था । विवाह कराया था । उस समय उसके साढ़ू एक मामूली से स्कूल टीचर थे । पास के गांव में पढ़ाते थे । परंतु तकदीर ने पलटा खाया और उसके साढ़ू पुरुषोत्तम किसी कारखाने में काम करने दिल्ली आ गये । क्या सच और क्या झूठ, यह भगवान ही जानें । परंतु कहते हैं कि कारखाने के तीन-चार मुलाजिमों ने मिलकर सेठ की हत्या कर दी । सेठ की विधवा को कोई लड़का नहीं था । पुरुषोत्तम ने जी-जान से उसकी सेवा की । उसने मरने के पहले फैक्ट्री का बहुत बड़ा शेयर पुरुषोत्तम के नाम से कर दिया । फिर क्या था खाकपति पुरुषोत्तम देखते-देखते लखपति, फिर करोड़पति बन गया ।

रमेश को उम्मीद थी कि पुरुषोत्तम और रमा उसे लेने स्टेशन जरूर आएंगे । परंतु वैसा कुछ नहीं हुआ । स्टेशन पर कोई लेने नहीं आया । स्कूटर कर किसी तरह रमेश पुरुषोत्तम की कोठी तक पहुंचा । सामने के मकान में 'शिशु भवन' लिखा देख उसने राहत की सांस ली । वह सही जगह पर पहुंच गया था । साइन बोर्ड पर लिखा था 'पुरुषोत्तम कुमार, मैनेजिंग डायरेक्टर, कैपिटल इंडस्ट्रीज, नयी दिल्ली ।' उसने डरते-डरते दरबान से पूछा कि कुमार साहब की कोठी यही है ।

"हां", दरबान ने दो टूक कहा और उसे घूरते हुए देखा । फिर पूछा, "कौन हो तुम ?"

"भाई साहब, मैं कुमार साहब का रिश्तेदार हूं और उनके कहने पर दिल्ली आया हूं ।"

जब दरबान ने जाकर मेम साहब को खबर दी कि बिहार से रमेश नाम का एक बूढ़ा

आदमी, जो अपने को आपका रिश्तेदार बताता है, मिलने आया है, तो रमा को न जाने क्यों अच्छा नहीं लगा ।

"उनसे कहो, बाहर प्रतीक्षा करें । मैं अभी थोड़ी देर में बाथरूम से आती हूं ।"

नेपाली दरबान ने बाहर आकर रमेश से कहा कि आप यहीं इंतजार कीजिए । मेम साहब बाथरूम से थोड़ी देर में आती हैं ।

करीब डेढ़ घंटे के बाद रमा बाहर आयी थी । आते ही उसने बेरुखाई से पूछा, "आप कब आये जीजाजी ? मुझे तो कुछ पता भी नहीं चला.... ।"

"मैं तो कोई डेढ़ घंटे से तुम्हारी इंतजार कर रहा हूं ।" रमेश ने अपनी साली से कहा ।

रमेश को ऐसा लगा कि रमा जरूर दरबान को बुरी तरह डांटेगी । पर यह क्या ! वह बिना कुछ कहे अंदर चली गयी थी ।

थोड़ी देर में नौकर को बाहर भेज दिया यह कहकर कि ऊपरवाली बरसाती में गांव से आये हुए मेहमान को ठहरा दो ।

रमेश को ऐसा लगा कि मानो रमा को उसका आना अच्छा नहीं लगा हो । उसे यह भी समझने में देर नहीं लगी कि उसे नौकरोंवाले कमरे में ठहरा दिया गया ।

उसे जोरों की भूख लगी थी । इसी बीच एक नौकर एक थाली में रोटी, सब्जी और दाल रख गया । रमेश को बड़ा बुरा-सा लगा । वह उम्मीद करता था कि दिन के खाने में जब पुरुषोत्तम आएगा तो वे साथ-साथ खाना खाएंगे और जी भर बातें करेंगे । उसने झटपट सारी थाली समाप्त कर दी और इंतजार करने लगा कि दुबारा कोई परसन देने आएगा । पर पंद्रह-बीस मिनट तक जब कोई नहीं आया तो बगल में लगी टूटी में उसने हाथ धोये और वहीं एक टूटी हुई खाट पर सो गया । कब उसे नींद आयी, उसे नहीं पता ।

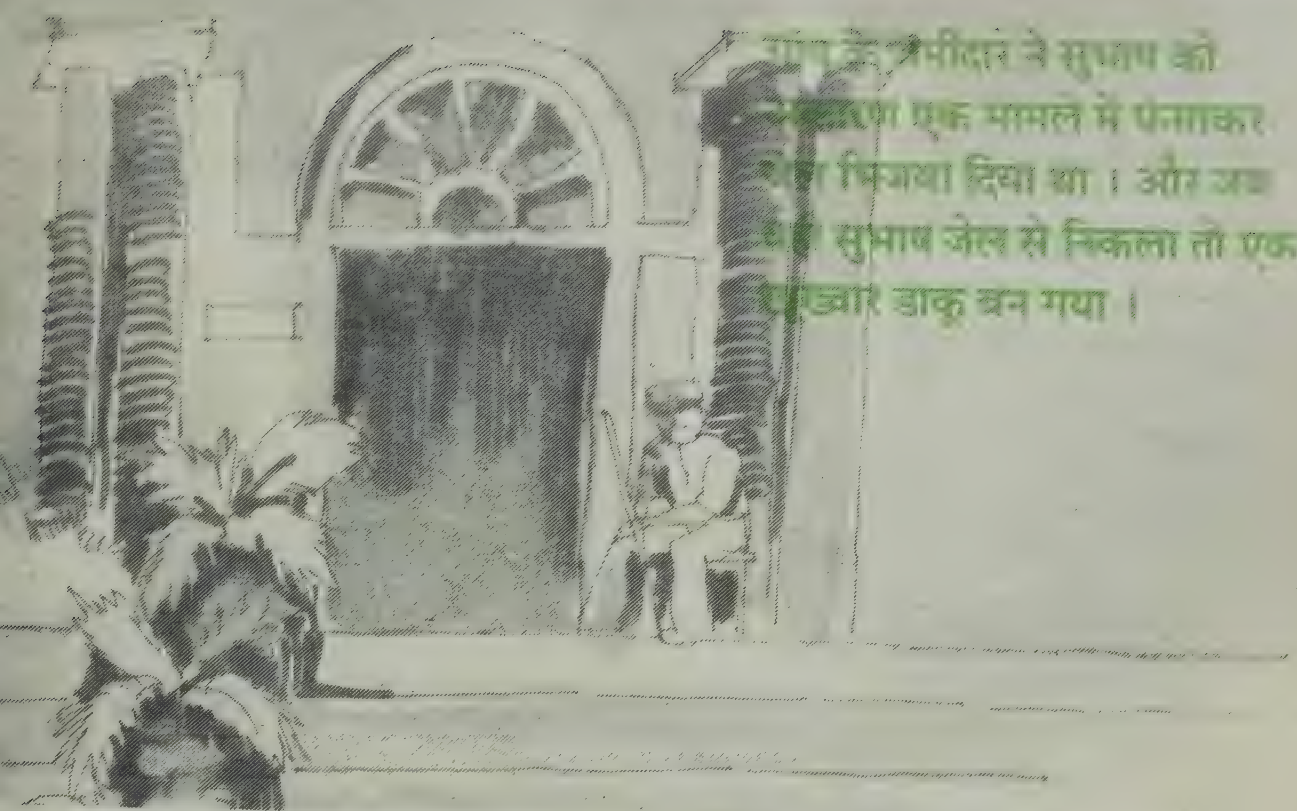
शाम को उसे एक नौकर ने आकर जगाया और कहा कि साहब बुला रहे हैं । रमेश को लगा कि यह उसका भ्रम था कि पुरुषोत्तम और रमा को उसके आने से खुशी नहीं हुई । वह नीचे गया । उसे उम्मीद थी कि पहले की तरह पुरुषोत्तम और रमा उसके पांव छूएंगे । उमा और सुभाष के बारे में पूछेंगे और जी भर बातें करेंगे । परंतु ऐसा कुछ नहीं हुआ । पुरुषोत्तम ने बहुत ही बेरुखाई से पूछा, "कहिए साढूजी । क्या हालचाल हैं । कैसे दिल्ली आना हुआ ?"

रमेश को ऐसा लगा, जैसे वह आसमान से जमीन पर गिर गया हो । कहीं ऐसा तो नहीं कि उमा ने झूठ ही कहा हो कि रमा हम लोगों को बार-बार दिल्ली आने के लिए कहती है । परंतु अब कोई चारा नहीं था ।

"तबियत ठीक नहीं रहती है । रमा की दीदी ने कहा कि एक बार दिल्ली जाकर अच्छे डॉक्टर से दिखा लो । फिर रमा और साढू से भी मिल लेना ।" रमेश ने कहा ।

"इसकी क्या जरूरत थी ? बिहार में भी तो एक से एक अच्छे डॉक्टर हैं । आपने नाहक ही गरमी में परेशानी मोल ली । और अब देखिए न, हमें पहाड़ों पर जाना है । आपके आने से हमारा प्रोग्राम भी कैंसिल हो जाएगा..... ।" पुरुषोत्तम ने कहा ।

रमा ने भी पुरुषोत्तम की हां में हां मिलाते हुए कहा, "आपने इस तरह आकर हमारा सारा प्रोग्राम चौपट कर दिया, जीजाजी... ।"



गांव के [illegible]मींदार ने सुभाष को [illegible] एक मामले में फंसाकर [illegible] भिजवा दिया था । और जब [illegible] सुभाष जेल से निकला तो एक [illegible]ख्वार डाकू बन गया ।

रमेश को लगा कि नाहक ही वह अपमानजनक स्थिति में आ गया । उसने कहा, "रमा, दो-चार दिन ही की तो बात है । किसी डॉक्टर से दिखा देना । जल्दी ही मैं लौट जाऊंगा । मेरें कारण तुम लोग अपना प्रोग्राम खराब नहीं करो... ।"

दो-चार दिन की बात सोचकर पुरुषोत्तम और रमा ने राहत की सांस ली ।

तीन-चार दिनों के बाद गांव से उमा का पत्र आया, जिसमें लिखा था कि लोग सुभाष के बारे में तरह-तरह की बातें करते हैं । अच्छा हो मुझे भी दिल्ली बुला लो रमा से कहकर । साथ में उसने रमा के लिए भी एक पत्र दिया था । बहुत डरते-डरते उसने वह पत्र रमा को दिया । पत्र पढ़ते ही रमा आग-बबूला हो उठी, "इस उम्र में भला कौन-सी नौकरी मिल सकती है, जीजाजी । आप पढ़े-लिखे भी तो नहीं हैं...... ।"

रमेश को एक पल लगा कि वह दो-टूक रमा से कह दे कि अब वह यहां एक पल भी नहीं ठहर सकता । आज ही बिहार वापस लौट रहा है । लेकिन उमा के रोते हुए चेहरे को याद कर उसने कहा, "रमा, तुम तो बचपन से ही मुझे प्यारी हो । वैसे भी जीजा-साली का रिश्ता बड़ा प्यारा होता है । अपनी बहन पर थोड़ा-सा रहम करो । उसे यहां बुला लो ।"

रमा को जैसे बदन में आग लग गयी । वह शायद कुछ कड़वी बात कहना चाहती थी परंतु रमेश की उम्र का लिहाज कर न बोल पायी । भारी मन से रमेश ऊपर बरसाती में लौट गया और सोचने लगा कि अब उसे क्या करना

चाहिए ।

दूसरे दिन शाम को रमा ने रमेश से कहा, "पास में ही अपना एक फॉर्म है । यदि आप गाय-भैंसों की देखभाल कर सकें तो ५० रुपया महीना तथा खाने-पीने को दे सकती हूं ।"

रमेश को उम्मीद नहीं थी कि रमा और पुरुषोत्तम इस तरह का व्यवहार उसके साथ करेंगे । फिर भी अपने गांव के नर्क से निकलने के लिए उसने 'हां' कर दी ।

"हां, जीजी को उस फॉर्म हाऊस में नहीं रखना होगा ।" रमा ने शर्त रखी ।

कहने के लिए वह फॉर्म था परंतु वहां मोटे-मोटे मच्छर थे । जानवरों की लीद के कारण बड़ी गंदगी थी । फिर भी उसे लगा कि गांव के नर्क से यह जिंदगी अच्छी है । वह रोज एक पत्र उमा को लिखता और उससे कहता कि उसकी बहन और उसके बहनोई उसकी बड़ी देखभाल कर रहे हैं !

रमेश को यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि कहने के लिए तो वह फॉर्म हाउस था लेकिन था वह तस्करी और व्याभिचार का अड्डा । हर इतवार को रमेश को किसी बहाने शहर भेज दिया जाता था और वहां पर कॉल-गर्ल का धंधा होता था । वहां पर तस्करों का लेन-देन का व्यापार चलता था ।

रमेश एक दिन फॉर्म के पशुओं को चारा डाल रहा था कि दनदनाती हुई गाड़ी से रमा वहां आयी । रमा को देखकर रमेश खुश हो गया । उसने झट से गाड़ी का दरवाजा खोला और लगभग मजाक के लहजे में कहा, "हां सालीजी । क्या हालचाल हैं ?"

इतना सुनना था कि रमा गुस्से से लाल हो गयी । उसने लगभग फटकारते हुए कहा, "आपको जरा भी तमीज नहीं है । नौकरों के सामने क्या बोलना चाहिए, यह भी पता नहीं है ? मैं आपसे एक जरूरी बात करने आयी हूं । अंदर चलिए ड्राइंगरूम में ।"

रमा कुरसी पर बैठ गयी और लगभग हांफते हुए उसने पूछा, "आजकल आपका लड़का सुभाष कहां है.... ?"

रमेश ने राहत की सांस ली । उसने सोचा कि शायद रमा सुभाष को नौकरी दिलाना चाहती है । उसने कहा, "मैं तो तुम्हें बताना भूल ही गया रमा कि सुभाष गांव में बेकार पड़ा है । कृपा कर उसे यहां कोई जगह दिला दो चाहे दरबान की ही हो.... ।"

"हूं...चोर डकैतों को दरबान बनायें । सच-सच बताओ कि सुभाष क्या काम करता है ।" रमा ने आंखें लाल कर पूछा ।

एक क्षण चुप रहने के बाद रमेश ने कहा, "सच तो यह है कि पिछले दो साल से सुभाष कहां भटक रहा है, हम सबों को पता नहीं ।"

यह सुनना था कि रमा ने अपने पर्स से एक मुड़ा हुआ पत्र उसके सामने फैकते हुए कहा, "पढ़ो, बूढ़े हो गये परंतु झूठ बोलने की आदत नहीं गयी । सच क्यों नहीं कहते हो कि आपका बेटा डाकू है और आपका इरादा मेरे घर में डकैती डालने अथवा डलवाने का है.... ।"

"यह क्या कह रही हो रमा । भगवान के लिए हम पर ऐसा इलजाम न लगाओ । हम पर तरस खाओ ।"

रमा ने इस पर उसे पत्र पढ़कर सुना दिया । गांव से किसी ने एक गुमनाम पत्र पुरुषोत्तम के

नाम से लिखा था, जिसमें इस बात का जिक्र किया था कि रमेश का बेटा सुभाष इस क्षेत्र का नामी डाकू है। सारी डकैतियों में रमेश का भी साझा है। रमेश इसी नीयत से दिल्ली गया है ताकि वह पुरुषोत्तम के घर डाका डलवाये और फिर दोनों बाप-बेटे डकैती का माल लेकर चंपत हो जाएं।

रमेश अपनी सफाई में कुछ न कह सका। वह कुछ कहना चाह ही रहा था कि रमा ने कड़कते हुए कहा, "मुझे कोई सफाई नहीं चाहिए। मैंने आपका रिजर्वेशन करवा दिया है। आप आज ही बिहार लौट जाएं।"

फॉर्म हाउस से ही रमेश स्टेशन लौट गया। फॉर्म हाउस का एक चपरासी उसे छोड़ने स्टेशन तक जरूर आया था परंतु बड़ी बेरुखी से वह उसे गाड़ी पर बैठाकर लौट गया।

धीरे-धीरे स्टेशन भीड़ से भर रहा था और शाम अंधेरे में बदल रही थी। रमेश यह सोच रहा था कि गांव लौटकर वह उमा को क्या कहेगा। सच कहने की उसमें हिम्मत नहीं थी और झूठ वह कह नहीं पाएगा।

वह तरह-तरह के विचारों में रातभर खोया रहा। कब सुबह हो गयी, उसे पता तक नहीं चला। पटना आने में अभी दो स्टेशन और बाकी थे। एक आदमी सुबह का अखबार डब्बे में ले आया था। खबर थी कि एक कुख्यात डाकू मारा गया है। आवारा लड़कों का गिरोह उसी अखबार में नजर डाले पढ़ रहा था। लड़की ने मानो छेड़ते हुए कहा, "देखो, इस डकैत की शक्ल इस बूढ़े से कितनी मिलती है।"

सब खिलखिलाकर हंस पड़े। "सच कहो तो बूढ़ा, डकैत के बाप-जैसा लगता है।" लड़की ने फिर कहा।

रमेश जलभुन कर रह गया। उसे लगा कि शायद अपमान सहने के लिए ही वह पैदा हुआ है। इस बीच अखबार वहां छोड़ वे चारों कोरीडोर की ओर चले गये। उसने धीरे से अखबार उठाया और खबर पढ़नी चाही। अखबार में फोटो देखकर और खबर पढ़कर वह अवाक् रह गया। उसके बेटे सुभाष का फोटो था और लिखा था कि मोतीपुर में डाका डालते समय वह पुलिस की गोली से मारा गया। बिलकुल सुभाष का ही चेहरा था वह। वही मस्से की निशानी। उसी तरह रौबीली मूछें। रमेश की आंखों से दो बूंद आंसू गिर पड़े।

देखते-देखते पटना स्टेशन आ गया। उसने अपनी छोटी-सी गठरी उठायी और सिर नीचा करते हुए धीरे से बाहर निकल गया।

बाहर लोगों की अच्छी-खासी भीड़ थी। उसे लगा शायद कोई मिनिस्टर आया हो। वह भीड़ के बीच में घुस गया। अचानक उसने देखा, सुभाष का बदन खून से लथपथ वहां पड़ा था।

सुभाष के चेहरे पर एक अजीब किस्म की शांति थी। रमेश ने आसपास देखा कि कोई उसे पहचान तो नहीं रहा है। इसके पहले कि कोई जान-पहचान का आदमी मिले, वह धीरे से वहां से खिसक गया।

बाहर निकलकर उसने वह स्थानीय अखबार खरीदा जिसमें सुभाष को गोली से मारे जाने की खबर थी। जल्दी-जल्दी उसे पढ़ गया। मुख्य खबर के बगल में एक खबर यह थी कि एक सूत्र का यह भी कहना है कि पुलिस

ने सुभाष को जिंदा पकड़ लिया था और उसे पेड़ से बांधकर गोली मार दी। यदि वह जिंदा ही नहीं रहा तो डकैती कैसे करेगा। यह खबर पढ़कर उसके मुंह से अनायास एक गहरी चीख निकल गयी। उसे लगा मानो गोली उसे ही लगी हो। जल्दी-जल्दी वह बस पर सवार हो गया जो बस गांधी सेतु होती हुई हाजीपुर की तरफ जाती थी। पटना के पुल के ऊपर से जब बस जा रही थी तो वह मन ही मन सोच रहा था कि उसने सोचा था कि जब यह पुल बन जाएगा तब वह सुभाष से कहेगा कि रोज गांव से सब्जी लेकर पटना में बेच आये। परंतु पुल बन गया था। सवारियां चल रही थीं। परंतु सुभाष नहीं था।

कोई डेढ़ घंटे में वह अपने गांव पहुंच गया। उसे देखकर उमा को ऐसा लगा कि शायद रमेश उसे लेने के लिए गांव आया हो। उमा ने प्रश्नों की झड़ी लगा दी। "कैसी है बहन ? कैसे हैं बहनोई ?...."

रमेश ने कोई उत्तर नहीं दिया। कुएं पर मुंह हाथ धोने के लिए चला गया। इस बीच उसने झोला आंगन में ही रख दिया। वापस आकर उसने झोला खोलने की जरूरत नहीं समझी। उसे अचानक पिछली बातें याद हो आयीं। जब वह गांधीजी के आंदोलन में शरीक हुआ था तो गांधीजी कहा करते थे कि जब मन परेशान हो चरखा चलाना चाहिए। चरखा चलाना तो उसने पांच-छह साल से छोड़ दिया था। उसने चरखा चलाने की कोशिश की। परंतु धागा बार-बार टूट जाता था। इस बीच उमा ने उसकी गठरी खोल डाली। उसे उम्मीद थी कि उसकी बहन ने जरूर उसके लिए कोई सौगात भेजी होगी। गठरी में रखे अखबार पर जब उसकी नजर पड़ी तो वह चौंककर रह गयी। दौड़ी-दौड़ी उमा रमेश के पास गयी। उमा हाथ में अखबार लिए हुए थी और फूट-फूटकर रो रही थी। दोनों के पास एक-दूसरे को कहने के लिए कोई शब्द नहीं थे।

—ए १/२७६ सफदरजंग एंक्लेव,
नयी दिल्ली

गुलामों का प्रतिशोध

रोम का साम्राज्य करोड़ों गुलामों की नींव पर खड़ा हुआ था। रोमन जहां भी युद्ध में विजयी होते, जमकर लूटपाट करते, सारी जमीन अपने सामंतों में बांट लेते और सारे के सारे नर-नारियों व बच्चों को गुलाम बना लेते, जिनसे खुद काम लेते और बाजार में खुलेआम बेचकर पैसा भी कमाते। रोमन साम्राज्य लगभग दो सौ साल रहा, जिसमें गुलामों पर अमानवीय अत्याचार किये गये और उनका हर तरह से शोषण किया गया, लेकिन ये गुलाम भी चुप नहीं बैठे। इतिहास का सबसे बड़ा दास विद्रोह भी रोम में ही हुआ और अंततः रोम साम्राज्य का पतन भी इन्हीं गुलामों की वजह से हुआ। जब भी हूणों और जरमनों ने रोमन राज्यों पर हमला किया, गुलामों ने उनका साथ दिया। और रोमन साम्राज्य का अंत यह हुआ कि रोम को बिलकुल तबाह कर दिया गया, उस पर हल चलवा दिये गये। जो शाही इमारतें बच गयीं, उनमें घास-फूस उग आयी और गुलाम जो आजाद हो गये, वे वहां चरने के लिए अपने सूअर भेजने लगे।

'कादम्बिनी' गीत-गजल प्रतियोगिता

पुरस्कृत रचनाएं

हमने कुछ समय पूर्व गीत और गजल-इन दोनों विधाओं पर एक प्रतियोगिता की घोषणा की थी । अनेक रचनाकारों ने इस प्रतियोगिता में भाग लिया । हम उन सबके आभारी हैं । प्रत्येक विधा में दो हजार से भी अधिक प्रविष्टियां प्राप्त हुईं थीं, इसी कारण निर्णय करने में विलंब हुआ । इतनी अधिक रचनाओं में से पुरस्कार योग्य रचनाओं का चुनाव साधारण कार्य नहीं है । हमारे निर्णायक मंडल ने अनेक स्तरों पर चुनाव का कार्य किया । गजलों के चुनाव में हमें प्रो. श्री दर्शन सेठी ने विशेष सहयोग दिया । वैसे दोनों प्रतियोगिताओं के लिए हमने कुछ विशिष्ट कवियों को निर्णायक मंडल में रखा था ।

प्रतियोगिता में प्राप्त समस्त रचनाओं को पढ़ने के बाद निर्णायक मंडल ने अपना यह निर्णय दिया है कि केवल प्रोत्साहन पुरस्कार ही दिये जा सकते हैं । जिन गीतों और गजलों को प्रोत्साहन पुरस्कार दिया गया है, वे यहां प्रकाशित की जा रही हैं । प्रत्येक पुरस्कृत रचना पर दो सौ रुपयों का प्रोत्साहन पुरस्कार दिया जाएगा ।

इस प्रतियोगिता के बाद हम यह स्पष्ट कहना चाहते हैं कि निर्णायक मंडल को प्राप्त रचनाओं से बेहद निराशा हुई है । अर्थ यह हुआ कि जितनी अधिक रचनाएं लिखी जा रही हैं, उतना ही उनका स्तर गिरा है । बहुत प्रयत्न करने पर भी हमें कोई भी एक गीत और एक गजल इस योग्य नहीं लगी कि उसे पुरस्कार की किसी श्रेणी में रखा जा सके । हिंदी गीत और गजल को संवारना बहुत आवश्यक है । हम आशा करते हैं कि इस क्षेत्र के जाने-माने प्रसिद्ध कवि और गीतकार इन विधाओं को जीवित रखने में सक्रिय योग देंगे ।

—संपादक

गीत

अर्थ भुजाओं के

जिनसे सभी गणित चलते हैं
मत-गणनाओं के
हम तो केवल वर्गमूल हैं
उन संख्याओं के
अगले खाने बिच्छू बैठा
पिछले में अजगर
अपनी सीमा में गति करते
रह जाते थककर
छोटे-छोटे वृत्त खींचते
हम त्रिज्याओं के

परिचय भूले खुद का
क ख ग घ में अटके
समीकरण सिद्धांत हमारे
हाथों से फिसले
हम विलोम अनुपात रहे हैं
आम-सभाओं के

सही-बटे की मार पांव में
बांध गयी पत्थर
दो रेखायें एक बिंदु पर
काट गयीं आकर
इति सिद्धम् पर आकर टूटे
अर्थ भुजाओं के

— वसु मालवीय
ए-१११, मेंहदौरी गृहस्थान, इलाहाबाद-२११००४

अब कहां

बांसुरी-से दिवस वे
शहनाइयों-सी रात
अब कहां है
अब अभावों में समूचा
स्वत्व बिखरा है
रंग पीड़ा का सघन
हर ओर निखरा है
वे विभावों के सपन
वह चाह डूबी बात

अब कहां है
अब नहीं हंसते सितारे
पास पोखर में
वह सुरावट है नहीं
गति-हीन निर्झर में
वह गुलाबों-सी महक
वह तैरता जल जात
अब कहां है

— इन्दिरा देवड़ा
१३ महावीर पथ, तराना (म. प्र.)

रुख जहरीला है

लगर ढीला है जहाज का
टूट गये मस्तूल
दिशा भ्रमित है मांझी जैसे
राह गये हों भूल
सागर क्रोधित आसमान का
आंचल गीला है
धूप कंटीली और हवा का
रुख जहरीला है

आने लगे हरेक दिशा से
आंधी के बादल
टूट रहा विश्वास धैर्य
होता जाता पागल
शब्दजाल आश्वासन का
लगता पथरीला है
धूप कंटीली और हवा का
रुख जहरीला है

पंछी रक्त पिपासु उड़ रहे
हैं आकाश तले
दूर किनारों का भ्रम
जीवन का विश्वास छले
सभी यात्रियों का मुख लगता
भय से पीला है
धूप कंटीली और हवा का
रुख जहरीला है

धुंधलाया आकाशदीप
फैला है अंधियारा
भरा हुआ है ह्वेल मछलियों
से सागर खारा
शोर भरे सन्नाटों ने
तन-मन को छीला है
धूप कंटीली और हवा का
रुख जहरीला है

भटक रहा है मन प्रश्नों के
सूने बंजर में
भटक रही है स्वांस समय के
टूटे मंदर में
लेकिन जिजीविषा का धागा
बड़ा हठीला है
धूप कंटीली और हवा का
रुख जहरीला है

—सुशील कुमार सक्सेना सरित

द्वारा : यूनाइटेड बैंक आफ इंडिया शाहगंज शाखा, आगरा

गजल

साहेब

आइने से मुकर गये साहेब
बात क्या थी कि डर गये साहेब

देश सेवा में जब से कूदे हैं
आप कितने निखर गये साहेब

आप अब भी हमारे सर पर हैं
बस नजर से उतर गये साहेब

आपके दांत गिर गये जब से
आप कितने, सुधर गये साहेब

बैलगाड़ी में फिट है कम्प्यूटर
बैल, बेमौत मर गये, साहेब

देश नैया है, आप ही के लिए
किस लिए छेद कर गये साहेब

—बी. जयप्रकाश

१८/५ कबीर नगर दुर्गाकुंड, वाराणसी

क्या करें

दिल हमारे आईने हैं, क्या करें
लोग पत्थर के बने हैं, क्या करें

तुमको कातिल क्या कहें, अब खून से
हाथ अपने भी सने हैं, क्या करें

ये फलों का बोझ क्या सह पाएंगे
पेड़ के कच्चे तने हैं, क्या करें

रास्तों के साथ हम भी गुम हुए
हर तरफ जंगल घने हैं, क्या करें

तुम भी किस्सा हो गये माजी का अब
हम भी अफसाना बने हैं, क्या करें

—विक्की नागर

खादी व ग्रामोद्योग आयोग,ए-१, बाबा खड़क सिंह मार्ग,
नयी दिल्ली-११०००१

बहुत

अनुभवों की पाठशाला ने सिखाया है बहुत
जो सिखाया है, वो मेरे काम आया है बहुत

लाख रुपये में खरीदा था पिता ने मेरा 'वर'
वो मेरा 'अर्द्धांग' होकर भी, पराया है बहुत

आप जिसकी धीरता-गंभीरता पर मुग्ध हैं
उस समंदर ने जहाजों को डुबाया है बहुत

धीरे-धीरे वो कुशल नृत्यांगना बन ही गयी
वक्त ने उस एक औरत को नचाया है बहुत

मेरे आंगन में खड़ा है पेड़ हरसिंगार का
जब भी छेड़ा है उसे तो खिलखिलाया है बहुत

आज भी तो है सियासत एक गणिका की तरह
इस सियासत ने मुझे भी आजमाया है बहुत

अब वो पंछी ही नहीं आजाद होना चाहता
मैंने उस पंछी को पिंजरे से उड़ाया है बहुत

—जहीर कुरेशी

समीर कॉटेज, सूर्य नगर,
ग्वालियर-४७४ ०१२

भारत को तबाह करने की साजिश

● धर्मेन्द्र गौड़

सन १९४४ के उत्तरार्ध में युद्ध-कौशल में माहिर 'लिबरेटर' और 'मिचिल' विमानों से लैस रायल एयर फोर्स ने जापानियों की रसद और लड़ाई का साजो-सामान लाने-ले जाने के सभी रास्ते बरबाद कर दिये । अंगरेजों को पूर्वी-क्षेत्र में अपनी विजय नजर आने लगी । तभी ब्रिटेन के प्रधानमंत्री विंस्टन चर्चिल की दूरदर्शिनी बुद्धि को यह स्पष्ट दिखायी देने लगा कि वे लड़ाई तो अब जीत ही जाएंगे, लेकिन भारत, बर्मा, श्रीलंका, ब्रिटिश, मलाया आदि देशों से उन्हें हाथ भी धोने पड़ेंगे ।

१० सितम्बर, १९४४ को ब्रिटिश प्रधानमंत्री चर्चिल और अमेरीकी प्रेसीडेंट रूजवेल्ट के बीच हुई दूसरी कांफ्रेंस के तुरंत बाद चर्चिल ने फोर्स वन-थ्री-सिक्स के सर्वेसर्वा कालिन हरक्यूलीज मिकेंजी को 'पोस्ट क्विट प्लान' तैयार करने का अति-गोपनीय आदेश दिया ।

क्विवेक से मेरठ लौटते ही मिकेंजी ने चार्ल्स ओ' नील और सेना-संबंधी अपने सलाहकार कर्नल ल्यूस पग से इस मामले में सलाह-मशविरा किया । तुरंत स्टुअर्ट को



बर्मा मोरचे पर अंगरेजों को विजय मिल चुकी थी, पर वे यह भी जान गये थे कि उन्हें शीघ्र ही भारतीय उप महाद्वीप छोड़ देना पड़ेगा । अंगरेज नहीं चाहते थे कि उनके जाने के बाद उस क्षेत्र में शांति रहे और इसके लिए उन्होंने एक बेहद खतरनाक योजना बनायी

कलकत्ता और कॉली को कैंडी (श्रीलंका) से बुलाने के लिए वायरलैस संदेश भेजे गये। वे मेरठ पहुंचे। लंबे सलाह-मशविरे हुए। वार्ता का विषय था— भारतीय रियासतों के खास मामलों का इंतजाम करने के लिए फोर्स वन-थ्री-सिक्स के अंतर्गत 'जी.एस.आई. (के)' नामक एक ब्रांच खोलना। इस सलाह-मशविरे के बाद ही मेरठ छावनी में 'जी. एस. आई.' (के)' के दो दफ़्तर—१३२, बैरक स्ट्रीट, और १०६, ब्रिज स्ट्रीट पर खोले गये। इनका काम था भारतीय रियासतों के साथ गुप्त संबंध कायम करना।

सन १९४५ के शुरू में कर्नल पग के नेतृत्व में मेजर फिच और मेजर ड्रेक ने १४५, नार्थ रो, मेरठ कैंट के बड़े बंगले में 'पोस्ट क्विट प्लान' (भारत छोड़ने के बाद की योजना) तैयार की। मिकेंजी, स्टुअर्ट, नील और कॉली इससे सहमत हुए। उस पर विंस्टन चर्चिल ने भी अपनी अंतिम स्वीकृति की मोहर ठोक दी। इस योजना के खास पहलू थे—

१. फोर्स वनथ्री-सिक्स कर्मचारियों से 'एजेंट प्रोवोकेचर्स' (उकसानेवाले एजेंटों) का काम लेना। २. भारत की राष्ट्रीय सरकार के खिलाफ द्वेषभाव रखनेवाले संप्रदायों को उकसाकर 'रेजिस्टेंस' (अवरोध आंदोलन) संगठित करना। ३. 'रेजिस्टेंस मूवमेंट' की कामयाबी के लिए हथियार, गोला-बारूद देना। ४. भारत की राष्ट्रीय सरकार को नाकामयाब करने के इरादे से, भारत की कुछ रियायतों को अडंगे डालने की गरज से उकसाते रहना। ५. सैनिक तथा आर्थिक दृष्टि से भारत की राष्ट्रीय सरकार को कमजोर और नाकाबिल बनाने के लिए अकारण मार-काट तथा मजहबी दंगे कराना। ६. मुद्रा-स्फीति करके भारत को तबाह कर देना। ७. गुप्तचर विभागों, सेना के तीनों अंगों के अलावा और भी खास-खास दफ़्तरों के सभी खुफिया दस्तावेजों या तो लंदन भेजवा देना, या उन्हें भारत में ही जलाकर राख कर देना।

बड़ी ही खतरनाक थी यह योजना। चर्चिल इसे तुरंत लागू करा देना चाहते थे। भारत छोड़ने से पहले अंगरेजों ने मुस्लिम लीग के साथ पूर्ण सहयोग बनाये रखने के लिए जमीन-आसमान के कुलाबे एक कर डाले। फलतः मैत्री के आवरण में छिपे स्वार्थों तथा प्रतिक्रियावादी शक्तियों ने एक ऐसा जन-समूह पैदा करने की तरकीब को साकार किया, जो नवजात राष्ट्रीय सरकार के सफल संचालन में बाधाओं और मतभेदों को जन्म देता रहे।

तैयारी फिफ्थ कॉलमिस्टों की

फोर्स वन-थ्री-सिक्स को उस समय यही काम सौंपा गया, कि वह युद्ध के नजरिए से



महत्त्वपूर्ण स्थानों पर ऐसे मुस्लिम पिट्ठुओं को तैयार करे, जिनसे 'फिफ्थ कॉलमिस्ट' के रूप में काम लिया जा सके, और भारतीय रियासतों, बड़े-बड़े ताल्लुकेदारों, जमींदारों के बीच अंगरेज अपनी हस्तक्षेप नीति को मज़बूत कर सकें । इस घृणित लक्ष्य की पूर्ति के लिए रजवाड़ों और जमींदारों को हथियार, गोला-बारूद तथा लड़ाई का और भी साजो-सामान प्रचुर मात्रा में देकर लुभाया जाने लगा, जिससे यथासमय मजहबी दंगे और बिला वजह मार-काट की आग भड़काई जा सके ।

इस काम के लिए केंद्रीय और प्रांतीय सरकारों के कुछ अंगरेज, ऐंग्लो-इंडियन और मुस्लिम आई.सी.एस. तथा आई.पी. अफसरों का विश्वास प्राप्त किया गया । तब कहीं उन्हें गोपनीयता की शपथ में बांधकर रहस्योद्घाटन किया । उन्होंने अपने मंजे हुए विश्वासपात्र एजेंटों की मदद से इस योजना को लागू करने की जिम्मेदारी अपने सिर ले ली । ये एजेंट या तो पहले फोर्स वन-थ्री-सिक्स में काम कर चुके थे, या ये 'पोस्ट इंवेजनप्लान' के आदमी थे ।

इन्हीं दिनों इंडियन करेंसी नोटों से भरे न जाने कितने रेलवे वैगन नासिक रोड स्थित गवर्नमेंट सिक्योरिटी प्रिंटिंग प्रेस में मेरे हवाले किये गये । इन्हें मैंने कलकत्ता, मद्रास, मेरठ लाहौर, रावलपिंडी और पेशावर तक सही-सलामत पहुंचाकर वहां के फोर्स वन-थ्री-सिक्स के अंगरेज अफसरों को सौंपा ।

इन्हीं दिनों फोर्स वन-थ्री-सिक्स के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को हर सरकारी काम में ज्यादा से ज्यादा पैसा खर्च करने के भी आदेश मिले । तभी मेरठ से दो दिन की छुट्टी लेकर मैं लखनऊ आया था अपनी बीमार पत्नी को देखने । कलकत्ता वापस लौटने पर उस सस्ते जमाने में लखनऊ चारबाग रेलवे स्टेशन से गुइन स्क्वायर नॉर्थ (वर्तमान शिवपुरी) तक तांगे का किराया बजाए आठ आने के पच्चानबे रुपये क्लेम किया और कुली का दो आने के बजाए दो रुपये । इस पर भी जब मैंने अपना बिल मेजर क्लॉर्क के सामने पेश किया, तो वह झल्लाकर बोले, 'तुम्हें खर्च करना भी नहीं आता । तांगे का पूरा सौ लिखो और कुली के पंद्रह रुपए ।' मैंने तुरंत उनके आदेश का पालन किया...और फिर तो रुपया पानी की तरह बहाने में अफसरों का पूरा-पूरा साथ दिया । यह तो मुझे बाद में पता चला कि मुद्रा-स्फीति के लिए ही यह जाल बिछाया गया था ।

एजेंटों के कारनामे

बड़े-बड़े मुसलिम अफसरों पर तो पहले ही हावी थे, मुस्लिम लीग के आला नेता भी फोर्स वन थ्री-सिक्स के चंगुल में आ चुके थे । सन





श्री धर्मेन्द्र गौड़ अवकाश प्राप्त केंद्रीय गुप्तचर अधिकारी हैं । अपनी कृति 'फोर्स वन थ्री सिक्स' में उन्होंने द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान कार्यरत खतरनाक गुप्तचर संगठन 'फोर्स वन थ्री सिक्स' की गतिविधियों पर प्रामाणिक प्रकाश डाला है । इस कृति के प्रकाशक हैं— विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी । यह अंश इसी कृति से लिया गया है ।

१९४५ की जनवरी का महीना था । बंबई से मेरठ बुलाकर मुझे दो 'टॉप सीक्रेट एंड पर्सनल' लिफाफे दिये गये । एक था क्वेटा-स्थित इंपीरियल (इंटेलिजेंस) ब्यूरो के प्रतिनिधि और बलूचिस्तान में ब्रिटिश इंटेलिजेंस सिस्टम के डायरेक्टर मिस्टर वुड के नाम । दूसरा था इसकंदर मिर्जा के लिए, जो बाद में पाकिस्तान के गवर्नर-जनरल हुए । उस समय शायद, वह कमिश्नर थे । उन दिनों दोनों पेशावर में ही मौजूद थे । जैसा कि आदेश था, मैंने अपने ही हाथों ये चिट्ठियां सुरक्षित रूप में दोनों के हवाले कीं और उनसे रसीदें भी ले लीं । लेकिन, किसी ने भी पत्रोत्तर नहीं दिया । हां, वुड ने इस्माइल, उर्फ जहूर उपनाम वाले शौकत नामक एजेंट को मेरठ तक ले जाने के लिए मेरे हवाले अवश्य किया ।

काफी अरसे बाद पता चला कि इसी शौकत ने बंगाल में मजहबी दंगे कराने के लिए कलकत्ता, कोमिल्ला, चटगांव, खुलना, राजशाही आदि नगरों में सैकड़ों एजेंट भरती किये । ये एजेंट हर घड़ी अपने काम के लिए कमर-कसे मुस्तैद रहते थे, बस, आदेश मिलने भर की देर थी ।

१६ अगस्त, १९४६ को मुस्लिम लीग ने 'डायरेक्ट ऐक्शन डे' की घोषणा की और उधर फोर्स वन-थ्री-सिक्स के एजेंट समस्त बंगाल की धरती रक्त-रंजित करने के लिए कलकत्ता, नोआखाली, बारीसाल, चटगांव, ढाका, खुलना, नारायणगंज, टिपरा (कोमिल्ला), मरादीपुर, राजशाही आदि स्थानों में फैल गये । उन्होंने दूसरे संप्रदाय के लोगों का खोज-खोजकर कसाइयों की तरह उनका संहार किया ।

पचास हजार से अधिक लोग मारे गये । सैकड़ों को जिंदा जला दिया गया । उस समय बंगाल के प्रीमियर हसन शहीद सोहरावर्दी थे । उनके आदेशानुसार 'डायरेक्ट ऐक्शन डे' पर बंगाल के सभी सरकारी दफ़्तर बंद करा दिये गये थे । उनके द्वारा दिये गये कत्ले-आम के गुप्त आदेश का अक्षरशः पालन हो रहा है या नहीं, यह देखने के लिए वह चार दिनों तक लगातार लाल बाजार पुलिस हेडक्वार्टर्स, कलकत्ता में विराजमान रहे । इससे एक सप्ताह पहले ही उन्होंने कलकत्ता, हावड़ा, डमडम, बारिकपुर स्थित सभी पुलिस थानों के हिंदू स्टेशन अफसरों के तबादलों का आदेश दे दिया था, जिनकी संख्या ५२ थी । इनके स्थान पर ५१ मुस्लिम अफसर तैनात किये गये और ५२वां एक ईसाई था ।

भयंकर षड्यंत्र

मैं नौकरी से इस्तीफा देकर बंबई आ गया था । दिसंबर, १९४६ की बात है । एक दिन बंबई के फोर्ट में हॉर्नबी रोड पर अचानक मेरी

मुलाकात हो गयी दुबले-पतले आरडा और भारी-भरकम फैनर से । ये दोनों ऐंग्लो-इंडियन बांबे डिटेचमेंट फोर्स वन-थ्री-सिक्स के विशेष एजेंट थे । उनसे पहली बार मुझे पता चला कि सारे भारत में सांप्रदायिक अशांति फैलाने और 'रेजिस्टेंस मूवमेंट' चलाने के लिए 'एम.आई.फाइव' (इंटेलिजेंस आर्गनाइजेशन) के वेश में फोर्स वन-थ्री-सिक्स आज भी जीवित है ।

विश्वासघातियों से विश्वासघात

थोड़ा और समय बीत जाने पर मुझे पता चला कि बर्मा मुक्ति-आंदोलन के गोरिल्ला नेता जनरल आंग सान को, जिन्होंने फोर्स वन-थ्री-सिक्स के प्रभाव में आकर जापानियों के खिलाफ अंगरेजों का साथ देना इस शर्त पर स्वीकार किया था कि लड़ाई के बाद बर्मा पूर्ण रूप से स्वतंत्र होगा, आजाद बर्मा के प्रधानमंत्री बनने के बाद शनिवार, १९ जुलाई, १९४७ को मय उनके मंत्रिमंडल के नौ मंत्रियों को गोलियों से भून डाला गया ।

मुझे आज भी पूरा यकीन है, कि 'फोर्स वन-थ्री-सिक्स' और 'फोर्स वन-थ्री-थ्री' लंदन में 'एम.आई.सिक्स' (सीक्रेट इंटेलिजेंस सर्विस, अब एस.आई.एस.) के रूप में अभी तक जिंदा है । 'एम.आई.फाइव' उनकी सुरक्षा संस्था है । मेरा यह भी अनुमान है कि कराची, लाहौर, सिंगापुर, हांगकांग और सिकंदरिया वे स्थान हैं, जहां प्रमुख गुप्तचर विचार-विमर्श के लिये मिलते रहते हैं ।

—रूगटा बिल्डिंग, सिनेमा रोड गोरखपुर-२६३०००१

क्या वह रेल दुर्घटना गांधीजी की हत्या की कोशिश थी ?

मैं उस समय बंबई से तबादले पर 'स्पेशल फोर्सेज-डेवलपमेंट सेंटर' (एस.एफ.डी.सी.) खड़की में आ गया था । दो बार मैं भी गांधीजी की प्रार्थना-सभाओं में गया । तभी एक दिन बांबे डिटेचमेंट फोर्स वन-थ्री-सिक्स का गुप्तचर ई.आर. कोलंबोवाला मिला । उसने बताया कि कलकत्ता से स्टुअर्ट आये हैं और देहू रोड पर 'प्राइजनस सब्सटेंस हेडक्वार्टर्स' में ठहरे हुए हैं । दूसरे दिन उसने फिर कहा कि गांधीजी वाइसराय लॉर्ड वेवल के साथ भारत की स्वतंत्रता के बारे में कई अहम राजनीतिक मसलों पर विचार-विमर्श करने दिल्ली जानेवाले हैं ।

मेरा माथा ठनका । स्वयं स्टुअर्ट का उस समय वहां होना ही बड़ी बात थी । मुझे समझते देर न लगी, कि दो-चार दिनों में ही कोई असाधारण घटना घटनेवाली है ।...और, दो दिनों बाद सुनता क्या हूं कि रात में फोर्स वन-थ्री-सिक्स के क्षेत्र में पड़नेवाले देहू रोड और कर्जत रेलवे स्टेशनों के बीच ही गांधीजी की स्पेशल ट्रेन दुर्घटनाग्रस्त हो गयी, उस गाड़ी में एक इंजन, एक तीसरे दर्जे की बोगी और एक गार्ड का डिब्बा था । इंजन पटरी से उतर गया, लेकिन वह होशियार ड्राइवर गांधीजी और उनके साथ सफर करनेवाले सभी लोगों को सही-सलामत बचा ले गया । —धर्मेन्द्र गौड

उनके काटने से मृत्यु भी हो सकती है

● राजकिशन नैन

दुनिया भर में कीट-पतंगों की जितनी जातियां हैं, उनमें मधुमक्खी सबसे निराली है। लाखों वर्ष पहले मधुमक्खियों के शरीर का ढांचा पंख-रहित होता था, बहुत बाद में पंखोंवाली ज़ातियां अस्तित्व में आयीं। विश्व में इनकी मुख्यतः चार जाति हैं। इनमें दो जातियां छोटी मक्खी की हैं, जो 'एपिस फलोरिया' व 'एपिस डोरसैटा' के नाम से जानी जाती हैं। ये भारत, मलाया, श्रीलंका, बर्मा तथा चीन आदि देशों के जंगली व पर्वतीय इलाकों में पायी जाती हैं। ये आकार में छोटी होती हैं तथा खुली जगहों पर छत्ता बनाती हैं। 'एपिस डोरसैटा' बेहद जहरीली किस्म की है और कई बार मनुष्य के लिए जानलेवा सिद्ध होती है। इनमें पुत्तिका (पिंगल जाति=पीली किस्म) मधुमक्खियां विषैले फूलों से भी मधु संचय करती हैं। दो अन्य जातियां 'एपिस सेराना' और 'एपिस मौलीफैरा' हैं। 'एपिस सेराना' भारतीय किस्म की है तथा मैदानी इलाकों में रहना पसंद करती है। भारत के अलावा ये मलाया और मेडागास्कर में रहती हैं। ये अपना छत्ता गुफाओं, दीवारों, घरों एवं वृक्षों आदि पर बनाती हैं। 'एपिस मौलीफैरा' दक्षिण एशिया में पायी जानेवाली दो तरह की मक्खियों का मिला-जुला नाम है, इन्हें एक ही जाति की संतान माना जाता है। यह जाति तमाम दुनिया में फैली हुई है।

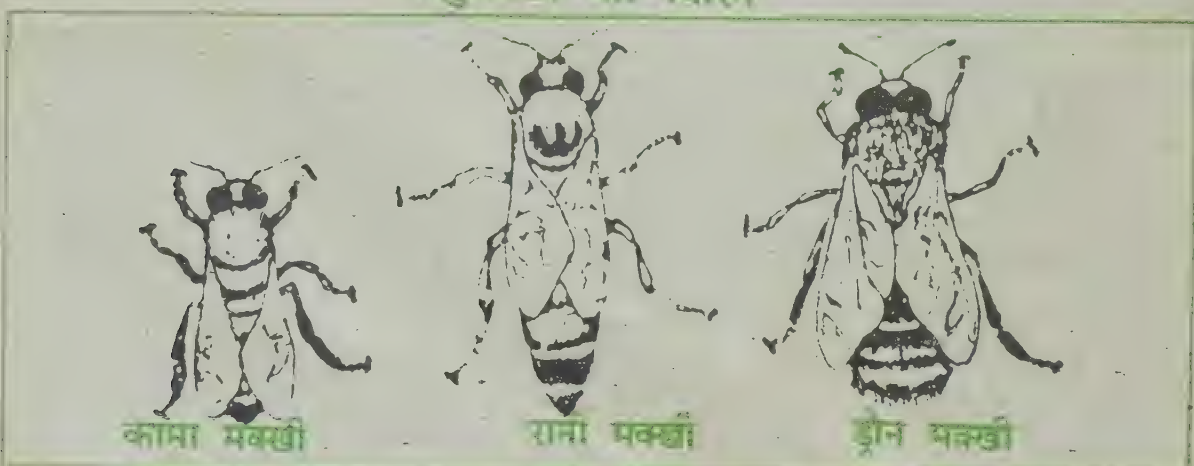
मधुमक्खियों की तीन किस्में हैं, जो मादा रानी मक्खी, मादा कामगर मक्खी व नर मक्खी के नाम से जानी जाती हैं। सबसे महत्त्वपूर्ण स्थान मादा रानी मक्खी का है। इसकी आयु चार-पांच वर्ष होती है। यह आयुभर अंडे देने का काम करती है। रानी मक्खी एक मिनट में कई व दिनभर में कई हजार अंडे देने में सक्षम होती है। अंडे सेनेवाले तथा न सेनेवाले, दो तरह के होते हैं। न सेनेवाले अंडे छत्ते के छेदों को बढ़ाने में सहायक होते हैं, जबकि सेनेवाले अंडों से मक्खियां पैदा होती हैं। अंडों में से जो

बच्चे निकलते हैं, उनमें कई रानियां भी होती हैं। बड़ी रानी इन्हें मारने का यत्न भी करती है, ताकि ये उसकी बराबरी न कर सकें। किंतु कामगर मक्खियां इन कुंवारी रानी मक्खियों की बड़ी सेवा करती हैं और इन्हें पौष्टिक भोजन उपलब्ध करवाती हैं। कुंवारी रानी मक्खी युवावस्था में छत्ते से बाहर निकलकर एक विशेष आवाज निकालती है। इसे सुनकर अन्य कुंवारी मक्खियां भी बाहर आ जाती हैं। तब, इनकी आपस में लड़ाई होती है। जो जीतती है, वही जीवित रहती है। हवा में कुंवारी मक्खी के इर्द-गिर्द असंख्य नर चक्कर काटते रहते हैं। विचित्र यह है कि इनमें से एक ही नर इससे शरीर-संपर्क बना पाता है, शेष नर आयुभर इस संयोग से वंचित रहते हैं। संभवतः इसी कारण नर-कीट ढीले-ढाले और आलसी होते हैं। काम-धाम भी ये न के बराबर करते हैं। छत्ते में इनकी संख्या कुछ सौ होती है।

काम मादाएं ही करती हैं

छत्ते में सबसे अधिक संख्या मादा कामगर (मजदूर) मक्खियों की होती है। ये अंडे नहीं देतीं। छत्ते का तमाम कार्य इन्हीं के जिम्मे होता है। एक छत्ते में ये कई हजार होती हैं। छत्ता बनाने एवं शहद एकत्र करने के अलावा ये रानी मक्खी की जरूरतों का ध्यान रखती हैं। उसे साफ करती हैं, उसकी मालिश करती हैं और बढ़िया से बढ़िया खाना मुहैया करवाती हैं। अंडों से बच्चे निकलने पर मजदूर मक्खियां बड़ी तत्परता से उनकी देखभाल करती हैं तथा दुनिया का सामना करने लायक होने तक उनकी देखभाल करती हैं। नित्य-प्रति ये मक्खियां एक निश्चित समय तक फल-फूलों का रस एवं पराग एकत्र करती हैं। मात्र पांच सौ ग्राम शहद एकत्र करने के लिए मक्खियों को पचास लाख फूलों का रस चूसना पड़ता है। रानी मक्खी बच्चे बड़े हो जाने पर, अन्य मक्खियों को साथ लेकर नयी जगह की तलाश में उड़ चलती हैं तथा किसी पेड़, दीवार अथवा गुफा के मुहाने पर बैठ जाती हैं। मजदूर मक्खियां नया नीड़ बनाने में व्यस्त हो जाती हैं। मधुमक्खियां आकार में जितनी छोटी होती हैं, अक्ल के मामले में उतनी ही समझदार मालूम पड़ती हैं। बच्चों के पालने-पोसने हेतु, जो छत्ता ये बनाती हैं, वह बेहद खूबसूरत होने के साथ ही अनोखा होता है। अचरज में डालनेवाला यह चमत्कारिक एवं कलात्मक छत्ता बहुत ही सुरक्षित स्थान पर

मधुमक्खी की किस्में



फूलों की क्यारी अथवा हरियाली के आस-पास बनाया जाता है । प्रत्येक छत्ते में कई कोष्ठ होते हैं और हर कोष्ठ में छह कोने बने होते हैं । इन कोष्ठों में भारी-भरकम शहद तो सुरक्षित रहता ही है, साथ ही यह मक्खियों के अंडे-बच्चों आदि हेतु भी बढ़िया आश्रय स्थल है । छत्ते में तीनों तरह की मक्खियों की व्यवस्था भी अलग-अलग होती है । यह अचरज की ही बात है कि छत्ते को बनानेवाली व इसको सुरक्षा प्रदान करनेवाली कामगर मक्खियों का रहन-सहन सभी से निम्न श्रेणी का होता है, जबकि छत्ते के तापमान को घटाने-बढ़ाने से लेकर फूलों का रस निकालना व पानी एकत्र करना, इन्हीं के जिम्मे है ।

कामगर मक्खियां खेतों, वनों एवं जंगलों से अनेकानेक फूलों का रस अपने पेट में एकत्र करती हैं । ये अपने मुंह में लगी लंबी नली को फूल में चुभोकर रस व पराग को चूसकर ऐसा करती हैं । मक्खियों के पेट में यह रस अनेक प्रकार से रूपांतरित होकर शहद व मोम का स्वरूप धारण करता है । इसके बनने में मधुमक्खियों के शरीर की भीतरी लवण क्रिया बेहद सहायक होती है । शहद वस्तुतः मकरंद (पुष्परस) है, जो मक्खियों की लार द्वारा फलों की चीनी में परिवर्तित होता है । मक्खियां इसे अपने ही मोम द्वारा बनाये गये छत्ते में जमा करती रहती हैं ।

विषाक्त भी होता है शहद

शहद आठ प्रकार का होता है । विभिन्न फूलों, पेड़ों एवं जंगलों के भेद से इसके गुणों एवं स्वाद में थोड़ा-बहुत अंतर अवश्य होता है । धतूरे के आस-पासवाला शहद विषाक्त होता है । नीम के पेड़ का शहद कुछ बकबका, पर उत्तम होता है । सरसों, तुलसी और अन्य औषधीय पेड़-पौधों पर लगा शहद भी श्रेष्ठ होता है । यह सफेद, गाढ़ा-पीला, प्रगाढ़ लालिमायुक्त, भूरा, अंबर व काले रंगों में पाया जाता है । इसमें अस्सी प्रकार के तत्व पाये जाते हैं । इसी कारण आयुर्वेद ने इसे 'अमृत' की संज्ञा दी है ।

शुद्ध शहद में प्रायः एकसमान रासायनिक अंश प्रतिशतता होती है । इसमें तीन प्रकार की शर्करा पायी जाती है, जो क्रमशः फलों की, अंगूर की व गन्ने की शर्करा के नाम से जानी जाती है । इन तीन शर्कराओं में, अंगूरी शर्करा सीधे रक्त में मिलनेवाली है । शर्करा के अतिरिक्त शहद में अम्ल, प्रोटीन, लोहा, तांबा, मैगनीज, पोटाशियम, सोडियम, फास्फोरस, कैलसियम, माल्टोस, क्लोरोफिल, आयोडीन, कैरोटीन, एमीनो-एसिड तथा विटामिन-ए, बी-६, बी-२ और सी पाये जाते हैं । शहद में ४२ प्रतिशत विशुद्ध ग्लूकोस रहता है । मिठास की इसी अधिकता के कारण शहद में विषाक्त जीव जिंदा नहीं रह पाते । अमरीका के प्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ. स्टुअर्टवेंट ने लंबे अनुसंधान के बाद यह पाया कि घातक रोगों के रोगाणु शहद में रखने के बाद दो से पांच दिन के अंदर नष्ट हो गये । संभवतः इसी कारण प्राचीन लोग शहद से घावों की पट्टी करते थे ।

शहद तमाम खाद्य पदार्थों में उत्कृष्ट एवं गुणकारी है । तरल पदार्थों में इससे अधिक शुद्ध और मीठी चीज संसार में दूसरी नहीं है । यह गन्ने की चीनी से पच्चीस प्रतिशत अधिक मीठा होता है । एक किलो शहद में सवा तीन

हजार कैलोरी होती है, जबकि गाय के एक लीटर दूध में ६२०, एक किलो सेब में ४१० । एक पौंड शहद में सत्तर अंडों से अधिक शक्ति होती है । यह स्वतः पचा हुआ भोजन है इसलिए इसे पचाने के लिए शरीर को थोड़ी-सी भी मेहनत नहीं करनी पड़ती । जीभ पर रखते ही यह रक्त के साथ घुलना शुरू हो जाता है । शहद ऐसा योगवाही द्रव्य है... जिसे जिस गुणवाले द्रव्य के साथ लिया जाए, उसी के अनुकूल होकर उसके गुणों में वृद्धि करता है ।

यूं तो प्रत्येक ऋतु में, किंतु जाड़े के दिनों में इसका सेवन विशेष चाव से किया जाता है । इन दिनों चाय की जगह कोरे पानी में शहद लेने से रूप-सौंदर्य, बल-स्फूर्ति एवं तेज की वृद्धि होती है तथा जी घुटना, दिल बैठना आदि तकलीफों में लाभ मिलता है, रात को एक चम्मच शहद गिलास भर पानी में लेने से कब्ज दूर होता है तथा पेट के कीड़े मरकर रक्त की कमी दूर होती है । रक्त में लाल कणों की वृद्धि होकर शरीर में चमक आती है । चिकित्सक इसे अम्लता, मधुमेह, हृदय रोग, दमा, पीलिया, गैस, नाड़ी, दंत एवं काम-जनित रोगों में उपयोग करते हैं । शहद की मिठास अल्कोहल की नुकसानदायक प्रक्रिया से भी शरीर को बचाती है ।

शहद खाने का प्रचलन दुनियाभर में सभ्यता के आदिकाल से है । दुनिया की लगभग तमाम जातियों द्वारा शहद के उपयोग के प्रमाण मिलते हैं । प्राचीन काल में यह महत्त्वपूर्ण खाद्य, देवी-देवताओं को भेंट-स्वरूप अर्पित किया जाता था । होमर ने ग्रीक पहलवानों के शहद खाने की परंपरा का वर्णन किया है । 'हरक्युलिस' इसी परंपरा में था । मिस्र के प्राचीन मकबरों और पिरामिडों की खुदाई करने पर वहां शहद के पात्र भी प्राप्त हुए हैं । रूसी वैज्ञानिकों द्वारा सन १९२३ में फराओ तूतन खामन के पिरामिड से प्राप्त शहद के पात्रों की जब जांच की गयी तो बेहद उत्साहवर्द्धक परिणाम सामने आये । पात्रों में मिला शहद ३३०० वर्ष पुराना होने के बावजूद ज्यों-का-त्यों था । इससे पता चलता है कि इसके गुण कई सौ वर्षों तक अपरिवर्तित रह सकते हैं ।

यूनानी दार्शनिक अरस्तू का मानना था कि शहद अमृत का दूसरा रूप है । यूनानी दार्शनिक एवं प्रसिद्ध गणितज्ञ पाईथागोरस ने भी अपनी दीर्घायु का श्रेय शहद को दिया । रोमी कवि ओविड ने भी दूध व शहद को पूर्ण आहार कहा । चिकित्सा-विज्ञान के जानकार हिप्पोक्रेटस शहद का नियमित सेवन करते थे तथा रोगियों को दवाओं के साथ शहद बताते थे । हिब्रू जाति के लोग भी शहद में बेहद रूचि रखते थे । प्राचीन समय में ईसाई गिरजाघरों में दूध व शहद के मिश्रण को समर्पण का प्रतीक माना जाता था । एक अन्य कथनानुसार बैबीलोनिया में मृत्युपरांत सिकंदर के शव को शहद से भरे पात्र में रखा गया था,ताकि मकदूनिया पहुंचने तक शव में कोई विकृति न आये ।

प्रसिद्ध दार्शनिक जार्ज बर्नाड शॉ शहद खाते थे और संभवतः इसी से वे बुढ़ापे तक स्फूर्ति और ताजगी से सराबोर रहे । वर्तमान में अमरीका तथा यूरोप के देशों में शहद खाने की मेज पर भोजन का जरूरी अंग बन चुका है । रूस में तो शहद और भी अधिक लोकप्रिय है

तथा वहां के लोग इसे नास्ते में चाव से खाते हैं । मात्र आधी शताब्दी पूर्व सोवियत संघ के एक विख्यात सर्जन ने सड़े-गले घावों पर शहद का लेप कर अनेकों रोगी ठीक किये थे ।

अमृत का दूसरा नाम

हमारे अपने देश में योगी और वैद्य लंबी आयु और शरीर सौष्ठव को बनाये रखने के लिए शहद को सदैव से प्रमुखता देते रहे हैं । देश के देहाती इलाकों में प्रायः हर घर में शहद खाने व रखने की परंपरा है तथा अब भी शहद को दूध, दधि, घृत और मिश्री के साथ पंचामृत कर अमृतपान करने का रिवाज है । अनेक गांवों में बड़े-बूढ़ों ने दावे के साथ कहा कि वर्षभर नियमित रूप से शुद्ध शहद आंखों में आंजने से उनके चश्मे उतर गये हैं । उन्होंने बताया कि शहद में फूलों की शर्करा होती है जो नेत्रों की पेशियों के परदे को बल प्रदान करती है तथा शहद के पोषक तत्त्व सीधे अक्षि गोलक में जज्ब होकर वहां की पेशियों को बल देते हैं । सफेद और काले मोतियाबिंद के रोगी भी इसके उपयोग से लाभान्वित होते देखे गये हैं । कुपोषण के शिकार बच्चों को शहद देने से उनमें भार वृद्धि होती देखी गयी है ।

अपनी छाती पर से हाथी गुजार लेनेवाले पहलवान राममूर्ति दूध और शहद खूब जी भरकर खाते थे । गांधीजी दूध और फलों के रस के साथ शहद अवश्य लेते थे । आधुनिक वैज्ञानिक अनुसंधानों ने शहद के उपरोक्त तमाम गुणों की पुष्टि कर दी है तथा आजकल यह प्लास्टिक शल्य क्रिया में सफलता के साथ उपयोग किया जा रहा है ।

इसी से हमारे देश में शहद के उत्पादन को बढ़ावा मिल रहा है । यह व्यवसाय यद्यपि अभी तक अपने बचपने में है तथापि धंधे के रूप में यह दिनों-दिन लोकप्रिय हो रहा है । अकेले पंजाब राज्य में ही ६५० टन शहद का वार्षिक उत्पादन हो रहा है । राज्य में ६५०० से अधिक किसान इस धंधे से जुड़े हुए हैं । हरियाणा, उत्तर प्रदेश, बंगाल, बिहार, हिमाचल व जम्मू-कश्मीर आदि प्रदेशों में भी यह धंधा फल-फूल रहा है । इसका एक कारण यह भी है कि मधुमक्खी पालन किसानों का फायदेमंद सहायक व्यवसाय है तथा पुराने समय की अपेक्षा अब हमारे देश में भी मक्खी पालन हेतु परिष्कृत तरीके अपनाये जाने लगे हैं । शहद के अतिरिक्त छत्ते से गोंद, मोम व अन्य सुगंधित अंश भी निकाले जाते हैं, जो कई तरह की दवाओं और मोमजामे आदि बनाने के काम आते हैं ।

सलाह मधुमक्खी पालकों को

मधुमक्खी-पालन व्यवसाय किसानों के लिए ही नहीं, बल्कि सभी वर्गों के लिए लाभदायक व्यवसाय है । मात्र दस छत्तों की इकाई से लगभग ४०० रुपये माहवार की आय संभव है, जिस पर अनुमानतः ६००० रुपया खर्च होता है । सारा समय कार्य करनेवाला एक व्यक्ति ८० से १०० छत्तों की देखभाल आसानी से कर सकता है । ग्रामीण बेरोजगार युवक भी इसे अपनाकर स्वतंत्रजीवी हो सकते हैं ।

मधुमक्खियां पालनेवाले किसानों को खेतों में फूल आने से पहले ही ऐसे कीटनाशक इस्तेमाल करने चाहिए, जिनका असर अधिक समय तक (अर्थात फूल आने तक) बना रहे । फूल आने पर छिड़काव करने से जहरीले

कीटनाशक मधुमक्खियों की मृत्यु का कारण बनते हैं। छिड़काव बहुत ही आवश्यक हो तो सुरक्षित कीटनाशक जैसे मिनोजान, निकोटिन, सल्फेट, पायूरेथ्रम आदि का उपयोग करना श्रेयस्कर है। किंतु घातक कीटनाशक जैसे एल्ड्रीन फोस्फेमिजन, पैराथियोन, बी. एच. सी, नूवान आदि हरगिज उपयोग नहीं करने चाहिए। इनका उपयोग करना भी हो तो डिमेडान अथवा सिटोकस-जैसे रसायन इनके साथ अवश्य बरतें, ताकि इनकी गंध से मक्खियां फूल पर न बैठें। इससे मधुमक्खियों की अकाल मृत्यु नहीं हो पाएगी। मधुमक्खी पालकों को अपने खेत के आसपास के विषैले फूलों को भी नष्ट कर देना चाहिए।

शहद को तोड़ने और निचोड़ने हेतु वैज्ञानिक विधियों का इस्तेमाल करना चाहिए। खेतों और जंगलों से कुदरती तौर पर तोड़ा जानेवाला शहद भी मक्खियों व उनके अंडे-बच्चों को हानि पहुंचाए बगैर तोड़ना चाहिए। शहद के छत्ते को आग लगाकर अथवा जहरीला धुआं छोड़कर मक्खियों को दूर भगाने का तरीका गलत है। ऐसा कतई नहीं करना चाहिए। इससे निरपराध और बेहद उपयोगी कीटों की हत्या होती है और प्रकृति का संतुलन बिगड़ता है। मधुमक्खी वैसे भी किसान के लिए बेहद उपयोगी कीट है। यह परपरागण द्वारा फसलों को बेहद लाभ पहुंचाती है। इसलिए शहद के संग्रह के लिए थोड़ी समझ-बूझ और युक्ति से काम लेना जरूरी है।

कई बार मक्खियां अपने बचाव हेतु शहद तोड़नेवाले अथवा छत्ता छेड़नेवाले व्यक्ति पर हमला भी कर देती हैं, जिसके फलस्वरूप मृत्यु तक होती देखी गयी है। मक्खी द्वारा काटा



व्यक्ति क्यों मरता है तथा इससे बचाव के क्या साधन हैं, इस बारे में मैंने चिकित्सा महाविद्यालय, रोहतक के वरिष्ठ चिकित्सकों की राय ली तो उन्होंने बताया कि 'जब मधुमक्खी काटती है तो उसके जहर में विद्यमान कुछ खास तरह के द्रव्य मानव शरीर की भीतरी व्यवस्था को गड़बड़ा देते हैं तथा रक्तचाप गिर जाता है। मक्खी काटनेवाले स्थान पर सूजन, लाली व भयंकर पीड़ा होती है तथा अधिक मक्खियों के काटने पर खांसी, गले में सूजन, पित्त और दिमागी असंतुलन हो जाता है। कभी-कभी हृदय गति भी बंद हो जाती है। इन हालात में चिकित्सा-सुविधा समय पर न मिलने के कारण रोगी की मृत्यु हो जाती है। मृत्यु बूढ़ों की अधिक होती है। बचाव हेतु उन्होंने जो कुछ सुझाव दिये, वे ये हैं--

१. कांटे को तुरंत निकाल देना चाहिए तथा कांटा लगने वाली जगह को किसी भी वस्तु से मसलना नहीं चाहिए
२. दर्द और खुजली निवारक दवा लेनी चाहिए तथा तुरंत किसी नजदीकी अस्पताल में चिकित्सक की शरण लेनी चाहिए ताकि मरीज की जान बचायी जा सके।

इस तरह शहद एक बेहद गुणकारी वस्तु है। इसके प्रचार-प्रसार हेतु प्रत्येक राज्य में सरकारी शहद उत्पादन संस्थाए बनायी जानी





छत्ते का चमत्कारिक निर्माण पीपल के पेड़ में बड़ी मक्खी का छत्ता

चाहिए ताकि सभी लोग प्रकृति की सि अमूल्य निधि द्वारा लाभान्वित हो सकें ।

लोगों को उन शहद बेचने वालों से सावधान रहना चाहिए, जो बाल्टियों में चीनी का घोल बनाकर और उसमें कुछ शहद के छत्ते रखकर घर-घर शहद बेचने जाते हैं । यह स्वास्थ्य के लिए बेहद हानिकारक होता है । शहद को आग पर सीधे गरम नहीं करना चाहिए, इससे शहद के नैसर्गिक गुण नष्ट हो जाते हैं । जहां तक संभव हो, शहद को अंधेरे किंतु हवादार स्थान पर, वायुरहित मिट्टी अथवा शीशे के बरतनों में रखना चाहिए ताकि खराब न हो ।

ग्राम ·पत्रालय : अजायब, जिला- रोहतक (हरियाणा)-१२४५२२

राजकिशन जैन



घातक हथियारों
की जांच में
महत्त्वपूर्ण भूमिका
निभाता है
मेटल डिटेक्टर !

मैटल डिटेक्टर लिये
ड्यूटी पर मुस्तैद
एक महिला पुलिस
अधिकारी

किस तरह काम करता है मेटल डिटेक्टर

आतंकवादियों के कारण अब सुरक्षात्मक उपाय के रूप में मेटल डिटेक्टर का उपयोग आम हो गया है । आखिर कैसे चल जाता है, मेटल डिटेक्टर से धातु के उपस्थित होने का पता !

उस पर नजर पड़ते ही वे दोनों ठिठक गये । वह सामने ही खड़ी थी ।

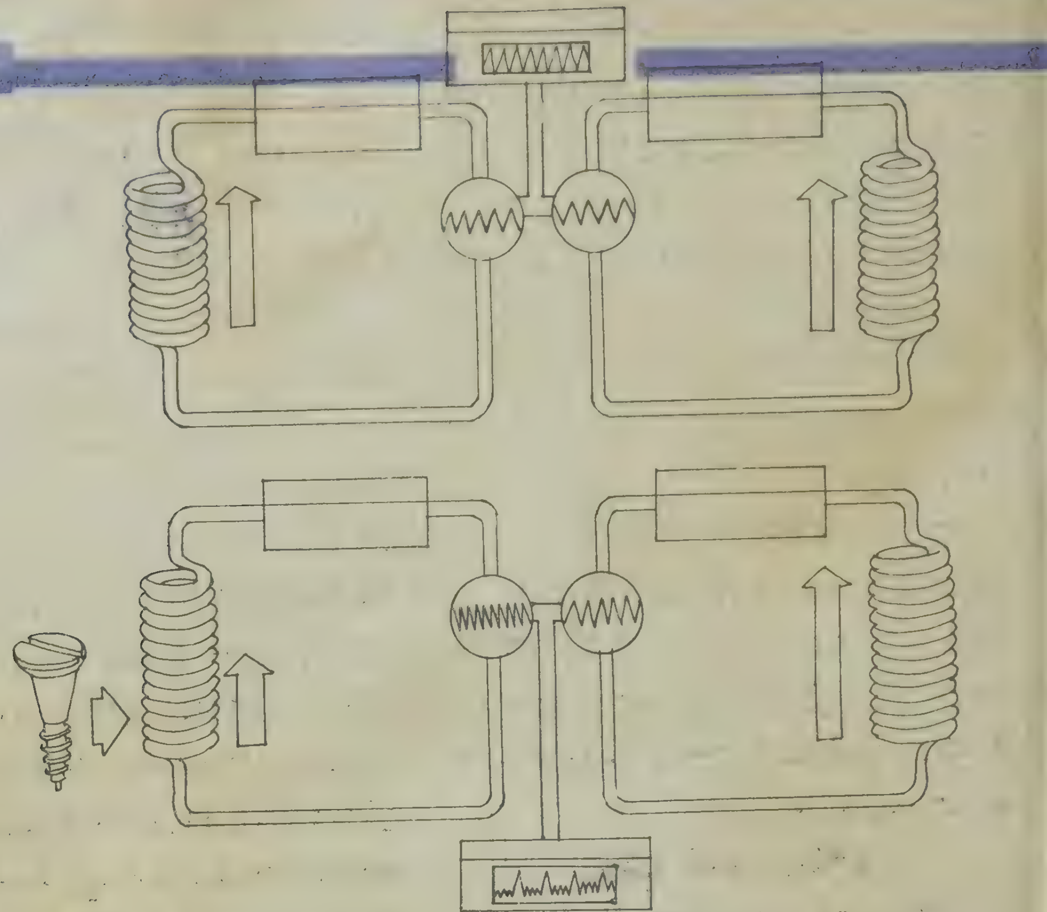
चौकस आंखें और हाथों में मेटल-डिटेक्टर ! उन्हें लगा, उसके हाथों में मेटल डिटेक्टर नहीं कोड़ा है । अब आगे बढ़ना मुश्किल ही नहीं असंभव था । वे उसके पास से गुजरते तो वह ज़रूर उनके शरीर पर मेटल डिटेक्टर फिराती और ऐसा करते ही उनकी कलई खुल जाती । कारण, उनके पास एक भरी हुई पिस्तौल थी, बिना लाइसेंस की । लौटने के सिवाय कोई और उपाय नहीं था । वे लौट पड़े । उनका खतरनाक मिशन पूरा नहीं हो पाया । केवल मेटल डिटेक्टर लिये तैनात एक चौकस महिला पुलिस अधिकारी की वजह से ।

आज मेटल डिटेक्टर के कारण पुलिस का काम बेहद आसान हो गया है । अब वह आसानी से ऐसे लोगों का पता लगा सकती है, जो लोहे के हथियार —जैसे पिस्तौल, छुरा आदि लिये खतरनाक इरादों से उस स्थल पर पहुंचते जहां किसी अति विशिष्ट व्यक्ति को आना होता है । मेटल डिटेक्टर की सहायता से समारोह स्थल पर आनेवाले प्रत्येक व्यक्ति की सहज में जांच की जा सकती है, खासकर तब, जब उन्हें किसी प्रवेश द्वार से गुजरना होता है । यों तो मेटल डिटेक्टर के कई प्रकार हैं । वे चौखट में लगाये जा सकते हैं अथवा उन्हें हाथ में लेकर किसी व्यक्ति की सरलता से आनन-फानन 'तलाशी' ली जा सकती है ।

चौखट में लगे और हाथ में लेकर इस्तेमाल किये जानेवाले, दोनों ही तरह के मेटल डिटेक्टर अब राजधानी दिल्ली में हर जगह देखने को मिलते हैं । आतंकवादियों के कारनामों की वजह से अब ये आमतौर पर बिरला मंदिर और संग्रहालयों से लेकर प्रगति मैदान और अप्पूघर तक हर ऐसी जगह काम में लाये जा रहे हैं, जहां सामान्यजन बड़ी तादाद में आते-जाते हैं ।

चुंबकीय संवेदन

आखिर चल कैसे जाता है मेटल डिटेक्टर



से धातु के उपस्थित होने का पता ? धातु विज्ञान की थोड़ी-बहुत जानकारी रखनेवाले भी जानते हैं कि धातुओं में एक ऐसा महत्त्वपूर्ण गुण होता है जो अन्य किसी तत्व में नहीं होता, जिसकी वजह से किसी संवेदनशील उपकरण की सहायता से उन्हें आसानी से पहचाना जा सकता है । यह गुण है उनकी ऊंची विद्युत संवाहकता । धातु की किसी वस्तु के पास यदि प्रत्यावर्तक चुंबकीय क्षेत्र उत्पन्न कर दिया जाए तो विद्युत लहरें उससे टकराने लगती हैं और वस्तु के चारों ओर एक चुंबकीय क्षेत्र का निर्माण करती हैं । यह चुंबकीय क्षेत्र वस्तु के अपने चुंबकीय क्षेत्र को तोड़-मरोड़ देता है । इस विकृति के जरिये ही धातु की उपस्थिति का पता चल जाता है । अभिप्रेरित चुंबकत्व के इस सिद्धांत के आधार पर कई तरह के मेटल डिटेक्टर बने हैं । इन्हें बेलेंसड सर्च क्वाइल यूनिट, फील्ड सर्च यूनिट और पल्स मैग्नेटाइजेशन यूनिट के नाम से तीन वर्गों में बांटा गया है । इन मेटल डिटेक्टरों के साथ ए बड़ी समस्या यह है कि जब इनका इस्तेमाल जमीन पर किया जाता है, तब पृथ्वी की संवाहकता से गणना पर असर पड़ता है । इस प्रकार के मेटल डिटेक्टर का इस्तेमाल बहुत थोड़ी दूरी अर्थात छह इंच या पंद्रह सेंटीमीटर तक दूर की वस्तु के लिए ही किया जा सकत है ।

हेटेरोडाइन वर्ग के मेटल डिटेक्टरों में भी इस्तेमाल तो अभिप्रेरित चुंबकत्व का सिद्धांत हुआ है, लेकिन इनके दोनों क्वाइलों में से प्रत्ये में केवल एक वाइंडिग होती है । इस किस्म मेटल डिटेक्टर अत्यधिक संवेदनशील हो

सकते हैं, लेकिन पृथ्वी की संवाहकता के कारण इनकी गणना भी प्रभावित होती है और इनसे निश्चित संकेत पा सकना आसान नहीं होता ।

फील्ड सर्च यूनिट वर्ग के मेटल डिटेक्टरों का इस्तेमाल टेनिस कोर्ट जितने लंबे-चौड़े क्षेत्र में किया जा सकता है । पुरातत्व से संबंधित खुदाई के काम में इन डिटेक्टरों से बहुत मदद मिलती है ।

पल्स मैग्नेटाइजेशन यूनिट इस सिद्धांत के अनुसार काम करते हैं कि चुंबकीय क्षेत्र को धरती पर या हवा में फैलने में एक नियत समय लगता है । ये यूनिट भी बहुत कारगर हो सकते हैं, लेकिन पृथ्वी की संवाहकता इनकी गणनाओं को भी प्रभावित करती है ।

मैग्नेटिक सर्च यूनिट

मैग्नेटिक सर्च यूनिट इस्तेमाल करके लोहा, इस्पात और अन्य चुंबकीय लौह धातुओं का पता लगाना बहुत आसान है । इस प्रकार के मेटल डिटेक्टर से १ इंच तक लंबी कील का पता दो फुट तक की दूरी से और कार जैसी बड़ी वस्तु के मौजूद होने का पता ६० फुट तक की दूरी से लगाया जा सकता है ।

धरती पर मौजूद सारी चीजें धरती के चुंबकीय क्षेत्र के घेरे में आती हैं । बीच में कहीं धातु न आये तो इस क्षेत्र की प्रखरता और एकरूपता बराबर बनी रहती है, अर्थात् वह एक ही दिशा में रहता है । धातु की वस्तु बीच में आयी तो पृथ्वी का क्षेत्र विकृत हो जाएगा क्योंकि स्पंदन रेखाएं न्यूनतम अवरोध के रास्ते की ओर झुकेंगी और वस्तु के आसपास सघन हो जाएंगी । पृथ्वी के क्षेत्र में इस विकृति का पता लगाने के लिए मैग्नेटोमीटर पद्धति इस्तेमाल की जाती है । इससे दो बिंदुओं पर चुंबकीय क्षेत्र की शक्ति का पता लग जाता है । इसकी संवेदनशीलता इतनी है कि क्षेत्र में आनेवाला अंतर अगर पृथ्वी के क्षेत्र का एक लाखवां भाग भी है, तो भी उसका सहज ही अंकन हो जाता है । व्यवहार में इस्तेमाल होनेवाले मेटल डिटेक्टर दो मैग्नोमीटर वाले खोजी किस्म के हैं । इन्हें एक नली में एक ही धुरी पर सावधानी से एक-दूसरे से करीब १२ इंच की दूरी पर लगाया जाता है । नली अपने वजन की वजह से लटकी रहती है और पृथ्वी के क्षेत्र के लंब रूप हिस्सों को नाप लेती है । चूंकि इसके गुण उस धरती के गुण से भिन्न होते हैं जिस पर यह लटकती है, इस प्रकार के खोजी यूनिट अत्यधिक शक्तिशाली होते हैं । इनसे गैर-चुंबकीय—सिक्कों जैसी धातु की अन्य कई वस्तुओं का भी पता लगाया जा सकता है ।

प्रस्तुति : शारदा पाठक

● ● ●

टिकाऊ और मिट्टी में मिलने के बाद भी नष्ट न होनेवाला प्लास्टिक पर्यावरणविदों के लिए वर्षों से चिंता का विषय बना हुआ है । किंतु अमरीका में कार्यरत एक भारतीय वैज्ञानिक ने प्लास्टिक को नष्ट करनेवाली सामग्री का आविष्कार किया है । न्यूयार्क से प्रकाशित 'इंडिया एब्राड' साप्ताहिक में उक्त बात प्रकाशित की गयी है, जिसके अनुसार भारतीय वैज्ञानिक श्री रामानिनारायण ने दावा किया है कि १५ से ४० प्रतिशत न्यूट्रल स्टार्च को प्लास्टिक के साथ मिलाकर उन्होंने इस तकनीक को तैयार किया है । (सी.ई.ई. एनएफएस)

वाल्टर हार्टराइट का कथन



अपनी मां और बहन से विदा लेकर मैं लंदन के लिए रवाना हुआ जहां से मुझे कंवरलैंड जाना था, अपनी नयी नौकरी पर

शहर दूर नहीं था। मैं पैदल ही चल पड़ा। रात का समय था। चारों ओर निस्तब्धता और आकाश में पूरा चांद। वातावरण स्वयं ही रहस्यमय हो उठा। मैं कंवरलैंड की कल्पना में खो गया जहां मुझे मि. फेयरली के घर दो लड़कियों को चित्रकला सिखाने का काम मिला था। वह घर कैसा होगा, दोनों लड़कियां कैसी होंगी, इसी सोच में खोया मैं चल रहा था कि मेरे शरीर का रक्त क्षणभर के लिए जम गया। पीछे से अचानक परंतु हल्के से एक हाथ मेरे कंधे पर रख दिया गया था। मैं एकदम पलटा। सिर से पांव तक सफेद कपड़ों में लिपटी एक औरत दूसरे हाथ से इशारा करके पूछ रही थी, क्या यह रास्ता लंदन की ओर जाता है। उदासी की परत उसके पीले चेहरे पर साफ दिखायी देती थी। रात का एक बजा था। आधी रात के भी बाद इस उजाड़ स्थान पर यह अकेली औरत क्या कर रही थी।

मेरे "हां" कहने पर वह कुछ देर मेरे साथ चलती रही और अटपटी बातें करती रही,

आखिर उस कब्र में क्या रहस्य था

(विल्की कोलिंस के उपन्यास 'द वुमन इन व्हाइट' के कुछ भागों पर आधारित।)

जिनका मेरे लिए कोई अर्थ नहीं था । तभी लंदन की ओर जानेवाली एक घोड़ागाड़ी उधर से गुजरी । मैंने हाथ देकर उसे रोका और उस औरत को उसमें चढ़ा दिया । कुछ ही क्षण बीते होंगे कि एक सिपाही सड़क की एक ओर से आता नजर आया । दूसरी ओर से एक खुली बिना छत की गाड़ी आ रही थी, जिसमें दो पुरुष सवार थे । उन्होंने सिपाही से पूछा, "क्या तुमने किसी औरत को इधर से जाते हुए देखा है ।"

"कैसी औरत ?"

"सिर से पांव तक सफेद कपड़ों में लिपटी ।"

"नहीं ।"

"अगर वह दिखे तो उसे रोककर पकड़ लेना ।"

"क्यों उसने क्या किया है ।"

"वह हमारे पागलखाने से भागी है ।" गाड़ी आगे बढ़ गयी ।

मैं परेशान हो उठा । क्या अनजाने में मैंने एक पागल की भागने में सहायता कर दी ।

अगले दिन प्रातः ही मैंने कंबरलैंड के लिए प्रस्थान किया । शाम तक मि. फेयरली के घर पहुंचा । मुझे नौकरों ने मेरा कमरा दिखा दिया । बेहद थक चुका था । मार्ग में मिली उस रहस्यमय औरत और इस नये घर के वासियों के विषय में सोचते-सोचते शीघ्र ही सो गया ।

अगली सुबह नाश्ते की मेज पर मेरा स्वागत मारियन ने किया जो मि. फेयरली के स्वर्गवासी भाई की सौतेली बेटी थी, उसकी दूसरी पत्नी से । मैंने बातें-बातों में मारियन से उस रहस्यमय औरत के विषय में चर्चा की और बताया कि वह औरत इस घर तथा श्रीमती फेयरली के विषय में भी कुछ कह रही थी । मारियन से ज्ञात हुआ कि वास्तव में मेरी शिष्या एक ही होगी— लॉरा जो मारियन की सौतेली बहन थी । सौतेली होते हुए भी दोनों बहनों में प्रगाढ़ प्रेम था ।

लॉरा पर दृष्टि पड़ते ही उसके व्यक्तित्व के आकर्षण के आगे मैं हार गया तथा अपने आप को और उस घर में अपनी स्थिति दोनों को भूल गया । फिर भी लॉरा को लेकर कुछ था जो रह-रहकर मेरे मन को कचोट रहा था । मैं समझ नहीं पाया ऐसा क्या था ।

इस बीच मारियन ने उस रहस्यमयी औरत के साथ हुए मेरे अनुभव पर प्रकाश डालते लॉरा की मां के दो-तीन पत्र ढूंढ़ निकाले जो उसने अपने पति को लिखे थे । एक में लिखा था कि उसके स्कूल में कुछ दिन के लिए एक

अपने दुःख में कब्र के पास झुका, आंखें बंद किये मैं उसे याद कर रहा था कि कुछ आहट हुई । दृष्टि उठाकर देखा । दो औरतें कुछ दूरी पर खड़ी एकटक मुझे ही देख रही थीं । एक ने अपना चेहरा ढक रखा था और दूसरी-मारियन थी । मुझे देखकर आश्चर्यचकित मारियन के मुंह से एक शब्द भी नहीं निकला, न ही वह अपने स्थान से हिली । उसने अपने चेहरे से आवरण हटा दिया ।

सात-आठ वर्ष की बालिका ऐन कैथरिक आयी थी जिससे उसे बेहद मोह हो गया था, क्योंकि वह लड़की लॉरा से केवल एक वर्ष बड़ी थी और संयोग से उसका चेहरा लॉरा के चेहरे से बहुत मिलता था। श्रीमती फेयरली ने उसे लॉरा के पुराने सफेद फ्रॉक पहनने को दिये, जिन्हें देखकर वह लड़की कहने लगी कि अब वह जीवनभर केवल सफेद कपड़े ही पहनेगी।

पत्र के इस भाग तक पहुंचते ही मारियन और मुझे एक ही विचार आया। हो सकता है मुझे रास्ते में यही लड़की मिली हो। मैंने सोचा तो समझ में आया कि यदि दुर्भाग्य से कभी लॉरा बहुत बीमार हो जाए या दुःख और उदासी की परतें उसके मुख पर जम जाएं तो वह भी उसी लड़की -जैसी लगने लगे। लॉरा की उस लड़की से इतनी समानता ही थी, जिसे मैं समझ नहीं पा रहा था और जो मुझे रह-रहकर बेचैन कर रही थी।

दिन बीतने लगे। मेरा लॉरा के प्रति अनुराग भी बढ़ने लगा। एक दिन मारियन मुझे एक ओर ले जाकर कहने लगी,"तुम्हें यहां से शीघ्र ही चले जाना चाहिए वॉल्टर। मैं जानती हूं लॉरा को लेकर तुम्हारे मन में क्या भाव हैं। परंतु यह तुम दोनों के लिए ठीक नहीं। इसलिए नहीं कि तुम केवल एक ड्राइंग मास्टर हो, बल्कि इसलिए कि लॉरा की मंगनी वर्षों पहले ही हो चुकी है। मृत्यु से पहले उसके पिता ने यह वचन दिया था। लॉरा कभी भी अपने सुख के लिए अपने स्वर्गवासी पिता का वचन निभाने से पीछे नहीं हटेगी।"

"क्या मैं उस व्यक्ति का नाम जान सकता हूं ?"

"हां" सर पर्सीवल ग्लाइड।"

मारियन का कथन

वॉल्टर के यहां से चले जाने के कुछ ही दिनों के बाद लॉरा और सर पर्सीवल ग्लाइड का विवाह हो गया। यह तो आरंभ से ही निश्चित था कि लॉरा के विवाह के उपरांत भी मैं उसके साथ रहूंगी। लॉरा की यही इच्छा थी। इसीलिए जब यह सूचना मिली कि वह और उसका पति कुछ मित्रों के साथ अपने यूरोप भ्रमण से लौट रहे हैं तो मैं सर पर्सीवल के निवास स्थान ब्लैक वाटर पार्क में उन लोगों के लौटने से पहले ही चली आयी। सर ग्लाइड के साथ उसका मित्र काउंट ऑव फॉस्कों तथा उसकी पत्नी भी थे। काउंटेस पूरी तरह अपने पति के अधीन थी और घंटों बिना कुछ भी बोले बैठी रह सकती थी। काउंट शेरनी को भी पालतू बना सकता था।

एक शाम मैं सीढ़ियों पर थी कि मैंने नीचे हाल में सर ग्लाइड को अपने वकील से बात करते सुन लिया। वकील कह रहा था, "एक ही रास्ता है, सर ग्लाइड। बेडी ग्लाइड को एक गवाह की उपस्थिति में इस दस्तावेज पर हस्ताक्षर करने होंगे। बिना इसके कुछ नहीं हो सकता। इस काम के लिए अभी एक सप्ताह का समय हमारे पास है।" जितना भी सुना मुझे अच्छा नहीं लगा। मैं एकदम लॉरा के कमरे में चली गयी। और उससे अनुरोध किया कि वह किसी भी कागज को बिना पूरी तरह पढ़े उस समय हस्ताक्षर न करे, मुझे सर ग्लाइड के रंग बहुत अच्छे नहीं लग रहे थे। लॉरा यह सुनकर उदास तो हुई, परंतु उसे आश्चर्य नहीं हुआ। अवश्य ही वह अपने पति को मुझसे बेहतर

जानती थी । उस शाम सर ग्लाइड ने काउंट, काउंटेस तथा लॉरा तीनों को अपने अध्ययन कक्ष में बुलाया । लॉरा के हस्ताक्षर लेने की तैयारी थी । इसलिए मुझे जान-बूझकर बाहर रखा गया था ।

लॉरा पहले ही सचेत हो चुकी थी । उसने कागजात पढ़े बिना हस्ताक्षर करने से इनकार कर दिया । सर ग्लाइड के क्रोध की सीमा नहीं रही । परंतु उससे पहले की वह अपनी पत्नी से कोई दुर्व्यवहार करता काउंट ने उसे समझा-बुझाकर शांत कर दिया । कुछ दिन के लिए हस्ताक्षरवाली बात टल गयी । लॉरा और मेरे सामने स्थिति स्पष्ट थी । लॉरा का धन व संपत्ति हथियाने के लिए ही यह कागजात तैयार किये गये थे और उन पर उसके हस्ताक्षर चाहिए थे । मैंने उसी शाम दो पत्र लिखे, एक मि. फेयरली के नाम और दूसरा फेयरली परिवार के वकील के नाम, ताकि हमें इस विषय में उचित सहायता और परामर्श प्राप्त हो सकें । डाक एक नौकर थैले में भरकर डाकघर ले जाता था । यह दोनों पत्र काउंट फॉस्कों द्वारा गायब कर दिये गये । यह बाद में पता लगा ।

उस शाम मैंने सर ग्लाइड और काउंट पर नजर रखी । रात को जब वह अध्ययन कक्ष के बरामदे में खुलनेवाली खिड़की के पास बैठे बातें कर रहे थे, तो मैं ठीक खिड़की के ऊपर छत पर छुपी बैठी उनकी बातें सुन रही थी । काउंट पूछ रहा था ।

"इस समय तुम्हें अपनी पत्नी की धन-संपत्ति का कितना भाग मिला है ?"

"कुछ भी नहीं ।"

"और उसकी मृत्यु के बाद ?"



"बीस हजार पाउंड, यदि वह अपने पीछे कोई संतान न छोड़े ।"

"नकद ?"

"नकद ! बिना शर्त के ।"

यहीं सर ग्लाइड ने एक और चिंता अपने मित्र पर व्यक्त की, "मेरे ऊपर एक बहुत बड़ा संकट है । ऐन कैथरिक जिसे मैंने वर्षों पागलखाने में रखा, वहां से भागने में सफल हो गयी है । बहुत ढूंढ़ चुका हूं । वह कहीं नहीं मिली । उसे मेरे एक रहस्य की जानकारी है, एक ऐसा रहस्य जिसके खुलते ही मैं पूरी तरह तबाह हो जाऊंगा ।"

"मैं ढूंढूंगा उसे तुम्हारे लिए । देखने में कैसी लगती है ?"

"बस यह समझ लो कि यदि मेरी पत्नी बहुत अस्वस्थ हो जाए ।" शारीरिक या मानसिक रूप से तो वैसी लगने लगे ।

फॉस्कों इस प्रकार हंसा जैसे कोई नयी योजना उसके मस्तिष्क में आयी हो । "ऐन कैथरिक को अब कैसे भी हो, मैं ढूंढ़ निकालूंगा । साथ ही तुम्हें अपना ऋण चुकाने के लिए लेडी ग्लाइड का धन भी मिल जाएगा ।"

वार्तालाप बंद होते ही मैंने अनुभव किया कि वर्षा हो रही थी और मैं काफी भीग चुकी थी ।

[मारियन ने अपने कमरे में वापस जाकर अपनी डायरी में सारा वृत्तांत लिखना आरंभ किया, परंतु लिख नहीं सकी । तेज ज्वर के कारण वह अपनी चेतना खो बैठी । डायरी काउंट के हाथ लग गयी । उधर लॉरा अपनी व्यथा तथा मारियन की बीमारी के कारण स्वयं भी दुर्बल तथा अस्वस्थ होती चली गयी । सर ग्लाइड ने सब नौकरों को निकाल दिया--- यह कहकर कि लॉरा तथा मारियन कुछ दिन कंबरलैंड, अपने पुराने घर में रहेंगी ताकि स्थान परिवर्तन से उनका स्वास्थ्य ठीक हो सके । ब्लैकवाटर पार्क कुछ दिन के लिए बंद कर दिया जाएगा । केवल एक नौकरानी और एक नर्स रह गयी रोगियों की देखभाल करने के लिए ।

एक दिन लॉरा मारियन के कमरे की ओर जा रही थी कि उसके पति ने उसे रोका और बताया कि मारियन सुबह ही काउंटेस के साथ लंदन चली गयी थी, ताकि वहां से कंबरलैंड जा सके । लॉरा बेहद घबराहट और अविश्वास से भर उठी । यह नहीं हो सकता था । कभी नहीं हुआ था कि मारियन एक पल के लिए भी, बिना उसे बताए, उसे छोड़कर चली जाए । पर ग्लाइड ने उसे वचन दिया कि अगले दिन ही उसे भी लंदन भेज दिया जाएगा जहां रातभर विश्राम करके वह अपने घर कंबरलैंड जा सकेगी । लेकिन उसके साथ छल किया गया था । मारियन कहीं नहीं गयी थी । निस्सहाय लॉरा को अकेले लंदन भेज दिया गया, एक भयंकर षडयंत्र का सामना करने के लिए ।

लंदन तक पहुंचते-पहुंचते लॉरा की दशा अत्यधिक घबराहट के कारण इतनी बिगड़ गयी कि दूसरे दिन लंदन में काउंट के घर पर ही दिल के रोग के कारण उसका देहांत हो गया ।]

वॉल्टर हार्टराइट के शब्दों में

लॉरा संसार में नहीं रही, यह समाचार मिलते ही मैं एक बार फिर कंबरलैंड की ओर चल पड़ा, जहां पहले पहल लॉरा से भेंट हुई थी । कारण उसे भी अपनी मां की कब्र के पास ही दफनाया गया था ।

अपने दुःख में कब्र के पास झुका, आंखें बंद किये मैं उसे याद कर रहा था कि कुछ आहट हुई । दृष्टि उठा कर देखा । दो औरतें कुछ दूरी पर खड़ी एकटक मुझे ही देख रही थीं । एक ने अपना चेहरा ढक रखा था और दूसरी मारियन थी । मुझे देखकर आश्चर्यचकित मारियन के मुंह से एक शब्द भी नहीं निकला, न ही वह अपने स्थान से हिली । वह दूसरी औरत चलते-चलते कब्र के समीप आकर खड़ी हो गयी । हम दोनों आमने-सामने थे । उसने अपने चेहरे से आवरण हटा दिया । कब्र के पत्थर पर लिखा था,

'लॉरा, लेडी ग्लाइड की स्मृति में'

लॉरा अपने चेहरे से आवरण हटाये, अपनी ही कब्र के पास खड़ी थी ।

लंदन

मैं दोनों को लेकर लंदन आ गया । लॉरा की देखभाल का उत्तरदायित्व अब मुझ पर ही था । मारियन से जो विवरण प्राप्त हुए वह इस प्रकार हैं, 'लॉरा के ब्लैकवाटर पार्क से चले जाने की सूचना मारियन को नौकरानी ने दी । कुछ ही दिन पश्चात् लंदन में उसकी मृत्यु का समाचार भी मारियन को नौकरानी से ही मिला । दुःख में डूबी वह कंबरलैंड लौट आयी । वहां मि. फेयरली के नाम काउंट ऑव फॉस्को के पत्र से

उसे एक नयी सूचना मिली । ऐन कैथरिक मिल गयी थी और वापस पागलखाने भिजवा दी गयी थी । काउंट ने यह भी लिखा कि ऐन का पागलपन पहले से बढ़ गया था और अब वह अपने आप को लेडी ग्लाइड कहने लग गयी थी । मारियन के मन में एक विचार कौंधा । उसने लॉरा के चाचा मि. फेयरली से अपनी शंका प्रकट करके सहायता मांगी । कुछ नहीं बना । वह ऐन को देखने पागलखाने गयी । उसे देखते ही तथाकथित पागल ऐन उसकी ओर भागी और उससे लिपट गयी । निश्चित हो गया कि वह लॉरा थी, ऐन नहीं । इसका अर्थ यह हुआ कि यह ऐन थी । मारियन ने नर्स को धन का लोभ देकर किसी प्रकार से लॉरा को पागलखाने से निकाल लिया । लॉरा ने बताया कि लंदन में उसे किसी अज्ञात स्थान में रखा गया था । पानी में बेहोशी की दवा मिलाकर उसे चेतना शून्य कर दिया गया था । जब उसकी चेतना लौटी तो उसने अपने आप को पागलखाने में पाया जहां उसे ऐन कैथरिक के नाम से पुकारा जा रहा था ।

निस्संदेह इस षड्यंत्र के पीछे सर ग्लाइड की बिगड़ी हुई आर्थिक स्थिति तथा वह रहस्य था जो ऐन कैथरिक को ज्ञात था । इस सोचे-समझे षड्यंत्र के सहारे वह उन दोनों से उबर गया था । मैंने दृढ़ निश्चय कर लिया कि सर ग्लाइड के उस रहस्य का पता लगाकर उसे डरा-धमका कर लॉरा के विषय में सही बयान देने पर उसे विवश कर दूंगा । ऐन की मां जीवित थी । अवश्य ही वह इस रहस्य के विषय में जानती होगी । उसकी मां का पता लगाने में कठिनाई अवश्य हुई, फिर भी कुछ तथ्य अवश्य हाथ लगे । उसके विवाह को अभी कुछ दिन हुए थे कि सर ग्लाइड और उसको लेकर गांव में बहुत बदनामी हुई क्योंकि दोनों चर्च के पास छुप कर बात करते पाये गये । परिणामस्वरूप उसका पति तो इस अपयश को झेल नहीं पाया और गांव छोड़कर सदा के लिए भाग गया । श्रीमती कैथरिक आजीवन वहीं रही । पति से उसने कभी कोई आर्थिक सहायता नहीं ली । पर आर्थिक सहायता उसे मिल अवश्य रही थी । सर ग्लाइड से

मैंने श्रीमती कैथरिक से सीधा प्रश्न किया कि क्या ऐन सर ग्लाइड की बेटी थी । उसने इनकार कर दिया । मेरे यह कहने पर कि वह शायद सर ग्लाइड के सामाजिक स्तर और प्रतिष्ठा के कारण डर रही थी, उसने अत्यंत घृणा से कहा, "हां । क्यों नहीं । ऊंचा स्तर । ऊंचा खानदान ।" जाने मुझे क्यों लगा कि सर ग्लाइड का रहस्य इन्हीं शब्दों में कहीं छुपा था । ऐसा आभास हुआ जैसे सर ग्लाइड का इस औरत से वह संबंध नहीं था जो साधारणतया लोग समझते थे । तो क्या कहीं ऐसा तो नहीं था कि वह बाद में ऐन कैथरिक से विवाह कर बैठा हो या उसके पिता सर फेलिक्स ग्लाइड के विवाह में ही कुछ अवांछित रहा हो । मैंने निश्चय कर लिया कि पास के चर्च में जाकर शादी का रजिस्टर देखूंगा । चर्च का क्लर्क भला व्यक्ति था । उसने रजिस्टर मुझे थमा दिया । सर पर्सीवल ग्लाइड की आयु का अनुमान लगाकर रजिस्टर के पृष्ठ पीछे को पलटने आरंभ किये । एक पृष्ठ के बिलकुल नीचे, बहुत थोड़े से स्थान में सर फैलिक्स ग्लाइड के विवाह की तिथि दी हुई थी— सितंबर १८०३ को सर फैलिक्स का

विवाह जेन नाम की एक औरत से संपन्न हुआ । क्लर्क ने बातों बातों में यह भी बताया कि टाउन हॉल में इसी रजिस्टर की एक और कॉपी रहती थी जो कि स्वयं सालिसिटर रखा करता था क्योंकि वह सदा यही अनुभव करता था कि इतना महत्त्वपूर्ण रजिस्टर चर्च में पूर्णतया सुरक्षित नहीं है । मैं टाउन हॉल गया । वहां दूसरा रजिस्टर निकलवा कर देखा— सर फैलिप्स ग्लाइड के विवाह का कोई लिखित प्रमाण इस रजिस्टर में नहीं था । इसका सीधा, सरल अर्थ यही निकलता था कि पर्सीवल के माता-पिता, पति-पत्नी थे ही नहीं और पर्सीवल उनकी अवैध संतान था । वह जीवनभर उस धन और संपत्ति पर आधिपत्य जमाकर बैठा रहा जिस पर उसका कोई अधिकार नहीं था । इससे भी भयंकर अपराध उसने किया था चर्च के रजिस्टर में अपने पिता के विवाह की काल्पनिक तारीख दर्ज करके । जालसाजी । श्रीमती केथरिक से उसका संबंध भी स्पष्ट हो गया । वह उस समय चर्च के क्लर्क की पत्नी थी और अवश्य ही इस अपराध में शामिल थी । चर्च की चाबी उसी ने चुराकर पर्सीवल को दी होगी । जैसा कि मुझे बाद में ज्ञात हुआ कि एक दिन श्रीमती केथरिक ने पर्सीवल से क्रोध में कह दिया कि वह सब के सामने उसका भेद खोल देगी । उस समय ऐन भी कमरे में उपस्थित थी । मानसिक स्तर पर सदा से अस्थिर और कमजोर ऐन ने यही वाक्य पर्सीवल के सामने दोहरा दिया, जिसके कारण पर्सीवल ने अपने धन के बल पर उसे एक पागलखाने में बंद करवा दिया । अपनी ही अपराध-भावना के कारण पर्सीवल ने कभी यह जानने का यत्न नहीं किया कि ऐन उसके विषय में क्या और कितना जानती थी । वास्तव में ऐन को किसी रहस्य की जानकारी थी ही नहीं ।

गुत्थी सुलझते ही मैं वापस चर्च के क्लर्क के घर की ओर दौड़ा, ताकि इस संबंध में उसकी सहायता ले सकूं । मुझे देखते ही घबराया हुआ क्लर्क मुझसे ही पूछने लगा, "चर्च की चाबी कहां है ? क्या आप ले गये थे ?"

मैं अपने आश्चर्य में कुछ कह पाता इससे पहले ही एक लड़का दौड़ता हुआ आया और क्लर्क से बोला, "चर्च में अवश्य कोई है । मैंने किसी की आहट तथा माचिस जलने की आवाज सुनी है ।" हम लोग चर्च की ओर भागे । अंदर आग लग चुकी थी और कोई पागलों की तरह दरवाजा खोलने की चेष्टा कर रहा था, परंतु दरवाजा जाम हो चुका था । तब तक आसपास से बहुत से लोग वहां जमा हो चुके थे । दरवाजा तोड़ा गया । सामने जीवनभर अपने आपको सर ग्लाइड कहने वाले पर्सीवल का भयानक रूप से जला हुआ शरीर पड़ा था । मैं समझ गया वह चर्च में अपनी जालसाजी का प्रमाण, रजिस्टर का वह पन्ना मिटाने आया होगा, ताकि किसी भी अभियोग में उसका यह गंभीर अपराध सिद्ध न हो सके, परंतु न्याय उसे यहीं मिल गया ।

बहुत बाद में यह भी भेद खुला कि ऐन कैथरिक वास्तव में लॉरा के स्वर्गवासी पिता की अवैध संतान थी । और दोनों लड़कियों के चेहरे अपने पिता से मिलते थे, उनमें इतनी अधिक समानता थी जिसका षड्यंत्रकारियों ने भरपूर लाभ उठाया ।

प्रस्तुति : **पैमिला मानसी**

मुगल राजवंश के शासकों ने तीन सौ सोलह वर्षों तक इस देश पर शासन किया। इनमें एक सौ छियासठ वर्ष तक उन्होंने प्रत्यक्ष रूप से और डेढ़ सौ वर्षों तक नाम मात्र का शासन किया। फिर भी सन १८५७ तक ईस्ट इंडिया कंपनी उनकी एजेंट थी और लगभग सभी रियासतों के सिक्के मुगल बादशाह के नाम पर ढाले जाते थे। मुगलिया शासन की इस लंबी अवधि के दौरान अनेक षड्यंत्रों और कुचक्रों का ताना-बाना बुना गया और अनेक के लिए उनके निकट संबंधी, बंधु-बांधव, मित्र, सहयोगी और उच्च अधिकारी षड्यंत्रों का सहारा लेते थे। षड्यंत्र सफल होने पर वे स्वयं अथवा उनके समर्थक राज-पद प्राप्त करते थे और विफल होने पर प्राण देकर अपनी विफलता की कीमत चुकाते थे।

मुगलों ने सन १५२६ से लेकर सन १८५७ तक (सन १५४० से सन १५५५ तक अफगान शासन की अवधि को छोड़कर) इस मुल्क पर हुकूमत की। इस प्रकार लगभग तीन सौ

षड्यंत्रों और हत्याओं पर टिकी मुगलिया सल्तनत

● नवीन पन्त

निर्दोष व्यक्तियों की हत्या की गयी क्योंकि वे तत्कालीन मुगल सम्राट के लिए खतरा सिद्ध हो सकते थे।

सत्ता प्राप्ति के लिए षड्यंत्र और विद्रोह सदैव से मानव स्वभाव का अभिन्न अंग रहे हैं। वास्तव में ये दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। सत्ता प्राप्ति के लिए प्रारंभिक प्रयत्न रात के अंधेरे में, निपट एकांत में षड्यंत्र के रूप में शुरू होते हैं। बल और समर्थन प्राप्त करने के बाद षड्यंत्र विद्रोह का रूप ले लेते हैं।

प्राण देकर कीमत चुकाते

प्राचीन काल में राजाओं को सत्ता से हटाने सोलह वर्षों तक मुगल इस देश के मालिक रहे। षड्यंत्रों, निकट संबंधियों की हत्या करने, बगावतों की संख्या और उन्हें अमानुषिक और निर्मम तरीके से रोकने के जो कीर्तिमान मुगलों ने स्थापित किये, उस तक विश्व का कोई अन्य राजवंश नहीं पहुंचा है।

मुगल इतिहास की एक अन्य विशेषता हमारा ध्यान बरबस अपनी ओर आकृष्ट करती है। सन १५२६ से सन १७०७ तक (पंद्रह वर्षों के अफगान शासन को छोड़कर) एक सौ छियासठ वर्षों के दौरान, जब मुगलों का सितारा बुलंदी पर था, छह मुगल शासकों—बाबर,

हुमायूं, अकबर, जहांगीर, शाहजहां और औरंगजेब ने इस देश पर शासन किया। लेकिन सन १७०७ से सन १८५७ के १५० वर्षों के दौरान १७ मुगल शाकसक गद्दीनशीन हुए। उन्होंने इस देश पर शासन किया, यह कहना तो वास्तविकता से प्ररे होगा। इस दौरान भारत पर मुगलों ने नहीं, उनकी छाया ने शासन किया।

रक्त से स्नान के बाद सिंहासन

मुगल वंश के महान सम्राटों की

मुगल सम्राटों ने गद्दी प्राप्त करने के लिए दया, ममता, स्नेह और प्यार जैसे मानवीय गुणों को तिलांजलि दे दी और निर्ममतापूर्वक अपने घनिष्ठ संबंधियों का गला कटवाया। भातृघातक संघर्ष चगताई कबीले और तैमूर के वंशजों की आदत और परंपरा बन गया था। हुमायूं से लेकर शाह आलम द्वितीय तक मुगल शासन की यह परंपरा रही कि सम्राट को गद्दी से बेदखल करने के षड्यंत्रों का सूत्रपात राजमहल और राजपरिवार के सदस्यों द्वारा किया गया।

हुमायूं से लेकर मुगलवंश के अंतिम शहंशाह' तक को तरह-तरह के षड्यंत्रों से जूझना पड़ा। इनमें से अधिकांश षड्यंत्रों की योजनाएं राजमहल में राज-परिवार के सदस्यों द्वारा ही बनायी गयीं।

बुद्धिमत्तापूर्ण नीतियों, सैनिक और प्रशासनिक योग्यता, भव्य इमारतों और राजनीतिक सूझ-बूझ के बारे में इतिहास की पुस्तकों में अनेक प्रशंसात्मक टिप्पणियां और उल्लेख मिलते हैं। लेकिन इन पुस्तकों में इस बात का सिलसिलेवार उल्लेख कम ही है कि सत्ता में बने रहने के लिए किस तरह बाप ने बेटे को अंधा बनाया, भाई ने भाई का गला काटा और किस तरह एक के बाद दूसरा मुगल बादशाह अपने भाइयों, भतीजों और नजदीकी रिश्तेदारों के रक्त में स्नान करने के बाद राज-सिंहासन तक पहुंचा।

इसके लिए उन्होंने हर तरह की चालें, कुचालें चलीं, मुगलिया सल्तनत के दुश्मनों को गले लगाया और ओछे से ओछे षड्यंत्र किये।

बाबर पानीपत की लड़ाई के बाद केवल चार वर्ष तक जीवित रहा इसलिए उसे विशेष कठिनाइयों का सामना नहीं करना पड़ा। लेकिन उसके पुत्र हुमायूं के लिए उसके भाइयों कामरान, अस्करी और हिंदाल और जीजा मोहम्मद जमां मिर्जा, मामा मुहम्मद मेंहदी ख्वाजा और मिर्जा मुहम्मद सुलतान ने पग-पग पर दिक्कतें पैदा कीं।

हुमायूं के पुत्र अकबर ने अपने शिक्षक और

गुरू शक्तिशाली बैरामखां के हाथों से शक्ति छीनने के लिए अपनी मां हमीदा बानू बेगम, अपनी धाय मां माहम अंगा, उसके पुत्र आदम खां और दिल्ली के सूबेदार सिहाबुद्दीन के साथ षड्यंत्र किया । बैराम खां को अपमानजनक परिस्थितियों में देश निकाला देने के बाद उसने, कुछ समय बाद आदम खां को किले की दीवार के नीचे फिंकवाकर मरवा दिया । आदम खां की मृत्यु से उसकी मां माहम अंगा इतनी दुखी हुई कि एक महीने के भीतर वह स्वयं भी परलोक जा सिधारी ।

बहादुर शाह के दो शाहजादों की सन १८५७ में हडसन ने खूनी दरवाजे के समीप हत्या कर दी थी । आज अति शक्तिशाली मुगलिया सल्तनत का कोई प्रत्यक्ष वंशज नहीं है । क्या प्रतिशोध की देवी ने अपने सगे-संबंधियों की हत्या करने के लिए मुगलिया वंश को यह दंड दिया ?

अपनी कम उम्र के बावजूद जिस प्रकार अकबर को जल्दी से जल्दी एकछत्र सम्राट बनने की इच्छा थी, उसी तरह सन १६०१ में उनके पुत्र सलीम ने सत्ता पर कब्जा करने के लिए अपने पिता के विरुद्ध षड्यंत्र किया । उसने इलाहाबाद जाकर स्वयं को बादशाह घोषित किया और अपने नाम से सोने-चांदी के सिक्के ढलवाये । सलीम ने अपने पिता को गद्दी से उतारने के लिए पुर्तगालियों से सैनिक सहायता मांगी और अपने पिता के घनिष्ठ मित्र और सलाहकार अब्दुल फजल की वीरसिंह बुंदेला से हत्या करा दी ।

इस बीच, अकबर के कुछ सरदारों ने जिनमें राजा मान सिंह और खान-ए-आजम अजीज कोका प्रमुख थे सलीम के पुत्र खुसरो को बादशाह बनाने का षड्यंत्र किया । जब सलीम को इसका पता लगा तो उसने अपने पिता से समझौता कर लिया ।

लड़के भी उसी रास्ते

सलीम २४ अक्तूबर १६०५ को ३६ वर्ष की उम्र में नूरुद्दीन मुहम्मद जहांगीर बादशाह की पदवी के साथ दिल्ली की गद्दी पर बैठा । इसके केवल पांच महीने बाद, खुसरो ने अपने बाप के खिलाफ बगावत का झंडा खड़ा किया । भेरोंवाल की लड़ाई के बाद काबुल को भागते हुए खुसरो पकड़ा गया और हथकड़ी और बेड़ियों में दरबार में पेश किया गया । वह मैले-कुचैले वस्त्र पहने दरबार में लाया गया । वह फूट-फूट कर रो रहा था और कांप रहा था । उसकी इस अवस्था को देख सभी का दिल पसीज गया, लेकिन जहांगीर पर इसका कोई असर नहीं हुआ । उसने खुसरो को बुरी तरह डांटा और फिर कैद रखने का आदेश दिया । जहांगीर भूल गया कि चार वर्ष पहले उसने भी अपने पिता के खिलाफ बगावत की थी और उसका लड़का उसी के दिखाये रास्ते पर चल रहा था ।

अगस्त सन १६०७ में जब जहांगीर काबुल से लाहौर लौट रहा था, खुसरो ने कुछ दरबारियों की सहायता से जहांगीर की हत्या का षड्यंत्र रचा । जहांगीर ने षड्यंत्र के चार नेताओं को

शूली पर लटका दिया, अनेक को लंबी कैद की सजा दी गयी, उनकी संपत्ति जब्त कर ली गयी और खुसरो की आंखें निकलवा दी गयीं । कुछ वर्ष बाद नूरजहां के सुझाव पर उसे आसफ खां की सुपुर्दगी में सौंप दिया गया । आसफ खां ने उसे खुर्रम के हवाले कर दिया । खुर्रम ने १६२२ में बुरहानपुर में उसकी हत्या करवा दी ।

खुर्रम ने सन १६२३ में अपने पिता जहांगीर के विरुद्ध विद्रोह का झंडा खड़ा किया । शाही फौजों ने विद्रोह को सख्ती से कुचल दिया ।

गया । शहरियार पकड़ा गया । उसकी आंखें फोड़ दी गयीं ।

खुर्रम ने फरवरी १६२८ में आगरा में मुहम्मद साहिब ए किरान द्वितीय शाहजहां बादशाह के नाम से तख्त संभाला । तख्त संभालते ही उसने चुन-चुन कर उन लोगों को मौत के घाट उतरवा दिया, जो गद्दी के दावेदार हो सकते थे । शाहजहां की इस कार्रवाई की तुलना केवल कुस्तुनतूनिया नरेशों द्वारा निजी संबंधियों के 'कत्लेआम' से की जा सकती है ।







अकबर, औरंगजेब, बहादुर शाह जफ़र

खुर्रम को समझौता करने के लिए रोहतास और असीरगढ़ के दो किले अपने पिता को सौंपे, और अपने दो बेटों दारा शिकोह और औरंगजेब को जमानत के रूप में शाही दरबार में भेजा ।

गद्दी के दावेदारों का सफाया

जहांगीर की मृत्यु (२८ अक्तूबर सन १६२७) के समय खुर्रम दक्षिण में था । अत्यधिक शराब पीने के कारण परवेज पहले ही खुदा को प्यारा हो गया था । खुसरो का जो एक गंभीर प्रतिद्वंद्वी हो सकता था उसकी पहले ही हत्या की जा चुकी थी । जहांगीर की मृत्यु होते ही खुर्रम और शहरियार में खूनी संघर्ष शुरू हो

शाहजहां को अपने जीवन काल में ही अपने इन कुकृत्यों का फल भोगना पड़ा । उसके पुत्र ने अपने बाप को गद्दी से हटाकर आगरे के किले में कैद करवा दिया ।

शाहजहां सन १६५७ में बीमार पड़ा । उसके बीमार होते ही उसके चारों बेटों दारा शिकोह, शुजा, औरंगजेब और मुराद में उत्तराधिकार का युद्ध शुरू हो गया । दिल्ली की गद्दी के सत्ता संघर्ष में औरंगजेब अपनी चालबाजी, धूर्तता, सैनिक कुशलता और धर्मांधता के कारण विजयी हुआ । अपने पिता को कैद करके, भाइयों और अनेक घनिष्ठ

संबंधियों की हत्या करके औरंगजेब ने ५ जून सन १६५९, को अपना राज्याभिषेक करवाया।

औरंगजेब की मृत्यु के बाद उसके तीन बेटों मुअज्जम, मोहम्मद आजम और कामबक्श के बीच सत्ता संघर्ष का यह खूनी नाटक फिर शुरू हुआ। आजमशाह, उसके दो बेटों और कामबक्श को मौत की नींद सुलाकर मुअज्जम बहादुरशाह प्रथम की उपाधि के साथ गद्दी पर बैठा। २७ फरवरी सन १७१२ को बहादुरशाह की मृत्यु के बाद उसके चार बेटों जहांदार शाह, अजिम उस शाह, जहांशाह और रफी उस शान के बीच उत्तराधिकार का युद्ध शुरू हुआ। जहांदार शाह विजयी हुआ और शेष तीन भाइयों, उनके समर्थकों और अधिकांश रिश्तेदारों को अपने जीवन की बलि देकर उसके राजतिलक का मार्ग प्रशस्त करना पड़ा। ग्यारह महीने बाद एक षड्यंत्र के अंतर्गत उसे गद्दी से हटा दिया गया और बाद में गला घोंटकर उसकी हत्या कर दी गयी।

जहांदार शाह की मौत के बाद तो जैसे मुगलिया सल्तनत की गद्दी प्राप्त करने के लिए षड्यंत्रों की बाढ़ आ गयी। इलाहाबाद बाढा के सैयद बंधु बहुत शक्तिशाली हो गये। सैयद बंधुओं में हुसैन अली पटना का नायब सूबेदार और अब्दुल्ला इलाहाबाद का सूबेदार था। जहांदार शाह की मृत्यु पर फरुखसीयर को बादशाह बनाने में सैयद बंधुओं की भूमिका प्रमुख थी। इसके बाद अब्दुल्ला खां को देश का प्रधानमंत्री और हुसैन अली सिपहसालार बना दिया गया। इससे समूची शक्ति इन दो भाइयों के हाथों में केंद्रित हो गयी। सैयद बंधु मुगल दरबार में हिंदुस्तानी पार्टी के नेता थे। ईरानी और तूरानी पार्टी के अमीरों को उनका इतना शक्तिशाली होना कतई पसंद न था।

बाहरी सहयोग से षड्यंत्र

फरुखसीयर और सैयद बंधुओं के बीच अधिकारों के इस्तेमाल और महत्वाकांक्षा को लेकर टकराव हो गया। फरुखसीयर ने सैयद बंधुओं को हटाने के लिए तूरानी और ईरानी पार्टियों से सहयोग किया। अपने जीवन की आशंका में सैयद बंधुओं ने पहले फरुखसीयर को गद्दी से हटाया, उसे अंधा किया और फिर उसकी अत्यंत घृणित तरीके से हत्या करा दी।

इसके बाद सैयद बंधुओं ने पहले रफी उद दराजात और फिर रफी उद्दौला को गद्दी पर बिठाया। उन दिनों सैयद बंधु इतने शक्तिशाली हो गये थे कि उनके बारे में यह कहावत प्रसिद्ध थी कि जिस व्यक्ति के सिर पर ये दोनों भाई अपना जूता रख देंगे वह दिल्ली का बादशाह हो जाएगा।

सैयद बंधुओं ने सन १७१९ में बहादुरशाह के पौत्र और जहां शाह के पुत्र अठारह वर्षीय रोशन अख्तर को मुहम्मद शाह के नाम से दिल्ली के तख्त पर बिठाया। सैयद बंधु 'एक शाही कठपुतली के जरिए दिल्ली का शासन चलाना चाहते थे।' लेकिन मुहम्मद शाह कठपुतली न था। उसने तूरानी पार्टी के नेता निजाम उल मुल्क मीर कमरुद्दीन चिन किलिच से मिलकर मालवा जाते हुए हुसैन अली की हत्या करा दी। अब्दुल्ला ने अपनी स्थिति दृढ़ करने के लिए मुहम्मद इब्राहीम को तख्त पर बिठाने का प्रयत्न किया लेकिन निजाम उल मुल्क के भाई मुहम्मद अमीन खां ने उसे हटा दिया। अब्दुल्ला को कैद कर लिया गया और

सन १७२२ में जहर देकर मार दिया गया।

मुहम्मद शाह के बाद उसका पुत्र अहमदशाह गद्दी पर बैठा। उसके राज्यकाल में निजाम उल मुल्क के पौत्र वजीर इमादुल मुल्क ने सैयद बंधुओं की तरह 'राजा बनाने और उतारने' की नीति शुरू की। अहमद शाह को सन १७५४ में गद्दी से उतारकर जहांदार शाह के पुत्र अजीज-उद-दौला को, जो कैद में था, आलमगीर द्वितीय के नाम से गद्दी पर बिठाया। २९ नवंबर को वजीर के आदेश पर उसकी हत्या कर दी गयी। उसके बाद अली गौहर शाह आलम द्वितीय के नाम से गद्दी पर बैठा। वह अपने वजीर से इतना डरता था कि उसका जीवन एक जगह से दूसरी जगह भागने में ही बीता। सन १७८८ में उसकी आंखें निकाल दी गयीं। वह कुछ समय तक मराठों और फिर अंगरेजों के संरक्षण में रहा। उसका पुत्र अकबर द्वितीय सन १८३७ तक दिल्ली में शाही खिताब के साथ शासन करता रहा। लेकिन उसकी सल्तनत दिल्ली के लाल किले के भीतर सिमट कर रह गयी। बहादुरशाह मुगल सल्तनत का आखिरी बादशाह था। सन १८५७ के विफल सिपाही विद्रोह के बाद अंगरेजों ने उसे रंगून निर्वासित कर दिया जहां सन १८६२ में उसकी मौत हुई।

बहादुरशाह के दो शहजादों की सन १८५७ में हडसन ने खूनी दरवाजे के समीप हत्या कर दी थी। आज अति शक्तिशाली मुगलिया सल्तनत का कोई प्रत्यक्ष वंशज नहीं है। क्या प्रतिशोध की देवी ने अपने सगे-संबंधियों की हत्या करने के लिए मुगलिया वंश को यह दंड दिया? कहा गया है कि जो लोग तलवार का सहारा लेते हैं, वे उसी से हलाक किये जाते हैं।

—२२, मैत्री एपार्टमेंट्स
ए/३ पश्चिम विहार, नयी दिल्ली

सौर ऊर्जा से चलनेवाली घड़ी

पश्चिमी जरमनी की एक फर्म ने सौर ऊर्जा से चलने और सही समय बताने वाली एक घड़ी तैयार की है। इस घड़ी की विशेषता यह है कि यह कभी भी बंद नहीं होगी और घड़ी के बंद होने की संभावना केवल उसी समय हो सकती है, जब सूर्य लगातार अड़तालिस दिन अस्त रहे। किंतु ऐसा शायद ही कभी हो। फर्म के अनुसार इस घड़ी को सर्विसिंग की आवश्यकता भी नहीं है और न ही बार-बार समय मिलाने की। उक्त बात 'जरमन न्यूज' में कही गयी है।

जहां तक सही समय देने की बात है, फर्म का दावा है कि इस घड़ी से एक सेकेंड के दस लाखवें हिस्से के बराबर सही समय का पता लगाया जा सकता है। इसके उत्पादकों का दावा है कि यह घड़ी अगर बंद हुई तो १,५०,००० हजार वर्षों में। और फिर यह घड़ी मौसम के अनुसार स्वयं को व्यवस्थित करने में सक्षम है।

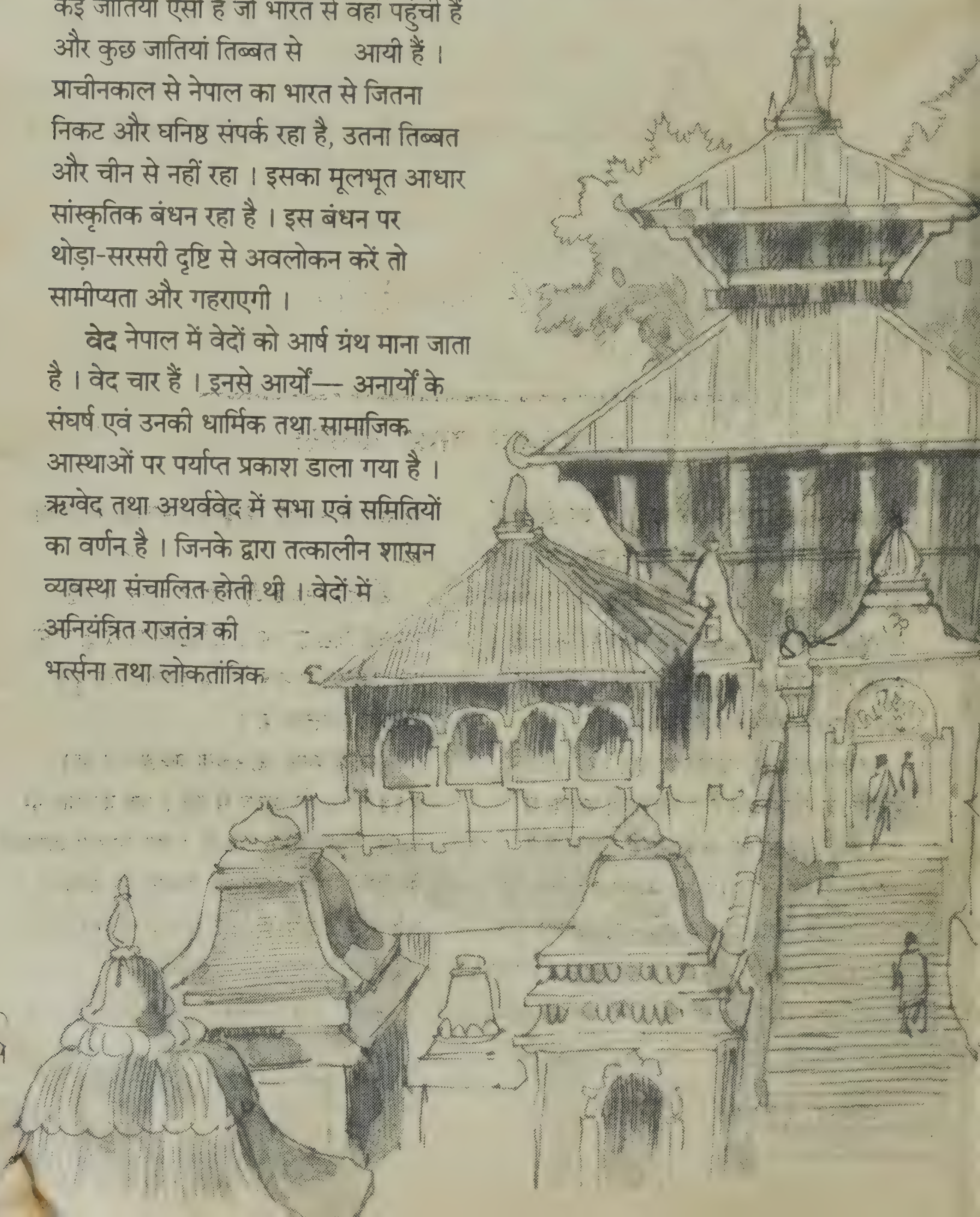
आधुनिक नेपाल का निर्माता राजा पृथ्वी नारायण शाह कहा करता था, "मेरा देश चार वर्णों और छत्तीस जातियों की फुलवारी है।"

तिब्बत और भारत के बीच बसे इस देश में कई जातियां ऐसी हैं जो भारत से वहां पहुंची हैं और कुछ जातियां तिब्बत से आयी हैं। प्राचीनकाल से नेपाल का भारत से जितना निकट और घनिष्ठ संपर्क रहा है, उतना तिब्बत और चीन से नहीं रहा। इसका मूलभूत आधार सांस्कृतिक बंधन रहा है। इस बंधन पर थोड़ा-सरसरी दृष्टि से अवलोकन करें तो सामीप्यता और गहराएगी।

वेद नेपाल में वेदों को आर्ष ग्रंथ माना जाता है। वेद चार हैं। इनसे आर्यों— अनार्यों के संघर्ष एवं उनकी धार्मिक तथा सामाजिक आस्थाओं पर पर्याप्त प्रकाश डाला गया है। ऋग्वेद तथा अथर्ववेद में सभा एवं समितियों का वर्णन है। जिनके द्वारा तत्कालीन शासन व्यवस्था संचालित होती थी। वेदों में अनियंत्रित राजतंत्र की भर्त्सना तथा लोकतांत्रिक शासन प्रणाली सर्वश्रेष्ठ रूप में मानी गयी है।

महाकाव्य

महाभारत वृहत् महाकाव्य है। इसे इतिहासकारों ने ऐतिहासिक ग्रंथ कहा है। वेदव्यास को इसका रचयिता माना गया है। महाभारत का





भारत और नेपाल के

भू-भाग अवश्य अलग हैं, पर आत्मा एक है। धार्मिक रीति-रिवाजों में कोई जुदा नहीं कर सकता। एक-दूसरे की जनता का आपसी भाईचारा दक्षिण एशिया के इस क्षेत्र की आर्थिक उन्नति में बल प्रदान कर सकता है।

भारत और नेपाल का सांस्कृतिक लगाव

● भगवती प्रसाद डोभाल

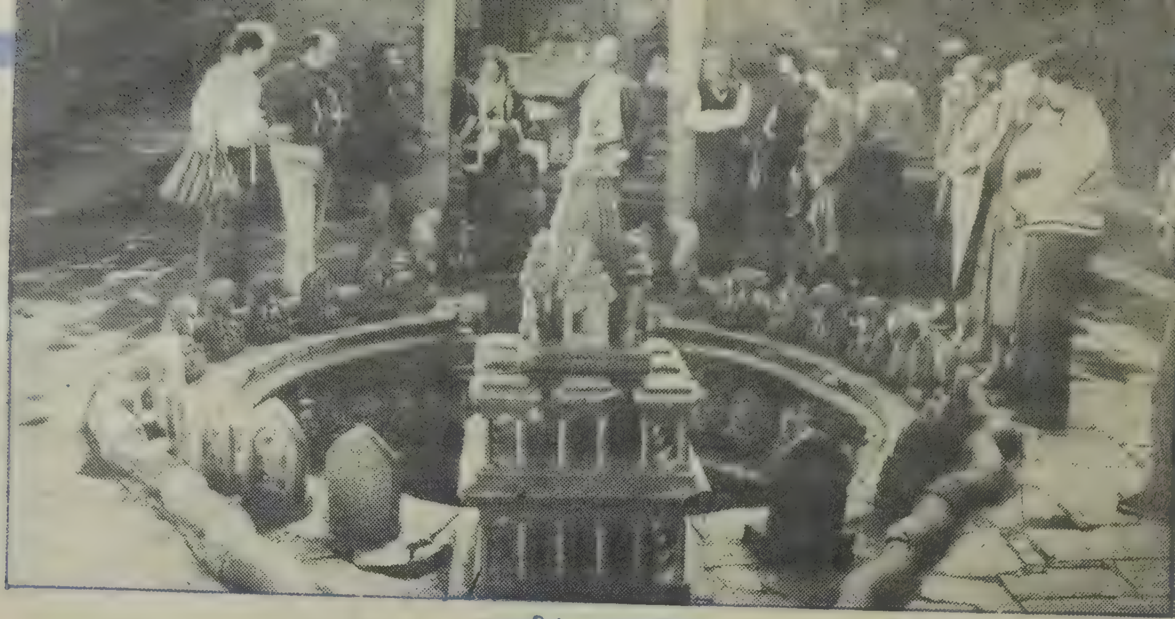
रचनात्मककाल लगभग चौदह सौ वर्ष ईसा पूर्व माना गया है। काशी प्रसाद श्रीवास्तव की पुस्तक नेपाल का इतिहास के अनुसार महाभारत के युद्ध में नेपाल का जितेष्टि राजा सम्मिलित हुआ था। इस महाकाव्य ने नेपाली जनजीवन एवं संस्कृति को पोषित किया है।

महाभारत की भांति रामायण भी नेपाल में सर्वाधिक लोकप्रिय है। महाराजा जनक व महारानी जानकी की जन्मस्थली भारत में हैं, लेकिन नेपाल के लोगों का विश्वास है कि वह जनकपुर में पैदा हुए। इनकी यशोगाथाएं लोक जीवन में रची-बसी हैं। तुलसीदास ने रामचरित मानस की रचना अवधी में की। इन्हीं से प्रेरणा लेकर नेपाली भाषा के कवि भानुभक्त ने सन १८४० में नेपाली भाषा में रामायण की रचना की।

बौद्ध वांङ्मय में नेपाली इतिहास की सामग्री विद्यमान है। त्रिपिटकों में बौद्ध संघों एवं तत्कालीन राजनीतिक दशाओं के पूर्ण विवरण उपलब्ध हैं।

राजतंरगिणी की रचना कल्हण ने सन् ११४८-५० के मध्य में की। यह कश्मीर पर पहला ऐतिहासिक ग्रंथ है। यह सातवीं शताब्दी के नेपाल की राजनीतिक स्थिति का बोध भी कराता है। सातवीं सदी से पूर्व भी कश्मीर व नेपाल राजवंशों में घनिष्ठ संबंध थे।

कौटिल्य के अर्थशास्त्र में नेपाल का स्पष्ट विवरण है।



प्राचीन राजप्रासाद

वाराहमिहिर ने छठी शताब्दी में बृद्संहिता की सरंचना की जिसमें शुक्र-चंद्र के विशेष संयोग होने से नेपाल की जनता का अहित होने की भविष्यवाणी की गयी थी। यह भविष्यवाणी कहां तक सच निकली इसकी खोज नेपाल के इतिहासकारों को करनी चाहिए। प्राचीन ज्योतिष ग्रंथ एवं भरत-मुनि के नाट्य शास्त्र में नेपाल का भी उल्लेख किया गया है।

नेपाल चारों ओर भूमि से घिरा हुआ एक छोटा-सा देश है। पूर्व से पश्चिम की ओर इसकी लंबाई ५०० मील के आसपास है। उत्तर से दक्षिण की ओर चौड़ाई कहीं केवल ८० मील और कहीं १२० मील है। भारत के उत्तरी-पूर्वी भाग से यह जुड़ा हुआ है। यह हिमालय क्षेत्र में है। इसमें अधिकांश पहाड़ और घाटियां हैं।

नेपाल में सबसे पुरानी जाति किरात लोगों की है। किरातों का उल्लेख महाभारत में तो है ही, वेदों में भी है। इस जाति के लोग खंपा, यक्ष और लिंबू उपजाति में बंट गये हैं।

तीर्थस्थल

नेपाल में मंदिर ही मंदिर हैं। आम धारणा है कि हर नेपाली का हृदय भगवान का उपासना मंदिर है। इसके अलावा मनुष्यों द्वारा बनाये मंदिर भी अधिक हैं।

नेपाल का सबसे महत्त्वपूर्ण मंदिर है— पशुपतिनाथ। यह बागमती नदी के तट पर काठमांडो नगर से हटकर बना है। शिवरात्रि पर यहां न केवल नेपाल से, अपितु भारत से भी हजारों तीर्थयात्री जाते हैं।

इस मंदिर के दर्शन तथा बागमती के स्नान से स्वर्ग जाने का इतना घनिष्ठ संबंध माना गया है कि नेपाली लोग मंदिर की सीढ़ियों पर बागमती के जल में पैर डाले हुए प्राण त्याग करना पसंद करते हैं। भारत में केदारनाथ व नेपाल में पशुपतिनाथ के संबंध में प्रचलित धारणा है कि शिव भैंसा का रूप धारण कर केदारनाथ में विचरण कर रहे थे। क्योंकि वह पांडवों से छुपना चाहते थे। पांडव उन्हें खोज रहे थे, जब तक वह शिव को पहचानते उससे पहले ही भैंसा कूच करने लगा, पांडवों के हाथ में पूंछ ही आयी वे उसे खींचने लगे भैंसा रुक गया, वे उसके पिछले हिस्से को ही रोक पाये। अगला हिस्सा पशुपतिनाथ में जाकर प्रकट

हुआ । आज भी उस मान्यता को केदारनाथ के मंदिर में पत्थर की काली शिला के रूप में देखा जाता है । सिर वाला हिस्सा पशुपतिनाथ में देखे जाने की मान्यता है । तीर्थयात्री अपनी यात्रा तब ही सफल मानते हैं, जब दोनों स्थानों की यात्रा कर लेता है ।

नेपाल में १०० व, ५ व तथा ३ व का प्रयोग क्रमशः पशुपतिनाथ के मंदिर, राजा व प्रधानमंत्री के लिए किया जाता है । इस तथ्य से इस बात की पुष्टि होती है कि नेपालियों का सर्वसत्तामान पशुपतिनाथ है । जो १०० व से संबोधित होता है ।

यह धारणा इस बात को पुष्ट करती है कि सांस्कृतिक और आत्मिक धरातल पर नेपाल पूरी तरह भारत से जुड़ा है ।

नेपाल में गुहयेश्वरी देवी के मंदिर का बहुत माहात्म्य है । इस मंदिर से भी भारत और नेपाल के बीच धार्मिक रिश्ते की एक कहानी जुड़ी हुई है—

कनखल में दक्ष प्रजापति ने एक बड़ा यज्ञ किया था । उसमें उसने अपने दामाद शिव को निमंत्रित नहीं किया । पर शिव की पत्नी सती फिर भी उस यज्ञ में सम्मिलित होने चली गयी । दक्ष ने सब देवताओं के लिए यज्ञभाग रखे, पर शिव का भाग नहीं रखा । इस बात को लेकर कहा-सुनी हुई, क्रोध में आकर सती ने आत्महत्या कर ली । इस पर शिव के गणों ने दक्ष का यज्ञ ध्वंस कर दिया और दक्ष को मार डाला । शिव प्रेमाकुल होकर सती के शव को कंधे पर उठाये पागलों की तरह फिरने लगे । तब विष्णु ने अपने चक्र से सती के टुकड़े-टुकड़े कर दिये । सती के देह का गुहय भाग नेपाल में जाकर गिरा । फिर वहां मुहयेश्वरी का मंदिर बनाया गया । यह मंदिर तांत्रिक उपासना का विशेष केंद्र है ।

काठमांडो में एक और मंदिर है स्वयंभूनाथ का । यह मंदिर ५०० फुट ऊंची पहाड़ी पर बना है । इस मंदिर में लगभग ४०० सीढ़ियां चढ़कर पहुंचना पड़ता है । स्वयंभूनाथ का चैत्य स्तूप स्थापत्यकला का सुंदर नमूना है । यहां पर बौद्ध तथा शैव उपासक समान रूप से उपासना करने आते हैं । मान्यता है कि काठमांडो घाटी पहले

काठमांडो में हर्षोल्लासभरा दृश्य



एक विशाल झील थी, तब ठीक इसी स्थान पर एक कमल खिला था, जिसमें से स्वयंभू भगवान की पंचरंगी किरणें निकल रही थीं। इस सूखी झील में एक ही पेड़ की लकड़ी से बना भवन था, जो भव्य था, उसी के आधार पर काठमांडो नाम पड़ा।

बौद्धों का संसारभर में सबसे बड़ा चैत्य बोधनाथ है, जो पशुपतिनाथ के मंदिर से एक मील उत्तर की ओर है। इसके अलावा काठमांडो में तुलजा भवानी का मंदिर है। यह मंदिर नगर के ठीक बीच में पुराने राजमहल के पास बना हुआ है। नेपाल-नरेश तथा राजपरिवार के लोग इस मंदिर में पूजा करते रहे हैं।

ललितपुर में महाबौद्ध मंदिर लगभग ५०० वर्ष पूर्व पंडित अभय राज ने बनवाया था। कला विशेषज्ञों के अनुसार इस मंदिर की कारीगरी सर्वोत्तम है।

नेपाल में 'कुमारी-मंदिर' अनूठे प्रकार का उपासना केंद्र है। यहां कन्या की पूजा की जाती है, तब तक उसको मंदिर में रखा जाता है जब तक की वह रज्वसला की अवस्था में न आ जाए। उसके बाद उसे छूट होती है कि वह कहीं भी रहे, लेकिन सामाजिक मान्यता कुछ ऐसी विचित्र है कि वह जीवनभर कुंवारा जीवन ही व्यतीत करती है। एक बार ऐसी ही कन्या से किसी ने विवाह किया था, विवाह के बाद उसकी मृत्यु हो गयी। तब से कोई भय के कारण उन कुमारियों से शादी नहीं करता। फिर उपेक्षित जीवन ही उनके पास बचता है।

त्यौहार

नेपाल का सबसे महत्त्वपूर्ण पर्व महाशिवरात्रि है। इस दिन पशुपतिनाथ में मेला लगता है। होली, दशहरा, दीवाली व रक्षा-बंधन— भारत की भांति यहां भी बड़े धूम-धाम से मनाये जाते हैं। सभी संप्रदाय के लोग एक-दूसरे का त्यौहार जोश-खरोश से मनाते हैं, विभिन्न मत-मतांतर होते हुए भी वे एक दूसरे की भावनाओं का आदर करते हैं।

वैशाख पूर्णिमा को बुद्ध जयंती सारे नेपाल में मनायी जाती है। नेपाल में विक्रमी संवत का व्यवहार होता है। वहां नया वर्ष प्रथम वैशाख से शुरू होता है। उस दिन सरकारी अवकाश रहता है।

नेपाल में गोरखा भी बसते हैं। गोरखा शब्द का अर्थ है— गौरक्षक। गोरखा नगर का नाम गुरु गोरखनाथ द्वारा बनाये मंदिर के नाम पर पड़ा। उस नगर के कारण वह भाग गोरखा प्रदेश और वहां के निवासी गोरखे कहलाये जाने लगे। गोरखा सैनिकों की शौर्य पताका विश्वभर में फहराती है। स्थल सेना में उनका विशिष्ट स्थान है।

भारत से समय-समय पर गये लोगों की संख्या लगभग वहां ५० प्रतिशत है।

हिमालय का सरताज एवरेस्ट नेपाल में ही स्थित है। इसे सागर माथा के नाम से पुकारते हैं।

इन सारी सांस्कृतिक सामीप्यता के अलावा भारत आर्थिक और राजनीतिक कठिनाइयों में नेपाल को सहयोग कर रहा है। अंतरराष्ट्रीय षड्यंत्रों में भले ही नेपाल आंख मूंद ले, पर भारत हमेशा सद्भावना व भाईचारे का हिमायती रहा है। और नेपाल को समृद्ध देखने का आकांक्षी है।

विधि विधान

फैसले में बदनीयति

मनसुख लाल, रामगढ़ : आज के भ्रष्टाचार के युग में यदि कोई जज अधिकारों का दुरुपयोग कर किसी पक्ष को अनावश्यक रूप से तंग करे तो क्या उसके विरुद्ध शिकायत हो सकती है और यदि हां तो किसको व कैसे ? चूंकि जज व कोर्ट के निर्णय के विरुद्ध कोई बोल नहीं सकता, इसलिए सब चुप रहते हैं, फिर भी हरेक के लिए नियमबद्ध प्रक्रिया होती है । यदि इसका उल्लंघन किसी बदनीयति से दिखे तो क्या किया जा सकता है ?

प्रत्येक वह व्यक्ति जिसके विरुद्ध निर्णय हो जाए साधारणतः संतुष्ट नहीं होता । कौन व्यक्ति उसकी नाराजगी की लपेट में आ जाए यह भी नहीं कहा जा सकता ।

न्यायाधीश की शिकायत उच्च न्यायालय या उच्चतम न्यायालय में की जा सकती है । आरोप प्रमाणित होने पर दोषी व्यक्ति के विरुद्ध कार्यवाही हो सकती है । केवल किसी व्यक्ति के विरुद्ध निर्णय को तो बदनीयति की संज्ञा नहीं दी जा सकती । मुकदमा चलते हुए यदि किसी पक्ष को किसी न्यायाधीश विशेष से न्यायसम्मत निर्णय की आशा नहीं हो तो वह जिला न्यायाधीश या मुख्य न्यायाधीश से मुकदमा किसी अन्य न्यायाधीश को सौंपने का आग्रह कर सकता है ।

नाबालिग विवाह !

विक्की गुप्ता, हर्रा (अलीगढ़) : मैं बी.एस-सी. फाइनल का छात्र हूं । मैं मोहल्ले की लड़की से प्यार करने लगा, वह भी मुझे चाहती है । वैसे लड़की अभी नाबालिग है पर उसके घरवाले उसकी शादी आगरा में पक्की कर आये हैं । शायद जुलाई में शादी भी होने वाली है । क्या इस संबंध में मैं एस.एस.पी. अलीगढ़ व जिलाधीश को सूचित कर सकता हूं ? मेरे पास उसकी जन्म तिथि का प्रमाण-पत्र है ।

आपने लड़की के अवयस्क होने की चर्चा तो की है, परंतु अपनी आयु की जानकारी नहीं दी । अवयस्क लड़की से प्यार कर आपने स्वयं भी तो परेशानी की स्थिति बनायी है । यह ठीक है कि हमारे देश में बाल विवाह पर प्रतिबंध है तथा इस प्रकार का विवाह करनेवालों के विरुद्ध कार्यवाही हो सकती है । लड़की कब वयस्क होगी इसका विवरण भी आपने नहीं दिया । अगर कन्या के पिता अठारह वर्ष की होने से पूर्व उसका विवाह करें तो उन्हें रोका जा सकता है । परंतु अभी तो आपकी कल्पना मात्र है, विवाह की तिथि तो आपके पास है नहीं । अगर विवाह अठारह वर्ष की होने के बाद हो, और लड़की विवाह का विरोध न करे, तब तो आपके पास कोई मार्ग नहीं रह जाएगा । यह ठीक है कि अठारह वर्ष की आयु से कम में विवाह करने की स्थिति में लड़की के अभिभावकों के विरुद्ध कार्यवाही की जा सकती है ।

मकान अपने नाम ?

विनय कुमार अवस्थी : मेरा मकान जिसमें मैं इस समय रह रहा हूं, वह मेरे बाबा का था । पिछले वर्ष बाबा का देहांत हो गया । मेरे पिताजी का लगभग १८ वर्षों से दिमाग खराब है । बाबा की मृत्यु के बाद मकान स्वतः मेरे पिता के नाम आ जाएगा । मैं मकान को अपने नाम करवाना चाहता हूं, क्योंकि मैं एक बैंक कर्मचारी हूं, हाउसिंग लोन लेकर मकान का पुनर्निर्माण करवाना चाहता हूं । लेकिन लोन लेने की शर्त में मकान बैंक कर्मचारी के नाम होना चाहिए । इसलिए मकान मेरे नाम होना बहुत आवश्यक है । अतः आप मुझे इस संदर्भ में सही कानूनी राय दें ।

मकान का मालिक ही मकान बनाने के लिए ऋण ले सकता है । इसके लिए यह आवश्यक है कि मकान आपके नाम हस्तांतरित हो । मकान हस्तांतरण के अनेक मार्ग हैं । इसके लिए आप मकान खरीद सकते हैं या उसे अपने नाम दान (गिफ्ट) करवा सकते हैं । दोनों स्थितियों में ही आपके पिताजी की स्वीकृति आवश्यक है । उनका दिमाग ठीक नहीं होने के कारण उनके द्वारा दान किये जाने की संभावना नहीं बनती । मकान बेचने के लिए भी पहले न्यायालय की अनुमति लेनी पड़ेगी और उसके बाद ही मकान बेचकर आपके नाम हस्तांतरित किया जा सकता है ।

आरक्षण कैसे ?

क.ख.ग., बस्ती : मेरे पिताजी मूल रूप से बिहार राज्य के रहनेवाले हैं, उन्हें उ.प्र. पुलिस विभाग में नौकरी मिली । पिताजी अपनी जाति चौहान लिखते हैं, जबकि यह मूलतः चौहान न होकर 'लौनियां' हैं । यह आरक्षित श्रेणी है । पिताजी समाज में अब भी अपने को चौहान (क्षत्रिय) बताते रहते हैं । यहां तक कि इस जातीय

विधि-विधान स्तंभ के अंतर्गत कानून-संबंधी विविध कठिनाइयों के बारे में पाठकों के प्रश्न आमंत्रित हैं । प्रश्नों का समाधान कर रहे हैं राजधानी के एक प्रसिद्ध कानून-विशेषज्ञ
— रामप्रसाद गुप्त

रहस्य को वे अपनी पत्नी व पुत्रों से भी छिपाये रहे । इसके परिणामस्वरूप हम तो आरक्षण सुविधा से वंचित रहे, हमें भी इन सुविधाओं से दूर रखा । अब तक मैं हर प्रतियोगी परीक्षा में अपने को सामान्य श्रेणी का अभ्यर्थी लिखता चला आ रहा हूं ।

मेरे हाई स्कूल के प्रमाण-पत्र में नाम क.ख.ग. चौहान पुत्र श्री अ.ज.म. चौहान है । प्रमाण-पत्र में सिंह (क्षत्रिय) नहीं है, मैंने अब तक जितनी प्रतियोगी परीक्षाएं एवं साक्षात्कार दिये हैं, उनमें क्षत्रिय अंकित नहीं है । इसको सभी लिपिकीय भूल समझते रहे ।

समस्या मेरे सामने यह है कि यदि मैं स्वयं को आरक्षित श्रेणी का अभ्यर्थी प्रमाणित करता हूं जो कि मूलतः हूं, तो क्या मुझे आयु सीमा व अन्य सुविधाएं जो सरकार ने इस श्रेणी के लिए प्रदान की हैं, मैं प्राप्त कर सकता हूं, या नहीं ?

आरक्षित वर्ग का व्यक्ति सामान्य वर्ग के अभ्यार्थियों के साथ भी आवेदन कर सकता है । आपको अपना सही जाति प्रमाण-पत्र प्राप्त कर लेना चाहिए तथा भविष्य में उस आधार पर अपने आवेदन करने चाहिए । इससे आपको जो भी अधिकार प्राप्त होंगे वह मिल सकते हैं । सामान्य वर्ग में रहकर परीक्षा आदि देने से आपने कोई विशेषाधिकार या लाभ प्राप्त नहीं किया । इसलिए मेरे विचार में आपने किसी नियम का उल्लंघन नहीं किया । हां यह ठीक है कि फार्म भरते समय अपनी जाति का सही

उल्लेख न करके आपने गलत सूचना अवश्य दी। मैं समझता हूं कि यह भी आपने स्वेच्छा से नहीं किया, यह गलती आपसे तथ्य की सही जानकारी न होने के आधार पर हो गयी, इसलिए क्षमा योग्य है। आवश्यकता पड़ने पर आप स्थिति स्पष्ट कर सकते हैं।

बेदखल कैसे करें?

अरबिंद कुमार उपाध्याय, बधवार (म. प्र.) : मेरे पिताजी ने नियमित रजिस्ट्री करवाकर मृतक [illegible] धनुवा से भूमि १९७४ में क्रय की थी, उपायुक्त के सम्मुख वह सहमति दे चुकी है। विक्रेता निःसंतान है, किंतु [illegible] कब्जा करता है। कोर्ट का स्टे नहीं मानता। पुलिस थाना कोई कार्यवाही नहीं करते। कृपया बतायें कि उसे कैसे बेदखल किया जाए। भारी परेशानी में हैं। अदालत के दरवाजे भी खटखटाये, पर प्रक्रिया लंबी चल रही है।

न्यायालय का दरवाजा तो आप खटखटा चुके हैं। किस प्रकार का मुकदमा चल रहा है और उसमें क्या स्थगन आदेश मिल गया है आदि का उल्लेख आपने नहीं किया। यदि आपका विपक्षी न्यायालय के आदेश की अवहेलना कर रहा है, तब तो आप न्यायालय अवहेलना अधिनियम की धारा दस तथा दीवानी प्रक्रिया संहिता के आदेश ३९ नियम २ए के अंतर्गत कार्यवाही कर सकते हैं। इससे न्यायालय अवमानना के लिए दोषी व्यक्ति को दंडित कर सकता है। इस प्रकार की कार्यवाही से आपका विपक्षी न्यायालय का आदेश मानने तथा उसके अनुसार आचरण करने के लिए बाध्य भी हो जाएगा।

दांपत्य सुख

क. ख. ग., कानपुर : मैं अपने वैवाहिक जीवन से बहुत निराश हूं। मेरी शादी सन १९८१ अक्तूबर में हुई। सन'८२ में लड़की हुई। इस बीच पत्नी की नियुक्ति चमोली (गढ़वाल) में सहायक अध्यापिका के रूप में हुई। लड़की अपने ननिहाल में रहती है और मैं कानपुर में लिपिक के तौर पर कार्यरत हूं।

पुत्री उत्पन्न होने के बाद हम पति-पत्नी में कोई शारीरिक संबंध स्थापित नहीं हो पाये, जबकि इन वर्षों में तीन-चार बार हम एक-दो सप्ताहों के लिए मिले भी।

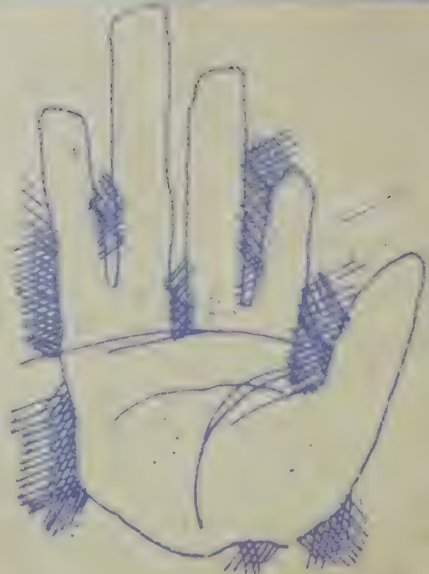
इस स्थिति से मैं तलाक का इच्छुक हूं, पर पत्नी के परिवारवाले सामाजिक मर्यादाओं से ऐसा नहीं होने देना चाहते हैं।

न ही पत्नी से मुझे और न ही पत्नी को मुझसे किसी भी प्रकार का शारीरिक, मानसिक अथवा आर्थिक सुख मिल पाया। कृपया बतायें कि कानून मेरी कुछ सहायता कर सकता है।

आपको तो पत्नी से कोई शिकायत नहीं सिवाय इस बात के कि वह आपके साथ नहीं रहती। आपकी पुत्री भी अपने ननिहाल में पढ़ रही है और उसे भी मां-बाप का प्यार प्राप्त नहीं हो रहा। मेरे विचार से आपको दांपत्य संबंधों की पुनर्स्थापना के लिए कार्यवाही करनी चाहिए। इसके लिए आप अपने क्षेत्र के न्यायालय में हिंदू विवाह अधिनियम की धारा ९ के अंतर्गत कार्यवाही कर सकते हैं। यह कार्यवाही उस न्यायालय में की जा सकती है, जिसके कार्य क्षेत्र में आपका विवाह हुआ था या आप पति-पत्नी के रूप में रहे हों।

जिसने मन को जीत लिया, उसने जगत को जीत लिया —शंकराचार्य

प्रवेश



हथेलियों पर खुदी तकदीर

मैं जब भी जिंदगी से हताश हो जाता हूं
तो उस अंधेरे में बरबस अपनी हथेलियां
टटोलता हूं
उस पर पड़ी आड़ी टेढ़ी रेखाओं में
तलाशता हूं अपना भाग्य
एक संस्कार बद्ध आदत की तरह
कि अब क्या होगा
मैं जानता हूं कि हथेलियों की रेखा नहीं
हाथ की ताकत आदमी की तकदीर बदलती है
मगर फिर भी हाथ पर नहीं
हथेलियों की रेखाओं पर मुझे ज्यादा विश्वास है
एक संस्कार बद्ध आदत की तरह
कि अब क्या होगा ?

बिना अर्थ की जिंदगी

मैं जिंदगी के हाशिये पर सिमट आया हूं
और सोच रहा हूं अपने ही हाथों से लिखी
बितायी जिंदगी की इबारत
मगर क्या बात है कि कुछेक शब्दों के अर्थ को
आज तक नहीं समझ पाया हूं मैं
जबकि उन शब्दों को मैंने ही जिया है
यकीनन हम आदमी लोग
बिना अर्थ की जिंदगी न जाने कैसे जी लेते हैं
शब्दों को पी जाते हैं गटागट
किसी देशी शराब की तरह
बिना परिणाम जाने बिना अर्थ को पहचाने

क्रांति भट्ट
—मंदिर पथ, गोपेश्वर





आत्मकथ्य

वो व्यथा जो मेरे अंदर तक को बेध लेती है
मैं उसे कागज पर उकेर लेता हूं, मैं नहीं जानता इसे व्यथा कहते हैं, या कविता— संप्रति : पत्रकारिता

चंदनियां

चंदनियां
क्यों मेरे घर आती
सूने आंगन खुद इठलाती
जब-जब याद की
चूड़ी खनके,
रह-रह घायल
जियरा धड़के
सपनों की—
तुलसी मुरझाती
चंदनियां क्यों मेरे घर आती
प्यार का जूड़ा
कौन सजाये
मन का मधुबन
कौन खिलाये ?
मिलनों की—
मेंहदी कुम्हलाती
चंदनियां क्यों मेरे घर आती
जब-जब रैना
रूप सजाती
नयनों की निंदिया
उड़ जाती
पुरवा
क्यों सांकल खनकाती
चंदनियां क्यों मेरे घर आती

—कमला गुप्ता

एम.आई.जी.-४०, गंगाविहार, कानपुर-१०

नीड़ पथ

भटकता क्यों नील नभ पर
विहग चल निज नीड़ पथ पर
लख धवल-सी
चांदनी को
रूप की मधु
यामिनी को
बढ़ रही क्यों शून्य पथ पर
भटकता क्यों नील नभ पर
प्यार भी तो
एक तप है
फूलता बस
श्रम विटप है
सुख मिलेगा सत्य पथ पर
भटकता क्यों नील नभ पर
द्वार आवे
स्वयं सपने
आ मिलेंगे
गीत अपने
थाम ले कर पथ पर
भटकती क्यों नील नभ पर

आत्म कथ्य

"जीवन में बहुत कुछ अनुभव किया है। मैं अपने मन की भावनाओं को प्रवृति के आलंबन से व्यक्त करने का प्रयत्न करती हूं।"





● पंडित शिव प्रसाद पाठक

ग्रह स्थिति-सूर्य; १६ अगस्त से सिंह में, मंगल सिंह में, बुध १ से सिंह में, २० से कन्या में, गुरु मिथुन में, शुक्र १२ से कन्या में, शनि धनु में, राहु कुंभ में, केतु सिंह में, हर्षल, नेप्च्यून धनु में, प्लेटो तुला राशि में भ्रमण करेंगे ।

मेष

मास में कार्य क्षेत्र का विस्तार होगा । शासन, सत्ता अथवा राजनेता से लाभ मिलेगा । स्वास्थ्य पर ध्यान देना हितकर होगा । १ से ७ के मध्य नवीन स्थान की यात्रा होगी । लेखन-सृजन तथा रचनात्मक कार्यों में सफलता मिलेगी । पारिवारिक वातावरण मनोनुकूल होगा । ८ से १५ के मध्य उदर-पीड़ा अथवा रक्त-विकार का सामना करना होगा । संतान पक्ष पर व्यय अधिक होगा । १६ से २४ के मध्य शासन, सत्ता अथवा उच्चाधिकारी वर्ग के सहयोग से लंबित कार्य पूर्ण होगा ।

मासांत में सामाजिक महिलाओं को धार्मिक कार्यों में सफलता मिलेगी । उत्तरदायित्वों में वृद्धि होगी । साधारण अस्वस्थता के योग हैं ।

विद्यार्थियों को उत्साहवर्धक वातावरण प्राप्त होगा । पुरस्कार अथवा अन्य विशिष्ट उपलब्धि के योग हैं ।

वृष

साहस तथा पुरुषार्थ से असाधारण सफलता प्राप्त होगी । आध्यात्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी । आर्थिक संसाधनों में वृद्धि होगी । १ से ७ के मध्य आध्यात्मिक अभिरुचि में वृद्धि होगी । लेखन-सृजन तथा रचनात्मक कार्यों से सहयोग मिलेगा । ८ से १५ के मध्य गुप्त शत्रुओं के कारण पीड़ा होगी । उच्चाधिकारियों से व्यर्थ विवाद डालना हितकर होगा । १६ से २४ के मध्य नवीन उत्तरदायित्व तथा कार्यों की अधिकता रहेगी । पारिवारिक अस्थिरता पर व्यय होगा । धन-संपत्ति संबंधी चला आ रहा विवाद हल होगा ।

महिलाओं को उपहार-भेंट अथवा लाभ-प्राप्ति का योग होगा । पारिवारिक एवं सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी ।

विद्यार्थियों के शिक्षा कार्यों में व्यवधान उपस्थित होंगे । पारिवारिक कार्यों की अधिकता होगी ।

मिथुन

मास श्रेष्ठ फलदायी होगा । साहस तथा पराक्रम से प्रतिकूल परिस्थितियों पर विजय प्राप्त होगी । राजकीय कार्यों में मनोनुकूल सफलता के योग हैं । १ से ७ के मध्य अधिक योजनाओं में सफलता प्राप्त होगी । रुका हुआ धन मिलेगा । संपत्ति कार्यों से लाभ होगा । ८ से १५ के मध्य

प्रियजन के कारण भावनात्मक कष्ट का सामना करना होगा । आध्यात्मिक रूझान बढ़ेगा । आत्मविश्वास तथा साहस से विशिष्ट लाभ की संभावना है । १६ से २४ के मध्य सामाजिक जीवन में प्रतिष्ठा बढ़ेगी । शत्रु-पक्ष का पराभव होगा । मासांत में आर्थिक एवं भौतिक सुखों के प्रयास साकार होंगे । मित्रों का सहयोग मिलेगा ।

महिलाओं को पारिवारिक उत्तरदायित्व की अधिकता एवं वस्त्राभूषण लाभ होगा ।

विद्यार्थियों को प्रतिभा-प्रदर्शन का श्रेष्ठ अवसर मिलेगा । उत्साहवर्धक वातावरण होगा ।

कर्क

मास उत्साहवर्धक तथा उपलब्धि पूर्ण होगा । राजकीय सहयोग से प्रभाव वृद्धि होगी । आर्थिक उन्नति होगी । १ से ७ के मध्य शासन, सत्ता अथवा उच्चाधिकारी वर्ग के सहयोग से रुका कार्य पूर्ण होगा । आकस्मिक धन-लाभ होगा । ८ से १५ के मध्य धन-संपत्ति के विवादों में सुलह होगी । विलासितादायी वस्तु पर व्यय होगा । आध्यात्मिक अभिरुचि बढ़ेगी । १६ से २४ के मध्य आकस्मिक यात्रा का योग उपस्थित

पर्व और त्योहार

१. भौमवती दर्श अमावस्या, ४. हरियाली तीज, ५. वैनायकी श्री गणेश चतुर्थी, ६. नागपंचमी, ७. श्रावण सोमव्रत, ९. शीतला सप्तमी, गो. तुलसीदास जयंती, १३. पुत्रदाएकादशी, १४. श्रावण सोमवार प्रदोष व्रत, १५. स्वतंत्रता दिवस, १७. श्रावणी पूर्णिमा, रक्षाबंधन खग्रास चंद्र ग्रहण, १९. कज्जरी तीज, २०. संकष्टी गणेश चतुर्थी, २२. हलवष्ठी, २३. श्री कृष्ण जन्माष्टमी (समार्त), २४. श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (वैष्णवी), २७. जया एकादशी, ३१. कुशोत्पाटिनी अमावस्या ।

राशियां और प्रभाव

मास में गुरु-हर्षल प्रतियुति होगी । चार ग्रहों का योग सिंह राशि पर होगा । ग्रहगोचर मेष, वृष, मिथुन, कर्क, तुला, वृश्चिक, मीन को शुभ, धनु कुंभ को मध्यम तथा सिह, कन्या, मकर को अशुभ फलदायी होंगे ।

विश्व व्यवस्था संकटापन्न स्थिति से गुजरेगी । विश्व शांति के प्रयासों में विफलता दृष्टिगोचर होगी । साम्यवादी राष्ट्रों में गृह युद्ध तथा हिंसक घटनाक्रमों की अधिकता होगी । पाश्चात्य देशों में सत्ता परिवर्तन होगा ।

प्राकृतिक एवं नैसर्गिक कारणों से जन-धन हानि होगी ।

भारत के राजनीतिक क्षितिज में मास उल्लेखनीय होगा । एक से अधिक सरकारों के पतन की संभावना होगी । केंद्रीय मंत्रिमंडल में परिवर्तनकारी स्थितियों का उदय होगा । प्राकृतिक वातावरण अस्थिरतापूर्ण होगा । भूस्खलन, भूकंप, वर्षा की अधिकता से जन-धन हानि संभावित है । कहीं अतिवृष्टि, कहीं स्वल्प वृष्टि का योग होगा ।

व्यापारिक वस्तुओं में घी, किराना तथा रस पदार्थों के भावों में तेजी होगी । चांदी, रुई तथा अन्य धातुओं के भावों में अस्थिरता होगी । शेयर मार्केट में संकटापन्न स्थिति दृष्टिगोचर होगी ।

होगा । शत्रु-पक्ष की क्रियाशीलता से सावधानी रखें ।

महिलाओं को वरिष्ठ जनों का सहयोग मिलेगा । रोजगार संबंधी समस्या का समाधान होगा ।

विद्यार्थियों को पारिवारिक चिंता होगी । परिश्रम तथा लगन से किये प्रयास सार्थक होंगे ।

सिंह

मास में प्रतिकूल परिस्थितियों पर धैर्य तथा परिश्रम से सफलता मिलेगी । पारिवारिक तथा सामाजिक जीवन पीड़ादायी होगा । १ से ७ के मध्य शत्रु-पक्ष की सक्रियता से चिंता होगी । अकारण राजकीय विरोध का सामना करना होगा । ८ से १५ के मध्य कार्यों की अधिकता होगी । जीवन साथी के सहयोग से इच्छित कार्य पूर्ण होगा । १६ से २४ के मध्य आध्यात्मिक अभिरुचि बढ़ेगी । जोखिम पूर्ण कार्यों से हानि संभावित है । संपत्ति विवाद टालना हितकर होगा ।

महिलाओं को आर्थिक तथा स्वास्थ्य संबंधी परेशानी का सामना करना होगा । वाक पटुता तथा साहसिक प्रयासों से रुके कार्य पूर्ण होंगे । विद्यार्थियों को श्रम से सफलता मिलेगी । मित्रों से सावधानी रखें ।

कन्या

मास में भावुकता तथा मानसिक अस्थिरता से कष्ट होगा । नवीन कार्यों में व्यय अधिक होगा । उच्चाधिकारियों से विवाद टालना हितकर होगा । १ से ७ के मध्य शत्रु-पक्ष के गुप्त षड्यंत्रों से उच्चाधिकारियों की भिन्नता बढ़ेगी । पारिवारिक कार्यों की अधिकता होगी । ८ से १५ के मध्य धैर्य तथा सजगता से कार्य करें । संपत्ति विवाद टालना हितकर होगा । पारिवारिक अस्थिरता से व्यय तथा परेशानी बढ़ेगी । १६ से २४ के मध्य लगन तथा परिश्रम से उच्चाधिकारी वर्ग प्रभावित होंगे । अपूर्ण कार्य में सफलता मिलेगी ।

महिलाओं को उत्तरदायित्वपूर्ण कार्यों की अधिकता होगी । परिवार सुख उत्तम होगा, आजीविका संबंधी कार्यों में विलंब होगा । व्यय बढ़ेंगे ।

विद्यार्थियों को स्वास्थ्य के प्रति सावधानी रखनी चाहिए । उत्साहवर्धक समाचार मिलेगा ।

तुला

मास में असाधारण कीर्ति तथा सफलता मिलेगी । आजीविका संबंधी प्रयास साकार होंगे । आध्यात्मिक उपलब्धि होगी । १ से ७ के मध्य लेखन-सृजन, रचनात्मक अथवा सामाजिक कार्यों में सफलता मिलेगी । आत्म-विश्वास से भौतिक उपलब्धियां होंगी । ८ से १५ के मध्य शासन अथवा उच्चाधिकारियों का सहयोग मिलेगा । इच्छित कार्यों की पूर्ति होगी । आकस्मिक उपलब्धि से कीर्ति मिलेगी । १६ से २४ के मध्य अस्वस्थता तथा जोखिमपूर्ण कार्यों में परेशानी के बावजूद पराक्रम में वृद्धि होगी । संपत्ति विवाद का समाधान होगा ।

महिलाओं को आकस्मिक लाभ होगा । पारिवारिक एवं सामाजिक कायों से यश बढ़ेगा ।

विद्यार्थियों को शिक्षा में सफलता अथवा विशिष्ट उपलब्धि होगी ।

वृश्चिक

मास में व्यस्तता तथा दौड़धूप की अधिकता होगी । विवादास्पद कार्यों को टालना हितकर होगा । भावनात्मक पीड़ा के बावजूद सृजनात्मक कार्य पूर्ण होंगे । १ से ७ के मध्य शत्रु-पक्ष के प्रभाव में वृद्धि होगी । उच्चाधिकारी वर्ग के सहयोग के बावजूद कार्यों में विलंब होगा । ८ से १५ के मध्य परिवारजनों के व्यवहार से मानसिक खिन्नता होगी । सृजन, लेखन, धार्मिक एवं रचनात्मक कार्यों में सफलता मिलेगी । १६ से २४ के मध्य संपत्ति विवाद टालें । रक्त संबंधियों के कारण कार्यों में व्यवधान होगा । मासांत में मित्रों, के सहयोग से रुके कार्य पूर्ण होंगे ।

महिलाओं को भावनात्मक अथवा शारीरिक कष्ट का सामना करना होगा । आर्थिक दिशा में सफलता मिलेगी । विद्यार्थियों की प्रगति धीमी रहेगी । खेलकूद में सफलता के योग हैं ।

धनु

निर्माण संबंधी कार्यों में सफलता मिलेगी । शत्रु पक्ष से कष्ट होगा । स्वास्थ्य पर व्यय होगा । १ से ७ के मध्य परिवार में धार्मिक कार्य संपन्न होंगे । आर्थिक दिशा में पारिवारिक सहयोग प्राप्त होगा । ८ से १५ के मध्य श्रम साध्य कार्यों में संयम रखें । अस्थिरता से कामकाज में अवरोध उपस्थित होगा । शत्रु-पक्षप्रतिष्ठा को हानि पहुंचाने का प्रयास करेगा । मासांत में अकारण तनाव टालें ।

महिलाओं को आत्म-विश्वास से राजकीय कार्यों में सफलता मिलेगी । व्यर्थ विवाद से बचें ।

विद्यार्थियों को शिक्षा में उपलब्धि अथवा विशेष सफलता का योग है । वाहनादि से सजग रहें ।

मकर

मास संघर्ष तथा अनिश्चिततापूर्ण होगा । आवेग की अधिकता होगी । स्वास्थ्य संबंधी पीड़ा रहेगी । १ से ७ के मध्य नवीन उत्तरदायित्व की प्राप्ति शत्रुओं के विरोधाभास के बावजूद प्राप्त होगा । उच्चाधिकारी वर्ग की अनुकंपा का लाभ मिलेगा । ८ से १५ के मध्य आर्थिक प्रयासों में व्यवधान होंगे । पारिवारिक क्लेश से भावनात्मक पीड़ा होगी । उत्तेजना तथा आवेग पर नियंत्रण रखना हितकर होगा । मासांत में संपत्ति विवाद के प्रयास होंगे ।

महिलाओं को मानसिक तनाव अधिक होंगे । स्वास्थ्य कष्ट होगा । निकटजन अथवा संबंधी से लाभ मिलेगा ।

विद्यार्थियों को संघर्ष तथा साहसिक प्रयास करना चाहिए । वरिष्ठजनों का सहयोग मिलेगा ।

कुंभ

मास में संघर्ष की अधिकता होगी । आर्थिक दिशा में आकस्मिक सफलता मिलेगी । १ से ७ के मध्य शासन, सत्ता अथवा उच्चाधिकारी वर्ग के साथ मतभेद बढ़ेंगे । शत्रु-पक्ष गुप्त रूप से हानि, बिगाड़ने का प्रयास करेंगे । ८ से १५ के मध्य यात्राओं की अधिकता, व्ययों की अधिकता, संपत्ति कार्यों में धीमी प्रगति होगी । १६ से २४ के मध्य प्रतियोगिता, सृजन, रचनात्मक अथवा सामाजिक कार्यों से सम्मान बढ़ेगा ।

महिलाओं को संपत्ति अथवा वाहन सुख होगा । विरोधाभास के बावजूद इच्छित कार्यों

की पूर्ति होगी।

विद्यार्थी साहसिक प्रयासों से बचें। प्रतियोगिता में सफलता मिलेगी।

मीन

मास प्रगति पूर्ण होगा। जोखिमपूर्ण कार्यों से लाभ होगा। राजकीय कार्यों में सफलता मिलेगी। १ से ७ के मध्य शासन सत्ता अथवा उच्चाधिकारी वर्ग के सहयोग से वांछित स्थान पद लाभ होगा। नवीन उत्तरदायित्व से प्रतिष्ठा बढ़ेगी। ८ से १५ के मध्य परिवार में मनोनुकूल वातावरण होगा। प्रियजन से भेंट तथा इष्ट सिद्धि होगी। १६ से २४ के मध्य भौतिक उन्नति की दिशा में चले आ रहे प्रयास साकार होंगे। जोखिमपूर्ण अवसर से असाधारण लाभ मिलेगा। वाहनादि से सतर्कता रखें। उदर अथवा रक्त विकार के योग हैं।

महिलाओं को आभूषण, भेंट, उपहार, लाभ होगा। परिवार के कार्यों से प्रतिष्ठा बढ़ेगी। आजीविका के क्षेत्र में विस्तार होगा।

विद्यार्थी वर्ग को मित्रों से सहयोग मिलेगा। उत्साहवर्धक समाचार प्राप्त होगा।

— ज्योतिष धाम, १२/४, ओल्ड सुभाषनगर, गोविंदपुरा, भोपाल (मध्य प्रदेश)

दास्तान नरपिशाच आतंकवादियों की

● भालचंद्र ओझा

१९७५ की शरद ऋतु में महानगर लंदन वहां के निवासियों के लिए जैसे एक भयानक दुःस्वप्न बन गया था । इंगलैंड का यह अंतरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त प्रमुख नगर निरंतर एक अनाम, अव्यक्त भय की छाया में जी रहा था । बड़े-बड़े डिपार्टमेंटल स्टोरों, दफ़्तरों तथा अन्य भीड़-भाड़ भरे संदिग्ध स्थानों पर, बिना किसी पूर्व चेतावनी के सुरक्षात्मक छानबीन नित्य-नियम बन गये थे और महानगर की पुलिस द्वारा बारंबार जनता को चेतावनी दी जाती रहती थी कि वे कहीं भी किसी भी अनजान या संदिग्ध वस्तु को न छुएं और यदि ऐसा कुछ देखें, तो तत्काल इसकी सूचना पुलिस को दे दें । रातभर खुले रहनेवाले रेस्त्रां, थिएटर, सिनेमाघर और आमोदगृहों का काम-धाम बंद-सा हो चला था । रात्रि के समय भयत्रस्त नगर निवासी अपने परिचित मार्गों पर अपरिचित की तरह घबराते हुए चलते थे । क्या पता कि मौत कब और कहां किस पर अपना फंदा फेक दे !

इस स्थिति की शुरुआत प्रायः एक वर्ष पूर्व आरंभ हुई थी, जब कि क्रिसमस की धूमधामभरी तैयारियों के बीच एक रात कोई दस बजे भीड़-भाड़ से भरी आक्सफोर्ड स्ट्रीट पर खड़ी एक कार में भयानक बम-विस्फोट हुआ । कार के टुकड़े-टुकड़े हो गये और पांच व्यक्ति गंभीर रूप से घायल हो गये । यह स्थान मशहूर डिपार्टमेंटल स्टोर सेलफ्रिजेज के ठीक

बाहर था। विशेषज्ञों की पड़ताल से मालूम हुआ कि इस दुर्घटना का जिम्मेदार एक ४५ किलोग्राम का बम था, जो उसी कार के अंदर छिपाकर रखा गया था।

इस दुर्घटना के तीन दिन बाद ही नाइट्सब्रिज की एक बहुमंजिली इमारत की दूसरी मंजिल पर हुए एक बम-विस्फोट से भीषण आग लग गयी, किंतु सुरक्षा गार्डों की सजगता से वहां कार्यरत सभी प्रायः पंद्रह हजार व्यक्तियों को दुर्घटना से पहले ही सुरक्षित रूप से बाहर निकाल दिया गया।

फिर तो ऐसी घटनाओं का तांता-सा बंध गया। महीनों गुजर जाने पर भी लंदन का विश्व-विख्यात पुलिस मुख्यालय स्काटलैंड यार्ड यह पता नहीं लगा पाया कि इन घटनाओं के पीछे किन लोगों का हाथ है और ऐसा क्यों किया जा रहा है। किंतु इतना तो स्पष्ट हो गया कि ये कार्रवाइयां किसी गहरे षड्यंत्र का परिणाम हैं और इनका उद्देश्य डकैती या लूट नहीं बल्कि आतंक फैलाना है।

गुप्तचर विभाग षड्यंत्रकारियों का पता लगाने के प्रयास में जी-जान से जुटा था और पुलिस पूरी मुस्तैदी से अपराधियों को पकड़ने की कोशिश कर रही थी। किंतु दस-ग्यारह महीनों के जी-तोड़ परिश्रम के बाद भी इनमें से किसी को सफलता नहीं मिली। षड्यंत्रकारियों का उद्देश्य यदि आतंक फैलाना ही था, तो निःसंदेह उन्हें सफलता मिल रही थी। सारा लंदन दहशत की गिरफ़्त में था।

इधर आतंककारी घटनाओं का दायरा बढ़ रहा था और ऐसी घटनाओं की गति भी तेज हो रही थी। निर्दोष और निहत्थे नागरिकों पर निहायत शर्मनाक और घृणित ढंग से आक्रमण किये जा रहे थे। आतंकवादी आमतौर पर इसके लिए ऐसे स्थान चुनते थे, जहां अधिक से अधिक लोगों को क्षति पहुंचने की संभावना दीखती थी। एक दिन शाम को, जब कि दफ़्तर से घर लौटनेवालों का रेला सड़कों से गुजर रहा था तो किंग्स क्रास तथा विक्टोरिया स्टेशनों और पिकेडली सर्कस के चिट्ठी डाले जानेवाले अनेक डाक-बक्सों के अंदर प्रायः एक साथ बम-विस्फोट हुए।

अनेक रेस्त्रां, क्लब और ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक महत्त्व के स्थल भी आतंककारियों के लक्ष्य बने। सरें के केटहम क्लब में, जहां अधिकांशतः सैनिक ही आया करते थे, एक शाम लंबे बालोंवाले दो ग्राहक आये। वे स्पष्टतः सैनिक नहीं थे, किंतु वहां असैनिकों के आने पर कोई प्रतिबंध तो था नहीं, इसलिए उन पर किसी ने अधिक ध्यान नहीं दिया। उस रात वहां डिस्को नृत्य होना था, इसलिए क्लब का वह पेय-कक्ष युवक-युवतियों से खचाखच भरा था। दोनों नवागंतुक अपने पेय के साथ एक कोने की मेज पर बैठे। उनके पास प्लास्टिक का एक थैला था, जिसे उन्होंने अपनी मेज के निकट ही जमीन पर रख दिया था। वे अधिक देर नहीं रुके। उनके जाने के बाद किसी की नजर उस लावारिस थैले पर पड़ी, किंतु इसके पहले कि वह पुलिस को सूचना देने के लिए उठता, थैले में रखा हुआ बम एक भयानक धमाके के साथ फट गया। पेय-कक्ष की छत और दीवारों से टूटकर गिरे प्लास्टर, ईंट और पत्थर के टुकड़ों से अनेक व्यक्ति घायल हो गये। जिनकी देह पर विस्फोटक पदार्थ के

टुकड़े पड़े थे, उन्हें भारी चोट लगी। कुल तैंतीस लोग इस दुर्घटना में घायल हुए। इनमें से प्रायः आधे जीवनभर के लिए अपंग बन गये।

आतंकवादियों के अस्त्र-भंडार में बमों और टाइम-बमों के अलावा अन्य हथियार भी थे। पोर्टमैन तथा कार्लटन टावर — जैसे लंदन के फैशनेबुल होटलों को अपनी तेज भागती कारों से मशीनगन चलाकर उन्होंने भारी क्षति पहुंचायी।

केटहम क्लब बम-कांड के ठीक नौ दिन बाद पार्क लेन के गगनचुंबी हिल्टन होटल के प्रवेश-कक्ष में भी एक शक्तिशाली बम फटा। उसके भयानक विस्फोट से पूरी इमारत हिल उठी और सामने की सड़क से गुजरते हुए लोग उसके धमाके के आघात से गिर पड़े। कई तो मूर्छित भी हो गये। प्रवेश-कक्ष की खिड़कियों से टूटकर शीशों के टुकड़े इतने वेग से बाहर के मार्ग पर छिटके कि जिन अभागों की देह पर लगे उन्हें कटार-जैसी चोट दे गये। यह ऐसा संत्रासकारी दृश्य था, कि निकटवर्ती सेंट जार्ज अस्पताल के आपातकालीन विभाग के एक डॉक्टर ने उसकी तुलना बूचड़खाने से की। इस दुर्घटना में एक पुरुष और एक महिला मारी गयी तथा ६३ लोग गंभीर रूप से घायल हुए।

यह सब पुलिस और गुप्तचर विभाग की नाक के नीचे हो रहा था। कड़े नाकेबंदी और सतर्क सुरक्षा-प्रबंधों के बावजूद निरंतर ऐसी घटनाएं हो रही थीं। आतंकवादी इतने चालाक और कार्य-कुशल थे कि कहां और किस समय वे अपना काम करके सकुशल भाग निकल सकते हैं, इसकी उन्हें आश्चर्यजनक रूप से सही जानकारी रहती थी।

अभी तक लंदन-पुलिस आतंकवादियों के बारे में कोई भी सूत्र नहीं पा सकी थी। भीड़ को निशाना बनानेवालों के बारे में सही अनुमान होता भी तो कैसे ! उधर आतंकग्रस्त जनता में पुलिस और प्रशासन के खिलाफ असंतोष चरम सीमा पर पहुंच रहा था।

तभी आतंकवादियों ने पैंतरा बदला। उनकी कार्यशैली तो नहीं बदली किंतु अब भीड़भरे स्थानों के अलावा व्यक्तियों पर भी उन्होंने निशाना साधा।

२२ अक्तूबर की शाम को इंगलैंड की टोरी पार्टी के सांसद फ्रेजर के निवास-स्थान पर किसी ने फोन किया। उस समय वे घर पर नहीं थे। उसके पूछने पर उनकी नौकरानी ने बताया कि वे आमतौर पर सबेरे साढ़े आठ और नौ के बीच घर से निकलते हैं।

अगले दिन, सबेरे के प्रायः साढ़े सात बजे, फ्रेजर के केंटंगिटन-स्थित निवास-स्थान के ठीक सामने पहुंचकर एक कार रुकी। उसमें दो व्यक्ति बैठे थे। उनमें से एक व्यक्ति ने नीचे उतरकर गौर से फ्रेजर की गाड़ी का नंबर देखा और झट से उनकी गाड़ी के अगले पहिए के पास कुछ छोड़कर फिर अपनी कार में जा बैठा। दूसरे ही क्षण उनकी कार हवा हो गयी। उसी समय फ्रेजर के पड़ोसी, ४५ वर्षीय विश्व-विख्यात कैंसर विशेषज्ञ प्रोफेसर गोर्डन हेमिल्टन फेयरले अपने दो कुत्तों को टहलाने के लिए सड़क पर उतरे। संभवतः उन्होंने कुछ देखा हो, और उन्हें संदेह हुआ हो। फ्रेजर की गाड़ी के अगले हिस्से के पास पहुंचकर वे रुके और उन्हें नीचे झुकते हुए देखा गया। उसी

समय जोर का धमाका हुआ और फ्रेजर की गाड़ी के पुर्जे-पुर्जे हवा में बिखर गये। प्रोफेसर फेयरले की भी प्रायः ऐसी ही गति हुई। जिस समय यह घटना घटी, उस समय फ्रेजर को अपनी अतिथि, अमरीका के स्वर्गीय राष्ट्रपति कैनेडी की पुत्री केरोलिन कैनेडी के साथ अपनी गाड़ी में होना चाहिए था, लेकिन ऐन वक्त पर उनके एक सहयोगी सांसद टेलीफोन पर उनसे काफी देर तक बात करते रहे थे इसलिए उनके और केरोलिन के, जो लंदन में कला का प्रशिक्षण पा रही थी, प्राण बच गये।

हत्यारों ने इंगलैंड के तत्कालीन विरोधी दल के नेता एडवर्ड हीथ को भी अपना लक्ष्य बनाया। एक रात को, नौ बजे से कुछ ही पहले, विल्टन स्ट्रीट स्थित उनके मकान की पहली मंजिल का वह हिस्सा, जहां आमतौर पर उस समय वे काम किया करते थे, बम से उड़ा दिया गया। सौभाग्यवश उस रात वे किसी काम में व्यस्त होने के कारण उस समय तक घर नहीं लौटे थे।

फ्रेजर और हीथ के प्राण लेने के षड्यंत्र से आतंकवादियों को तो सफलता नहीं मिली, किंतु पुलिस को इसका स्पष्ट संकेत मिल गया कि षड्यंत्रकारी कौन हो सकते हैं। एडवर्ड हीथ जब प्रधानमंत्री थे, तब आयरलैंड के विवादास्पद स्थान उल्स्टर में आयरिश रिपब्लिकन आर्मी के आतंकवादियों के लिए नजरबंदी का कानून लागू किया गया था और टोरी सांसद फ्रेजर ने अपराधी पाये गये आतंकवादियों के लिए संसद में मृत्युदंड की मांग की थी।

किंतु पुलिस और गुप्तचर विभाग के इस अनुमान से — चाहे वह सत्य ही क्यों न हो — स्थिति में तो कोई परिवर्तन हो नहीं सकता था। पहली और सबसे जटिल समस्या अपराधकर्मियों को पकड़ने की थी और अब तक उन्हें पकड़ने के सारे प्रयास विफल रहे थे। इसी समय रॉस मैक वर्टर नामक एक पत्रकार ने एक अभियान आरंभ किया, जिसका उद्देश्य अपराधकर्मियों का सही सुराग देनेवाले को पुरस्कृत करने के लिए साढ़े पांच लाख रुपये एकत्र करना था। इस संबंध में विज्ञापन प्रकाशित होने के चंद दिन बाद ही मैकवर्टर को गोलियों से भून दिया गया। इसके साथ ही अभियान की भी इतिश्री हो गयी।

छह दिसंबर १९७५ की शाम को जॉन मैथ्यूज और उसकी पत्नी सेला मेरिलबोन स्टेशन के निकट अपने दुमंजिले मकान की ऊपरवाली मंजिल के अपने कमरे में बैठे हुए टेलीविजन पर कोई कार्यक्रम देख रहे थे। अचानक बाहर कुछ असामान्य शोरगुल सुनकर ५५ वर्षीय मैथ्यूज का ध्यान भंग हो गया। शोरगुल का कारण जानने के लिए उसने बैठकखाने के छज्जे से झांका। नीचे मालक स्ट्रीट था, जिसे पुलिस की गाड़ियों ने घेर रखा था। तभी नीचे से उसे चेतावनी दी गयी कि वह कमरे के अंदर चला जाए, क्योंकि कहीं पास ही हथियारबंद हत्यारे छिपे हुए थे और पुलिस उन्हीं की खोज कर रही थी। उसने फौरन कमरे में आकर छज्जे की खिड़की बंद कर दी। इसी समय दरवाजे की घंटी बजी। उसने सोचा कि संभवतः कोई पुलिस का आदमी अपने काम के लिए उसके छज्जे का इस्तेमाल करना चाहता होगा। उसने बेहिचक दरवाजा खोल दिया और अपने को

एक पिस्तौल के सामने पाया । मैथ्यूज में पिस्तौल की नली का सामना करने की हिम्मत न थी । वह दरवाजा खुला छोड़कर दो कदम पीछे हट गया । चार नवयुवक धड़धड़ाते हुए कमरे में घुस आये और कमरे की बत्ती बुझा दी । उन्होंने सड़क की ओर खुलनेवाली खिड़की और दरवाजे को बंद करके उनके आगे वजनी कुरसियां रख दीं । मैथ्यूज के हाथ-पांव नाइलन की रस्सी से कसकर बांधदिएऔर ५३ वर्षीया सेला को दरवाजे के सामने रखी कुरसी पर बैठने को मजबूर कर दिया, ताकि यदि पुलिस दरवाजे से गोलियां चलाना शुरू कर दे, तो सबसे पहले वही गोलियों का शिकार बने । मैथ्यूज को भी उसके नजदीक जमीन पर बैठाया गया । इसके बाद एक आतंकवादी ने न्यू स्काटलैंड पुलिस स्टेशन के ड्यूटी कर रहे अधिकारी को फोन किया — 'यह आयरिश रिपब्लिकन आर्मी है । हमने २२ बी मालकम स्ट्रीट में कुछ लोगों को बंधक बना रखा है । यदि तुम लोगों ने अंदर घुसने की कोशिश की तो उन्हें गोलियों से उड़ा दिया जाएगा ।'

पिछले चौदह महीनों से आतंकवादियों के कारनामों को ध्यान में रखते हुए पुलिस को विश्वास था कि यह धमकी कोरी नहीं हो सकती । और इस तरह सशस्त्र अपराधियों के विरुद्ध लंदन महानगर में पुलिस की सबसे लंबी घेरेबंदी आरंभ हुई ।

चार दिन और चार रातें अपराधियों ने अपने बंधकों के साथ उसी कमरे में बितायीं । पुलिस के अप्रत्याशित आक्रमण के भय से वे भोजन की तलाश में अथवा अन्य किसी नित्यकर्म के लिए भी कमरे से बाहर नहीं निकले । स्काटलैंड यार्ड के विशेषज्ञों ने कमरे की एक संध में एक छोटा-सा माइक्रोफोन लगा दिया था, ताकि

बुद्धि-विलास के उत्तर

१. (४ हजार रु.) २. मैगेलन (अमरीकी), ८ मास तक शुक्र की १८५२ परिक्रमाएं कर चित्र भेजेगा, ३. सर विलियम जोन्स (कलकत्ता में तत्कालीन सुप्रीम कोर्ट के जज तथा वहां की एशियाटिक सोसाइटी के संस्थापक), ४. बाबा पृथ्वीसिंह आजाद (आत्मकथा : 'क्रांति पथ का पथिक'), ५. 'यो पिकासो' (२० वर्ष की अवस्था में बनाया गया पिकासो का अपना चित्र), ४ करोड़ ७८ लाख ५० हजार डालर में इस वर्ष न्यूयार्क में बिका, ६. क. अमरीकी पत्रिका 'ऐक्शन कामिक्स' के मुखपृष्ठ पर (जून १९३८), ख. क्लीवलैंड (ओहियो) के दो किशोरों जेरी सीगेल तथा जो शुस्टर की कल्पना, ७. क. डॉ. चार्ल्स ग्लेन किंग (अमरीकी) ने १९३२ में खोज की (विगत जनवरी में ९१ वर्ष की आयु में मृत्यु), ख. खाल की बीमारियों (स्कर्वी) तथा कुपोषण, ८. श्री आर. एस. पाठक (भारत के पूर्व मुख्य न्यायाधीश), ९. १४ टन वाला २५०० कि. मी. की दूरी तक मार करनेवाला प्रक्षेपास्त्र, 'अग्नि'..., १०. 'जवाहरलाल नेहरू पत्तन' (न्हावा शेवा), बंबई से १० कि. मी. दूर, ११..... समुद्रतल की खोज में रत एक गोताखोर

उनकी बातें सुनकर उनकी मानसिक स्थिति का पता चलता रहे। पुलिस बार-बार आग्रह करती रही कि वे बाहर से दिया हुआ भोजन ले लें, किंतु वे मौन साधे रहे। पांचवें दिन जब पेट की ज्वाला असहय हो गयी तो उन्हें पुलिस का अनुरोध स्वीकार करना पड़ा।

छठे दिन वे भाग निकलने की संभावना पर विचार करने लगे। उः आतंकवादी संभवतः अपनी योजना की व्यर्थता समझ गये क्योंकि उस पर अमल करने की बजाय उन्होंने स्काटलैंड यार्ड को फोन करके आत्मसमर्पण की शर्तें पूछीं।

तीन घंटे बाद चारों आतंकवादी जेल ले जाए गये जहां पुलिस को पहली बार उनकी वास्तविक पहचान हुई। वे आयरिश रिपब्लिकन आर्मी के 'सक्रिय सेवा दस्ते' के उस नौ सदस्यीय दल में थे, जो चौदह महीने पहले छिपे-चोरी लंदन में हिंसा और आतंक फैलाने के उद्देश्य से ही आया था। इस अवधि में उनकी कारस्तानियों से ग्यारह व्यक्ति मारे गये और तीन सौ से अधिक घायल हुए। घायलों में से अनेक जीवनभर के लिए विकलांग हो गये। करोड़ों की संपत्ति नष्ट हुई।

अभियुक्तों को न्यायालय द्वारा ४०-४७ वर्ष के कारागार की सजा दी गयी। अपने फैसले में जज ने यह भी लिखा कि इनमें से प्रत्येक को

ये आतंकवादी अपने को संयुक्त आयरलैंड के उद्देश्य की सिद्धि के लिए लड़नेवाले सैनिक कहते थे जब कि वास्तव में वे बुद्धिहीन नरपिशाच थे, जिनमें मानवता का नामोनिशान तक नहीं था।

सी-१८, राजौरी गार्डेन, नयी दिल्ली-११००२७

'ज्योतिष : समस्या और समाधान' प्रविष्टि-८८ के लिए हमें सदा की भांति काफी बड़ी संख्या में पाठकों के पत्र प्राप्त हुए । सभी पाठकों के प्रश्नों के उत्तर देने में अनेक व्यावहारिक कठिनाइयां थीं ! कुछ चुने हुए प्रश्नों का उत्तर दे रहे हैं—पाठकों के सुपरिचित पं. के.ए. दुबे 'पद्मेश' ।



सुनील दुबे, उज्जैन

प्रश्न : स्वास्थ्य के लिए कौन-सा रत्न धारण करें ?

उत्तर : चतुर्थ भाव में सूर्य, बुध की युति शनि की राशि में और दसमेश चंद्र लग्न है, जिस कारण नेत्र पीड़ा से पीड़ित हैं, उसके लिए जामुनिया रंग का मोती धारण करें ।

मृदंग, रेंगनसर्वग, पश्चिमी जर्मनी

प्रश्न : अपूर्ण शिक्षा कब तक पूर्ण होगी ?

उत्तर : पंचमेश शुक्र पंचम भाव में गुरु के साथ है, अतः कर्क राशि में गुरु के आने पर अर्थात २१ जुलाई ९० से अगस्त १९९१ के मध्य । उसके पश्चात कोई योग नहीं है ।

चित्रगुप्त, ग्वालियर

प्रश्न : संतान कब तक, उसके लिए कौन-सा रत्न धारण करें ?

उत्तर : श्वेत पुखराज धारण करें, ३६ से ४१ वर्ष की आयु में संतान का योग, अल्प योग १९८९-९० में भी है ।

श्याम सिंह, जालौर

प्रश्न : सफलता के लिए कौन-सा रत्न धारण करें ?

उत्तर : कन्या लग्न में बुध कारक होता है, पन्ना धारण करें । मूंगा कभी भी न पहनें ।

दिवाकर वर्मा, सागर

प्रश्न : नौकरी का योग कब तक ?

उत्तर : २२ या २५ वर्ष की आयु में नौकरी का योग ।

भारती, दिल्ली

प्रश्न : विवाह कब तक, कौन-सा रत्न धारण करें ?

उत्तर : मीन लग्न, लग्न में ही गुरु है, पुखराज धारण करें । २१ जुलाई १९९० तक विवाह का योग है ।

चंद्रशेखर शिन्दे, शिवपुरी

प्रश्न : नौकरी कब व किस स्तर की ?

उत्तर : सप्तम भाव में गुरु, शुक्र की युति तथा सप्तमेश दशम भाव में केतु के साथ, जिस कारण २५ या २९ वर्ष की आयु में नौकरी का योग ।

राघवेंद्र मिश्र, मैहर सतना

प्रश्न : उच्च नौकरी हेतु क्या उपाय करें ?

उत्तर : भाग्य भाव में गजकेसरी योग, मंगल केतु का शनि, शुक्र से षडाष्टक योग । उच्च नौकरी का योग है, उसके लिए घोर श्रम करें, पुखराज धारण करें ।

मनोज सिंह, रायबरेली

प्रश्न : नौकरी कब मिलेगी ?

उत्तर : सप्तम में गुरु, रवि, बुध की युति २६ से २८ वर्ष की आयु में व्यवसाय देगी ।

श्रीकांत गुप्ता, शाहाबाद हरदोई

प्रश्न : प्रतियोगी परीक्षा में सफलता मिलेगी ?

उत्तर : पंचमेश शनि अपने भाव से बारहवें हैं, जिस कारण घोर श्रम करने पर ही सफलता मिलेगी ।

अमरेश श्रीवास्तव, मुजफ्फरपुर

प्रश्न : नौकरी कब तक ?

उत्तर : २० जुलाई ८९ से २१ जुलाई १९९० के मध्य ।

सलिल, वाराणसी

प्रश्न : क्या डॉक्टर बन सकता हूं ?

उत्तर : पंचम भाव में नीच राशि का मंगल है, प्रयास और लगन से बन सकते हैं ।

सुशील कुमार, वर्द्धवान

प्रश्न : प्रतियोगी परीक्षा में क्या सफलता मिलेगी ?

उत्तर : पंचमेश शुक्र बारहवें भाव में है, जिस कारण व्यवधान अधिक आएंगे । पूरे मन से प्रयास करें ।

दीपक पाण्डे, अजमेर

प्रश्न : मकान कब तक, कौन-सा रत्न धारण करें ?

उत्तर : वृष लग्न में शनि और शुक्र कारक ग्रह होते हैं । अतः नीलम या हीरा धारण करें । उम्र ३१ से ३६ के मध्य मकान का भी योग है ।

शिवकुमार सिंह, बरेली

प्रश्न : भाग्योदय कब होगा ?

उत्तर : धनु लग्न का भाग्योदय पूरी तरह से ५७ वर्ष की आयु में होता है, लेकिन सफलताएं ४१ वर्ष से प्रारंभ हो जाती हैं ।

श्रीमती पुष्पा दुबे, कानपुर

प्रश्न : मेरे जीवन का श्रेष्ठ काल कौन होगा, कौन-सा रत्न धारण करें ?

उत्तर : सिंह लग्न में मंगल कारक ग्रह होता है । आपकी आयु का ४१ से ५६ वर्ष तक का श्रेष्ठ काल होगा । सभी भौतिक सुख होंगे । लेकिन मंगल छठे होने के कारण रोग और शत्रु जीवनभर रहेंगे । ४१ वर्ष की आयु में प्रियजन विछोह भी । मूंगा धारण करें ।

डॉक्टर एस. अग्रवाल, भिलाई, दुर्ग

प्रश्न : प्राइवेट प्रेक्टिस में सफल होंगे या नहीं, कौन-सा रत्न धारण करें ?

उत्तर : स्वतंत्र कार्य में सफलता मिलेगी, लेकिन कुछ समय लगेगा । धैर्य रखें । लहसनिया धारण करें ।

राकेश कुमार वर्मा, मोतिहारी

प्रश्न : नौकरी कब तक ?

उत्तर : मार्च १९९० से अगस्त १९९१ के मध्य ।

नरेंद्र शर्मा, लश्कर, ग्वालियर

प्रश्न : स्वास्थ्य के लिए कौन-सा रत्न धारण करें ?

उत्तर : कन्या लग्न में बुध कारक, मंगल अकारक होता है । लग्न में मंगल रोग देता है, अतः 'मंगल यंत्र' का पूजन करें तथा पन्ना धारण करें । मूंगा कभी भी न पहनें ।

नीता मालवीय, इलाहाबाद

प्रश्न : विगत आठ वर्षों से रोगग्रस्त, क्या करें ?

उत्तर : सिंह लग्न है, मूंगा धारण करें । 'मंगल यंत्र' का पूजन करें । हीरा, पुखराज कभी न पहनें ।

त्रियोगी नारायण दुबे, अलीगढ़

प्रश्न : मकान बनेगा या नहीं ?

उत्तर : लग्नेश मंगल पंचम भाव में है, जिस कारण संपत्ति अवश्य बनेगी । लेकिन ५६ से ६० वर्ष की आयु में ।

भूपेंद्र कुमार सिंह, प्रतापगढ़

प्रश्न : प्रशासनिक परीक्षा के लिए कौन-सा रत्न धारण करें ?

उत्तर : मूंगा धारण करें । १९८९-९० का वर्ष आपके लिए महत्त्वपूर्ण होगा ।

डोरीलाल, पीलीभीत

प्रश्न : साझेदारी में व्यापार कैसा रहेगा ?

उत्तर : कन्या लग्न में मंगल अकारक ग्रह होता है । तृतीय भाव का स्वामी मंगल नीच राशि में है, जिस कारण साझेदारी में नुकसान मिलेगा ।

सुरेंद्र झा, बेगूसराय

प्रश्न : भाई-बहनों का सहयोग कैसा रहेगा ?

उत्तर : तृतीय भाव में अकेला चंद्रमा है, जिस कारण संबंधों में मधुरता नहीं रहेगी ।

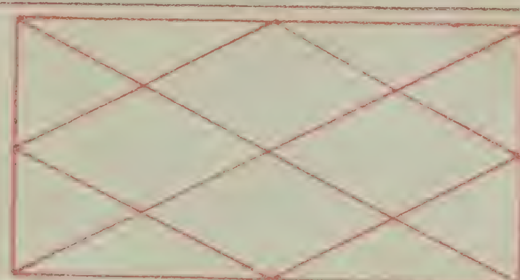
गणेश चटर्जी, शहडोल

प्रश्न : व्यावसायिक प्रगति कब से ?

उत्तर : अक्तूबर १९९९ से सफलता की ओर अग्रसर होंगे, लेकिन उत्तम सफलता अगस्त १९९० से मिलेगी ।

— 'नक्षत्रिका" १८ रतनलाल नगर, कानपुर-२०८०२२

९०



नाम

जन्म-तिथि (अंगरेजी तारीख)................**महीना**................**सन**....................

जन्म-स्थान...............**जन्म-समय**..

कुंडली में दी गयी विंशोत्तरी दशा...............**वर्तमान व जन्म नक्षत्र**.........................

पता...

आपका एक प्रश्न..

इस पते को ही काटकर पोस्टकार्ड पर चिपकायें

संपादक (ज्योतिष विभाग—प्रविष्टि— ९०)

'कादम्बिनी',

हिन्दुस्तान टाइम्स भवन, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली—११०००१

अंतिम तिथि : **२० अगस्त, १९८९**

"खेती है मेरा काम"



गंगाराम को अपने व्यवसाय पर गर्व है।

ऐसा व्यवसाय जिससे देश को भोजन मिलता है।

ऐसा व्यवसाय जिससे उसे अच्छी आमदनी होती है।

वे दिन लद गये जब खेती एक स्थिर और घाटे का व्यवसाय था।

स्वतंत्र भारत में किसानों की आवश्यकताओं की ओर ध्यान दिया गया ताकि उन्हें बढ़िया बीज, सिंचाई सुविधाएं, खाद, कीटनाशक दवाएं - ये सभी रियायती दरों पर मुहैया करायी जा सकें।

ऐसी व्यवस्था की गई जिससे उन्हें समय पर ऋण और उनके उत्पादों का उचित मूल्य मिल सके। किसान इन सुविधाओं का पूरा लाभ उठाते हैं।

कड़ी मेहनत और प्रौद्योगिकी दोनों ही हरितक्रांति के अग्रदूत हैं। फलस्वरूप, आज भारत का खाद्यान्न उत्पादन 17 करोड़ टन तक पहुंच गया है - जो 1947 के कुल उत्पादन से 12 करोड़ टन अधिक है।

हमें प्रगति पर गर्व है

davp 89/2

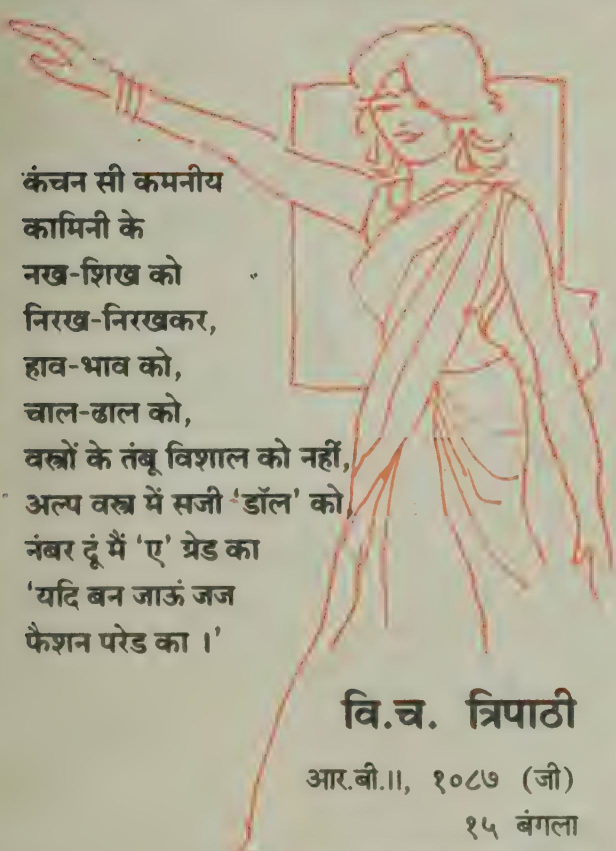
'यदि बन जाऊं जज फैशन परेड का'

'क्या करेंगे आप' स्तंभ के लिए आप हास्य के रंग और व्यंग्य की तरंग में डूबी — अपनी खिलखिलाती हुई, गुदगुदा देनेवाली रचनाएं भेजें, और हां 'देखन में छोटी लगें घाव करें गंभीर' की उक्ति को चरितार्थ करती हुई आपकी रचना आठ-दस पंक्ति की ही हो, ताकि अधिक से अधिक रचनाकार इस रोचक 'काव्य-चर्चा' में सम्मिलित हो सकें, काव्य चर्चा का विषय है—

बनूं विदूषक रामलीला में

अंतिम तिथि : २० अगस्त, १९८९

संपर्क 'क्या करेंगे आप', द्वारा : संपादक, 'कादम्बिनी', हिंदुस्तान टाइम्स, नयी दिल्ली-१



कंचन सी कमनीय
कामिनी के
नख-शिख को
निरख-निरखकर,
हाव-भाव को,
चाल-ढाल को,
वस्त्रों के तंबू विशाल को नहीं,
अल्प वस्त्र में सजी 'डॉल' को,
नंबर दूं मैं 'ए' ग्रेड का
'यदि बन जाऊं जज
फैशन परेड का ।'

वि.च. त्रिपाठी

आर.बी.II, १०८७ (जी)
१५ बंगला
भुसावल-४२५२०१,
महाराष्ट्र

यदि बन जाऊं जज फैशन परेड का, मैं
'रसिक' उसी को प्रथमासन दिलाऊंगा ।
अंग-अंग रोम-रोम निरख निहार धन्य
होकर सुहाग-भाग दोनों के सराहूंगा ।
नाम संपादक कादम्बिनी का उछलेगा
खटिया राजेंद्र अवस्थी की ही हिलाऊंगा ।

संत कुमार टंडन 'रसिक

११, सराय मीर खां,
लोकनाथ, इलाहाबाद-२११००३

यदि बन जाऊं जज
फैशन परेड की
ऐसा परेड करवाती
काम, क्रोध, मद, लोभ का फैशन
प्रतिस्पर्धा और विरोध का फैशन
झटपट बंद कराती ।

श्रीमती सरोज गुप्ता 'रुकू'

श्री बी.एल. गुप्त प्राचार्य
भु.पो. रामनगर, जिला सतना (म.प्र.)

मैं कन्याओं में बिजी रहूंगा
न कि 'जजमेंट' में, 'ग्रेड' में,
जज बनके पहुंच गया, अगर
मैं कभी फैशन परेड में।

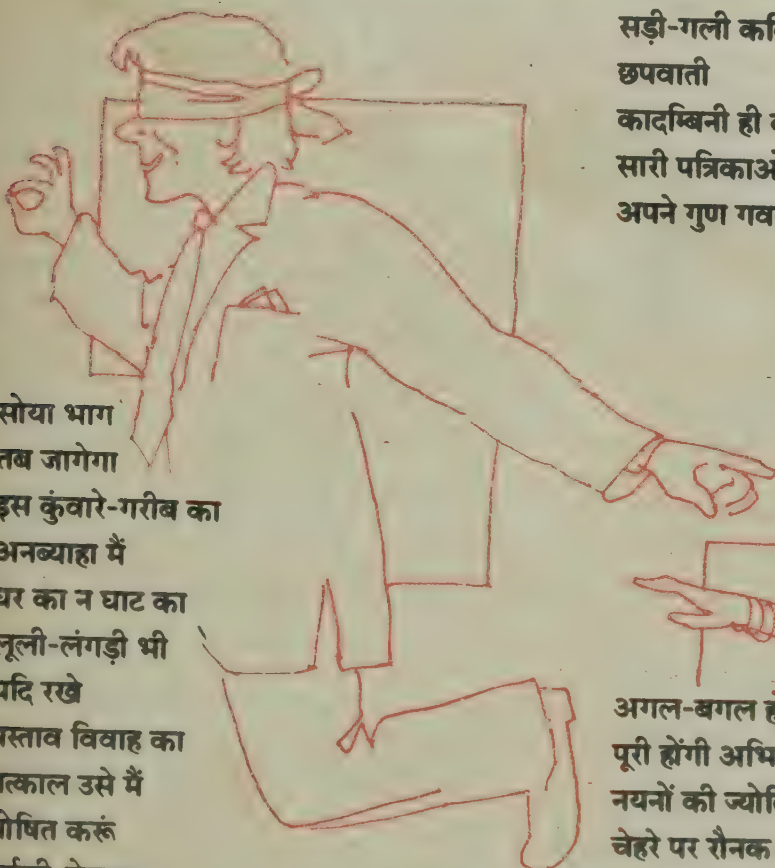
विजय कुमार बजाज

बैंक आफ बड़ौदा,
नेपियर टाउन, जबलपुर

एक बार मैं बन जाती
फैशन परेड की जज
बस
जिंदगी आराम से
कट जाती।
क्योंकि जज बनने से
लक्ष्मी से अच्छी-खासी
मुलाकात हो जाती
फिर जम के अपनी
सड़ी-गली कविताएं
छपवाती
कादम्बिनी ही क्या
सारी पत्रिकाओं से
अपने गुण गववाती !

किरण ओझा

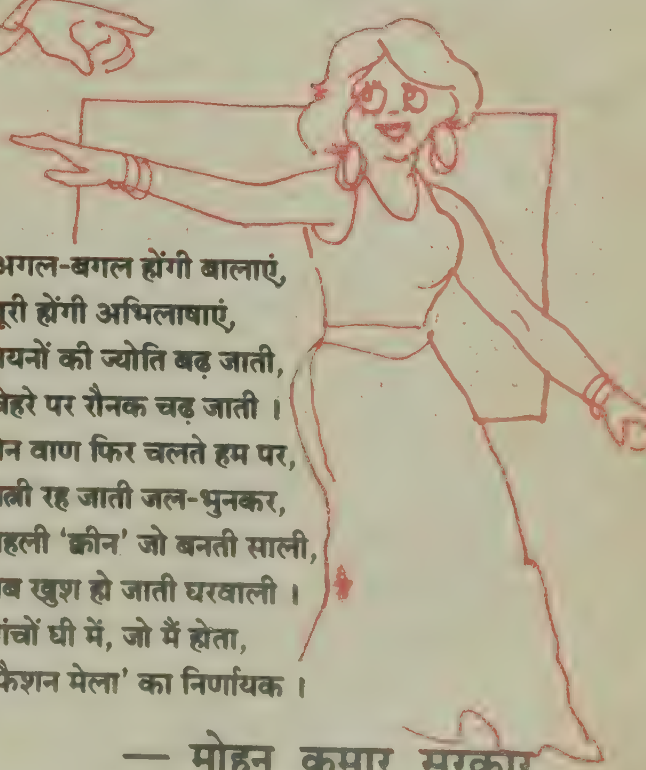
— द्वारा, डॉ. डी.के. ओझा
भगवान बाजार, छपरा (सारण)



सोया भाग
तब जागेगा
इस कुंवारे-गरीब का
अनब्याहा मैं
घर का न घाट का
लूली-लंगड़ी भी
यदि रखे
प्रस्ताव विवाह का
तत्काल उसे मैं
घोषित करूं
उर्वशी-मेनका
यदि बन जाऊं जज
फैशन परेड का !

— दुर्गाशरण मिश्र

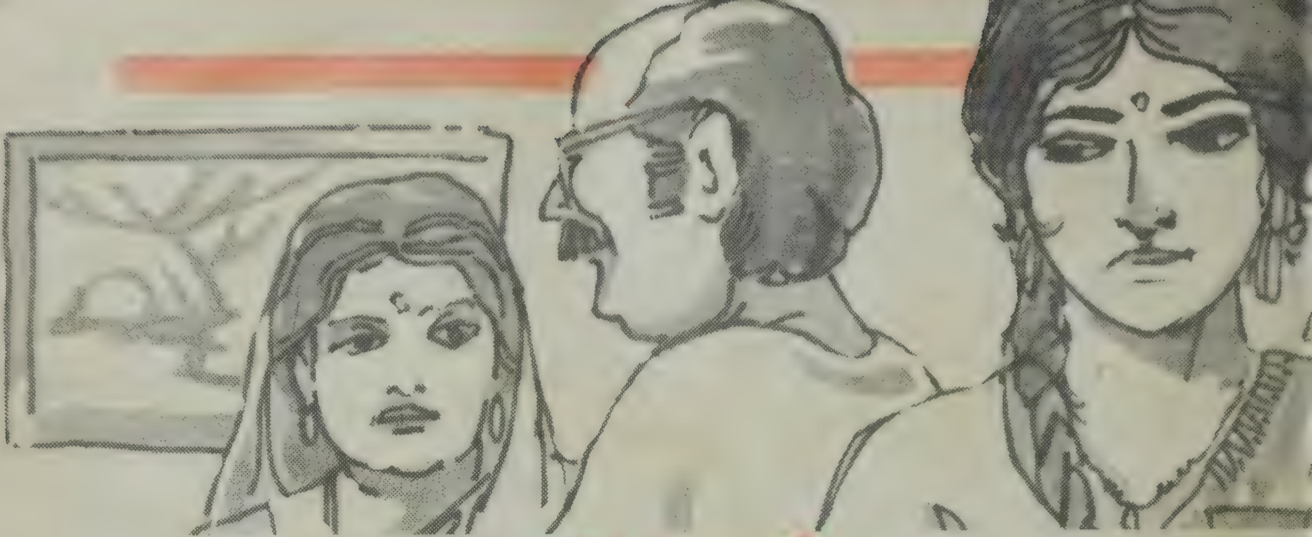
सह-संपादक
'अजेयवाणी' पाक्षिक
सुमंगलम् भवन,
पूर्वी बोरिंग कैनाल रोड, पटना-१



अगल-बगल होंगी बालाएं,
पूरी होंगी अभिलाषाएं,
नयनों की ज्योति बढ़ जाती,
चेहरे पर रौनक चढ़ जाती।
नैन वाण फिर चलते हम पर,
पत्नी रह जाती जल-भुनकर,
पहली 'क्वीन' जो बनती साली,
तब खुश हो जाती घरवाली।
पांचों घी में, जो मैं होता,
'फैशन मेला' का निर्णायक।

— मोहन कुमार सरकार

प्रशासनिक सेवा, अररिया-८५४३११



विसर्जन

● डॉ. पूर्णिमा केडिया अन्नपूर्णा

सगाई के बाद पहली बार भावी पति विमलेश के साथ फिल्म देखने जाते समय उसका हृदय कांपने लगा था ।

यों तो वंदना कई बार कई स्थानों पर भावी पति के साथ गयी थी, किंतु और किसी स्थान पर जाने में पता नहीं क्यों उसे किसी प्रकार का भय या झिझक नहीं हुई थी ।

पर आज पिक्चर हॉल जाते समय उसका हृदय संकोच से जड़ा जा रहा था । हॉल में उसके बगल की कुरसी पर बैठकर तीन घंटे फिल्म देखना ! कैसा तो लग रहा था ।

हालांकि साथ में छोटा भाई शेखर भी था । फिर भी उसका हृदय धक्-धक् किये जा रहा था ।

विमलेश के साथ वह जहां कहीं भी गयी, शेखर उसके साथ ही रहा । शुरू-शुरू में तो विमलेश ने कुछ नहीं कहा । पर एक दिन जब वे विक्टोरिया मेमोरियल के बाहर चाट खा रहे थे और शेखर कुछ दूर पर आइसक्रीमवाले के पास आइसक्रीम खा रहा था, तो विमलेश ने धीरे से कहा था, "क्या मुझ पर विश्वास नहीं है, जो हमेशा एक बॉडीगार्ड अपने साथ लाती हो ?"

वह किंचित मुसकुराकर बोली थी, "घरवाले भेज देते हैं, तो मैं क्या करूं ।"

यह सच है कि माता-पिता चाहते थे कि वह शेखर को अपने साथ ले जाए, पर उसने भी तो इस मामले में घरवालों का कभी विरोध नहीं किया । यदि कोई पूछता भी, 'क्या शेखर को साथ ले जाओगी ?'

तो वह यही कहती, "हां भेज दो, अच्छा रहेगा ।"

छवि-गृह में उसके एक ओर शेखर बैठा था, तो दूसरी ओर विमलेश । वह थोड़ी देर तक भाई की ओर सिमट-सिकुड़कर बैठी रही । बाद में फिल्म में ध्यान लग गया तो न जाने कब सहज होकर बैठ गयी ।

फिल्म सारे मसालों से परिपूर्ण थी । कई सुख-दुःख और नाच-गाने के दृश्य आये । विमलेश और शेखर रसमग्न होकर देख रहे थे ।

वह भी तन्मय हो गयी ।

एक युगल-गीत प्रारंभ हुआ । शेखर देखने में लीन था । अचानक विमलेश ने वंदना का हाथ अपने हाथ में ले लिया ।

वंदना को अजीब-सा लगा । उसने झटके से अपना हाथ छुड़ा लिया ।

विमलेश के चेहरे पर झल्लाहट के भाव उभर आये । पर वंदना को उसकी नाराजगी की कोई परवाह नहीं थी । बल्कि फिल्म छूटने पर वही उससे काफी दूर-दूर चल रही थी छोटे भाई की उंगली थामे-थामे ।

उस दिन चाहे दोनों एक-दूसरे से खिंचे-खिंचे रहे, लेकिन इसका परिणाम वंदना को अच्छा ही लगा । उसके बाद फिर कभी विमलेश ने उसके प्रति प्रेम-प्रदर्शन की वैसी कोई चेष्टा नहीं की ।

दोनों कुछ दूरी बनाकर ही बैठते और तरह-तरह की चर्चाएं करते । अक्सर दोनों अपने कॉलेज-जीवन के किस्से एक-दूसरे को सुनाया करते । दोनों स्नातक थे । विमलेश वंदना से पुराना स्नातक था । वह कई प्रतियोगिता परीक्षाएं उत्तीर्ण करके उच्च अधिकारी बन गया था ।

वंदना ने अभी तक विमलेश से छिपा रखा था कि उसने भी इस बार बैंक की प्रतियोगिता परीक्षा दी है ।

पिक्चर के बाद उस दिन वे एक जलपान-गृह में बैठे चाय की चुस्कियां ले रहे थे । बातों-बातों में अचानक वंदना के मुंह से निकल गया, "मैंने भी इस बार बैंक की परीक्षा दी है । देखिए क्या होता है !"

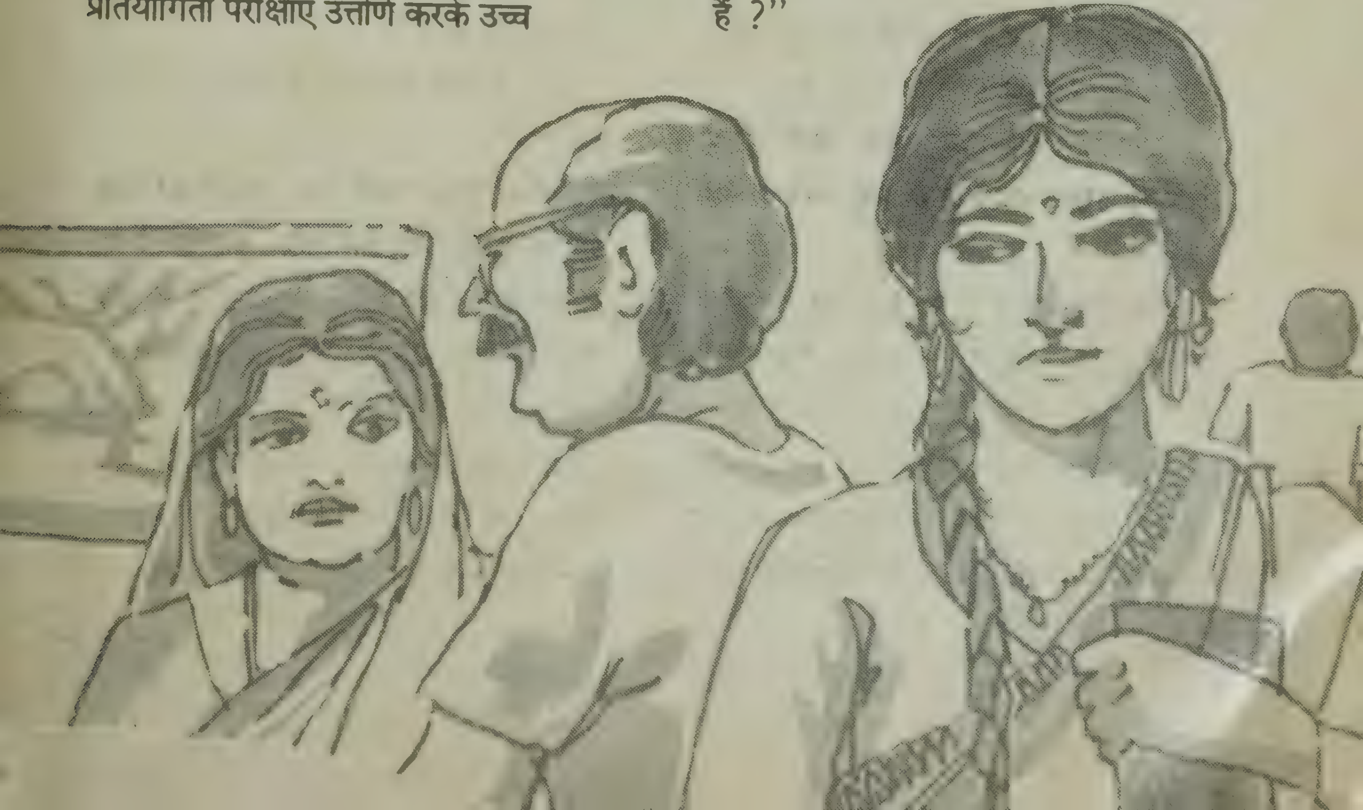
उसने तो सोचा था कि वह सुनकर खुश होगा, या आश्चर्य-चकित हो जाएगा ।

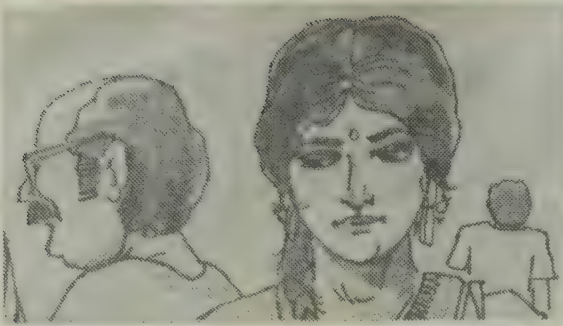
लेकिन वह तो उल्टे नाराज हो गया । बोला, "हमें तुमसे नौकरी नहीं करवानी है । मां-बाबूजी सुनेंगे तो गुस्सा करेंगे ।"

वह बोली, "अभी तो मैंने परीक्षा ही दी है । यह तो प्रतियोगिता परीक्षा है । इसमें उत्तीर्ण होना आसान नहीं ।"

"यदि पास हो गयी तो क्या नौकरी करोगी ?...क्या मैं तुम्हें खिला नहीं सकता ?"

वह हंस दी, "अभी परीक्षा का परिणाम तो आने दीजिए । अभी से इतनी चिंता क्यों कर रहे हैं ?"





बात आयी-गयी हो गयी । फिर घूमना-फिरना और विक्टोरिया में भेल-पूड़ी खाना जारी रहा ।

वह कभी महंगे होटलों में जाना चाहता तो वह मना कर देती, ''बेकार का खर्च मुझे अच्छा नहीं लगता ।''

''बीवी तुम समझदार हो ।''

''बीवी अभी कहां बनी हूं ?''

''मेरा मतलब है कि मैं समझदार पत्नी पानेवाला भाग्यशाली पति बनूंगा ।''

भेल-पूड़ी का मूल्य भी वह सदा विमलेश को ही नहीं चुकाने देतीं; अपना पर्स भी खोला करती ।

पहली बार जब वह पैसे देने लगी तो वह बोला, ''क्यों अपने मां-बाप का खर्च बढ़ा रही हो ? वैसे ही मेरे मां-बाप ने कम दहेज नहीं मांगा है ।''

वह अंदर-ही-अंदर चिढ़ गयी । अपने ही मन में कहा, 'यदि मेरे मां-बाप की इतनी ही चिंता है तो अपने मां-बाप से कह दें कि रोज-रोज दहेज की वस्तुओं की नयी-नयी सूची बनाकर नहीं भेजें । अपनी सामर्थ्य के अनुसार मेरे माता-पिता स्वयं ही काफी उपहार देंगे ।'

लेकिन प्रत्यक्षतः वह कुछ कह नहीं पायी । बस इतना ही बोली, ''ये पैसे मेरे अपने हैं, मैंने किसी से मांगे नहीं ।''

''अपने ?'' उसकी त्यौरियां कुछ चढ़ गयीं ।

''बी. एस-सी. की परीक्षा के बाद घर में खाली बैठे-बैठे अच्छा नहीं लगता था, तो आस-पास के बच्चों को ट्यूशन पढ़ाने लगी थी । वे ही पैसे हैं ।''

वह कुछ बेरुखी से बोला, ''लेकिन अब यह सब कुछ मत करना । हमारे घराने में यह सब नहीं चल सकता ।''

उत्तर में वह मौन ही रही ।

प्रतियोगिता परीक्षा का परिणाम समाचार-पत्र में देखकर वह चौंक पड़ी । वह विजेताओं की श्रेणी में थी ।

पिताजी ने कहा, ''यदि तुम बेटा होती, तो अभी हम तुम्हारा रिजल्ट देखकर कितने खुश होते ।...लेकिन तुम तो पराया धन हो ।''

''क्या बेटी होना इतना बड़ा अपराध है पिताजी कि आप लोग मेरी उन्नति देखकर खुश भी नहीं हो सकते ?''

''खुश तो हैं बेटी । लेकिन सामाजिक रिवाजों के आगे लाचार हैं । यदि तुम बेटा होती तो हम तुझे इंटरव्यू में भेजते । हमारा कितना मान बढ़ता ।...लेकिन तुम्हारी तो सगाई हो चुकी है । अब तो तुम उन लोगों की अमानत हो और वे पुराने खयालों के हैं । वे कभी नहीं चाहेंगे कि उनकी बहू घर से बाहर कोई काम करे ।''

''लेकिन मैं इंटरव्यू दूंगी पिताजी ।''

''जब नौकरी करनी ही नहीं है, तो इंटरव्यू देने से क्या फायदा ?''

''फायदा नहीं तो इससे कोई नुकसान भी तो नहीं पिताजी ।''

"अच्छा, तुम्हारा मन है तो दे दो । पर अपनी ससुरालवालों को कुछ मत बतलाना । वे नाहक बिगड़ जाएंगे ।"

"ठीक है । उन लोगों से कुछ नहीं कहूंगी ।"

जी में तो आ रहा था कि यह खुशी की खबर सबको बतलाये । भावी पति को दफ़्तर में फोन करे । श्वसुरालय के घर में ननद या जिठानी को फोन पर बतलाये ।

लेकिन उसने अपनी खुशी अपने मन में ही समेट ली । यहां तक कि अपनी सहेलियों को भी फोन नहीं किया । कहीं कोई उन लोगों को खबर कर दे तो वे बेकार ही नाराज होंगे ।...और अभी तो साक्षात्कार बाकी ही है । कहीं उसमें असफल हो गयी तो व्यर्थ ही सबको हंसने का मौका मिल जाएगा ।

धड़कते हृदय से उसने साक्षात्कार-कक्ष में प्रवेश किया । पर पता नहीं कैसे प्रश्नकर्त्ताओं के लगभग सारे प्रश्नों के उत्तर ठीक-ठीक दे गयी ।

घर में सब मना रहे थे कि उसका चयन न हो । सुबह-सुबह वह बिछावन पर लेटे-लेटे सुन रही थी । पिताजी कमरे में बैठे अपने बदन पर तेल मालिश कर रहे थे । मां कमरे में पोंछ-पांछ कर रही थीं ।

वे पिताजी से कह रही थीं, "यह नहीं चुनी जाए तो ही अच्छा है । चुनने के बाद नौकरी नहीं करेगी तो इसे बुरा लगेगा ।"

"बुरा तो हमें भी लगेगा । नौकरी भी तो कोई छोटी-मोटी नहीं ।...लड़की अपने पांवों पर खड़ी हो जाती तो अच्छा ही था ।...लेकिन उन्हें नहीं पसंद तो क्या किया जाए ।" पिताजी की आवाज में अफसोस का पुट था ।

"उनसे एक बार पूछ कर तो देख लेते । पैसे कमाएगी तो उन्हीं के घर में आएंगे ।"

"उन्होंने तो सगाई से पहले ही कह दिया था कि उन्हें पढ़ी-लिखी लड़की तो चाहिए, क्योंकि उनका लड़का पढ़ा-लिखा है । पर बहू से नौकरी करवाना उन्हें पसंद नहीं ।"

"एक तरह से अच्छा ही है । लड़की घर में चैन से तो रहेगी । नहीं तो बाहर काम करने से भी औरतों को घर के काम तो करने ही पड़ते हैं ।"

"सो तो है ।"

"घर ही में सुबह से शाम तक कितनी तरह के काम होते हैं । मुझे ही देखिए न सुबह उठकर जो लगती हूं, रात तक कोई-न-कोई काम लगा ही रहता है ।"

"हां, भई हां, मैं मानता हूं कि तुम बहुत काम करती हो ।" कहकर पिताजी हंस पड़े ।

मां भी मुसकुरा दी ।

किंतु सबके न चाहने पर भी वंदना का चयन हो गया । घर में शुभ-समाचार आते ही सबके चेहरे पर प्रसन्नता की एक झलक आयी, फिर लौट गयी ।

पिताजी ने कहा, "तू काबिल है यह तो सिद्ध हो गया ।...लेकिन नौकरी का तो उनके सामने नाम भी मत लेना, नहीं तो यह रिश्ता टूट जाएगा ।"

वंदना ने कोई उत्तर नहीं दिया । वह टूटी डाल-सी बिस्तर पर ढह पड़ी ।

उस रात उसने खाना नहीं खाया तो और किसी ने भी नहीं खाया । कलकत्ता महानगरी में उस समय दुर्गा-पूजा समारोह की धूम-धाम थी । पिछले दो दिनों से वे देर रात गये तक

देवी की विभिन्न प्रतिमाओं के दर्शनार्थ जाते थे। उस दिन भी जाने का कार्यक्रम था, पर कोई नहीं गया।

जिस बात से घर में खुशी की लहर छा जानी चाहिए थी, उसी बात से उदासी बिखर रही थी।

पिताजी एक ठंडी सांस छोड़कर बोले, ''छोटू यदि बड़ा होकर यह परीक्षा पास कर ले, तो हम तर जाएंगे।''

वंदना ने अपने आपसे पूछा, "बेटी इस परीक्षा में उत्तीर्ण हो गयी, तो क्या कुल डूब गया ?...वह यह नौकरी करेगी, तो क्या परिवार की इज्जत नहीं बढ़ेगी ?''

तभी पिताजी का यह वाक्य याद आया, 'नौकरी का तो उनके सामने नाम भी मत लेना, नहीं तो यह रिश्ता टूट जाएगा।'

रिश्ता क्या नौकरी से ज्यादा महत्त्वपूर्ण है ?

वह इस प्रश्न का उत्तर ढूंढ़ ही रही थी कि फोन की घंटी बज उठी।

पिताजी ने फोन उठाया।

''नमस्कार शाह जी !''

तो भावी श्वसुर जी का फोन है।

''हां जी, आपने ठीक ही सुना है, वह चुनी गयी है।''

वह अच्छी तरह सुन पा रही थी। फोन की तेज आवाज गुस्से से भरी थी।

''अब क्या वह नौकरी करेगी ?''

पिताजी ने उसी अनुपात में अपना स्वर कोमल बनाकर कहा, ''जो आपका हुक्म होगा वही होगा मालिक !''

''हमने तो पहले ही कह दिया था कि हमें नौकरी करनेवाली बहू नहीं चाहिए।''

''वह तो मालूम है। उसने तो केवल शौक से परीक्षा दी थी।''

फिर फोन रखने की आवाज आयी।

कुछ ही देर बाद फिर फोन की घंटी बजी। इस बार वंदना के लिए भावी पति का फोन था।

''बधाई हो।''

''जी धन्यवाद !''

''तुम चुनी तो गयी, लेकिन तुम्हें कोई नौकरी-वौकरी नहीं करनी है। यहां घर में सब नाराज हो रहे हैं। खैर अभी तो मैंने सबको समझा दिया है।''

''......''

''कब मिलोगी ?''

''........''

''कल शाम को गंगा-तट पर आओ न।''

''कल तो दशहरा है।''

''हां, इसीलिए तो कह रहा हूं। कल मेरी छुट्टी है।''

''लेकिन गंगा-तट पर तो कल बहुत भीड़ होगी।''

''तो क्या हुआ ! हम विसर्जन देखेंगे। बहुत अच्छा लगता है। ठीक चार बजे पहुंच जाना।''

वह और कुछ बोलती इससे पहले ही फोन कट गया।

कानों में बार-बार गूंज रहा था— 'तुम्हें कोई नौकरी-वौकरी नहीं करनी है।'

अभी तो वह परिणय-सूत्र में बंधी ही नहीं। अभी से उसकी हर इच्छा और हर क्रिया के मालिक वे कैसे हो गये ?

पिताजी ठीक ही कह रहे थे। वह इंटरव्यू

नहीं देती तो ही अच्छा था । अब तो लगता है जैसे खुशियों की मिठाई उसकी थाली में परोस दी गयी है, पर उसे खाने की मनाही कर दी गयी है; मानों उड़ना सीखते ही उसके पंख काट डाले गये हों । पंखहीन पक्षी-सी वह रातभर बिस्तर पर छटपटाती रही । प्रातः आंख लगी ।

सुबह उठी तो सिर दुःख रहा था ।

नाश्ते की मेज पर वह पिताजी से बोली, ''मेरा नौकरी करने का मन कर रहा है पिताजी ।''

''कैसी बातें कर रही हो बेटी ?...वे लोग नाराज हो जाएंगे । सगाई तोड़ देंगे ।''

मां ने रुआंसी होकर कहा, ''कितनी मुश्किल से तो यह सगाई हुई है ।...फिर तो ऐसा घर और ऐसा लड़का मिलना मुश्किल है ।''

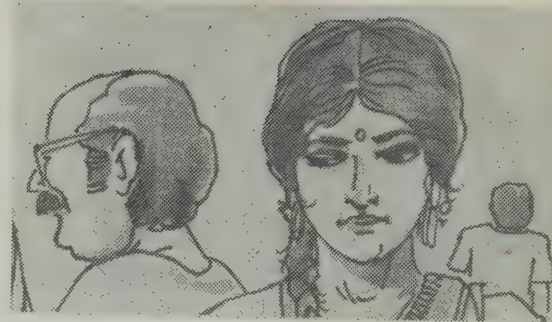
वंदना ने सोचा, उसकी प्रगति के मार्ग में अनेकों बाधाएं हैं, लेकिन वह संकल्प करती है कि वह किसी भी नारी की प्रगति में बाधक नहीं बनेगी ।....उसने अपने आप में एक शक्ति का अनुभव किया । उसके चेहरे पर मुस्कान खिल उठी ।

उसे मुस्कुराते देखकर माता-पिता भी हर्षित हो उठे ।

शाम को जब वह छोटे भाई शेखर के साथ गंगा-तट पर पहुंची तो विमलेश वहां आ चुका था ।

गंगा पर प्रतिमाओं की कतार सजी थी । ट्रकों का तो जैसे मेला लगा हुआ था । गाजे-बाजे, लाउडस्पीकर और जय-जयकार का शोर मचा था ।

विमलेश ने एक स्थान की ओर इंगित करके



कहा, ''चलो उधर चलते हैं । वहां से विसर्जन ठीक से दिखलायी देगा ।''

वह चुपचाप पीछे-पीछे चलती रही । शेखर उसके पीछे था ।

चलते-चलते विमलेश ने मूंगफली खरीद ली ।

निश्चित स्थान पर पहुंचकर रेत-राशि पर अपने-अपने रूमाल बिछाकर तीनों बैठ गये । मध्य में मूंगफली का ठोंगा था । तीनों निकाल-निकालकर खाने लगे ।

जयकारे के साथ देवी-प्रतिमाएं ट्रक से उतारी जातीं । प्रणाम करने और चरण-रज लेने की होड़ लग जाती ।

प्रणाम-पाती और गाजे-बाजे के बाद प्रतिमा को पानी में डाल दिया जाता । मूर्तियां पानी में ऊब-डूब कर रही थीं ।

वंदना के मन में बेचैनी-सी भरती जा रही थी ।

चार दिनों तक जिसकी धूमधाम से पूजा की, अंत में उसे यों पानी में डाल दिया !...क्या यही जीवन का सत्य है ?

मूर्तियां पानी के अंदर जातीं, फिर ऊपर आतीं, मानों वे पानी से संघर्ष कर रही हों । पानी उन्हें डुबा देने को तत्पर था और वे ऊपर आने के लिए प्रयत्न कर रही थीं ।

वंदना को यह ऊब-डूब बड़ी कष्टप्रद लग

रही थी । उसने अपनी आंखें बंद कर लीं ।

विमलेश ने उससे पूछा, "तुम्हें दिखलायी दे रहा है न ?"

उसने आंखें बंद किये-किये ही स्वीकारात्मक सिर हिला दिया ।

"जानती हो कल घर में तहलका मच गया था ।"

"क्यों ?" अब उसने आंखें खोल लीं ।

"तुम्हारी नौकरी की बात सुनकर । पता नहीं किसने घर पर फोन कर दिया था ।...फिर मैंने सबको समझाया ।"

"क्या कहा ?"

"यही कि तुम नौकरी नहीं करोगी । तुमने तो शौकिया इंटरव्यू दिया था ।"

शेखर को पता नहीं क्या सूझी, वह बोल पड़ा, "और यदि दीदी नौकरी कर ले तो क्या हो जाएगा ?"

विमलेश तैश में आ गया । जोर से बोला, "हमारे घराने में औरतें नौकरी नहीं करतीं ।"

शेखर घबरा-सा गया । वह बारी-बारी से वंदना और विमलेश की ओर देखने लगा ।

वंदना ने सोचा, औरतें घर से बाहर जा कर कुछ करें, यह रिवाज तो पहले किसी परिवार में नहीं था । धीरे-धीरे कुछ महिलाएं आगे आयीं । फिर तो बहुत-सी आंखें खोलकर चलने लगीं ।

वह भावी पति का मत जानने के लिए विमलेश से पूछ बैठी, "क्या नारी का घर से बाहर कार्य करना आप भी बुरा समझते हैं ?"

"यदि औरतें घर के बाहर कार्य करेंगी तो घर के काम-काज कौन करेगा ?"

"घर के कामों के लिए किसी को रखा जा सकता है, या मिल-जुलकर निपटाये जा सकते हैं । स्त्री और पुरुष दोनों को ही घर-बाहर के दोनों तरह के कामों में योग्यता हासिल करनी चाहिए ।"

"दोनों को दोनों तरह के काम करने की क्या जरूरत है ? ठीक तो है— एक घर के कार्य करे और दूसरा बाहर के काम करे । सभी पुरुष घर का काम नहीं कर सकते ।"

"कोशिश करके सीख सकते हैं ।...जो नहीं सीख पाते उनकी स्त्रियां भी दुगुनी मेहनत करके घर और बाहर दोनों बखूबी संभाल रही हैं ।"

विमलेश खीझकर बोला, "दरकार क्या है डबल मेहनत करने की ?"

वंदना हंसी, "जब तक वह दुगुनी मेहनत नहीं करेगी, उसका उद्धार नहीं हो सकता ।...जब वह अपने पैरों पर खड़ी हो जाएगी, तभी उसकी घर की मेहनत का भी मूल्य आंका जाएगा । नहीं तो बस वह बोझ ही समझी जाती रहेगी ।"

मूंगफली खतम हो गयी थी । विमलेश ने एक झटके से खाली ठोंगा उठाकर फेंक दिया और चिढ़कर बोला, "देखो, मैं तुम्हें साफ बतलाये देता हूं । अगर तुम नौकरी करोगी तो मेरे घरवाले तुम्हें कभी स्वीकार नहीं करेंगे ।"

शेखर डरकर बीच में बोल पड़ा, "लेकिन दीदी तो यह नौकरी नहीं कर रही हैं ।"

वंदना तनिक आवेश में बोली, "हां, मैं यह नौकरी नहीं कर रही हूं, क्योंकि आपके घरवालों को पसंद नहीं ।...पर एक क्षण के लिए मान लीजिए, यदि मैं नौकरी करने लग जाऊं, तो क्या आप भी उसे बुरा समझेंगे ?"

विमलेश मुस्कुराया, "मैं घरवालों से अलग

तो नहीं हूं ।"

वंदना को लगा जैसे उसके मुंह पर एक तमाचा आ लगा हो ।

वह मौन होकर पुनः डूबती हुई प्रतिमाओं की ओर देखने लगी । अब तक ढेर सारी मूर्तियां जल को सुपुर्द की जा चुकी थीं । वे सब बेचैनी से ऊब-डूब करती हुईं जल से संघर्ष कर रही थीं ।

वंदना को लगा जैसे वह भी एक प्रतिमा है ।

कारीगर ने कितने परिश्रम से ये प्रतिमाएं गढ़ी होंगी, इन पर रंग-रोगन लगाया होगा, पर अब सब कुछ पानी में घुल रहा है । मूर्ति का अस्तित्व ही जल में निमज्जित हो रहा है ।

उसे भी उसके मां-बाप ने कितने लाड़-दुलार से पाला-पोसा, पढ़ाया-लिखाया और जब वह अपने पांवों पर खड़ी होने योग्य हुई, तो उसे भी जल-समाधि दी जा रही है ।

मूर्तियां एक-एक करके जल में विलीन हो रही थीं ।

कुछ दिनों में वंदना का अस्तित्व भी विलीन हो जाएगा । उसकी सारी इच्छाएं, सारे अरमान यों ही डूब जाएंगे ।

क्या यही मानव-जीवन की सार्थकता है ?

उसका हृदय हाहाकार कर उठा । लगा वह भी इन देवी-प्रतिमाओं के साथ जल लीन होती जा रही है । उसके गुण, प्रतिभा, योग्यता सब कुछ पानी में समाते जा रहे हैं ।

उसके मस्तिष्क की शिराएं झनझनाने लगीं । अनजाने ही उसके मुंह से एक चीख निकल पड़ी, "नहीं !...नही ।"

विमलेश ने घबराकर पूछा, "क्या हुआ ?...तुम्हारी तबियत खराब है क्या ?"

वह कानों पर दोनों हाथ रखे चीखती रही, "नहीं मैं विसर्जन नहीं होने दूंगी । नहीं !...नहीं.... !

"विसर्जन नहीं होने दोगी ?...अरे यह तो पूजा का नियम है । चार दिन पूजा जाता है, फिर बहा दिया जाता है ।"

"नहीं, मैं अपना विसर्जन नहीं होने दूंगी । नहीं...नहीं...नहीं !" ।

वह घर की ओर दौड़ती जा रही थी । शेखर उसके पीछे-पीछे दौड़ रहा था ।

विमलेश तेज कदमों से कुछ दूर उसके साथ चला । फिर बोला, "पागल, तुम्हें कौन डुबा रहा है ?"

वह रुककर चीखी, "आप ! आप ! आप मुझे डुबाना चाहते हैं ।"

वह आश्चर्य से बोला, "मैं क्यों डुबाऊंगा तुम्हें ?...इन मूर्तियों का डूबना देखकर डर रही हो ?...ये तो देवी हैं, डूबकर भी नहीं डूबतीं ।"

"पर मैं तो इंसान हूं । डुबाने से डूब ही जाऊंगी ।"

वह फिर दौड़ने को उद्यत हुई, तो वह बोला, "रुक जाओ, बताओ तो सही क्या हुआ है ?"

"मुझे कुछ नहीं हुआ है । पर मैं अब रुक नहीं सकती ।...आप जैसे व्यक्ति के लिए मैं अपनी दौड़ नहीं रोक सकती ।"

"तो फिर किसके लिए रुकोगी ?"

"उसके लिए जो मेरी पूजा-अर्चना करके मुझे पानी में नहीं फेके ।...मैं डूब नहीं सकती । नहीं !...नहीं !" कहती हुई वह दौड़ती चली जा रही थी ।

ई-१८ सैक्टर-तीन रांची-८३४००४

वैद्य की सलाह

पुष्पा देवी, कलकत्ता

प्रश्न : उम्र तिरेपन साल । (अम्ल) खाने के बाद उल्टी, भय, चिंता, घबराहट, मन नहीं लगता, नींद की कमी । अधिक वायु होने पर योनी द्वारा भी वायु निकलती प्रतीत होती है । बीस साल से परेशान हूं ।

उत्तर : 'अविपत्तिकर चूर्ण' दो-दो चम्मच सुबह-दोपहर-रात पानी से लें । 'लशुनादिवटी' एक-एक वटी भोजन बाद पानी से लें ।

श्रीमती कमला, भागलपुर

प्रश्न : उम्र पैंतीस साल, दो संतान । गठिया रोग के साथ गर्भाशय का आकार बढ़ गया है । कब्ज रहती है । ऐलोपैथी दवा लेना नहीं चाहती हूं । देशी उपचार लिखें ।

उत्तर : 'चन्द्रांशुरस' एक वटी 'चन्द्रप्रभावटी' एक वटी, सुबह-शाम गर्म पानी से । 'दशमूलारिष्ट' दो चम्मच 'अशोकारिष्ट' दो चम्मच भोजन बाद पीयें । छह माह आहार-विहार का परहेज कर औषधियां सेवन करें ।

हरि सेन, फरीदाबाद

प्रश्न : उम्र साठ साल, अधरंग दो साल पहले हुआ था । ब्लड प्रैशर-शूगर-कब्ज की शिकायत अक्सर बनी रहती है । ऐलोपैथी दवा का प्रयोग करता रहता हूं । कमजोरी बढ़ रही है । कोई इलाज बतायें ।

उत्तर : 'महायोगराज गूगल' एक वटी 'चन्द्रप्रभावटी' एक वटी सुबह-शाम हल्के गर्म पानी से लें । 'अश्वगंधारिष्ट' दो चम्मच भोजन बाद पीयें । 'सर्पगंधावटी' एक-एक वटी दोपहर-रात पानी से लें ।

आर.डी. सिंह, सुल्तानपुर

प्रश्न : उम्र बयालीस साल । सारे साल खारिश बनी रहती है व खुश्की मालूम पड़ती है । बहुत से इलाज करा चुका हूं । थोड़ा समय ठीक रहता हूं फिर वही स्थिति बन जाती है । अच्छी दवा लिखें ।

उत्तर : 'पंचतिक्तघृत गूगल' एक-एक चम्मच सुबह-रात दूध से लें । शारिवाद्यासव दो-दो चम्मच भोजन बाद पीयें ।

उभंग, कलकत्ता

प्रश्न : उम्र तीस साल । याददाश्त दिन पर दिन कम हो रही है । देखने से स्वस्थ हूं, अपने आप में भी कोई रोग नहीं जान पड़ता । सरल दवा लिखें ।

उत्तर : 'शंखपुष्पी' चूर्ण बना लें । आधा-आधा चम्मच नियमित सुबह-रात दूध अथवा पानी से लें ।

एस.के. जैन, बड़ौत

प्रश्न : रीढ़ की हड्डी में अक्सर दर्द हो जाता है । अंगरेजी दवा लेता हूं उस समय ठीक हो जाता है, किंतु दस-पंद्रह दिन के बाद वही स्थिति बन जाती है । उचित सलाह दें ।

उत्तर : 'चन्द्रप्रभावटी' एक वटी 'महायोगराज गूगल' एक वटी सुबह-रात दूध से लें । 'समीरपन्नग रस' तीन ग्राम, 'रसराज रस' तीन ग्राम, साठ मात्रा बनायें । एक-एक मात्रा दिन में दो बार शहद से लें ।

माडू सिंह, गंगानगर

प्रश्न : उम्र तीस साल, विवाहित-तीन बच्चे । पैर की पिंडलियों में बहुत दर्द होता है । खासतौर पर रात के समय बहुत बेचैनी रहती है, सभी प्रकार के टेस्ट करा चुका हूं । सभी कुछ ठीक है । अच्छी दवा बतायें ।

उत्तर : 'योगराज गूगल' एक वटी 'चन्द्रप्रभावटी' एक वटी सुबह-रात दूध से लें ।

अश्वगंधारिष्ट' दो चम्मच 'दशमूलारिष्ट' दो चम्मच भोजन बाद पीयें ।

हेमन्त, वाराणसी

प्रश्न : उम्र बत्तीस वर्ष । गरमियों में पेशाब कम आता है साथ में जलन रहती है । अभी कोई दवा नहीं ली है । वैसे स्वस्थ अनुभव करता हूं । साधारण दवा लिखें ।

उत्तर : 'चन्दनासव' दो चम्मच भोजन बाद पीयें । 'गोक्षुरादि गूगल' एक-एक वटी सुबह-रात पानी से लें ।

शुभांगी, नासिक

प्रश्न : उम्र तीस साल, अविवाहिता हूं । लगभग पांच वर्ष से मासिक समय से पूर्व व अधिक मात्रा में होता है । प्रदर की शिकायत है । ऐलोपैथी इलाज से थोड़े समय लाभ रहता है, किंतु फिर वही स्थिति बन जाती है । स्थायी लाभ के लिए दवा लिखें ।

उत्तर : 'पुष्यानुग' चूर्ण साठ ग्राम, 'मुक्ताशुक्ति भस्म' पंद्रह ग्राम, साठ मात्रा बनायें, एक-एक मात्रा सुबह-शाम पानी से लें । 'अशोकारिष्ट' दो-दो चम्मच भोजन बाद पीयें ।

रामरूप, आगरा

प्रश्न : उम्र चवालीस साल । दोनों पैरों की एड़ियों में दर्द रहता है । कई बार तो चलना मुश्किल हो जाता है । कई प्रकार की दवा ले चुका हूं, खास फायदा नहीं । जल्दी फायदा हो ऐसी दवा लिखें ।

उत्तर : 'केशोर गूगल' एक वटी 'सिंहनाद' गूगल एक वटी सुबह-रात गर्म पानी से लें । गर्म पानी में नमक डालकर, एड़ियों को कुछ देर रखें ।

कुमारी प्रतिमा देवी, मुरादाबाद

प्रश्न :उम्र इक्कतीस साल । आयोडीन की कमी के कारण एक गोला-सा बन गया । डॉक्टर आप्रेशन की सलाह देते हैं । कोई आयुर्वेदिक दवा लिखें ।

उत्तर : 'कांचनार गूगल' एक वटी 'केशोरगूगल' एक वटी सुबह-दोपहर-रात गर्म पानी से लें । 'शारिवाद्यासव' दो-दो चम्मच भोजन बाद पीयें ।

श्रीमती सुमन, मन्दसौर

प्रश्न : उम्र पच्चीस साल । विवाह हुए दस वर्ष हो गये, तीन वर्ष बाद एक लड़की हुई । उसके बाद से स्तन एकदम सूख गये । कभी-कभी स्तन से पानी भी रिसने लगता है ।

उत्तर : 'केशोर गूगल' एक वटी, 'असगंधचूर्ण' आधा चम्मच, एक साथ सुबह-रात दूध से लें 'कासीसादि तेल' स्तन पर शनैः शनैः मालिश करें ।

—कविराज वेदव्रत शर्मा

नाम .... आयु..............................

रोग के लक्षण .... कब से है ....

अब तक क्या इलाज किया.................... ....

वैद्य की सलाह

द्वारा— संपादक— 'कादम्बिनी'

हिंदुस्तान टाइम्स भवन, नयी दिल्ली-१

नयी कृतियां

हमारी युवा पीढ़ी आजादी के उन दीवानों से भलीभांति परिचित नहीं है, जिन्होंने अपने देश की जनता के सुखमय भविष्य के लिए अपने वर्तमान की आहुति दे दी । आज जब राजनीति एक व्यवसाय बन चुकी है, तब यह जानकारी देना आवश्यक है कि अतीत में हजारों भारतीय युवाजन ऐसे भी थे, जो फल की चाह किये बिना कर्म करते थे और हंसते-हंसते अपना बलिदान दे दिया करते थे । ऐसे देशभक्त लोगों से परिचित कराने का काम हिंदी के वरिष्ठ लेखक और पत्रकार श्री जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी ने अपनी पुस्तक **हमारा स्वाधीनता संग्राम'** में किया है ।

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने बताया है कि भारतीय स्वाधीनता संग्राम उस समय से ही प्रारंभ हो गया था, जब अंगरेजी राज अपने पैर भी इस धरती पर नहीं जमा पाया था । यह कहानी १८०५ के वेलोर विद्रोह से शुरू होती है, जिसकी परिणति १८५७ के स्वाधीनता युद्ध में हुई । इस पुस्तक की विशेषता यह है कि पाठक को ऐसा महसूस होता है जैसे कि उक्त संबंधित व्यक्ति उसके सामने हैं और सभी घटनाएं चलचित्र की तरह उसके सामने ही घट रही हैं ।





हमारा स्वाधीनता संग्राम
लेखक :— जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी,
प्रकाशक— साहित्य संग्राम, इलाहाबाद, मूल्य— ५० रुपये ।

राष्ट्रपति, संसद और प्रधानमंत्री : सामान्यतया यह माना जाता है कि लोकतंत्र पश्चिम की देन है, लेकिन भारतीय पुराण और इतिहास इस मान्यता को स्वीकार नहीं करते कि भारत में सदा निरंकुश राजतंत्र ही रहा था । राजा भ ले ही रहे थे किंतु वे अपनी प्रजा की भावनाओं का सम्मान करते थे ।

विगत कई वर्षों में इस आशय के प्रश्न अनेक बार उठाये गये हैं कि हमारे लोकतंत्र ने कहां तक उन्नति की है, वह कितना मजबूत हुआ है । हमारे शासन सूत्र को संभालने वाले राष्ट्रपति, प्रधान मंत्री, राज्य पाल, मुख्य मंत्री, आदि की भूमिकाएं इस दिशा में कहां तक सहायक रही हैं । इन पदाधिकारियों के अधिकारों में यदि कभी कोई टकराव की स्थिति आयी है तो इसमें दोष संविधान का है या उसकी परिभाषा करनेवालों का । इन सब प्रश्नों

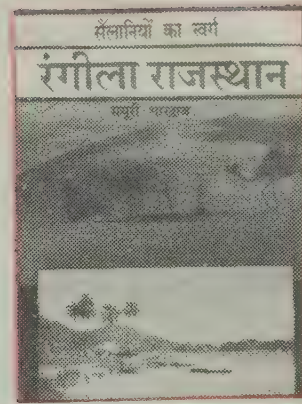
का समाधान प्रस्तुत किया गया है राष्ट्रपति **संसद और प्रधान मंत्री में** ।

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने पिछले चालीस वर्षों के राजनैतिक घटनाक्रम को कुछ विशिष्ट संगठनों के परिप्रेक्ष्य में पेश करने का आश्वस्तपूर्ण ढंग से प्रयास किया है । इसी संदर्भ में राष्ट्रपति पद की परंपरा और अधिकारों की चर्चा की गयी है, प्रधान मंत्री के दायित्वों और अधिकारों का विश्लेषण किया गया है, राज्य सरकारों के संदर्भ में केंद्र की जिम्मेदारियों का जिक्र हुआ है, राज्यपालों की भूमिका पर विचार प्रस्तुत किये गये हैं तथा यह भी बताया गया है कि सदन और विधान मंडलों के प्रति इनकी मर्यादाएं क्या हैं । संसदीय कार्य में प्रेस की भूमिका की चर्चा भी इसमें हुई है और राष्ट्रपति तथा प्रधान मंत्री विषयक परंपराओं एवं संस्मरणों से संबंधित अध्यायों की तरह यह भी रोचक और ज्ञानवर्द्धक है ।

राष्ट्रपति, संसद और प्रधानमंत्री,
लेखक— जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी,
प्रकाशक— साहित्य संगम, इलाहाबाद, मूल्य— ७५ रुपये ।

—अनन्त राम गौड़

रंगीला राजस्थान : राजस्थान के गौरवमय अतीत, उसकी समृद्ध सांस्कृतिक परंपराओं एवं दर्शनीय दुर्गों तथा मंदिरों का समग्र परिचय देनेवाली यह एक उपयोगी कृति है । लेखिका हैं— मयूरी भारद्वाज, जिन्होंने देश के पर्यटन-स्थलों पर काफी-कुछ लिखा है । सत्ताइस अध्यायों में बंटी इस कृति में प्रारंभ में राजस्थान की परंपराओं एवं वहां के भव्य मंदिरों का अच्छा परिचय दिया गया है । बीच के



अध्यायों में राजस्थान में बसनेवाली जन जातियों के इतिहास, उनकी जीवन-शैली पर प्रकाश डाला गया है । अंतिम अध्यायों में राजस्थान के प्रमुख नगरों एवं ऐतिहासिक दुर्गों का वर्णन है ।

इस कृति की एक विशेषता यह है कि इसमें राजस्थान के पर्यटन-स्थलों के संबंध में भी काफी अच्छी जानकारी दी गयी है । लेखिका ने अन्य प्रसिद्ध स्थलों के साथ-साथ रणकपुर, वेणेश्वर, रामदेवरा, शेखावाटी, बूंदी के अतिरिक्त सरिस्का और भरतपुर के अभयारण्य क्षेत्रों की विशेषताओं पर भी विशद प्रकाश डाला है ।

लेखिका ने एकाधिक बार राजस्थान की यात्राएं की हैं और उसके गौरवमय अतीत, परंपराओं और जन-जीवन को आत्मीय दृष्टि से देखा है, फलतः यह कृति मात्र परिचय-पुस्तक न होकर एक सृजनात्मक कृति बन गयी है । पर्यटन-प्रेमी पाठकों के लिए यह बेहद उपयोगी सिद्ध होगी ।

रंगीला राजस्थान,
लेखिका— मयूरी भारद्वाज, प्रकाशक— मयूर प्रकाशन, १६/सी-१, हिंदुस्तान टाइम्स अपार्टमेंट्स, मयूर विहार, फेज— एक, दिल्ली— मूल्य —१५० रुपये ।

— दु.प्र. शुक्ल

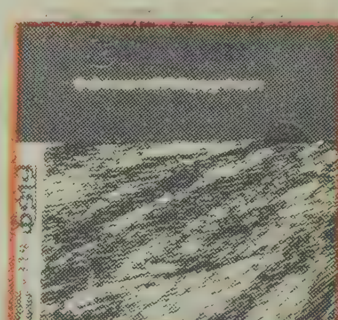
हाइकु १९८९ : इधर कुछ सालों से जापानी काव्य-रूप हाइकु हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में काफ़ी लोकप्रिय हो रहा है। यह ५ जमा ७ जमा ५—कुल मिलाकर १७—अक्षरों की कविता है, जो देखने में छोटी और 'घाव' करने में गंभीर है। "हाइकु-१९८९" में हिंदी के तीस हाइकु-कवियों की २१० रचनाएं हैं। सभी रचनाएं प्रतिनिधिक हैं। बानगी के तौर पर डॉ. विद्याबिंदु सिंह का एक हाइकु देखिए—"बुलाओ मुझे/पुआल के बिछौने/सोना चाहता हूं।" इसमें महानगर-जीवन की थकान और अपने जाने-पहचाने परिवेश (पुआल के बिछौने) की ओर लौटने की ललक रूपायित हुई है।

जैसा कि इस संकलन के प्रस्तावना-लेखक डॉ. सत्यभूषण वर्मा ने कहा कि, "हाइकु केवल कविता ही नहीं, शब्द की साधना भी है।"

हम हिंदी के इस प्रथम प्रतिनिधि हाइकु-संकलन का स्वागत करते हैं।

हाइकु-१९८९; संपादक-कमलेश भट्ट "कमल" और रामनिवास पंथी; प्रकाशक-अयन प्रकाशन; नयी दिल्ली; मूल्य-पचास रुपये।

—डॉ. मोतीलाल जोतवाणी



प्राणिमा : दार्शनिक चिंतन से ओतप्रोत एक खंड काव्य है, जिसमें कवयित्री श्रीमती माधवीलता शुक्ल ने भारतीय दर्शन के आदर्शों एवं सिद्धांतों को काव्यात्मक अभिव्यक्ति दी है । इस कृति में ब्रह्म, प्रकृति, जीव, ज्ञान, भक्ति, कर्म और मर्म शीर्षक सात अध्याय हैं । 'ब्रह्म' शीर्षक अध्याय में जहां ब्रह्म की परिभाषा एवं जीव, विश्व तथा प्रकृति के साथ उसके संबंधों का तात्विक विवेचन है तो 'प्रकृति' शीर्षक अध्याय में उसके सौंदर्यमय माया रूप का वर्णन है । 'जीव' शीर्षक अध्याय में आत्मा एवं परमात्मा को लेकर अद्वैत सिद्धांत का प्रतिपादन है तो 'भक्ति' शीर्षक अध्याय में कवयित्री ने भक्ति की महत्ता दर्शायी है । वे ज्ञान एवं वैराग्य के साथ भक्ति को भी महत्त्वपूर्ण मानती हैं । यथा— **पास जिनके ज्ञानबल, वैराग्यबल और मन में भक्ति है आह्लादिनी वे पुरुष श्रद्धालु जग को लोष्ठवत छोड़ देते चित रमाकर इष्ट में**

जीवन में कर्म का भी महत्त्वपूर्ण स्थान है । कवयित्री उसे धर्म का पहला सोपान और सारे जगत का मर्म मानती है । कर्म कई प्रकार के हैं, पर जो 'जीव को सुख दे वही सत्कर्म है ।' कवयित्री के अनुसार— **अर्थ जीवन का सदा पाते वही कर्म पर विश्वास है जिसको घना**

अंतिम अध्याय 'मर्म' में कवयित्री ने 'प्राणिमा' की सारगर्भित व्याख्या प्रस्तुत की है । 'प्राणिमा' में प्रयुक्त छंद बरबस स्व. हरिऔधजी की प्रसिद्ध रचना 'प्रियप्रवास' की याद ताजा कर देते हैं ।

प्राणिमा
कवयित्री : श्रीमती माधवीलता शुक्ला
प्रकाशक— बृहस्पति प्रकाशन, १५/९१ सिविल लाइंस, कानपुर, मूल्य : पचास रुपये ।





यूं हीं : श्रीमती सरोज चमोली की ६९ कविताओं का संग्रह है । कुछ कविताएं छंदबद्ध हैं और कुछ अतुकांत । इन कविताओं में एक ओर जहां सम-सामयिक जीवन की विडंबनाओं के फलस्वरूप उपजी प्रतिक्रियाएं हैं तो दूसरी ओर उनमें आस्था और विश्वास के स्वर भी हैं । कवयित्री भौतिक अथवा आध्यात्मिक, हर प्रकार की उन्नति के लिए अहम् के त्याग को जरुरी समझती है । इसी तरह पीड़ा उसके लिए नयी दिशा का निर्देशक बनकर आती है । इन कविताओं की एक विशेषता उनकी सरल भावाभिव्यक्ति है, शब्दों-उपमाओं— अलंकारों के आवरण से सर्वथा दूर । यथा—

यहां थी उमंग । कभी । तमन्ना भी
थी जहां ।
पर । अब तो । वास में है ।
अश्रुसिक्त । आंचल ।
उसमें भी । ऊपर फूल है ।
और । अंदर से । शूल कांटे ।

यूं ही
कवयित्री— सरोज चमोली, प्रकाशक— प्रेम— चिंतामणि प्रकाशन, एस-९१, सुंदर ब्लाक, शकरपुर, दिल्ली, मूल्य— चालीस रुपये ।

— बृजेश कुमार

तनाव से मुक्ति

डॉ. सतीश मलिक

र. दिल्ली : अठारह वर्ष का बारहवीं का प्राइवेट छात्र हूं। दिनभर खाली रहता हूं। भावुक व गुस्से वाला हूं। पिछले माह एक दिन दो लड़कों को लड़ते देखा तो मैं सोचने लगा कि कहीं उनकी मेरे से लड़ाई न हो जाए। तत्पश्चात अब कल्पना में कभी किसी व्यक्ति से तो कभी किसी से लड़ाई न हो जाए— सोचता रहता हूं। दिनभर बस यही वहम घूमते हैं— मानसिक संतुलन बिगड़ गया है— पढ़ाई चौपट हो गयी है। क्या मैं ठीक हो जाऊंगा या आत्महत्या तो नहीं कर बैठूंगा या पागल तो नहीं हो जाऊंगा।

आप बहुत तनावपूर्ण मनोस्थिति से गुजर रहे हैं— इससे हमें आपसे पूरी सहानुभूति है। वास्तव में बारहवीं परीक्षा भी काफी महत्त्वपूर्ण होती है तथा कड़ी प्रतियोगिता होती है। आपको कैरियर भी तभी चुनना होता है। वास्तव में अब आपने जिंदगी की लड़ाई में कदम रखा है। आप दूसरे लड़कों की तुलना में कैसे निकलते हैं— किसी भी क्षेत्र में— यह भी इसी आयु में तय होता है। आपकी मानसिक मनोस्थिति इसी संघर्ष का प्रतीक है तथा यदि आप कल्पना से कर्म के कुरुक्षेत्र में उतर आएं तथा डरपोक बनकर संघर्ष से न भागें, तो आप लड़ने से न कल्पना में, न ही वास्तविकता में डरेंगे।

मी. मे., नयी दिल्ली : मैं २५ वर्ष की हूं। पांच साल पहले एक विजातीय सहपाठी से प्रेम करती थी। धर्म अलग-अलग थे। पढाई में मेरी वह बहुत सहायता करता था। मैंने अपनी दोस्ती व प्यार को कभी छिपाने का प्रयास नहीं किया। लोग, इसीलिए हमारे बारे में तरह-तरह की अटकलें लगाते। दो साल बाद उसका व्यवहार बदलने लगा, न वह मिलने का उत्सुक था, न ही मिलने पर खुशी जताता। घर में धर्म के कारण उसे कोई नहीं चाहता था परंतु मैं सोचती थी कि अपने मां-बाप को मना लूंगी। परंतु उसकी बेरुखी देखकर बहुत मुश्किल से अपनी मनोस्थिति को इससे उबारा तथा आगे पढ़ी। अब वह एक और मित्र के साथ मेरी सहेलियों के साथ मेरे बारे में उल्टी-सीधी बात करता फिरता है तथा मेरी सहेलियां कहती हैं कि उसे मुझ पर शक था किसी और सहजातीय लड़के को लेकर। क्या उसका लक्ष्य मुझे मेरी सहेलियों के सम्मुख नीचा गिराना है। वह मुझसे ही साफ-साफ क्यों नहीं बात करता। क्या मुझे इस प्रकरण को बिना बात किये ही खत्म करना चाहिए।

अब उसकी नौकरी लग गयी है— तथा वह सोचता है कि मैं इस लालच में हूं कि उससे शादी कर लूं। आजकल सहजातीय लड़का घर आता-जाता है तथा मेरे घरवाले मेरी उससे शादी कर देना चाहते हैं। उन्हें मेरे पिछले प्रेम-प्रसंग का कुछ पता नहीं। परंतु मैं सोचती हूं कि यदि मैं इस सहजातीय लड़के से शादी के लिए तैयार हो जाऊं तो उसके शक की और पुष्टि हो जाएगी हालांकि इसमें कोई वास्तविक तथ्य नहीं। क्या मुझे इस लड़के को अपने प्रेम-प्रसंग के बारे में बता देना चाहिए। वह कहता है मुझे तुम्हारी पिछली बातों से क्या लेना।

पिछले एक माह से खाना-पीना, सोना, पढ़ना सब कम हो गया है क्योंकि मां-बाप मेरी शादी के लिए 'हां' की प्रतीक्षा में हैं— और मैं आपकी सलाह के !

यदि दूसरे सहजातीय लड़के से आपका मन पक्की तरह से शादी कर लेने का है तो आप यदि चाहें तो उसे अपने पूर्व प्रेम-प्रसंग के बारे में बता दें । क्योंकि आपका प्रेम-प्रसंग खुले तौर से था तथा चर्चा का विषय भी तो अवश्य ही था । उसे कभी-न-कभी बाद में भी पता तो चल ही जाएगा । इसलिए क्यों न आप स्वयं ही उसे बता दें ।

आप यदि मानसिक तौर पर फिर भी अपने आप को तैयार नहीं कर पा रहीं तो उससे खुलकर सब बात कर लेने में भी कोई हर्ज नहीं ।

आपकी समस्या हमने ध्यान से कई बार पढ़ी और इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि जो व्यक्ति आप पर शक करता है, तथा खुलकर आपसे बात करने की बजाय वह आपको आपकी सहेलियों की नजरों में नीचा दिखाता है— और यह सब विवाह से पूर्व है तो अवश्य ही वह आपके योग्य नहीं ।

विमलेश, ग्वालियर : मैं बाइस वर्षीय एम.ए. अंगरेजी की छात्रा हूं । छह महीने पहले छत से गिर जाने के कारण मेरी बायीं पसली की तीन हड्डियां टूट गयी थीं । इलाज से वो ठीक हो गयीं, पर सीधे लेटने या बायीं करवट लेटने से दर्द होता है । अभिभावक मेरा विवाह करने जा रहे हैं । मैं बहुत परेशान हूं कि विवाह के बाद पति से क्या कहूंगी । आप ही सलाह दें—क्या मैं विवाह कर लूं ?

ऐसा लगता है कि फ्रेक्चर ठीक होने के बाद की जानेवाली एक्सरसाइज ठीक से नहीं की गयी, पर अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा है । अब आप प्रतिदिन हलके गरम पानी से तौलिया गीलाकर दो बार अवश्य सिकाई कीजिए । गहरी, लंबी सांस लीजिए । किसी ''फीजियोथेरेपिस्ट'' की भी सलाह ले सकती हैं । इस प्रकार की चोट लगने के बाद कुछ दिन इस तरह का दर्द रहता ही है, इस तरफ ज्यादा ध्यान न ही दें ।

इस स्तंभ के अंतर्गत अपनी समस्याएं भेजते समय अपने व्यक्तिगत जीवन का पूरा परिचय, आयु, पद, आय एवं पते का उल्लेख कृपया अवश्य करें । —संपादक

न.श., मद्रास : एक तेईस वर्ष का युवक हूं तथा एन.सी.सी. के सार्जेंट रैंक पर था परंतु हाइड्रोसिल हो जाने की वजह से यह छोड़ व्यापारिक क्षेत्र में आ गया । पहले तो शर्म करता रहा, फिर सन १९८२-८३ में ऑपरेशन करा दिया । परंतु कहीं मैं नपुंसक तो नहीं हो गया । क्या ऑपरेशन के बाद शुक्राणुओं की कमी हो जाती है । क्या फिर उन्हें बढ़ाने की भी दवा है । क्या ऐसा व्यक्ति जो हाइड्रोसिल का रोगी रहा है, संभोग के लायक होता है अथवा नहीं । कारण मेरा विवाह तय हो चुका है, तथा मैं नाहक किसी भी स्त्री का जीवन बरबाद नहीं कर सकता । भले ही मुझे आत्महत्या अथवा संन्यास क्यों न लेना पड़े ।

आपने अच्छा किया जो ऑपरेशन करा लिया । शर्म में पड़कर, बीमारी और बढ़ती जाती है । हाइड्रोसिल बीमारी के ऑपरेशन के बाद शुक्राणु कम नहीं होते न ही मनुष्य नपुंसक । चाहें तो आप वीर्य की जांच कराकर इस तथ्य की पुष्टि कर सकते हैं । आप सफल दांपत्य जीवन के योग्य हैं ।

सांस्कृतिक समाचार

खेल पत्रकारों का सम्मान :

नयी दिल्ली । द्रोणाचार्य पुरस्कार से सम्मानित गुरु हनुमान के अभिनंदन के लिए खाद्य एवं आपूर्ति मंत्री श्री जगदीश टाईटलर के निवास स्थान पर एक स्वागत समारोह का आयोजन किया गया ।

इस अवसर पर जहां देश के चोटी के पहलवानों, खिलाड़ियों, खेल पदाधिकारियों, कुश्ती कला के खलीफाओं का राजस्थान की पगड़ी बांधकर सम्मान किया गया वहीं देश के दो प्रसिद्ध खेल पत्रकारों आर. श्रीमान (अंगरेजी) और योगराज थानी (हिंदी) को भी पगड़ी बांधकर सम्मानित किया गया ।

इस अवसर पर श्री योगराज थानी ने कहा कि इसे मैं व्यक्तिगत रूप से अपना नहीं बल्कि खेल पत्रकारिता की विकास यात्रा की प्रगति, हिंदी के उन सभी खेल पत्रकारों का सम्मान मानता हूं, जिन्होंने अपने-अपने ढंग से अपना अंशदान या योगदान किया है । यह सम्मान देश के खेल प्रेमी पाठकों का भी है, जो खेलों में अत्यधिक रुचि लेने लगे हैं ।

बायें से योगराज थानी, आर. श्रीमान एवं गुरु हनुमान





नवीन गद्य रचनावली का लोकार्पण

नयी दिल्ली में अपने निवास स्थान पर प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी ने डॉ. लक्ष्मीनारायण दुबे द्वारा संपादित 'नवीन गद्य रचनावली' (पांच खंड) का लोकार्पण किया ।

अ. भा. जवाहर सुलिपि प्रतियोगिता

जबलपुर की सांस्कृतिक-शैक्षणिक संस्था नर्मदा वेलफेयर सोसाइटी ने नेहरू जन्म शती वर्ष के उपलक्ष्य में एक अखिल भारतीय जवाहर सुलिपि प्रतियोगिता का आयोजन किया है । इस प्रतियोगिता में तीन वर्ग रखे गये हैं । प्रथम वर्ग में १० से १५ वर्ष के, द्वितीय वर्ग में १५ से १९ वर्ष के छात्र-छात्राएं भाग ले सकते हैं । तृतीय वर्ग में २० वर्ष से अधिक आयु के लोग भाग ले सकते हैं ।

प्रत्येक समूह में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार के रूप में क्रमशः स्वर्ण, रजत एवं कांस्य पदक के अलावा नकद पुरस्कार भी दिया जाएगा । सुलिपि का विषय है— 'शांति दूत एवं राष्ट्रीय एकता के प्रतीक-जवाहर' सुलिपि के लिए सौ शब्दों की शब्द-सीमा रखी गयी है । अंतिम तिथि है— २० सितम्बर १९८९ ।

प्रविष्टि भेजने का पता :—

श्री मुकुंददास, अध्यक्ष, नर्मदा वेलफेयर सोसाइटी, डी. बी. वल्लभदास पैलेस, ४६०, हनुमानताल, जबलपुर ।



अपने-अपने एकांत' का विमोचन करते हुए श्री भगत

'अपने-अपने एकांत' का विमोचन

जबलपुर : नगर के उदीयमान कथाकार एवं उपन्यासकार श्री योगेश दीक्षित के नवीन उपन्यास 'अपने-अपने एकांत' का विमोचन विगत दिवस पन्ना में केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री श्री हरकिशनलाल भगत के सौजन्य से संपन्न हुआ । इस अवसर पर मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री मोतीलाल वोरा, गृह मंत्री कैप्टन जयपाल सिंह एवं साहित्यकार उपस्थित थे ।

'नार्वे में प्रवासी' : सांस्कृतिक आयोजन

ओसलो । भारत-नार्वे के मध्य सांस्कृतिक संबंधों को और अधिक मजबूत बनाने के उद्देश्य से इंडो-नार्विजन कल्चरल फोरम के तत्वावधान में ११ जून १९८९ को संत हालवर्ड चर्च, ओसलो में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया । इस अवसर पर नार्वे की बाल साहित्य की प्रसिद्ध लेखिका आन्ने काथारीने वेस्तली और प्रवासी भारतीय लेखक सुरेशचन्द्र शुक्ल के 'नार्वे में प्रवासी' पर भाषण हुए । श्री शुक्ल के भारतीय एवं नार्विजन जीवन पर आधारित चित्रों की एक प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया । कार्यक्रम की अध्यक्षता समाजशास्त्री हरल्ड बूरवाल्द ने की तथा उद्घोषणा श्रीमती सुजाता प्रभु ने की ।

इस अवसर पर नार्वे की समाज कल्याण मंत्री, थूवे स्त्रान्द गेराशन तथा ओसलो के मेयर अलबर्ट नूरडेंगन के संदेश प्राप्त हुए तथा भारतीय दूतावास के प्रथम सेक्रेटरी जे. आर. पंडित ने भा. दूतावास का प्रतिनिधित्व किया ।

—माया भारती

'उलझन' का प्रदर्शन

विगत दिनों लंदन में बनी एक वीडियो फिल्म 'उलझन' का एक कार्यक्रम में प्रदर्शन किया गया । फिल्म के निर्माता-निर्देशक हैं लंदन में बसे प्रवासी भारतीय श्री एम. एम. शर्मा । छायाकार हैं उनके पुत्र अनिल शर्मा । इस फिल्म की कहानी लंदन में रहनेवाले भारतीय मूल के पति-पत्नी के टूटते रिश्तों की कहानी है । पति का घोर व्यस्ततम जीवन उसके पारिवारिक जीवन को तोड़ देता है । इस फिल्म के प्रस्तुतिकरण की ताजगी ने सबको प्रभावित किया ।

फिल्म 'उलझन' की शूटिंग का एक दृश्य जिसमें अनिल शर्मा (बायें काले स्वेटर में) और श्री एम. एम. शर्मा (ओवरकोट में दायें) दिखायी दे रहे हैं ।



और अंत में मारो मत चीतों को कि केवल खाल खड़ी रहे !



छाया : सौजन्य : अमरीकी सूचना केंद्र

दी हिंदुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राजेन्द्र प्रसाद द्वारा हिंदुस्तान टाइम्स प्रेस
नयी दिल्ली में मुद्रित तथा प्रकाशित

समस्यापूर्ति— १२३



गति

यहां प्रकाशित चित्र को ध्यान से देखिए और उसके नीचे बड़े अक्षरों में लिखी पंक्ति पढ़िए। इसे लेकर आपको एक छंदबद्ध कविता लिखनी है। रचना मौलिक तथा अधिकतम छह पंक्तियों की हो। समस्या-पूर्ति के परंपरागत नियमों के अनुसार ऊपर दी गयी पंक्ति कविता के अंत में ही आनी चाहिए। कविता निम्नलिखित छंदों में से किसी एक में मात्रा-दोष से पूर्णतः रहित हो। छंद हैं : दोहा, चौपाई, रोला, हरिगीतिका

इस नियम की पूर्ति न करनेवाली प्रविष्टियों पर विचार नहीं किया जाएगा, जो श्रेष्ठ रचना होगी, उसे पुरस्कृत किया जाएगा। प्रविष्टि पोस्टकार्ड पर ही भेजें।

प्रथम पुरस्कार : ६० रुपये • द्वितीय पुरस्कार : ४० रुपये

अंतिम तिथि : २० अगस्त १९८९

छाया : सुभाष भार्गव

Regd. No.
R.NI. No.

